पंजाबी यूनिवर्सिटी पेपरबैक्स

पंजाबी सीखिए

सीताराम बाहरी

पब्लिकेशन ब्यूरो
पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला

पंजाबी सीखिए

सीताराम बाहरी

पब्लिकेशन ब्यूरो
पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला

आमुख

इस विश्वविद्यालय में पंजाबी के विकास-कार्यों की बहुमुखी योजनाओं में से एक विशेष योजना है—पंजाबी भाषा को लोकप्रिय बनाना और विविध भाषाओं के माध्यम से पंजाबी सीखने के लिए पुस्तकें तैयार करवाना।

डा॰ सीताराम बाहरी, ने पिछले वर्ष उर्दू के माध्यम से पंजाबी सीखने वालों के लिए पुस्तक लिखी थी **'पंजाबी पढ़ाई लिखाई'**। इस का प्रकाशन पंजाबी युनिवर्सिटी ने अगस्त 1967 में किया था। मुझे हर्ष है कि हमारे भाषा-विज्ञान विभाग के इसी लेखक ने हिन्दी भाषा-भाषियों के लिए **'पंजाबी सीखिए'** पुस्तक बहुत परिश्रम से तैयार की है।

इस पुस्तक में पंजाबी और हिन्दी के उच्चारण, शब्द-भण्डार तथा व्याकरण की समानताओं एवं विषमताओं पर विशेष प्रकाश डाला गया है। इसमें गुरमुखी लिपि सीखने के लिए सात विशेष वैज्ञानिक पाठ दिए गए हैं। पंजाबी भाषा की गठन और वाक्यों की संरचना को ध्यान में रख कर 29 विशेष पाठ हैं, किन्तु व्याकरण के नियमों का अभ्यास परोक्ष रूप में करवाया गया है। अंत में पंजाबी संरचना के विशेष नियम, पंजाबी हस्तलेखों के नमूने, पंजाबी-हिन्दी शब्द-कोश एवं सहायक सामग्री के विवरण दिए गए हैं।

13 अप्रेल, 1968 के शुभ दिन से पंजाब के सभी सरकारी कार्यालय अपने काम-काज राजभाषा पंजाबी के माध्यम से करने लगेंगे। ऐसे अवसर पर इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक का प्रकाशन विशेष अभीष्ट है।

जो व्यक्ति हिन्दी के माध्यम से पंजाबी सीखना चाहते हैं उनके लिए यह पुस्तक काफी उपयोगी सिद्ध होगी। ऐसी मेरी आशा है।

कृपाल सिंह नारंग
उप-कुलपति

पंजाबी युनिवर्सिटी पटियाला

विषय विवरणिका

भाषाएं सीखिए

'जिस तरह इन्द्र धनुष के विभिन्न रंग होते हैं उसी तरह भारत की भी विभिन्न भाषाएं हैं। इन्द्र धनुषी रंग एक दूसरे से मिलते जुलते हैं, इसी प्रकार कहीं कहीं दो तीन भाषाओं का मिश्रण होता है। इसी लिए ऐसी जगह के लोगों को दो तीन भाषाओं का अच्छा परिचय होना चाहिए। इस से ज्ञान प्राप्त होगा, बुद्धि का विकास होगा। एक दूसरे की भाषा सीखने से प्रेम बढ़ेगा। प्रेम बढ़ाने के जितने साधन हैं उन्हें हमें अपना लेना चाहिए।'

—संत विनोबा

भाषा सीखना तथा भाषा जीना एक दूसरे से भिन्न है तो आश्चर्य नहीं। प्रत्येक भाषा अपने ज्ञान और भाव की समृद्धि के कारण ग्रहण करने योग्य है, परन्तु अपनी समग्र रागात्मक तथा बौद्धिक सत्ता के साथ जीना अपनी सांस्कृतिक भाषा के संदर्भ में ही सत्य है।

मानव-व्यक्तित्व जैसे प्राकृतिक परिवेश से प्रभावित होता है, उसी प्रकार उसकी भाषा भी अपनी धरती के प्रभाव ग्रहण करती है और यह प्रभाव की भिन्नता का कारण हो जाता है। परन्तु भाषा सम्बन्धी बाह्य भिन्नताएं पर्वत की अनमिल ऊँची-नीची श्रेणियां न होकर एक ही सागर-तल पर बनने वाली लहरों से समानता रखती हैं। उनकी भिन्नता समष्टि की गति को निरन्तरता बनाए रखने का लक्ष्य रखती है, उसे खण्डित करने का नहीं।

—महादेवी वर्मा

प्रस्तावना

जिसे आज राष्ट्रभाषा हिन्दी कहते हैं, उसका मध्यकालीन रूप था हिन्दवी। उस के आरम्भिक नमूने पंजाब और हैदराबाद दक्षिण की पुरानी रचनाओं में सुरक्षित हैं।

पंजाब में 1391 ई॰ से पहले ग़ज़नवी वंश का शासन लगभग डेढ़ शती तक रहा। हिन्दवी का विकास उसी काल में शुरू हुआ था। लाहौर-निवासी मसऊद सअद सलमान हिन्दवी भाषा का पहला कवि था जिस ने अपना काव्य-संग्रह (दीवान) संकलित किया था। बुरहानुद्दीन जानम, बाबा फ़रीद शकर गंज, भगत छज्जू आदि सूफ़ियों और संतों की अनेक हिन्दवी रचनाएं पंजाब में प्रचलित रही हैं। यही कारण है कि उर्दू के पश्चात् हिन्दी खड़ी बोली की निकटवर्ती भाषा पंजाबी ही है।

पंजाबी भाषा में तद्भव शब्दावली का जो भंडार मिलता है वह अन्य भारतीय भाषाओं में विरले ही होगा। कई पंजाबी शब्दों में प्राकृत और अपभ्रंश काल की भाव-भंगिमा और रंग-रूप विद्यमान है। इस भाषा का जो साहित्य मुसलमानों ने लिखा है वह प्रायः फ़ारसी लिपि में है और जो साहित्य सिखों एवं हिन्दुओं ने लिखा वह अधिकतर गुरमुखी में है। देवनागरी में बहुत कम पंजाबी साहित्य विकसित हुआ, जबकि गुरमुखी लिपि सिंधी भाषा के लिए भी 19वीं शती तक प्रचलित रही। गुरुगोबिन्द सिंह के प्रोत्साहन से ब्रजभाषा और खड़ी बोली में अनेक काव्य-ग्रन्थ लिखे गए थे जिनकी लिपि गुरमुखी थी। हिन्दी वाले इस लिपि में अनभिज्ञ होने के कारण इस सुन्दर साहित्य से पूरा पूरा लाभ नहीं उठा सके। हिन्दी के अपने क्षेत्र में भी उस काल के कवियों ने इतने उत्तम प्रबन्ध-काव्य नहीं रचे जितने पंजाब में रचे गए, यथा

गुरु प्रताप सूर्य : भाई सन्तोष सिंह
नानक चन्द्रोदय : गणेशा सिंह बेदी
जनमेजय का नाग यज्ञ : टहकण कवि, आदि

पंजाबी भाषा का अध्ययन उस भाव-राशि का परिचय करा सकता है जिस के कारण पंजाब का सूफ़ीवादी काव्य, सिख गुरुओं की अमृत बाणी और आधुनिक काल का मल्प-साहित्य प्रसिद्ध रहा है। पंजाबी में लिखित बाबा फरीद के सलोक; गुरु नानक के शब्द; शाह हुसैन एवं बुल्हे शाह की काफ़ियां; वारस शाह की 'हीर'; भाई वीर सिंह का गद्य पद्य; प्रो॰ मोहन सिंह, अमृता प्रीतम और प्रीतम सिंह सफ़ीर का आधुनिक काव्य; नानक सिंह, कर्तार सिंह दुग्गल एवं संत सिंह सेखों का गल्प-साहित्य; ईश्वर चन्द्र नंदा, बलवंत गार्गी एवं कर्तार सिंह दुग्गल का नाटक साहित्य हिन्दी वाङ्मय को भी नयी चाशनी और नयी सुगंधि दे सकता है।

बहुत सा पंजाबी लोक-साहित्य लिपि-बद्ध हो चुका है। पंजाबी का अध्ययन इव बहुमूल्य निधि का द्वार भी खोल देगा। पंजाब की वीरता, कुशलता और उदारता के सुन्दर दर्शन पंजाबी पढ़ कर ही प्राप्त हो सकते हैं। जिन्हें अपने देश की भाव-एकता प्रिय है वे सदा प्रादेशिक भाषाएं भी सीखने की उत्सुकता रखेंगे। किन्तु खेद की बाह है कि जितनी लगन और जागरूकता हम अंग्रेजी सीखने सिखाने में दिखाते हैं उतनी अपनी प्रादेशिक भाषाओं के लिए नहीं दिखाते। यह सच है कि इन भाषाओं में जो स्नेह और प्रकाश के चित्र मौजूद हैं, जो लोकमानस के आदर्श रूपमान हैं वे विदेशी भाषाओं के अध्ययन से भासित नहीं हो सकते।

भारत के प्रहरी पंजाब प्रदेश की भाषा सीखने की दिशा में सक्रिय प्रयत्न करना हिन्दी-भाषियों का सुखद कर्तव्य ही है। यह भी देशदर्शन का एक सुन्दर उपाय है।

पंजाबी भाषा का विकास उस भू-भाग में हुआ है जहां इतिहास के उषा-काल में वेद की ऋचाएं गुंजती रहीं। उत्तर पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) के सुदूर नगरों से लेकर सिंध और राजस्थान की सीमाओं तक, चम्बा कुल्लू आदि पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर यमुना तट तक लगभग तीन करोड़ व्यक्ति पंजाबी बोलते हैं और हज़ारों पंजाबी लोग उक्त क्षेत्र के बाहर जीवन यापन करते हैं। पंजाबी सैनिक और व्यापारी विदेशों में भी इस भाषा की सुगंधि फैलाते रहे हैं। बरमा, मलाया, कैनेडा, अफ़गानिस्तान, ईरान आदि देशों में कई परिश्रमी पंजाबी आदर और मैत्री-भाव के पात्र बने हैं।

इस पुस्तक का प्रमुख प्रयोजन यह है कि पाठकगण स्वयमेंव सुगमता से पंजाबी भाषा गुरमुखी लिपि में पढ़ सकें, बोल सकें और लिख सकें। इसी

लिए इस पुस्तक में विविध प्रकार के पाठ दिए गए हैं, और पंजाबी-संरचना का परिचय कराया गया है।

पंजाबी के अनेक वाक्यांश बोलचाल में से संचित किए गए हैं; फिर भी गुरमुखी लिपि में प्रचलित पंजाबी भाषा का साहित्यिक रूप अधिक महत्व पा गया है।

इस पुस्तक में विशेष प्रयत्न किया गया है कि पाठक पंजाबी में ही सोचने का अभ्यासी बन सके। अतः अन्तिम भाग में पंजाबी में बात-चीत के प्रकरणों के पाद-टिप्पण हिन्दी में नहीं अपितु सरल पंजाबी में लिखे गए हैं। परिशिष्ट में कुछ पंजाबी हस्तलेखों और साहित्यिक रचनाओं के नमूने भी दिए गए हैं।

गुरुदेव डा॰ सिद्धेश्वर वर्मा और अग्रज डा॰ हरदेव बाहरी ने इस कृति के संशोधनार्थ अनेक मूल्यवान सुझाव प्रदान किए। उन का आभार शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

28 फरवरी, 1968

भाषा विज्ञान-विभाग
पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला

(डा॰) सीताराम बाहरी

खण्ड 1

पंजाबी वर्णों एवं चिह्नों का परिचय

पंजाबी वर्णमाला

ੳ उ	ਅ अ	ੲ इ	ਸ स	ਹ ह
ਕ क	ਖ ख	ਗ ग	ਘ घ	ਙ ङ
ਚ च	ਛ छ	ਜ ज	ਝ झ	ਞ ञ
ਟ ट	ਠ ठ	ਡ ड	ਢ ढ	ਣ ण
ਤ त	ਥ थ	ਦ द	ਧ ध	ਨ न
ਪ प	ਫ फ	ਬ ब	ਭ भ	ਮ म
ਯ य	ਰ र	ਲ ल	ਵ व	ੜ ड़

इस वर्णमाला को पंजाबी में पैंती (पैंतीस अक्खरी) कहते हैं। इसमें ੳ, ਅ, ੲ के साथ मात्राएं लगा कर स्वर लिखे जाते हैं :

ਅ	ਆ	ਇ	ਈ	ਉ	ਊ	ਏ	ਐ	ਓ	ਔ	ਅੰ	ਆਂ
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	आं

प्रारम्भिक व्यंजनों में /ਸ, ਹ/ (ऊष्म ध्वनियों) का स्थान पुरातन प्रणाली के कारण है। ੳ तो ੧ੴ का प्रतीक है। /ਸ/ एवं /ਹ/ सोहं (अथवा ॐ नमः सिद्धम्) का संक्षेप है। इस लिए इन व्यंजनों का उल्लेख आरम्भ में हुआ है। अन्त में ड़ (ੜ) उत्क्षिप्त ध्वनि का उल्लेख है जो भारत की अन्य वर्णमालाओं में नहीं मिलती।

टिप्पणी : 1. ष एवं श के लिए ਸ਼ चिह्न और ख़, ग़, ज़, फ़ के लिए ਖ਼, ਗ਼, ਜ਼, ਫ਼ चिह्न हैं। क़ ध्वनि पंजाबी में नहीं है। फ़ारसी शब्दों के लिए ਕ਼ का प्रयोग किया जाता है।

2. हिंदी /ढ़/ को पंजाबी में /ੜ੍ਹ/ रूप में लिखते हैं।

क्ष = ਕ੍ਸ਼; त्र = ਤ੍ਰ; ज्ञ = ਗਜ

— — —

व्यंजन तालिका

कवर्ग	ਕ	ਖ	ਗ	ਘ	ਙ
चवर्ग	ਚ	ਛ	ਜ	ਝ	ਞ
टवर्ग	ਟ	ਠ	ਡ	ਢ	ਣ
पवर्ग	ਪ	ਫ	ਬ	ਭ	ਮ
तवर्ग	ਤ	ਥ	ਦ	ਧ	ਨ
अन्तःस्थ	ਯ	ਰ	ਲ	ਵ	
ऊष्म	ਸ	ਸ਼	ਹ		
उत्क्षिप्त	ੜ				

पाठ 1

सीखिए तो ये शब्द गुरमुखी लिपि में कैसे होंगे :

अब	मदन	स र स
डर	शरण	थ र थ र
जल	नज़र	ब र क त
थल	नरक	घ र त क

घर	रगड़	च म क
मर	पगड़	द म क
करवट	जल थल	शरबत
अदरक	सरपट	अकसर
चटपट	दर दर	जब जब

— — —

ਪਾਠ 2

1	2	3
ਘਰ	ਮਦਨ	ਘਰ ਤਕ
ਡਰ	ਬਰਕਤ	ਗੜਬੜ
ਜਲ	ਕਲ ਤਕ	ਜਲ ਭਰ
ਚਲ	ਝਟਪਟ	ਸਚ ਸਚ
ਲੜ	ਮਤ ਕਰ	ਹਸ ਹਸ
ਦਸ	ਅਜ ਕਲ	ਵਲ-ਛਲ

नागरी रूपांतर :

घर, डर, जल, चल, लड़, दस (10, बता)
मदन, बरकत, कल तक, झटपट, मत कर, आज कल (आजकल)
घर तक, गड़बड़, जल भर, सच सच, हस हस (हंस हंस कर)
वल-छल (छल कपट)

ध्यान से पढ़िए :

1. ਮਦਨ! ਵਲ ਛਲ ਮਤ ਕਰ!
2. ਅਜ ਕਲ, ਕਲ ਅਜ ਮਤ ਕਰ!
3. ਹਸ ਮਤ! ਗੜਬੜ ਮਤ ਕਰ!
4. ਸਚ ਸਚ ਦਸ!
5. ਮਦਨ ਮਦਨ! ਘਰ ਚਲ!
6. ਬਰਕਤ! ਘਰ ਤਕ ਚਲ!
7. ਲੜ ਮਤ, ਮਤ ਡਰ!
8. ਝਟਪਟ ਜਲ ਭਰ!
9. ਮਦਨ ਮਦਨ! ਝਟਪਟ ਘਰ ਤਕ ਚਲ!

— — —

ਪਾਠ 3

1	2	3
ਫਲ	ਚਮਕ	ਸ਼ਰਬਤ
ਚਖ	ਦਮਕ	ਕਲ ਤਕ
ਛਲ	ਨਜ਼ਰ	ਜਲਥਨ
ਗਲ	ਸਰਸ	ਮਗਰ ਮਗਰ

हिन्दी रूपांतर :

1. फल, चख, छल, गल (बात)
2. चमक, दमक, नज़र सरस, (बढ़िया)
3. शरबत, कल तक, जल थल मगर मगर (पीछे पीछे)

ध्यान से पढ़िए :

1. ਫਲ ਚਖ। ਸ਼ਰਬਤ ਮਤ ਚਖ।
2. ਮਦਨ ਮਦਨ। ਦਫ਼ਤਰ ਚਲ।
3. ਹਸ ਹਸ ਗਲ ਕਰ।
4. ਝਟਪਟ ਗਲ ਦਸ।
5. ਮਗਰ ਮਗਰ ਮਤ ਚਲ।
6. ਅਜਕਲ ਮਤ ਕਰ।
7. ਦਸ ਦਸ, ਸਭ ਗਲ
8. ਵਲ-ਛਲ ਮਤ ਕਰ।
9. ਬਰਕਤ, ਡਰ ਮਤ।
10. ਸਚ ਸਚ ਦਸ।

पंजाबी अक्षरों के नाम

ੳ	ऊड़ा	ਢ	ढड्ढा
ਅ	ऐड़ा	ਣ	णाणा
ੲ	ईड़ी	ਤ	तत्ता
ਸ	सस्सा	ਥ	थत्था
ਹ	हाहा	ਦ	दद्दा
ਕ	कक्का	ਧ	धद्धा
ਖ	खक्खा	ਨ	नन्ना
ਗ	गग्गा	ਪ	पप्पा

ਘ	घग्घा	ਫ	फप्फा
ਙ	ङङा	ਬ	बब्बा
ਚ	चच्चा	ਭ	भब्भा
ਛ	छच्छा	ਮ	मम्मा
ਜ	जज्जा	ਯ	यय्या
ਝ	झज्झा	ਰ	रारा
ਞ	ञञा	ਲ	लल्ला
ਟ	टैंका	ਵ	वावा
ਠ	ठट्ठा	ੜ	ड़ाड़ा
ਡ	डड्डा		

हिन्दी वर्णमाला और गुरमुखी रूपांतर

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
ਅ	ਆ	ਇ	ਈ	ਉ	ਊ
ऋ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
ਰਿ	ਏ	ਐ	ਓ	ਔ	ਅਂ
क	ख	ग	घ	ङ	
ਕ	ਖ	ਗ	ਘ	ਙ	
च	छ	ज	झ	ञ	
ਚ	ਛ	ਜ	ਝ	ਞ	
ट	ठ	ड	ढ	ण	
ਟ	ਠ	ਡ	ਢ	ਣ	
त	थ	द	ध	न	
ਤ	ਥ	ਦ	ਧ	ਨ	
प	फ	ब	भ	म	
ਪ	ਫ	ਬ	ਭ	ਮ	
य	र	ल	व		
ਯ	ਰ	ਲ	ਵ		
श	ष	स	ह		
ਸ਼	ਸ਼	ਸ	ਹ		

ऊपर ਆ, ਇ, ਈ, और ਏ, में जो मात्राएं लगी हैं वे बहुत कुछ हिन्दी

की मात्राओं के समान हैं। हिन्दी ु ू और गुरमुखी ੁ ੂ का अन्तर स्पष्ट है। हि. ो, गु. ੋ, हिन्दी ौ गुरमुखी ੌ का अन्तर भी समझ लेना चाहिए।

ऋ, ऌ, ॡ अः वर्णों का शुद्ध उच्चारण पंजाबी में नहीं मिलता और न इनके साथ शब्दों का निर्माण हुआ है।

क्ष, त्र, ज्ञ, वर्ण वास्तव में संयुक्त अक्षर है--क् + ष ; त + र, ज + ञ। ऊपर के 45 वर्णों में ये 7 वर्ण मिला कर बावन अक्खरी बनती है।

— — —

देवनागरी और गुरमुखी अक्षरों की तुलना

1.	ਗ	ਗ਼	ਟ	ਠ	ੜ
	ग	ग़	ट	ठ	ड़
2.	ੳ	ਅ	ਘ	ਚ	ਛ
	उ	अ	घ	च	छ
3.	ਜ	ਜ਼	ਝ	ਡ	ਢ
	ज	ज़	झ	ड	ढ
4.	ਦ	ਪ	ਮ	ਲ	ਰ
	द	प	म	ल	र

पढ़िए :

ਠਗ	ਲਠ	ਠਪ	ਟਪ ਟਪ
ਜਗ	ਗਜ਼	ਲੜ	ਝਟ ਪਟ
ਝਟ	ਘਰ	ਕਲ਼	ਅਟਕਲ
ਘਰ	ਚਲ	ਹਟ	ਮਤਲਬ

— — —

सावधानी की आवश्यकता

ਤ = त	ੳ = उ	ਊ = ऊ	ਓ = ओ
ੜ = ड़	ਡ = ड	ਔ = औ	ਐ = ऐ
ਏ = ए	ਇ = इ	ਈ = ई	ਟ = ट
ਸ = स	ਮ = म	ਸ਼ = श, ष	
ਧ = ध	ਪ = प	ਯ = य	
ਬ = ब	ਘ = घ	ਅ = अ	
ਖ = ख	ਥ = थ	ਪ = प	

ਹ = ह	ਰ = र	ਕ = क
ਫ = फ	ਢ = ढ	ਙ = ङ
ਨ = न	ਣ = ण	ੜ = ड़
ਡ = ड	ਭ = भ	ਤ = त
ਝ = झ	ਞ = ञ	ਵ = व
ਕ = क	ਭ = भ	ਉ = उ

पढ़िये :

1. ਖਟ ਪਟ ਮਤ ਕਰ।
2. ਘਰ ਤਕ ਝਟਪਟ ਚਲ।
3. ਮਦਨ! ਚਮਚ ਰਖ।
4. ਟਨ ਟਨ ਮਤ ਕਰ

पंजाबी में /ਏ/ कोई अक्षर नहीं है अतः /ऐ/ के लिए /ਐ/ का प्रयोग सीख लीजिए।

— — —

गुरमुखी मात्राएं

पंजाबी में मात्राओं को लगां मात्रां (ਲਗਾਂ, ਮਾਤ੍ਰਾਂ) कहते और इन का प्रयोग प्रायः देवनागरी का सा ही होता है, यद्यपि इन के आकार में कुछ अन्तर है :

स्वरों के पूरे रूप		*मात्रा रूप*		*मात्राओं के नाम*		*देवनागरी रूप*	
ਅ	अ	-	ਕ	ਮੁਕਤਾ	मुकता	—	क
ਆ	आ	ਾ	ਕਾ	ਕੰਨਾ	कन्ना	ा	का
ਇ	इ	ਿ	ਕਿ	ਸਿਹਾਰੀ	सिहारी	ि	कि
ਈ	ई	ੀ	ਕੀ	ਬਿਹਾਰੀ	बिहारी	ी	की
ਉ	उ	ੁ	ਕੁ	ਔਂਕੜ	औंकड़	ु	कु
ਊ	ऊ	ੂ	ਕੂ	ਦੁਲੈਂਕੜੇ	दुलैंकड़े	ू	कू
ਏ	ए	ੇ	ਕੇ	ਲਾਂ	लां	े	के
ਐ	ऐ	ੈ	ਕੈ	ਦੂਲਾਈਆਂ	दुलाईआं	ै	कै
ਓ	ओ	ੋ	ਕੋ	ਹੋੜਾ	होड़ा	ो	को
ਔ	औ	ੌ	ਕੌ	ਕਨੌੜਾ	कनौड़ा	ौ	कौ

ਉਦਾਹਰਣ : ਮਲ, ਮਿਲ, ਮੀਲ, ਮੁਲ, ਮੂਲ, ਮੇਲ, ਮੈਲਾ, ਮੋਲ੍ਹੀ, ਮੌਲੀ

शब्दों के आरम्भ में सभी स्वर पूरे रूप में लिखे जाते हैं किन्तु बीच में भी जहां किसी स्वर अथवा मात्रा के पश्चात् फिर स्वर आता है वह पूरा लिखा जाता है–

ਦਵਾਈਆਂ दवाईआं (दवाइयां), ਕਿਰਾਇਆ किराइआ (किराया), ਹਲਵਾਈ हलवाई, ਡਾਕੂਆਂ ਨੂੰ डाकूआं नूं (डाकुओं को)

ਪਾਠ 1

ਉ	ਊ	ਓ
उ	ऊ	ओ
		ो

1	2	3	4
ਉਠ	ਪੁਛ	ਉਸ	ਓਸ
ਊਠ	ਮੂਰਖ	ਗੁਟ	ਬੋਲ
ਸੁਰ	ਪੂਰਨ	ਓਟ	ਕੋਲ
ਸੂਰ	ਚੂਰਨ	ਗੋਟ	ਕੁਝ
ਚੁਪ	ਸੂਰਤ	ਖੋਟ	ਬਣ
ਚੂਪ	ਦੂਸ਼ਣ	ਚੋਰ	ਸਭ

हिन्दी रूपांतर :

1. उठ, ऊठ (ऊंट), सुर, सूर, चुप, चूप (चूस)
2. पुछ (पूछ), मूरख (मूर्ख), पूरन, चूरन, सूरत, दूषण।
3. उस, गुट, ओट, गोट, खोट, चोर
4. ओस, बोल, कोल, (के पास), कुझ (कुछ), बण (बन) सभ (सब, सभी)।

ध्यान से पढ़िए :

1. ਸਚ ਸਚ ਬੋਲ।
2. ਸ਼ੁਭ ਸ਼ੁਭ ਬੋਲ।
3. ਸਭ ਕੁਝ ਪੁਛ।
4. ਝੂਠ ਮਤ ਬੋਲ।
5. ਮੂਰਖ ਨ ਬਣ।
6. ਕੁਝ ਸੋਚ, ਕੁਝ ਸਮਝ।

7. ਮਦਨ! ਝਟਪਟ ਉਠ!
8. ਚੁਪ ਚੁਪ ਮਤ ਰਹ!
9. ਅਫਸਰ ਕੋਲ ਚਲ!
10. ਸਭ ਕੁਛ ਸਚ ਸਚ ਦਸ!
11. ਦੂਰ ਤਕ ਦੁਖ ਹਨ!
12. ਹਸ ਹਸ ਵਕਤ ਕਟ!

ਪਾਠ 2

ਅ	ਆ	ਐ	ਔ
अ	आ	ऐ	औ
	ਾ	ੈ	ੌ
	ा	ै	ौ

पढ़िएगा :

1. ਮਦਨ । ਐਨਕ ਰਖ
2. ਐਬ ਨ ਰਖ । ਸਚ ਬੋਲ
3. ਆਲੂ ਚਖ । ਜਲ ਛਕ ।
4. ਬਾਬਾ ਬਾਬਾ ਆਖ ।
5. ਮਦਨ । ਪੈਦਲ ਚਲ ।
6. ਆਮ ਰਖ ।
7. ਉਧਰ ਕੌਣ ਹੈ ?
8. ਮਦਨ ਉਧਰ ਹੈ ।
9. ਕੌੜਾ ਫਲ ਮਤ ਖਾ ।
10. ਭੈੜਾ ਮਤ ਬਣ ।
11. ਥੋੜਾ ਬੋਲ । ਸਚ ਸਚ ਦਸ
12. ਔਖਾ ਮਤ ਹੋ ।
13. ਇਹ ਪਾਠ ਸੌਖਾ ਹੈ ।

ਐਨਕ	ऐनक	ਕੌਣ	कौण (कौन)	ਥੋੜਾ	थोड़ा
ਐਬ	ऐब	ਕੌੜਾ	कौड़ा (कड़वा)	ਦਸ	दस (बता)
ਆਖ	आख (कह)	ਭੈੜਾ	भैड़ा (बुरा)	ਔਖਾ	औखा (तंग)
ਪੈਦਲ	पैदल	ਬਣ	बण (बन)		

ਪਾਠ 3

ਇ	ਈ	ਏ	ਐ
इ	ई	ए	ऐ
ਿ	ੀ		ੈ

पढ़िएगा :

1. ਦਿਨ ਰਾਤ ਇਕ ਕਰ।
2. ਇਕਬਾਲ । ਸਖਤ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰ ।
3. ਗਲੀ ਵਿਚ ਭੀੜ ਸੀ ।
4. ਭੀੜ ਵਿਚ ਬਰਕਤ ਵੀ ਸੀ ।
5. ਤਨ ਮਨ ਧਨ ਅਰਪਨ ਕਰ।
6. ਗੀਤਾ ਦੇਵੀ। ਇਕ ਤਸਵੀਰ ਬਣਾ ।
7. ਇਕਬਾਲ ਕੋਰ। ਈਸਾ ਮਸੀਹ ਦੀ ਤਸਵੀਰ ਬਣਾ।
8. ਨਿਰਮਲਾ। ਸੋਚ ਸਮਝ ਕੇ ਲਿਖ।

सूचना : हिन्दी–पंजाबी की सामान्य शब्दावली जो पुस्तक के परिशिष्ट भाग में दी गई है इसका अध्ययन पहले ही कर लीजिए। इस से आपको यह अनुमान लग जाएगा कि आप पंजाबी में प्रयुक्त कितने शब्द पहले ही जानते हैं।

ਵਿਚ—में	ਕੁਝ—कुछ	ਦੀ—की
ਸੀ—थी	ਬਣਾ—बना	ਵੀ—भी

— — —

देवनागरी के अन्य अक्षरों के पंजाबी रूपांतर

1. /ऌ/, /ॡ/ का कोई प्रयोग पंजाबी में नहीं है।
2. /ऋ/ के लिए /रि/ से काम चलाया जाता है।
   /ऋ/ ध्वनि तो हिन्दी में भी विरले ही मिलती है। सं. शृंङ्खलः अंप. सङ्कलो पं. संगल; सं. नृत्यति, अप. नच्चइ > पं नच्चे; सं. पृच्छति > प्रा. पुच्छदि > अप. पुच्छइ पं. पुच्छे
3. /ः/ विसर्ग का प्रयोग पंजाबी में नहीं है, चाहे हिन्दी के दुःख, प्रायः, पुनः आदि शब्दों में यह प्रयुक्त है। गुरमुखी लिपि में लिखी संस्कृत रचनाओं में विसर्ग को /ह/ के रूप में व्यक्त किया गया है।
   /क्ष/ वास्तव में क + ष है जो बहुत सी बोलियों में /ख/ एवं /छ/ सा रह गया है, यथा खत्री, छत्री ∠ क्षत्रिय, छिन ∠ क्षण। पंजाबी में

प्रायः /क्ष/ को /ख/ में रूपांतरित किया जाता है यथा परीखिया < परीक्षा, सिखिया ∠ शिक्षा, पख ∠ पक्ष आदि। वैज्ञानिक रूप में /ब/ अक्षर भाई कान्ह सिंह ने अपने गुरशब्द रत्नाकर महान कोश में /क्ष/ के लिए दिया है। आजकल /क् ष/ अथवा /क् ਸ਼/ से भी काम चलाया जाता है, यथा ਅਧਿਅਕ੍ਸ਼। /ष/ वर्ण को गु. र. म. को.* में /ਸ਼/ रूप दिया गया है।

4. /त्र/ को /ਤ੍ਰ/ रूप में सुविधा से लिखा जाता है क्योंकि इसका मूल रूप /व्र/ ही है।
5. /ज्ञ/ वास्तव में /ज + ञ/ है, पंजाबी में इसके लिए कोई ध्वनि चिह्न प्रचलित नहीं है चाहे *गु. र. म. को. में इसके लिए /ਞ/ रूप दिया गया है। अब तो हिन्दी में भी 'ज्ञान' को 'ज्आन', रूप में लिखने की परिपाटी वर्धा में चल निकली है। उत्तर भारतीय भाषाओं की भांति पंजाबी में यों तो 'गिआन' अथवा 'ग्यान' (ਗਿਆਨ, ਗ੍ਯਾਨ) रूप मिलते हैं किन्तु जहाँ कहीं पंजाबी लिपि में मूल उच्चारण देना पड़े इसे ਜ੍ਞਾਨ रूप में लिखा जा सकता है।

— — —

पंजाबी के चिन्ह-विशेष

1. (ੰ) यह 'टिप्पी' नामक चिह्न ह्रस्व स्वरों ਅ, ਇ, ਉ एवं ਊ के साथ अनुस्वार ध्वनियों के लिए लगाया जाता है यथा ਪੰਥ पथ, ਸਿੰਧ सिंध, ਕੁੰਡਾ, कुंडा
2. (ਂ) बिन्दी चिह्न अन्य ध्वनियों के लिए प्रयुक्त है, यथा *ਬਾਂਦਰ बाँदर, ਬੀਂ बीं, ਗੇਂਦ गे़ंद, ਮੈਂ मैं, ਗੋਂਦ, गोंद, ਸੌਂਪ सौंप।

   जब कभी उ, ऊ अलग अक्षर बनाएं तो इन के साथ भी बिंदी लगती है– ਉਂਗਲੀ उंगली; ਊਂਟ ऊंट

   इन चिह्नों के ना लगाने से अर्थों में अन्तर पड़ सकता है :

ਆਵਾਂ	आवाँ	मैं आऊं
ਆਵਾ	आवा	मिट्टी के बर्तन पकाने की भट्ठी
ਬੰਗਲਾ	बंगला	भवन

---

* ਗੁਰਸ਼ਬਦ ਰਤਨਾਕਾਰ ਮਹਾਨ ਕੋਸ਼ : ਭਾਈ ਕਾਨ੍ਹ ਸਿੰਘ ਨਾਭਾ

* यह भी सच है कि पंजाबी में ण, न, म ध्वनियों के साथ आने वाले स्वर कई बार अनुस्वार ध्वनि भी रखते हैं, यथा मांमां, रांणां, नांनां

ਬਗਲਾ	बगला	पंछी विशेष
ਪੇਂਟ	पेंट	रोग़न
ਪੇਟ	पेट	उदर
ਸਾਈਂ	साईं	फ़कीर, स्वामी
ਸਾਈ	साई	पेशगी, धन
ਵੰਡਾ	वंडा	बटवा दे
ਵਡਾ	वडा	बड़ा
ਵੰਗ	वंग	चूड़ी
ਵਗ	वग	रेवड़, वर्ग
ਨਾਂ	नां	नाम
ਨਾ	ना	नहीं
ਜਾਂ	जां	या, जब
ਜਾ	जा	तू जा

3. /ੱ/ इस चिह्न को अधक (अधिक) कहते हैं। यह दोहरे (द्वित्व) व्यंजनों के लिए प्रयुक्त होता है। अंग्रेजी में इन्हें लम्बे व्यंजन Long Consonants कहने लगे हैं। वास्तव में यह चिह्न व्यंजन की दीर्घता और जोर दिखाता है।

ਪਿੱਠ	पिट्ठ,	पीठ	ਨੱਕ	नक्क,	नाक
ਹੱਥ	हत्थ,	हाथ	ਕੱਚ	कच्च,	कांच (कंच)
ਮਿੱਠੀ	मिट्ठी	मीठी।			

इन चिह्न के न लगने से अर्थों में अन्तर पड़ सकता है :

ਕੱਥਾ	कत्था	पान में प्रयुक्त कत्था
ਕਥਾ	कथा	कहानी
ਪੱਕਾ	पक्का	मज़बूत
ਪਕਾ	पका	पका दे
ਬੱਚਾ	बच्चा	नन्हा बालक
ਬਚਾ	बचा	बचा दे
ਕੱਦ	कद्द	ऊंचाई
ਕਦ	कद	कब

4. /੍ਰ/ यह संयुक्त /ਰ/ =र के लिए चिह्न है ਪਤ੍ਰ—पत्र, ਪ੍ਰੇਮ—प्रेम, ਸ੍ਰੀਮਾਨ—श्रीमान, ਕ੍ਰੋਧ—क्रोध, ਚਿਤ੍ਰ—चित्र आदि। (ऋ) के लिए इस

चिह्न के साथ /इ/ की मात्रा प्रयुक्त होती है यथा अमृतसर ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ, पृथ्वी ਪ੍ਰਿਥਵੀ, कृपालु ਕ੍ਰਿਪਾਲ, मृत्यु ਮ੍ਰਿਤੂ, द्रढ़ ਦ੍ਰਿੜ੍ਹ आदि।
हिन्दी के उर्ध्व 'र' के लिए पंजाबी में कोई चिह्न नहीं। इसे पूरे /र/, ਰ के रूप में लिखा जाता है। स्वर-भक्ति के कारण इस का उच्चारण /र-अ/ की भांति भी होता है।

(i) तर्क ਤਰਕ, तरक; बर्फ ਬਰਫ, बरफ, शर्त ਸ਼ਰਤ, शरत; धर्म ਧਰਮ, धरम; शर्म ਸ਼ਰਮ, शरम;

(ii) बंद अक्षर (syllable) के आगे हल का निशान नहीं लगता जैसे ਕਰਤਾ कर्ता, दुर्गति ਦੁਰਗਤ, दुर्गा ਦੁਰਗਾ, चर्चा ਚਰਚਾ, पर्दा ਪਰਦਾ, दर्शन ਦਰਸ਼ਨ, दुर्लभ ਦੁਰਲਭ, वर्तमान ਵਰਤਮਾਨ, प्रार्थना ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ, आदि में यह ध्वनि /र्/ की भान्ति बोली जाती है।

/:/ शब्दों के संक्षेप के लिए यह चिह्न प्रयुक्त है :
ਡਾ: (डाक्टर), ਪ੍ਰੋ: (प्रोफैसर), ਸ: (सरदार)
किन्तु (:) चिह्न भी इसी तरह प्रयुक्त होता है और अब तो केवल विराम लगा कर काम चलाया जाता है :
ਪ੍ਰੋ.=प्रो., ਡਾ.=डा., ਸ.=स. आदि
/੍/ हल का चिह्न अब पंजाबी में भी प्रयुक्त होने लगा है—
ਸ੍ਪਸ਼੍ਟ (स्पष्ट), ਦੋਸ੍ਤ (दोस्त) आदि।

5. /੍ਹ/ — ह

पंजाबी में प्रायः इस का उच्चारण सुर का सा है जिसे इस चिह्न से व्यक्त किया जाता है :

ਕਲ੍ਹਾ	कल्हा	= लड़ाई
ਕਲਾ	कला	= मशीन, आर्ट
ਸਨ੍ਹ*	सन्ह	= सेंध
ਸਨ	सन	= सन, साल
ਗਲ੍ਹ	गल्ह	= गाल
ਗਲ	गल	= बात
ਪੜ੍ਹਦਾ	पढ़दा	= पढ़ता है
ਪੜਦਾ	पड़दा	= पर्दा

* डा. सिद्धेश्वर वर्मा का विचार है कि यह सुर वास्तव में प्रथम वर्ण पर है जब कि लिखने में यह दूसरे पर प्रचलित है।

/ਵ/, व्

6. /र/ ਰ एवं /ह/ ਹ के लिए अतिरिक्त /व/ ਵ व्यंज्न भी संयुक्त रूप में पंजाबी में प्रयुक्त होता है :

ਸ੍ਵਾਦ, स्वाद; ਸ੍ਵਾਦੇ, सुलादे; ਸ੍ਵਾਰ, सवार; ਸ੍ਵਾਹ, स्वाह; ਸ੍ਵਾਲ, सुआल; आदि। द्वियाक्षर आदि में इसके लिखित रूप दो प्रकार से मिलते हैं :

(i)	ਸ੍ਵਤੰਤ੍ਰ,	ਸ੍ਵਾਮੀ,	ਸ੍ਵਾਰਥੀ	ਸ੍ਵੀਕਾਰ
	स्वतंत्र,	स्वामी,	स्वार्थी	स्वीकार
(ii)	ਸੁਤੰਤਰ,	ਸੁਆਮੀ,	ਸੁਆਰਥੀ,	ਸ੍ਵੀਕਾਰ
	सुतंतर,	सुआमी,	सुआरथी,	स्वीकार

खण्ड 2

पंजाबी उच्चारण की कुछ विशेषताएं

मूर्धन्य भाग और ऊपरी अग्र वर्त्स्य भाग एक तरह से इस भाषा के उच्चारण की तान का केन्द्रस्थल बन गया है।* इसी लिए पंजाबी उच्चारण और स्वर भंगिमा में कुछ जोश और ज़ोर सा झलकता रहता है। गले के स्नायुओं का तनाव जिह्वा के पिछले भाग को अधिक महत्व देता है। दीर्घस्वर तो अधिक दीर्घ हो गये और ह्रस्व स्वर क्षीण होकर शब्दों के अंत में मूक होते गए हैं। केवल गिने चुने शब्दों के अन्त में ह्रस्व स्वरों की प्रतिच्छाया सी प्रतीत होती है :

ਘੋੜਾਕੁ, ਚਾਰਕੁ, ਨੂੰਹੁ, ਮੌਂਹੁ, ਕਿਉਂਕਿ, ਆਖਿਆ ਕਿ, ਆਦਿ

1.0 अन्तिम ह्रस्व स्वर का दीर्घीकरण :

/–इ/ > /–ई/

शक्ति	शकती	ਸ਼ਕਤੀ	मुनि	मुनी	ਮੁਨੀ
भक्ति	भगती	ਭਗਤੀ	पति	पती	ਪਤੀ
बुद्धि	बुद्धी	ਬੁੱਧੀ	कवि	कवी	ਕਵੀ
व्यक्ति	विअकती	ਵਿਅਕਤੀ	दृष्टि	द्रिशटी	ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ
स्थिति	सथिती	ਸਥਿਤੀ			

1.1 /–उ/ > /–ऊ/

साधु	साधू	ਸਾਧੂ
वस्तु	वसतू	ਵਸਤੂ
कृपालु	क्रिपालु	ਕ੍ਰਿਪਾਲੂ

---

* The Normal Punjabi focus (Tone quality) is against the upper front teeth and this gives a voice of splendid carrying quality. Pecularity : low back tongue and tense muscles of the throat'

—T. Grahme Bailey : *Punjabi Manual & Grammar*, p. 20

2.0 अंतिम ह्रस्व स्वर का लोप :

2.1 /–इ/ का लोप

प्रीति	ਪ੍ਰੀਤ
युक्ति	ਜੁਗਤ
मति	ਮਤ
बुद्धि	ਬੁਧ
शांति	ਸਾਂਤ
पति	ਪਤ, ਧਨਪਤ
मुनि	ਮੁਨ, ਨਾਰਦਮੁਨ

2.2 अंतिम /-उ/ का लोप

साधु	ਸਾਧ
दयालु	ਦਿਆਲ, ਦਇਆਲ (ਦਯਾਲ)

2.3 इसी वृति के कारण अकारांत शब्द भी प्रायः व्यंजनांत रह गये हैं : राम = 'र् आ म् अ' को /राम्/ बोलते हैं।
मिर्च = मिर् चअ का अन्तिम /अ/ जब उच्चरित नहीं होता तो 'र् च' का 'र अ च' उच्चारण सुविधा-जनक हो जाता है।

3. कई व्यंजन-समूहों में स्वरभक्ति महत्व पा गई है :

वस्त्र	ਵਸਤਰ	पर्व	ਪਰਬ
प्रश्न	ਪ੍ਰਸ਼ਨ	गर्म	ਗਰਮ
बर्फ़	ਬਰਫ	जन्म	ਜਨਮ
शर्म	ਸ਼ਰਮ	मन्त्र	ਮੰਤਰ
धर्म	ਧਰਮ	इन्द्र	ਇੰਦਰ
चक्र	ਚੱਕਰ	भ्रम	ਭਰਮ
पुत्र	ਪੁੱਤਰ	अर्थ	ਅਰਥ

इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं :

ਬਰਫ	∠ बर्फ	ਕਬਰ	∠ कब्र
ਦਰਦ	∠ दर्द	ਖੁਸ਼ਕ	∠ खुश्क
ਵਕਤ	∠ वक्त	ਮੁਲਕ	∠ मुल्क
ਨਰਮ	∠ नर्म	ਸੂਤਰ	∠ सूत्र
ਫ਼ਸਲ	∠ फ़सल	ਸਖਤ	∠ सख्त

ਰੁਪਿੰਦਰ	रुपिंदर	∠ रूपेंद्र	ਦੇਵਿੰਦਰ	देविंदर	∠ देवेंद्र
ਰਵਿੰਦਰ	रविंदर	∠ रवींद्र	ਸੁਰਿੰਦਰ	सुरिंदर	∠ सुरेंद्र

4. हिन्दी में व्यंजन-समूह (Cluster) अधिक हैं पंजाबी में कम। पंजाबी में जिन व्यंजन-समूहों के साथ दीर्घ स्वर आते हैं उनका उच्चारण हिन्दी का सा होता है (यदि प्रथम व्यंजन/स, श/ न हों) चाहे गुरमुखी लिपि में उन के संयुक्त रूप भली भान्ति अंकित नहीं होते :

(i)	प्रेम	ਪ੍ਰੇਮ	कर्मों	ਕਰਮਾਂ
	दीर्घीकरण	ਦੀਰਘੀਕਰਣ	शस्त्रों	ਸ਼ਸਤ੍ਰਾਂ
	वस्त्रों	ਵਸਤ੍ਰਾਂ	मन्त्री	ਮੰਤਰੀ
	प्राप्तियां	ਪ੍ਰਾਪਤੀਆਂ		
(ii)	पंद्रह	ਪੰਦਰਾਂ		
	मुस्करा	ਮੁਸਕਰਾ		

अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार और नई उच्चारण रुचि के कारण स एव श के साथ मिलकर आने वाले कई व्यंजन शब्दों के आरंभ में संयुक्त रूप में बोले जाने लगे हैं :

ਸ੍ਪੈਸਲ	ਸ੍ਕੂਲ
ਸ੍ਟੇਸ਼ਨ	ਸ੍ਕੂਟਰ
ਸ਼੍ਲੋਕ	

5.1 कुछ नई ध्वनियां

/ळ/ यह ध्वनि मराठी के /ल/ वर्ण जैसी है किन्तु साहित्यिक भाषा में इसका उपयोग कम है। पंजाबी बोल चाल में यह /ळ/ ध्वनि स्पष्ट रूप में सुनाई देती है।*

ਹਾਲੀ	हाली	अभी	ਗਲ	गल	बात
ਹਾਲ਼ੀ	हाली	हल चलाने वाला	ਗਲ਼	गल	गला
ਵਲ	वल	तरफ	ਗਲੀ	गली	गली कूचा
ਵਲ਼	वल	फेर	ਗਲ਼ੀ	गली	सूराख, घाव

5.2 /ਘ, ਝ, ਢ, ਧ, ਭ/ अर्थात /घ, झ, ढ, ध, भ/ ध्वनियाँ पंजाबी शब्दों में विशेष उच्चारण रखती हैं और सुनने में क्षीण /ह/ अथवा अरबी 'ऐन' की भान्ति होती हैं। पंजाबी में ये व्यंजन शब्द रूप में महा-प्राण

---

* 'ळ' बोलते समय जिह्वा निचले दाँतों के साथ रूकती नहीं अपितु कठोर तालू को छू जाती है।

घोष स्पर्श नहीं होते अपितु अघोप अल्प-प्राण के रूप में उचारे जाते हैं और इनके साथ आने वाले स्वर नीची उठती सुर में बोले जाते हैं, यथा :

ਘੋੜਾ	क्होड़ा	ਕੋੱੜਾ	ਧੋਖਾ	त्होखा	ਤੋੱਖਾ
ਝੋਟਾ	ज्होटा	ਚੋੱਟਾ	ਭਾਈ	प्हाई	ਪਾੱਈ
ਢੋਲ	ट्होल	ਟੋੱਲ			

*प्रायः शब्दों के मध्य में अथवा अंत में ये व्यंजन घोष अल्प–प्राण बन जाते हैं, और प्राण के स्थान पर ऊंची गिरती सुर का प्रयोग होता है :

ਬਾਘ	ਬਾ ͡ਗ	ਦੁੱਧ	ਦੁ
ਕੁਝ	ਕੁ ͡ਜ	ਸਭ	ਸ
ਸਭ	ਸ ͡ਬ		

/–ह–/ /–ह/

5.3 शब्दों के मध्य अथवा अंत में आने वाला हर व्यंजन पंजाबी में ढीले स्वर-तन्त्र के साथ उच्चारित होता है। हवा का प्रवाह कुछ तीव्र होता है, नासिका में से श्वास नहीं निकलता, मुंह का आकार आने वाले स्वरों के अनुरूप होता है, इसी लिए ऐसे /ह/ का उच्चारण पंजाबी में क्षीण सा होता है :

ਤਹਸੀਲ	ਤਸੀਲ
ਮਹਸੂਲ	ਮਸੂਲ

इसी लिए ऐसे /ह/ का स्थान ऊंची गिरती सुर /͡/ ले लेती है :

ਰਾਹੀ = ਰਾ ͡ਈ	ਨਹੀ = ਨ ͡ਈ
ਬਾਹਰ = ਬਾ ͡ਰ	ਦਹੀ = ਦ ͡ਈ

5.4 अन्तिम /–ह/ ध्वनि पंजाबी में व्यंजन रूप में नहीं रही, यह सुर और स्वर में परिवर्तित हो चुकी है। जो क्रिया-पद स्वरांत नहीं है उन के साथ /–दा/ जोड़ कर वर्तमान काल के रूप बनते हैं, यथा डरदा, करदा, नठदा, दौड़दा आदि। स्वराँत क्रिया पदों के साथ /–दा/ जोड़ा जाता है, यथा आँदा, जाँदा, सौंदा, रौंदा सूंदी आदि।

ਕਹ, ਰਹ, ਬਹ, ਸਹ यदि व्यंजनांत हों तो इन के रूप होते हैं—कहंदा,

---

* विस्तार के लिए देखिए *पंजाबी भाषा दा व्याकरण* : दुनीचंद्र, पृ. 21
पंजाबी अवाज़ाँ : डा. बनारसी दास जैन; पंजाबी दुनिया, पटियाला, अगस्त 1951; पृ. 37-38

रहंदा, वहंदा, सहंदा किन्तु प्रचलित उच्चारण के अनुसार पंजाबी लिपि में प्रायः /—ह/ की क्षीणता है और उसकी सुर को /इ/ मात्रा से व्यक्त किया जाता है—

ਕਹਿੰਦਾ,	ਰਹਿੰਦਾ,	ਬਹਿੰਦਾ,	ਸਹਿੰਦਾ
कहिंदा,	रहिन्दा,	बहिन्दा,	सहिन्दा

पंजाबी की नई वर्तनी में इन्हें यों लिखने का प्रयास हो रहा है

ਕਹੰਦਾ, ਰਹੰਦਾ, ਬਹੰਦਾ, ਸਹੰਦਾ

6. पंजाबी के कुछ शब्दों के साथ सुर-प्रयोग से अर्थों में अन्तर आ जाता है। इस लिए इन के सीखने में सावधानी की आवश्यकता है :

सिल—ईंट,	सिल्ड सिल Λ —नमी
गल—बात,	गल Λ गल्ह—गाल
मना—बात मना ले,	मन Λ आ मन्हा—वर्जित
वरना—वर प्राप्त करना,	वर Λ ना वर्हना—बरसना

7.0 निम्नलिखित शब्दों में अंतिम अक्षर पर बल होने के कारण अर्थों में अंतर पड़ गया है :

दबा	तू दबा दे	दबाअ = दबाव
हरा	सबज	हराअ = हरा दे
अटका	तू अटका दे	अटकाअ = अड़चन
तला	तलवा	तलाअ = तालाब

अंत में अ केवल उच्चारण की सुविधा के लिए लिखा गया है। प्रायः /ਤ/ /ਉ/ लिख कर भी यही अर्थ प्रकट करने का प्रयत्न होता है।

बल एवं सुरों का अभ्यास पंजाबी बोलने वालों द्वारा अथवा रेडियो पर पंजाबी सुन कर हो सकता है।

/ਅ/ /ਰ/

7.1 बलाधात वाले अक्षरों से पूर्व प्रायः /अ/ ध्वनि पूरे रूप में आती है शेष में यह क्षीण हो जाती है :

ਬਜ਼ਾਰ	बज़ार	ब् अ् ज़् आ र्
ਸਰਕਾਰ	सरकार	स् अ् र् क् आ र्
ਘਰਾਣਾ	घराणा	घ् अ् र् आ ण् आ

8. /ऍ/

कुछ पंजाबी शब्दों में जब /ए/ के पश्चात दीर्घ स्वर आते हैं तो इस

की ध्वनि कुछ निर्बल पड़ जाती है—

सेव सएँ औ

उच्चारण सिओ के निकट है, जहाँ 'से' की /ए/ को सुरक्षित रखने का प्रयत्न हुआ है उच्चारण हो गया है—से-अऊ। हिन्दी 'ले आ' पंजाबी में 'लै आ' है किन्तु प्रचलित रूप प्रायः लि-आ हो गया है। 'दे आ' द् ऍ आ जल्दी में 'दि आ' जैसा रह जाता है।

शायद 'घेई' (घी का व्यापारी) बिगड़ कर 'घई' बन गया है। चेऊ (पोठोहारी उप-भाषा में लकड़ी फाड़ने की कील) का उच्चारण च् ऐ अ, ऊ चे अ ऊ अथवा चेऊ जैसा है। कुछ शब्दों में /ए/ ध्वनि /य/ की छाया के कारण आ हो गई है—

'छेआ नित देखहु जगि हंढि'—औअंकार; गुरु नानक। छेआ ∠ क्षय = छअ, छै।

9. पंजाबी में संयुक्त व्यंजनों का समीकरण :

अग्नि	ਅੱਗ	शब्द	ਸੱਦ
अक्षा	ਅੱਖ	अद्य	ਅੱਜ
दुग्ध	ਦੁੱਧ	पुस्तक्य	ਪੋਥੀ
चक्र	ਚੱਕ	मक्षिका	ਮੱਖੀ
चर्म	ਚੰਮ	सप्त	ਸੱਤ
कर्म	ਕੰਮ	सत्य	ਸੱਚ
पृष्ठ	ਪਿੱਠ	आम	ਅੰਬ
हस्त	ਹੱਥ	ऊर्ण	ਉਨੱ
कर्ण	ਕੰਨ	अष्ट	ਅੱਠ
रक्त	ਰੱਤ		

इन शब्दों के पंजाबी रूप वास्तव में हिन्दी रूपों के पूर्वज हैं, किन्तु आज वे जीर्ण क्षीर्ण और ग्रामीण से दीखते हैं।

10.0 हिन्दी और पंजाबी के कुछ शब्दों में अनुनासिकता के कारण अंतर मौजूद है :

ਹੋਠ	होंट	ਮੁੱਛ	मूंछ
ਪਖਾ	पंखा	ਬੈਤ	बैंत
ਛਿਕ	छींक	ਵਾਚ	बांच
ਛੀਟ	छींट	ਫੂਕ	फूंक

ਛਿੱਕਾ	छींका	ਜਵਾਈ	जंवाई
ਜੋਕ	जोंक	ਪਸੇਰੀ	पंसेरी
ਘੁਟ	घूंट	ਮਾਸ	माँस
ਦਾਤ੍ਰੀ	द्राँती	ਸੇਕਣਾ	सेंकना
ਜਾਚ	जाँच	ਸਵਾਰਨਾ	संवारना
ਤੂਰਤ	तुरंत		

10.1 पंजाबी के कुछ शब्दों में अतिरिक्त अनुनासिक ध्वनियाँ भी प्रयुक्त हैं जो हिन्दी वालों को विचित्र लगती हैं :

ਹੌਂਸਲਾ	हौसला	ਪਾਂਧਾ	पाधा (उपाध्याय)
ਮੁੱਲਾਂ	मुल्ला	ਤੂੰ	तू
ਚੌਂਕ	चौक	ਕਾਂ	काक, कव्वा
ਰੁੰ	रुई		

पंजाबी में ण, न, म के साथ आने वाले स्वर प्रायः अनुस्वार रखते हैं, यद्यपि लिखने में इसे अंकित नहीं किया जाता, पुरानी पाण्डुलिपियों में बिन्दु /ˉ/ का चिह्न लिखा मिलता है :

राम	रांम	पाणी	पाणीं
शाम	शांम	नाना	नांनां
सुफना	सुफनाँ	मामा	माँमाँ
जाणा	जांणां		

11.0 राजस्थानी की भान्ति पंजाबी में /ण/ ध्वनि काफी प्रिय ध्वनि है। इसी लिए हिन्दी और पंजाबी के कुछ शब्दों में अन्तर पड़ गया है :

अनजान	ਅਣਜਾਣ	कौन	ਕੌਣ
कनक	ਕਣਕ	घना	ਘਣਾ
कहानी	ਕਹਾਣੀ	चाटना	ਚੱਟਣਾ

11.1 ब्रज और हिन्दी में /ण/ एवं /न/ परस्पर बदल जाते हैं और उन के अर्थों में कोई अंतर नहीं आता, किन्तु पंजाबी में अर्थों में भी कई बार अंतर पड़ जाता है :

ਪਾਨ	बीडा	ਮੀਨਾ	छाती
ਪਾਣ	मावा	ਮੀਣਾ	कपड़े सीना
ਕਾਨਾ	सरकंडा	ਮਨ	मन
ਕਾਣਾ	एकाक्ष	ਮਣ	40 सेर

12.0 /य/ ध्वनि केवल आरम्भ में पूरी तरह बोली जाती है, जैसे /यार/ ਯਾਰ /यक्का/ ਯੱਕਾ /यकीन/ ਯਕੀਨ; किन्तु ऐसे शब्द पंजाबी में बहुत कम हैं। प्राकृत और अपभ्रंश काल में /य/ की ध्वनि /ज/ जैसी हो गई थी ਜੁਗਤੀ जुगती ∠ युक्ति; ਜਤਨ, जतन ∠ यत्न; ਜੰਦ੍ਰਾ जंद्रा ∠ यंत्र; ਬੀਜ बीज ∠ वीर्य; ਧੀਰਜ धीरज ∠ धैर्य; कारज ਕਾਰਜ ∠ कार्य; ਜਸ जस ∠ यश; ਅੱਜ अज्ज ∠ अद्य; ਜਾਂ जा ∠ या

12.1 शब्दों के मध्य में अथवा अंत में /य/ ध्वनि प्रायः /इ/, /ए/ अथवा /ऐ/ का स्थान ले लेती है अन्यथा मूक हो जाती है :

न्याय	ਨਿਆਂ	अध्याय	ਅਧਿਆਇ
भाग्यवान	ਭਾਗਵਾਨ	अवश्य	ਅਵਸ਼
अध्यापक	ਅਧਿਆਪਕ	समय	ਸਮਾਂ
कन्या	ਕਨਿਆ	व्याकरण	ਵਿਆਕਰਣ
व्यंजन	ਵਿਅੰਜਨ	सभ्यता	ਸਭਿਅਤਾ
अभ्यास	ਅਭਿਆਸ	वाक्य	ਵਾਕ
क्रिया	ਕ੍ਰਿਆ	क्यों	ਕਿਉਂ
विषय	ਵਿਸ਼ਾ	निश्चय	ਨਿਸ਼ਚਾ
नित्यनियम	ਨਿਤਨੇਮ	सहायता	ਸਹਾਇਤਾ
नयन	ਨੈਣ	जय	ਜੈ
परिचय	ਪਰਿਚੈ	पानीय	ਪਾਣੀ
भारतीय	ਭਾਰਤੀ	देशीय	देसी

12.2 /य़/ अर्थात य की संध्वनि पंजाबी में सुनाई देती है। संयुक्त य विरले ही बच रहा है। कहिय़ा में (या) जैसी ध्वनि है वरन् प्यार तो पंजाबी में पिआर लिखा जाता है। अन्य उदाहरण देखिये :

ਲੁਧਿਆਣਾ	लुध्याना	ਹੋਸ਼ਿਆਰਪੁਰ	होशियारपुर
ਹਥਿਆਨਾ	हथियाऩा	ਅੜੀਅਲ	अड़ियल
ਡਾਕੀਆ	डाकिया	ਧਨੀਆ	धनिया
ਮੁਖੀਆ	मुखिया	ਕਵੀਓ	कवियो
ਲੜਕੀਓ	लड़कियो	ਨਾਇਕ	नायक
ਸਹਾਇਕ	सहायक	ਧਿਆਨ	ध्यान
ਵਿਅੰਜਨ	व्यंजन	ਵਿਅਰਥ	व्यर्थ
ਤਿਆਗ	त्याग्र	ਵਿਆਕਰਣ	व्याकरण

ਵਪਾਰ	व्यापार	ਸੁਵਾਸਥ	स्वास्थ्य
ਪਿਆਰ	प्यार	ਵਿਅਕਤੀ	व्यक्ति
ਗੱਦ	गद्य	ਪੱਦ	पद्य
ਧੰਨ	धन्य	ਮੁੱਲ	मूल्य
ਕਰਤੱਵ	कर्तव्य	ਕਾਵਿ	काव्य
ਦ੍ਰਿਸ਼	दृश्य	ਮੱਧ	मध्य
ਪੁੱਨ	पुण्य	ਉੱਦਮ	उद्यम
ਤੌਲੀਆ	तौलिया	ਦਲੀਆ	दलिया
ਭਾਗ	भाग्य	ਸਾਹਿਤ	साहित्य
ਛਾਇਆ	छाया	ਮਾਇਆ	माया
ਕਾਇਆ	काया		

13.0 किसी शब्द के आरम्भ में दोनों अक्षर जब दीर्घ स्वर वाले हों और अंतिम अक्षर प्रतिबद्ध हों तो पंजाबी उच्चारण प्रथम अक्षर का स्वर ह्रस्व कर देता है :

आकाश	ਅਕਾਸ਼	सामान	ਸਮਾਨ
आसमान	ਅਸਮਾਨ	रूमाल	ਰੁਮਾਲ
नाराज़	ਨਰਾਜ਼	ईरान	ਇਰਾਨ
पायजामा	ਪਜਾਮਾ		

13.1 पंजाब में पालि आदि प्राकृतों का वह उच्चारण प्रचलित रहा जिस में द्वित्य व्यंजन (दीर्घ व्यंजन) अधिक प्रयुक्त होते थे। इस कारण से भी दीर्घ स्वर ह्रस्व हो गए हैं :

तिक्खा, तीखा; थप्पणा, थापना; टिक्का, टीका; आदि

14.1 पंजाबी के कुछ शब्द वास्तव में बहुत पुराने हैं। ब्रज भाषा ने उन्हें दीर्घ स्वरों से जो नए रूप दिए वे हिन्दी में अधिक प्रचलित हो गए हैं किन्तु उन के पुराने रूप हरियानवी, राजस्थानी, लहंदी और पंजाबी में सुरक्षित रहे हैं :

ਅੱਗੇ	आगे	ਅੱਧ	आध
ਉੱਚਾ	ऊंचा	ਤਿੱਖਾ	तीखा
ਮਿੱਠਾ	मीठा	ਫਿੱਕਾ	फीका
ਬੁੱਢਾ	बूढ़ा	ਭੁੱਖਾ	भूखा
ਮੱਥਾ	माथा	ਮੁੱਨਣਾ	मूण्डना

ਸਿੱਖਣਾ	सीखना	ਸੁੱਕਣਾ	सूखना
ਰੁੱਖਾ	रूखा	ਕੁੱਬਾ	कूबड़ा

14.2 इसी प्रवृति के कारण हिन्दी पंजाबी के कई और शब्द भी विभिन्न हो गए हैं :

ਘੁੱਮਣਾ	घूमना	ਚੱਟਣਾ	चाटना
ਛਿੱਲਣਾ	छीलना	ਛੁੱਟਣਾ	छूटना
ਟੁੱਟਣਾ	टूटना	ਥੱਪਣਾ	थापना
ਪੁੱਛਣਾ	पूछना	ਲੁੱਟਣਾ	लूटना
ਲਿੱਪਣਾ	लीपना	ਸੁੰਘਣਾ	सूंघना, आदि

14.3 अ > आ; इ > ई; उ > ऊ

ਅੱਕ	आक	ਕਿੱਕਰ	कीकर	ਗਜਰ	गूजर
ਕੱਮ	काम	ਤਿੱਤਰ	तीतर	ਗੁੱਦੜ	गूदड़
ਖੰਡ	खाँड	ਪਿੱਠ	पीठ	ਥੁੱਕ	थूक
ਖੱਲ	खाल	ਚਿੱਕੜ	चीकड़	ਧੁੱਪ	धूप
ਛੱਜ	छाज	ਨਿੱਮ	नीम	ਮੁੱਲ	मूल
ਜੱਟ	जाट	ਰਿੱਛ	रीछ	ਮੁੰਜ	मूंज
ਝੱਗ	झाग	ਸਿੰਗ	सींग	ਮੁੰਗ	मूंग
ਪੱਗ	पाग	ਗਿੱਦੜ	गीदड़		

14.4 आ इ > ऐ

नाइन	ਨੈਣ
विलाइत	ਵਲੈਤ
लाइक	ਲੈਕ
डाइन	ਡੈਣ
रायता	ਰੈਤਾ
सौदाइन	ਸੁਦੈਣ
कसाइन	ਕਸੈਣ

15.0 /व/ ध्वनि पंजाबी शब्दों के मध्य और अंत में क्षीण पड़ गई है इस लिए इसे /उ/ द्वारा अधिक लिखा जाता है यद्यपि उच्च पंजाबी में तत्सम रूप भी प्रचलित है :

स्वाद	स् उ अ ा द	= सुआद	ਸੁਆਦ
स्वास	स् उ अ ा स	= सुआस	ਸੁਆਸ

स्वरग	स् उ र ग	= सुरग	ਸੁਰਗ
अवगुण	अ उ गु ण	= औगुण	ਔਗੁਣ
अवसर	अ उ स र	= अउसर	ਅਉਸਰ
अवतार	अ उ त ा र	= अउतार	ਅਉਤਾਰ
पवन	प उ न	= पउन	ਪਉਨ

15.1 नए रूप :

बहाव	ब ह ा ऽ	ਬਹਾ	ਬਹਾਉ
पड़ाव	प ड़ ा व ऽ	ਪੜਾ	ਪੜਾਉ

15.2 अंतिम /उ/ स्वर या तो दीर्घ हो गया है अथवा लुप्त हो गया है :

दयालु	ਦਿਆਲ	ਦਿਆਲੂ
कृपालु	ਕ੍ਰਿਪਾਲ	ਕ੍ਰਿਪਾਲੂ
प्रभु	ਪ੍ਰਭ	ਪ੍ਰਭੂ
साधु	ਸਾਧ	ਸਾਧੂ
गुरु	ਗੁਰ	ਗੁਰੂ
श्रद्धालु	—	ਸ਼ਰਧਾਲੂ
वस्तु	ਵਸਤ	ਵਸਤੂ

/व/

16.0 पंजाबी के कई शब्दों में पुरातन /व/ ध्वनि का उच्चारण आरम्भ में प्रचलित है जब कि हिन्दी में वह प्रायः /ब/ हो चुका है। तुलना के लिए देखिए :

ਵਾਲ	बाल	ਵਿਸ	बिस	ਵਿਕਾਊ	बिकाऊ
ਵੇਚਣਾ	बेचना	ਵਟੀ	बटी	ਵੇਸਣ	बेसन
ਵਸਣਾ	बसना	ਵਰ੍ਹਾ	बरस	ਵੱਡਾ	बड़ा
ਵੰਡਣਾ	बांटना	ਵਸਣਾ	बसना	ਵੈਰੀ	बैरी
ਵਹਾਉਣਾ	बहाना	ਵਲ	बल	ਵਡਿਆਈ	बड़ाई
ਵਣਜਾਰਾ	बनजारा	ਵਾਟ	बाट	ਵਾਲੀਆਂ	बालियां
ਵਛੇਰਾ	बछेरा	ਵਾੜ	बाड़	ਵਰਤਾਵਾ	बरताव
ਵਾਚਣਾ	बांचना	ਵਾੜੀ	बाड़ी	ਵਧਣਾ	बढ़ना
ਵਿਗਾਰ	बेगार	ਵਾਣ	बाण	ਵਰਤ	बरत
ਵਿਛੜਨਾ	बिछड़ना	ਵੇਲ	बेल	ਵਿਸਰਨਾ	बिसरना
ਵਿਆਹ	ब्याह	ਵਾਗ	बाग	ਵਿਚ	बीच

ਵੇਲਣਾ	बेलना	ਵਿਚਾਰਾ	बिचारा	ਵੱਟਾ	बटा
ਵਪਾਰ	ब्योपार	ਵਾਰੀ	बारी	ਵਿਆਜ	व्याज
ਵਧਾਈ	बधाई	ਵਦਾਮ	बादाम	ਵਿਸਾਖ	बिसाख

16.1 हिन्दी की अन्तिम /–व/ ध्वनि प्रायः पंजाबी में सुस्थिर नहीं रही। वह उ, आ, ओ, औ ध्वनियों में बदल गई है :

ਬਚਾਅ	बचाव	ਝੁਕਾਅ	झुकाव	ਬਹਾ	बहाव
ਦਬਾਅ	दबाव	ਭਾਅ	भाव	ਸੁਭਾਉ	स्वभाव
ਪੜਾਅ	पड़ाव	ਪਾ,ਪਾਈਆ	पाव	ਪੁਲਾਉ	पुलाव
ਔਗੁਣ	अवगुण				

16.2 पंजाबी शब्दों के मध्य में भी कहीं कहीं /व/ का रूप /औ/ अथवा /औ/ हो गया है :

पेवंद	ਪਿਓਂਦ	केवड़ा	ਕਿਓੜਾ
देवरानी	ਦਿਓਰਾਨੀ, ਦਿਰਾਣੀ	कड़वा	ਕੌੜਾ
बावला	ਬੌਰਾ	रेवडी	ਰਿਓੜੀ

16.3 /व़/ की संध्वनि भी पंजाबी में मिलती है :
जुआ़र (ज्वार) दुआ़र (द्वार) जुआ़न (ज्वान, जवान), कुआ़र्टर (कुवार्टर)

17.0 स ∠ ह*

कैसा	ਕੇਹਾ	पलास	ਪਲਾਹ
कोस	ਕੋਹ	पीसना	ਪੀਹਣਾ
ससुर	ਸੌਹਰਾ	बीस	ਵੀਹ
जैसा	ਜੇਹਾ	पचास	ਪੰਜਾਹ
बरस	ਵਰ੍ਹਾ	दस	ਦਾਹ
तीस	ਤੀਹ	रोस	ਰੋਹ
घास	ਘਾਹ	सरसों	ਸਰ੍ਹੋਂ

17.1 स, ह के निम्नलिखित दोनों रूप प्रचलित हैं :

विष	ਵਿਸ	ਵਿਹੁ
पाश	ਫ਼ਾਂਸੀ	ਫਾਹੀ
निश्चय	ਨਿਸਚਾ	ਨਿਹਚਾ
	ਉਸਦਾ	ਉਹਦਾ

* ह ध्वनि इस परिस्थिति में प्रायः सुर का रूप धारण कर गई है। ਇੱਕੀ (इकीस), ਬਾਈ (बाईस), ਚੱਵੀ (चौबीस) में सुर भी लुप्त है।

ਇਸਦਾ	ਇਹਦਾ
ਕਿਸਦਾ	ਕਿਹਦਾ*
ਤੁਸਾਡਾ	ਤੁਹਾਡਾ
ਕਾਸਨੂੰ	ਕਾਹਨੂੰ
ਦਿਸਦਾ	ਦੀਹਦਾ

कुछ अन्य हिन्दी शब्दों के पंजाबी रूप :

18.	तागा	ਧਾਗਾ	बुआ	ਭੂਆ
	पहचान	ਪਛਾਣ	मथानी	ਮਧਾਣੀ
	कड़वा	ਕੌੜਾ	मरहम	ਮਲ੍ਹਮ
	बहन	ਭੈਣ	मुआ	ਮੋਇਆ
	कीचड़	ਚਿੱਕੜ	मुहताज	ਮੁਥਾਜ
	और	ਹੋਰ	तू	ਤੂੰ
	बटलोई	ਵਲਟੋਈ	लेन	ਲੈਣਾ

19. /र/ का अतिरिक्त प्रयोग :

ਚਾਤ੍ਰਿਕ	चातक	ਤਰਸੱਲੀ	तसल्ली
ਸ੍ਰਾਪ	शाप	ਫਰਨੈਲ	*फीनाइल
ਤ੍ਰਕਲਾ	तकला	ਸਰਨਾਟਾ	सन्नाटा
ਕਲਬੂਤਰ	कबूतर	ਕੌਰੜਾ	कौड़ा
ਤ੍ਰਿਖਾ	तीखा	ਕਰੜਾ	कड़ा

20. मध्य में अतिरिक्त (–इ–) का प्रयोग :

ਬੁਰਿਆਈ	बुराई	ਸੁਨਿਆਰ	सुनार
ਇੱਛਿਆ	इच्छा	ਚਮਿਆਰ	चमार
ਭਿਖਿਆ	भिक्षा	ਨਿੰਦਿਆ	निंदा
ਮਿਠਿਆਈ	मिठाई	ਖਟਿਆਈ	खटाई
ਸਿਖਿਆ	शिक्षा	ਚੰਗਿਆਈ	भलाई
ਭਲਿਆਈ	भलाई	ਚਿੰਗਿਆੜੀ	चिंगारी

21.0 पंजाबी में /ई + आ/ को /इया/ रूप में लिखा नहीं जाता इस लिए

---

* ਕਾਹਦਾ

* Phonyl, इसी प्रकार Dozen डज़न से बना 'दर्जन' शब्द जो अनेक भारतीय भाषाओं में प्रचलित है इस में भी अतिरिक्त /र/ प्रयुक्त

वर्तनी में अंतर है :

लड़की	ਲੜਕੀ	बच्चियां	ਬੱਚੀਆਂ
लड़कियां	ਲੜਕੀਆਂ	बस्तियां	ਬਸਤੀਆਂ, ਆਦਿ
खिड़कियां	ਖਿੜਕੀਆਂ		

21.1 बहुवचन के लिए क्रिया-पद भी उसी शैली में लिखे जाते हैं :

ਕਰਦੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਚਲਦੀਆਂ ਆਦਿ

21.2 विशेषण भी बहुवचन में वही रूप रखते हैं :

प्यासा	ਪਿਆਸਾ	ਪਿਆਸੀਆਂ
प्यारा	ਪਿਆਰਾ	ਪਿਆਰੀਆਂ
गया	ਗਿਆ, ਗਇਆ	ਗਈਆਂ
रहा	ਰਹਿਆ, ਰਿਹਾ	ਰਹੀਆਂ
आया	ਆਇਆ	ਆਈਆਂ

22. गुरमुखी लिपि में संयुक्त वर्णों को लिखने की परिपाटी पूरी तरह नहीं चली। कई शब्दों का उच्चारण हिन्दी और पंजाबी में एक जैसा है किन्तु उनकी लिखाई में अंतर है :

ਅਵਸਥਾ	अवस्था	ਆਗਿਆ	आज्ञा
ਪਰਮਾਤਮਾ	परमात्मा	ਗਿਆਨ	ज्ञान
ਵਿਸ਼ਵਾਸ	विश्वास	ਗਇਆ	गया
ਵਿਦਵਾਨ	विद्वान	ਸ਼ਸ੍ਤ੍ਰ*	शस्त्र
ਕੁਸ਼ਤੀ	कुश्ती	ਸਨਿਆਸੀ	सन्यासी
ਕਿਆਰੀ	क्यारी	ਸ਼ਾਸਤ੍ਰ	शास्त्र
ਚਰਬੀ	चर्बी	ਸਪਸ਼ਟ	स्पष्ट
ਕੁਰਸੀ	कुर्सी	ਜਿਉਂ	ज्यों
ਦਰਜੀ	दर्जी	ਕ੍ਰਿਪਾਣ	कृपाण
ਦਰਜਨ	दर्जन	ਮਰਿਅਲ	मरियल
ਹਲਦੀ	हल्दी	ਬਕਸੂਆ	बकसुआ
ਜਲਦੀ	जल्दी	ਮੋਤੀਆ	मोतिया बिंद
ਵਰਦੀ	वर्दी	ਸਰਵੱਗ	सर्वज्ञ
ਆਰਥਿਕ	आर्थिक		

---

* हलन्त / ੍ / चिह्न द्वारा शब्दों का शुद्ध रूप भी दिया जा सकता है, यथा—ਸ੍ਪਸ਼੍ਟ; ਸ਼ਾਸ੍ਤ੍ਰ, ਵਿਸ਼੍ਵਾਸ, ਪਰਮਾਤ੍ਮਾ ਆਦਿ

द्वित्व व्यंजन

23. (i) महाप्राण ध्वनियों के द्वत्व रूप पंजाबी में केवल दीर्घ दिखाए जाते हैं अधिक चिह्न (˘) द्वारा; किन्तु हिन्दी में वैज्ञानिक उच्चारण के अनुसार वर्तनी विभिन्न है :

ਅੱਛਾ	अच्छा	ਬੱਘੀ	बग्घी
ਚਿੱਠੀ	चिट्ठी	ਬੁੱਢਾ	बुड्ढा
ਝੱਝਰ	झज्झर	ਬੁੱਧੂ	बुद्धू
ਪੱਥਰ	पत्थर		

(ii) हिन्दी में प्रायः शब्दों का अन्त द्वित्व व्यंजनों के साथ नहीं होता, पंजाबी में द्वित्व व्यंजन राजस्थानी की भान्ति प्रचलित हैं और वे शब्दों के अन्त में भी आते हैं :

सच्च, सत्त, अट्ठ, गप्प, इट्ट, अग्ग, पुत्त
ਸੱਚ, ਸੱਤ, ਅੱਠ, ਗੱਪ, ਇੱਟ, ਅੱਗ, ਪੁੱਤ, आदि

(iii) कुछ शब्दों में अतिरिक्त द्वित्व भी वर्तमान हैं :

पीता, पीत्ता (पिया), सीता, सीत्ता (सिया),
कीता, कीत्ता (किया), गूठा, गूट्ठा (अगूठा),
पोथा, पोत्था (पुस्तक), आदि

'लम्बा, सच्चा, बिच्छू, पक्का, कच्चा, कप्पड़, कुप्पा, गुड्डा, चद्दर' जैसे अनेक पंजाबी शब्द हिन्दी में प्रचलित हो चुके हैं।

24. अरबी फ़ारसी द्वारा उर्दू में प्रचलित अक्षर-विचार बताता है कि प्रत्येक अक्षर व्यंजन से आरंभ होता है, किन्तु बड़ा (बड़-आ), लिखाई (लिख-आ-ई) आदि में कई अक्षर स्वर से आरंभ होते हैं। इसी प्रकार पंजाबी में लिखिआ का उच्चारण 'लिख-ए-आ' अक्षरों का सा है।

अक्षर-खण्ड

25. अक्षर (syllable) की बांट हिन्दी के समान पंजाबी में भी स्वर के अनुसार निश्चित हो सकती है किन्तु पंजाबी के बहुत से शब्द जो अकारांत लिखे जाते हैं वास्तव में व्यंजनांत हैं :

ਰਾਮ = ਰਾਮ੍ ਬ + ਟਣ੍ = ਬਟਣ
ਪੀਰ = ਪੀਰ੍ ਬਰ੍ + ਕਤ੍ = ਬਰਕਤ

ਭੈਣ = ਭੈਣ੍ ਕੀ + ਮਤ੍ = ਕੀਮਤ

ਗਲ = ਗਲ੍ ਤੀ + ਰਥ੍ = ਤੀਰਥ

ਬਾਲਟੀ = ਬਾਲ੍ਟੀ

ਕਰ੍ + ਦਾ ਦੋ ਅੱਖਰ ਹਨ, ਤਿੰਨ (ਕ + ਰ + ਦਾ) ਨਹੀਂ

बल प्रयोग

26.0 प्रायः पंजाबी में प्रेरणार्थक धातु के अंतिम अक्षर पर बल पाया जाता है :

हटा ਹਟਾ बणा ਬਣਾ भरा ਭਰਾ

बिठाल ਬਿਠਾਲ सिखाल ਸਿਖਾਲ

26.1 कुछ संज्ञाओं के अंतिम अक्षर पर भी बल आता है :

सज़ा ਸ'ਜ਼ਾ सरां ਸ'ਰਾਂ तला ਤ'ਲਾ बला ਬ'ਲਾ

26.2 उपांत अक्षरों पर बल :

लेखा 'ਲੇ-ਖਾ दुचित्ता ਦੁ'ਚਿੱਤਾ कड़ा 'ਕ-ੜਾ

सौदा 'ਸੌ-ਦਾ पतासा ਪ-'ਤਾਸਾ पुराणा ਪੁ-'ਰਾ-ਣਾ

बटेरा ਬ'ਟੇ-ਰਾ झोली 'ਝੋ-ਲੀ तमाशा ਤਮਾ'ਸ਼ਾ

26.3 जब बलाघात वाला स्वर पहले आता है और बलाघात-विहीन स्वर बाद में आता है तो पंजाबी में ण, ल, ड़ एवं र व्यंजनों के अतिरिक्त प्रायः अन्य व्यंजन द्वित्व हो जाते हैं, यथा :

माल्ली, माली, तुहान्नू, तुहानूं, बल्लना, बलना

किसी शब्द के अक्षर पर जो बलाघात होता है वह प्रायः सभी विकारों और प्रयोगों में सुरक्षित रहता है जैसे—

दस्स (बता) दस्सेगा, दस्सिआ, दस्सदीआं हन (बताती है), आदि

27. उच्चारण में कुछ निर्बल ध्वनियों का लोप :

ਅਵਾਜ਼ ਵਾਜ਼ ਅਤੇ ਤੇ

ਅਕਾਲ ਕਾਲ ਅਸਾਨੂੰ ਸਾਨੂੰ

ਇਕੱਲਾ ਕੱਲਾ ਅਸਾਡਾ ਸਾਡਾ

ਇਕੱਠਾ ਕੱਠਾ

विवृति

28. पंजाबी में भी विवृति के कारण अर्थों में अन्तर पड़ जाता है। इस लिए उच्चारण के समय इस ओर भी ध्यान रखना चाहिए :

1. ਫੁਲ ਦੀ ਕਲੀ; ਫੁਲਦੀ ਕਲੀ
2. ਖਾ ਕੇ ਆਏ; ਖਾਕੇ ਆਏ
3. ਰੋਕੋ ਮਤ, ਜਾਣ ਦਿਓ; ਰੋਕੋ, ਮਤ ਜਾਣ ਦਿਓ

29. खड़ी बोली का जो रूप घग्घर नदी एवं यमुना के बीच प्रचलित है उस का उच्चारण दूर तक पंजाबी उच्चारण से समानता रखता है, यद्यपि लिखित रूप विभिन्न है :

    बड्डा, मठाई, कट्ठा, अपणा, केहा, सुणना, खोवण, बलद, बाप्पू

30. आज की हिन्दी बहुत दूर तक तत्सम शब्दावली से आक्रौंत दीखती है किन्तु पंजाबी में तद्भव शब्दों* को पुरानी परम्परा अपने स्वाभाविक रूप में विद्यमान है और पंजाबी भाषा को जन-भाषा के अधिक निकट रखे हुए है, यथा :

मनुख	मनुष्य	अदुती	अद्वितीत
अक्खर	अक्षर	उडीक	उत्-ईक्ष

31. अंग्रेजी आदि कई भाषाओं में बाह्य (होंठ द्वारा) और आन्तरिक (कोमल तालु तथा जिह्वा द्वारा) दोनों प्रकार की गोलाई बनती है। इस लिए उन की स्वर ध्वनियों में कुछ न कुछ अन्तर होता है। पंजाबी की विशेषता है कि उस में केवल आंतरिक गोलाई होती है :

College	कॉ	बाह्य गोलाई
कोस	को	आंतरिक गोलाई

---

* हिन्दी को तत्सम के मोह के कारण संयुक्त क्रियाएं अधिक अपनानी पड़ी हैं, जबकि पंजाबी में वे साधारण हैं।

संयुक्त रूप	सामान्य रूप	संयुक्त रूप	सामान्य रूप
प्रतीक्षा करना	ਉਡੀਕਣਾ	श्रृंगार करना	ਸ਼ਿੰਗਾਰਨਾ
समाप्त होना	ਮੁਕਣਾ	बीज बोना	ਬੀਜਣਾ
आरम्भ होना (करना)	ਅਰੰਭਣਾ	नशे में आना	ਨਸ਼ਿਆਉਣਾ
वध करना, कत्ल करना	ਵਢਣਾ	स्थापित करना	ਥਾਪਣਾ
दाखिल होना	ਵੜਨਾ	त्रास करना	ਤ੍ਰਹਣਾ, ਤ੍ਰਠਣਾ
आंगन में प्रवेश करना	ਵੇਹੜੇ ਵੜਨਾ		

अत : पंजाबी का स्वर त्रिकोण यह है :
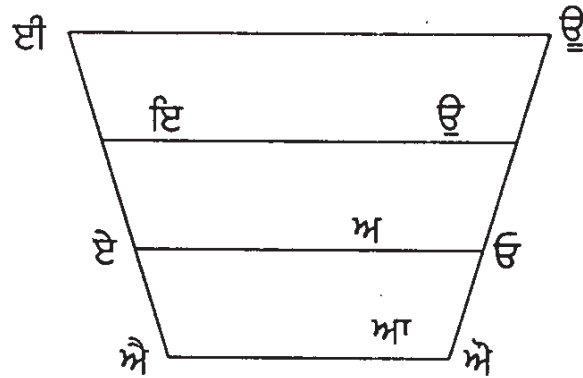
पंजाबी में ऐ और औ संयुक्त स्वर (dipthongs) हैं, अर्थात् अ–ए, अ–औ। पंजाबी 'तैर' में संयुक्त स्वर कुछ धीमा सा है। हिन्दी के तैर में लम्बी (ऐ) ध्वनि है 'त ए र' की भान्ति उच्चरित होती है।
हिन्दी में पैसा प्रायः 'प ए सा' की भान्ति सुनाई देता है, पंजाबी में 'प अ सा' की भान्ति।

32. वाक्य सुर-लहरी :

पंजाबी वाक्य सुर का केन्द्र आगे की ओर है और इस की गति प्राय सम और विराम सहित है।* यदि अंग्रेजी लहजे में पंजाबी का वाक्य पढ़ा जाए तो उस के समझने में अड़चन पड़ सकती है।

बलाघात, स्वर भक्ति, सुर और विशेष चढ़ाव उतार के कारण पंजाबी लहजा हिन्दी से विभिन्न प्रतीत होता है किन्तु प्रश्न, विस्मय आदि भावों के प्रकट करने में लहजा समान है।

व्यंजनों के स्थान और वाक्य की लय के कारण उच्चारण का अन्तर देखिए :

किन्ने पैसे?
'सत्त'
किन्तु 'सत वजे आइआ'
दो कि इक्क?
'इक्क'
किन्तु 'इक वेले आइआ'

---

* 'The Punjabi intonation is characterized by a level and staccato movement and the front focus of tone.'—Cummings; *Punjabi Manual and Grammar*, p. 22.

ਪੰਜਾਬੀ ਲਹਜਾ
ਅਰ ਜਨ ਦਾਸ ! ਆ ਕੇ ਮਿ ਲੋ ਜੀ
ਇਹ ਨੇ ਮੇ ਰੇ ਮਿਤ੍ਰ ਤਰ ਹਰੀ ਸ਼ ਚੰ ਦਰ
ਇ ਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲ ਕੇ ਬ ਹੁ ਤ ਖ਼ੁ ਸ਼ੀ ਹੋ ਈ
ਏਹ ਪ ਹ ਲੀ ਵੇ ਰ ਇ ਥੇ ਆ ਏ ਨੇ ?
ਨਹੀਂ ਸਤ ਸਾਲ ਪ ਹ ਲਾਂ ਵੀ ਇ ਥੇ ਆ ਇਆ ਸਾਂ
ਪਰ ਹੁਣ ਤਾਂ ਸ਼ ਹਰ ਬਦ ਲ ਚੁ ਕਾ ਹਾਂ
ਹਾਂ ਜੀ ਤੁ ਹਾ ਡਾ ਘਰ ਕਿ ਥੇ ਹੈ ?
ਮੇ ਰਾ ਘਰ ਜ ਲੰ ਧਰ ਹੈ
ਕੀ ਤੁ ਸੀ ਕ ਦੇ ਉ ਥੇ ਗਏ ਓ ?
ਹਾਂ ਜੀ ਮੁ ਦ ਤਾਂ ਹੋ ਈ ਆਂ ਜ ਦੋਂ ਗ ਇ ਆ ਸਾਂ

खण्ड 3

पंजाबी लिखना सीखिए

सुन्दर और स्पष्ट लिखाई रचना को रोचक और सुगम बनाती है। सीधी, आडी, वक्र, गोल और मिश्रित रेखाओं के आधार पर वर्ण लिखने का अभ्यास करना आवश्यक है। इसी लिए इस भाग के सात पाठों में गुरमुखी वर्णमाला सीखने के लिए वैज्ञानिक विधि का प्रयोग किया गया है।

1. सीधी, आड़ी और मृदुवक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण।
2. ढलती वक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण।
3. सपूर्ण ढलती वक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण।
4. मिश्र वक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण।
5. आगे पीछे दोनों ओर वक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण।
6. गोल वक्र रेखाओं पर आधारित वर्ण।
7. गोल वक्र मिश्रित रेखाओं पर आधारित वर्ण।

पाठ 1

लिखिएगा :

ਗੰਗਾ ਰਾਮ ! ਹਸ ਹਸ ਗਾ।

ਸਾਗਰ ਸ਼ਾਹ ! ਰਾਗ ਗਾ।

ਸਾਰਾ ਸਾਗ ਮੰਗਾ।

ਗਰਮ ਗਰਮ; ਰਗ ਰਗ; ਹਸ ਰਸ;

ਸਾਗ; ਸਾਗਰ। ਹਰ ਹਰ। *ਰਾਮ ਰਾਮ

ਹਸ ਹਸ	हंस हंस कर	ਹਸ ਰਸ	प्रसन्नता से

इन वाक्यों को गुरमुखी लिपि में लिखिए :

गंगा राम ! गागर मंगा !

सागर शाह ! राम राम गा !

साग गरम गरम मंगा !

हर हर गा, राम राम गा !

हां, हां। हस हस गा !

ਪਾਠ 2

लिखिएगा :

ਹੱਥ ਪੈਰ ਮਾਰ ! ਖ਼ੈਰ ਖ਼ੈਰ ਮੰਗ !

ਖੇਸ ਹਰਾ ਹਰਾ ਰੰਗਾ! ਹਰਾ ਧਾਗਾ ਮੰਗਾ !

ਰਾਮ ਆਸਰਾ ! ਹਰ ਹਰ ਆਖ !

ਸਾਗਰ ਸਾਗਰ ! ਸਾਥ ਸਾਥ ਆ !

ਅੱਗ ਹੈ, ਪੱਖਾ ਮਾਰ !

ਹੱਥ	हाथ	ਮੰਗਾ	मंगवा	ਅੱਗ	आग
ਮੰਗ	मांग	ਆਖ	कह	ਪੱਖਾ	पंखा

गुरमुखी लिपि में लिखिए :

अम्मां ! हार पा !

धारी राम ! मगर मगर आ !

पैर पसार, सौखा सौं !

राम रखा ! साग खा !

सारा धागा हरा हरा रंगा !

---

* 'ਗ' लिखते हुए सावधानी की आवश्यकता है। यदि पाई की लम्बाई कम रह गई और कुछ अंतर पर लिखी गई तो यह 'ਰਾ' अर्थात् 'रा' पढ़ा जाएगा।

पिछले पाठ को यों लिखना चाहिए था :

ਗੰਗਾ ਰਾਮ ! ਗਾਗਰ ਮੰਗਾ !
ਸਾਗਰ ਸ਼ਾਹ ! ਰਾਮ ਰਾਮ ਗਾ !
ਸਾਗ ਗਰਮ ਗਰਮ ਮੰਗਾ !
ਹਰ ਹਰ ਗਾ, ਰਾਮ ਰਾਮ ਗਾ !
ਹਾਂ ਹਾਂ ! ਹਸ ਹਸ ਗਾ !

ਪਾਠ 3

ਰੂਪ ਰੰਗ	ਰਗੜਾ ਝਗੜਾ	ਮੋੜ ਤੋੜ	ਡਰ ਖਤਰਾ
रूप रंग	रगड़ा झगड़ा	मोड़ तोड़	डर खतरा
ਹੱਡ ਪੈਰ	ਸੁਖ ਸਾਂਤ	ਮਾਰ ਧਾੜ	ਮੂੰਹ ਮੱਥਾ
हड्ड पैर	सुख सांत	मार धाड़	मूंह मत्था

लिखिएगा :

ਸੁਆਹ ਮਤ ਉਡਾ ! ਸੱਪ ਹੈ, ਤੁਰਤ ਡੰਡਾ ਮਾਰ !
ਸੁਖ ਸਾਂਤ ਰਖ ! ਝੱਗੜਾ ਰਗੜਾ ਰੋਗ ਹੈ !
ਝੰਗੂ ਰਾਮ ! ਹੋਰ ਗੁੜ ਮਤ ਖਾ ! ਧੂੜ ਝਾੜ, ਮੂੰਹ ਹੱਥ ਧੋ !
ਰੁੱਖਾ ਖਾ, ਮਾੜਾ ਪਾ, ਧਰਮ ਮਤ ਹਾਰ !

ਹੱਡ	हड्डी	ਸੱਪ	सांप	ਧੂੜ	धूल
ਸਾਂਤ	शान्ति	ਤੁਰਤ	तुरंत	ਮੂੰਹ	मुंह
ਮੱਥਾ	माथा	ਸਾੜ	जला दे	ਹੱਥ	हाथ
ਸੁਆਹ	राख	ਮਾੜਾ	मामूली	ਰੁੱਖਾ	रूखा
ਉਡਾ	उडा	ਹੋਰ	और		

गुरमुखी लिपि में लिखिए :

1. ऊड़ा अक्खर औखा है, होर पा !
2. उह औरत अशांत है।

3. रूपू ! होर धूं मत पा, झुग्गा मत साड़ !
4. गुत्थम गुत्था मत हो, शांत हो !
5. गुड़ खंड होर मत खा, ताप होऊगा !
6. सोमां, डंड मत पा, शरम खा !
7. सतगुर तों सुख सांत मंग !

पिछली लिखाई यों होनी चाहिए थी। अशुद्धियां दूर कर लीजिए :

1. ਅੱਮਾਂ ! ਹਾਰ ਪਾ !
2. ਧਾਰੀ ਰਾਮ ! ਮਗਰ ਮਗਰ ਆ !
3. ਪੈਰ ਪਸਾਰ, ਸੌਖਾ ਸੌਂ !
4. ਰਾਮ ਰਖਾ ! ਸਾਗ ਖਾ !
5. ਸਾਰਾ ਧਾਗਾ ਹਰਾ ਹਰਾ ਰੰਗ !

ਮਗਰ ਮਗਰ पीछे पीछे, ਸੌਖਾ सरल, आसान ਸੌਂਣਾ सोना

पाठ 4

ਰਖ ਸਾਂਈ	ਈਸਾ ਮਸੀਹ	ਇਕੋ ਇਕ
रख साईं (ईश्वर की रक्षा हो)	ईसा मसीह	इको इक (इकलौता)
ਇਟ ਖੜਿੱਕਾ	ਕਟ ਵਟ	ਫੇਰ ਫਾਰ
इट खड़िक्का (झगड़ा)	कट वट (काट छांट)	फेर फार

लिखिएगा :

ਸਾਡਾ ਇਕਾਂਤ ਵਾਸਾ, ਕੀ ਝਗੜਾ, ਕੀ ਹਾਸਾ।

ਹੰਕਾਰਿਆ, ਸੋ ਮਾਰਿਆ। ਹਰੀ ਹਰੀ ਆਖ !

ਕਟ ਵਟ ਮਤ ਕਰ ! ਅਖਰ ਸਾਫ਼ ਸਾਫ਼ ਪਾ !

यह कहानी गुरमुखी लिपि में रूपांतरित कीजिए :

इक सी कां, तिहाइआ उड रहिआ सी। धरती ते इक थां मटका वेख के उह उतर आइआ, पर मटका तां खाली सी। मटके आखिआ—'कां ! ओए कां !! तेरी किसमत खोटी है, असी तां तेरा राह वेख वेख के थक गए हां। इस वकत तां इक कतरा वी मेरे पास किथे रहिआ है !'

कां इही आख के उथों उड गइआ—तूं की खैरात करेंगा। तेरे पास कुझ होवेगा तां गुम सुम पइआ रहेंगा। थोथा शाह मुफ़त गप्पां मार रहिआ है।

पिछले अभ्यास का पंजाबी रूपांतर :

1. ਉੜਾ ਅੱਖਰ ਔਖਾ ਹੈ, ਹੋਰ ਪਾ !
2. ਉਹ ਔਰਤ ਅਸ਼ਾਂਤ ਹੈ।
3. ਤੂਪੂ ! ਹੋਰ ਧੂੰ ਮਤ ਪਾ, ਝੁੱਗਾ ਮਤ ਸਾੜ !
4. ਗੁੱਥਮ ਗੁੱਥਾ ਮਤ ਹੋ, ਸ਼ਾਂਤ ਹੋ !
5. ਗੁੜ ਖੰਡ ਹੋਰ ਮਤ ਖਾ, ਤਾਪ ਹੋਊਗਾ !
6. ਸੋਮਾਂ ! ਡੰਡ ਮਤ ਪਾ, ਸ਼ਰਮ ਖਾ !
7. ਸਤਗੁਰ ਤੋਂ ਸੁਖ ਸ਼ਾਂਤ ਮੰਗ !

ਔਖਾ	कठिन	ਪਾ	डाल	ਡੰਡ ਮਤ ਪਾ	शोर मत मचा
ਹੋਰ	और	ਝੁੱਗਾ	झोंपड़ी (घर)	ਸਤ ਗੁਰ	सद् गुरु
ਥੋਥਾ	पोच	ਸਾੜ	जला	ਸ਼ਾਂਤ	शान्ति
ਧੂੰ	धुआं	ਹੋਊਗਾ	तुझे होगा	ਮੰਗ	माँग

ਪਾਠ 5

ਦੁਖ ਦਰਦ	ਚੋਰੀ ਚਕਾਰੀ	ਆਪਾ ਧਾਪੀ
दुख दरद	चोरी चकारी	आपा धापी
ਦੋਸਤੀ ਯਾਰੀ	ਯੱਕਾ ਦੁੱਕੀ	ਯੱਕੜ ਫੱਕੜ
दोस्ती यारी	यक्का दुक्की	यक्कड़ फक्कड़

ਵਿਦਿਆਰਥੀ	ਆਸ਼ਾਵਾਦੀ	ਜ਼ੋਰ ਸ਼ੋਰ
विदिआरथी	आशावादी	ज़ोर शोर
ਢੰਢੋਰਾ	ਫ਼ਿਰੋਜ਼ਪੁਰ	ਜ਼ਿਮੇਵਾਰ
ढढोरा	फ़िरोज़पुर	ज़िमेवार

लिखिएगा :

ਤੇਰੇ ਖੇਤ ਕਿਉਂ ਉਜੜੇ-ਪੁਜੜੇ ਦਿਸਦੇ।
ਤੇਰੇ ਪੈਰ ਕਿਉਂ ਥਕੇ ਟੁਟੇ ਤੇ ਫਟੜ ਦਿਸਦੇ।
ਮਿੱਟੀ ਵਿਚ ਕਿਉਂ ਸਿੱਟੇ ਸੁੱਟੇ।
ਕਿਉਂ ਉਦਾਸ ਤੂੰ ਦਿਸਦਾ ਹਰ ਦਮ।

ਆਪਾ-ਧਾਪੀ	स्वार्थ सिद्धि	ਉਜੜੇ ਪੁਜੜੇ	वीरान	ਫਟੜ	घायल
ਧਕੱੜ ਫਕੱੜ	गालियां	ਦਿਸਦੇ	दीखते	ਸਿੱਟੇ	बालियां

निम्नलिखित कहानी को गुरमुखी लिपि में लिखिए :

इक सी शिकारी। उस इक सूर वेखिया। उस तीर मारिआ। तीर जा सूर दे सिर विच वज्जिआ। उह फटड़ हो गइआ, पर टपिआ ते शिकारी उपर वार करके डिग पइआ। शिकारी वी मर गइआ ते सूर वी।

उधरों इक गिद्दड़ आ पुजा। दोवें मरे वेख के गिद्दड़ खुश होइआ पई कई दिहाड़िआँ दी खुराक हत्थ आ गई है, पर अज तां धनख दी तद ही खाउंदा हां। इह इरादा कर के उस जिउं तंद ते दंद मारिआ, धनख दी काम उस दे मूंह विच ज़ोर दी वज्जी ते फस गई। उह गिद्दड़ वी तड़फ तड़फ के उथे ही मर गइआ।

पिछली कहानी का शुद्ध रूप यह है, अपनी लिखाई से तुलना कीजिए :

ਇਕ ਸੀ ਕਾਂ, ਤਿਹਾਇਆ ਉਡ ਰਹਿਆ ਸੀ। ਧਰਤੀ ਤੇ ਇਕ ਥਾਂ ਮਟਕਾ ਵੇਖ ਕੇ ਉਹ ਉਤਰ ਆਇਆ, ਪਰ ਮਟਕਾ ਤਾਂ ਖ਼ਾਲੀ ਸੀ। ਮਟਕੇ ਆਖਿਆ—"ਕਾਂ! ਓਏ ਕਾਂ!! ਤੇਰੀ ਕਿਸਮਤ ਖੋਟੀ ਹੈ, ਅਸੀਂ ਤਾਂ ਤੇਰਾ ਰਾਹ ਵੇਖ ਵੇਖ ਕੇ ਥੱਕ ਗਏ ਹਾਂ। ਇਸ ਵਕਤ ਤਾਂ ਇਕ ਕਤਰਾ ਵੀ ਮੇਰੇ ਪਾਸ ਕਿਥੇ ਰਹਿਆ ਹੈ!"

ਕਾਂ ਇਹ ਆਖ ਕੇ ਉਥੋਂ ਉਡ ਗਇਆ—"ਤੂੰ ਕੀ ਖ਼ੈਰਾਤ ਕਰੇਂਗਾ। ਤੇਰੇ ਪਾਸ ਕੁਝ ਹੋਵੇਗਾ ਤਾਂ ਗੁਮ ਸੁਮ ਪਇਆ ਰਹੇਂਗਾ। ਥੋਥਾ ਸ਼ਾਹ ਮੁਫ਼ਤ ਗੱਪਾਂ ਮਾਰ ਰਹਿਆ ਹੈ।"

ਕਾਂ	कव्वा	ਆਇਆ	आया	ਆਖਕੇ	कहकर
ਤਿਹਾਇਆ	प्यासा, तृषित	ਆਖਿਆ	कहा	ਗਇਆ	गया

ਉਡ ਰਹਿਆ ਸੀ	उड़ रहा था	ਓਏ	हे, ओ	ਤੂੰ ਕਰੇਂਗਾ	तू करेगा
ਤੇ (ਉਤੇ)	ऊपर	ਤੇਰਾ ਰਾਹ	तेरी राह	ਕੁਝ	कुछ
ਥਾਂ	स्थान	ਅਸੀਂ ਹਾਂ	हम हैं	ਪਇਆ	पड़ा
ਵੇਖ ਕੇ	देख कर	ਕਿਥੇ	कहां	ਥੋਥਾ	पोच
ਉਹ	वह	ਰਹਿਆ ਹੈ	रहा	ਗੱਪਾਂ	गपें

पाठ 6

ਠ ਲ ਥ ਣ

ਥਣ ਠਣ	*ਲੁਟ ਪੁਟ	ਲੂਣ ਸਬੂਣ	ਆਲਾ ਦੁਆਲਾ
बण ठण	लुट पुट	लूण सबूण	आला दुआला
ਪਉਣ ਪਾਣੀ	ਲੇਖਾ ਜੋਖਾ	ਲਾਰਾ ਲੱਪਾ	ਅਦਲ ਬਦਲ
पउण पाणी	लेखा जोखा	लारा लप्पा	अदल बदल
ਰਣਜੀਤ ਨਗਾੜਾ	ਸਤਿਨਾਮ	ਜਾਣ ਬੁਝ ਕੇ	
रणजीत नगाड़ा	सतिनाम	जाण बुझ के	

लिखिएगा :

1. ਮਿਠ-ਬੋਲੜਾ ਜੀ ਹਰਿ ਸਜਣ ਸੁਆਮੀ ਮੇਰਾ
   ਹਉ ਸੰਮਲਿ ਥਕੀ ਜੀ,
   ਹਉ ਕਦੇ ਨਾਂ ਬੋਲੈ ਕਉਰਾ।
2. ਖਿੰਥਾ ਕਾਲੁ ਕੁਆਰੀ ਕਾਇਆ, ਜੁਗਤਿ ਡੰਡਾ ਪਰਤੀਤ।
   ਆਈ ਪੰਥੀ ਸਗਲ ਜਮਾਤੀ, ਮਨਿ ਜੀਤੈ ਜਗੁ ਜੀਤੁ ॥
   ਆਦੇਸੁ ਤਿਸੈ ਆਦੇਸੁ।
   ਆਦਿ ਅਨੀਲੁ ਅਨਾਦਿ ਅਨਾਹਤਿ ਜੁਗੁ ਜੁਗੁ ਏਕੋ ਵੇਸੁ—ਜਪੁਜੀ, ਨਾਨਕ
3. ਪਿੱਪਲ ਦਿਆ ਪੱਤਿਆ ਵੇ! ਕੇਹੀ ਖੜ-ਖੜ ਲਾਈਆ
   ਢਹ ਵੇ ਪੁਰਾਣਿਆ! ਰੁਤ ਨਵਿਆਂ ਦੀ ਆਈਆ

* ल को हस्तलेख में $\bar{X}$ रूप भी दिया जाता है।

ਬਣ ਠਣ	बन ठन	ਸਤਿਨਾਮ	सत्य नाम
ਲੁੱਟ ਪੁੱਟ	लूट खसूट	ਜਾਣ ਬੁੱਝ ਕੇ	जान बूझ कर
ਲੂਣ ਸਬੂਣ	लवण (नमक) साबुन	ਮਿਠ ਬੋਲੜਾ	मीठा बोलने वाला
ਆਲਾ ਦੁਆਲਾ	परिवेश	ਹਉ ਸੰਮਲਿ	मैं याद कर कर के
ਪਉਣ ਪਾਣੀ	पवन पानी	ਥਕੀ	थक गई
ਲਾਰਾ ਲੱਪਾ	टाल मटोल	ਕਦੇ ਨਾ	कदाचित नहीं
ਨਗਾੜਾ	नक्कारा	ਕਉਰਾ	कड़वा

भावार्थ :

2. काल के कारण परिवर्तित होने वाली सुकुमार काया खिंथा (फकीरों की गुदड़ी) के समान है। आदि पंथ वाले सम्प्रदायों से असंबद्ध (व्यक्तिगत) होते हैं, उनका ध्येय है मन का जीतना और यह साधना विश्व-विजय के समान है। प्रणाम उसी एक प्रभु को है। वह आदि काल से है, असीम है और अनादि है। उस का संगीत अनाहत है और उस का स्वरूप युग युगांतर में एक सा है।
3. हे पीपल के पत्र ! तुम ने कैसी खड़-खड़ लगा रखी है। हे पुराने (पत्र) तू ढह जा, अब तो नये (पत्तों) की बारी आई है।

गुरमुखी में लिखिए :

इक शाहूकार दी सारी नकदी चोर लै गए। जदों उस नूं पता लगिआ तां लगा रौला पाउण, "मैं लुटिआ गइआ ! ओए पुटिआ गइआ जे ! मेरा सारा कुझ चोर लै गए ने। मैं उक्का लुटिआ गइआ जे। मेरी सारी उमर दी कमाई चोर लै गए ने। हाए चोर पै गए।"

उस वेले उस दा नौकर कोल खलोता सी। शाहूकार दी हाल-हाल सुण के आखण लगा—'हत्थ तां उन्हां देरी कुझ नहीं आउणा।'

साहूकार ने छेती सुआल कीता—'किस तरहँ उन्हा दे हत्थ कुझ नहीं आउणा?' नौकर ने आखिआ—'कुंजीआँ तां मेरे कोल ही हन।'

पिछली लिखाई का शुद्ध रूप यह है :

ਇਕ ਸੀ ਸ਼ਿਕਾਰੀ, ਉਸ ਇਕ ਸੂਰ ਵੇਖਿਆ। ਉਸ ਤੀਰ ਮਾਰਿਆ। ਤੀਰ ਜਾ ਸੂਰ ਦੇ ਸਿਰ ਵਿਚ ਵੱਜਿਆ। ਉਹ ਫਟੜ ਹੋ ਗਇਆ, ਪਰ ਟਪਿਆ ਤੇ ਸ਼ਿਕਾਰੀ ਉਪਰ ਵਾਰ ਕਰਕੇ ਡਿਗ ਪਇਆ। ਸ਼ਿਕਾਰੀ ਵੀ ਮਰ ਗਇਆ ਤੇ ਸੂਰ ਵੀ।

ਉਧਰੋਂ ਇਕ ਗਿੱਦੜ ਆ ਪੁਜਾ। ਦੋਵੇਂ ਮਰੇ ਵੇਖ ਕੇ ਗਿੱਦੜ ਖ਼ੁਸ਼ ਹੋਇਆ ਪਈ ਕਈ ਦਿਹਾੜਿਆਂ ਦੀ ਖ਼ੁਰਾਕ ਹਥ ਆ ਗਈ ਹੈ, ਪਰ ਅੱਜ ਤਾਂ ਧਨਖ ਦੀ ਤੰਦ ਹੀ ਖਾਉਂਦਾ ਹਾਂ। ਇਹ ਇਰਾਦਾ ਕਰ ਕੇ ਉਸ ਜਿਉਂ ਤੰਦ ਤੇ ਦੰਦ ਮਾਰਿਆ ਧਨਖ ਦੀ ਕਾਮ ਉਸ ਦੇ ਮੂੰਹ ਵਿਚ ਜ਼ੋਰ ਦੀ ਵੱਜੀ ਤੇ ਫਸ ਗਈ। ਉਹ ਗਿੱਦੜ ਵੀ ਤੜਫ ਤੜਫ ਕੇ ਉਥੇ ਹੀ ਮਰ ਗਇਆ।

ਸੀ	था	ਉਧਰੋਂ	उधर से
ਉਸ ਵੇਖਿਆ	उसने देखा	ਗਿੱਦੜ	गीदड़
ਹੱਥ	हाथ	ਸੂਰ ਦੇ	सूअर के
ਪੁਜਾ	पहुंचा	ਖਾਉਂਦਾ ਹਾਂ	खाता हूं
ਉਸ ਮਾਰਿਆ	उसने मारा	ਦੋਵੇਂ	दोनों
ਜਿਉਂ	ज्यों ही	ਵਜਿਆ	लगा
ਹੋਇਆ	हुआ	ਤੰਦ ਤੇ ਦੰਦ ਮਾਰਿਆ	तांत पर दांत मारा (दांत से तांत को काटा)
ਫਟੜ	घायल	ਪਈ	कि
ਕਾਮ	कमानी	ਟਪਿਆ	उछला
ਦਿਹਾੜਿਆਂ ਦੀ	दिनों की	ਮੂੰਹ ਵਿਚ	मुंह में
ਡਿਗ ਪਇਆ	गिर पड़ा	ਖ਼ੁਰਾਕ	खूराक, खाद्य
ਵੱਜੀ	लगी	ਵੀ	भी
ਅੱਜ ਤਾਂ	आज तो	ਫਸ ਗਈ	फंस गई
ਗਇਆ	गया	ਧਨਖ ਦੀ ਤੰਦ	धनुष की तांत
ਉਥੇ ਹੀ	वहीं		

ਪਾਠ 7

ਛਣਕਣਾ	ਉਘੜਨਾ	ਪਛਾਣਨਾ	ਭਬੀਰੀ
छणकणा (झुंनझुना)	उघड़ना	पछाणना (पहचानना)	भंबीरी

ਸੁਰੰਗਾ ਵਾਂਙ	ਭਗਤ ਸਿੰਘ	ਭਾਂਬੜ	ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ
सुरंग वांग (की तरह)	भगत सिंह	भांबड़ (भंबरी)	गुरू गोबिन्द सिंघ (सिंह)

लिखिएगा :

*ਕਿਸਮਤ ਨੂੰ ਨਾ ਕੋਸ
ਕਿ ਉਹ ਹੈ ਹਿੰਮਤ ਦੀ ਅਰਧੰਗੀ
ਪੁਰਸ਼ਾਰਥ ਦਾ ਹੜ੍ਹ
ਜਦ ਆਏ, ਰੋੜ੍ਹ ਖੜੇ ਸਭ ਤੰਗੀ

गुरमुखी के अंक हिन्दी के से ही हैं। बहुत थोड़ा अन्तर है :

੧ ੨ ੩ ੪ ੫ ੬ ੭ ੮ ੯ ੧੦

੧ एक ओंकार ੧ ੳ (ॐ) के लिए विशेष प्रयुक्त होता है। किसी शब्द की पुनरावृति के लिए '੨' प्रयुक्त होता है, यथा : ਰੱਬ ਰੱਬ ਆਖ = ਰੱਬ ੨ ਆਖ।

ਸ਼ਾਹੂਕਾਰ ਦੀ ਪਿਛਲੀ ਕਹਾਣੀ :

ਇਕ ਸ਼ਾਹੂਕਾਰ ਦੀ ਸਾਰੀ ਨਕਦੀ ਚੋਰ ਲੈ ਗਏ। ਜਦੋਂ ਉਸ ਨੂੰ ਪਤਾ ਲਗਿਆ ਤਾਂ ਲਗਾ ਰੌਲਾ ਪਾਉਣ—"ਮੈਂ ਲੁਟਿਆ ਗਇਆ! ਓਏ ਪੁਟਿਆ ਗਇਆ ਜੇ! ਮੇਰਾ ਸਾਰਾ ਕੁਝ ਚੋਰ ਲੈ ਗਏ ਨੇ। ਮੈਂ ਉੱਕਾ ਲੁਟਿਆ ਗਇਆ ਜੇ। ਮੇਰੀ ਸਾਰੀ ਉਮਰ ਦੀ ਕਮਾਈ ਚੋਰ ਲੈ ਗਏ ਨੇ, ਹਾਏ ਚੋਰ ਪੈ ਗਏ।"

ਉਸ ਵੇਲੇ ਉਸ ਦਾ ਨੌਕਰ ਕੋਲ ਖਲੋਤਾ ਸੀ। ਸ਼ਾਹੂਕਾਰ ਦੀ ਹਾਲ ਹਾਲ ਸੁਣ ਕੇ ਆਖਣ ਲਗਾ—'ਹੱਥ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵੀ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਆਉਣਾ।'

ਸ਼ਾਹੂਕਾਰ ਨੇ ਛੇਤੀ ਸੁਆਲ ਕੀਤਾ 'ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਹੱਥ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਆਉਣਾ?' ਨੌਕਰ ਨੇ ਆਖਿਆ—'ਕੁੰਜੀਆਂ ਤਾਂ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਹੀ ਹਨ।'

ਜਦੋਂ	जब	ਵੇਲੇ	समय
ਉਸ ਨੂੰ	उस को	ਕੋਲ	पास
ਪਤਾ ਲਗਿਆ	पता लगा	ਖਲੋਤਾ ਸੀ	खड़ा था
ਰੌਲਾ ਪਾਉਣ ਲਗਿਆ	शोर मचाने लगा	ਹਾਲ ਹਾਲ	हाहाकार
ਲੈ ਗਏ ਨੇ	अजी ये ले गए हैं	ਸੁਣ ਕੇ	सुन कर
ਚੋਰ ਪੈ ਗਏ	चोर आ पड़े	ਹਥ ਤਾਂ	हाथ तो

* भावार्थ :– किस्मत (भाग्य) को न कोस कि वह है हिम्मत की अर्धांगी पुरुषार्थ की बाढ़ जब आए, बहा ले जाए तंगी ॥

ਮੈਂ ਲੁਟਿਆ ਪੁਟਿਆ	मैं लूटा खसूटा	ਹੱਥ ਤਾਂ	हाथ तो
ਗਇਆ	गया	ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵੀ	उन के भी
ਕੀਤਾ	किया	ਕੁੱਝ	कुछ
ਤਾਂ	तो	ਆਉਣਾ	आना
ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਹਨ	मेरे पास हैं	ਛੇਤੀ	जल्दी

ਇਕੋ ਵਾਕ ਵਿਚ ਸਾਰੀਆਂ ਲਗਾਂ ਮਾਤ੍ਰਾਂ ਤੇ ਅਖਰਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ :

ਸੱਚੇ ਪ੍ਰਭ ਨੇ ਮਨੁਖ ਲਈ ਗੁਣਾਂ ਦੇ ਯਥੇਸ਼ਟ ਮੌਕੇ ਨਜਿਠੇ, ਫਿਰ ਵੀ ਅਪਰਾਧ-ਬ੍ਰਿਤੀ ਡਾਢੇ ਪਸ਼ੂ ਵਾਂਙ ਉਵੇਂ ਹੀ ਛੋਟਿਆਂ ਨੂੰ ਝਾੜਦੀ ਘਾਲਦੀ ਹੈ।

सूचना : पंजाबी हस्त-लेखों को पढ़ने के अभ्यास के लिए देखिए परिशिष्ट।

खण्ड 4

पंजाबी संरचना

ਪਾਠ 1

ਪ੍ਰਸ਼ਨਵਾਚੀ ਸ਼ਬਦ (प्रश्नवाची शब्द)

ਕੀ ?	क्या ?
ਕਿਸ ਪੁਰ ?	किस पर ?
ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ?	किस तरह ?
ਕਿਹੋ ਜਿਹਾ ?	कैसा ?
ਕਿਵੇਂ ? (ਕੀਕਣ) ?	कैसे ?
ਕੌਣ ?	कौन ?
ਕਿਸਦਾ ?	किस का ?
ਕਿਸ ਨੂੰ ?	किस को ?
ਕਦੋਂ ?	कब ?
ਕਦੋਂ ਤਕ ?	कब तक ?
ਕਿੰਨਾ ? (ਕਿਤਨਾ ?)	कितना ?
ਕਿੱਧਰ ?	किधर ?
ਕਿੱਥੇ ?	कहाँ ?
ਕਿਉਂ ?	क्यों ?

विशेष वाक्य

1.	ਕਿੰਨੇ ਚਿਰ ਵਿਚ ?	कितनी देर में ?
2.	ਕਿੰਨੀ ਦੇਰ ਵਿਚ ?	कितनी देर में ?
3.	*ਕਿੰਨਾ ਵੱਡਾ?	कितना बड़ा ?
4.	ਕਿੰਨੀ ਦੂਰ ?	कितनी दूर ?

* ਕਿੰਨਾ=ਕਿੱਨਾ

पंजाबी संक्षेप शैली में कई दृष्टियों से हिन्दी की अपेक्षा अधिक सुविधा है :

1. उस के पास	ਉਸ ਕੋਲ	5. उस के बीच में	ਉਸ ਵਿਚ
2. शाम को	ਸ਼ਾਮੀਂ	6. किस के आगे	ਕਿਸ ਅੱਗੇ
3. पानी भरने के लिए आई	ਪਾਣੀ ਭਰਨ ਆਈ	7. इस के बाद	ਇਸ ਪਿੱਛੋਂ
4. उसके लिए	ਉਸ ਲਈ		

ਪਾਠ 2

ਪ੍ਰਸ਼ਨਵਾਚੀ ਵਾਕ (प्रश्नवाची वाक्य)

ਇਹ ਕੀ ਹੈ ?	यह क्या है ?
ਇਹ ਰੁੱਖ ਹੈ।	यह वृक्ष है।
ਉਹ ਕੀ ਹੈ ?	वह क्या है ?
ਉਹ ਫੁਲ ਹੈ।	वह फूल है।
ਉਹ ਕੌਣ ਹੈ ?	वह कौन है ?
ਉਹ ਕੁੜੀ ਹੈ।	वह लड़की है।
ਕੁੜੀ ਹੈ ਕਿ ਮੁੰਡਾ ਹੈ ?	लड़की है कि लड़का ?
ਨਹੀਂ ਜੀ, ਕੁੜੀ ਹੈ।	जी नहीं, लड़की है।
ਉੱਥੇ ਕੀ ਹੈ ?	वहाँ क्या है ?
ਉੱਥੇ ਇਕ ਬਗੀਚਾ ਹੈ।	वहाँ एक बगीचा है।
ਬਗੀਚੇ ਵਿਚ ਕਿਹੋ ਜਿਹੇ ਫੁੱਲ ਹਨ ?	बगीचे में किस तरह के फूल हैं ?
ਗੇਂਦਾ, ਗੁਲਾਬ, ਚੰਬੇਲੀ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਫੁੱਲ ਹਨ।	गेंदा, गुलाब, चंबेली कई फूल हैं।
ਗੁਲਾਬ ਦੇ ਫੁੱਲ ਦਾ* ਰੰਗ ਕੀ ਹੈ ?	गुलाब के फूल का रंग क्या है ?
ਇਸ ਦਾ ਰੰਗ ਲਾਲ ਹੈ।	इस का रंग लाल है।
ਬਗੀਚਾ ਕਿਸ ਦਾ ਹੈ ?	बगीचा किस का है ?
ਇਸ ਦਾ ਮਾਲਿਕ ਕੌਣ ਹੈ ?	इस बगीचे का मालिक कौन है ?
ਇਸ ਬਗੀਚੇ ਦਾ ਮਾਲਿਕ ਇਕ ਸੇਠ ਹੈ।	इसका मालिक एक सेठ है।
ਸੇਠ ਦਾ ਨਾਂ ਕੀ ਹੈ ?	सेठ का नाम क्या है ?
ਸੇਠ ਦਾ ਨਾਂ ਹੈ ਮਦਨ ਲਾਲ।	सेठ का नाम है मदन लाल।
ਕੀ ਉਹ ਇਸ ਬਗੀਚੇ ਦਾ ਮਾਲਿਕ ਹੈ ?	क्या वह इस बगीचे का मालिक है ?

---
* ਦਾ, ਦੇ, ਦੀ = का, के, की

ਹਾਂ ਜੀ, ਉਹੋ ਇਸ ਦਾ ਮਾਲਿਕ ਹੈ।	जी हाँ, वही इसका मालिक है।
ਇਹ ਵੱਡੀ ਪੈਲੀ ਕਿਸ ਦੀ ਹੈ ?	यह बड़ा खेत किस का है ?
ਇਹ ਵੱਡੀ ਪੈਲੀ ਵੀ ਉਸੇ ਦੀ ਹੈ।	यह बड़ा खेत भी उसी का है।
ਕੀ ਉਹ ਅਮੀਰ ਹੈ ?	क्या वह अमीर है ?
ਜੀ, ਗਰੀਬ ਤਾਂ ਨਹੀਂ।	जी, गरीब तो नहीं।

ਪਾਠ 3

ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ (विशेषणों का प्रयोग)

ਫੁੱਲ ਸੋਹਣਾ ਹੈ।	फूल सुन्दर है।
ਰੁੱਖ ਉੱਚਾ ਹੈ।	वृक्ष ऊंचा है।
ਉਹ ਰੁੱਖ ਉੱਚਾ ਹੈ।	वह वृक्ष ऊंचा है।
ਇਹ ਨੀਵਾਂ ਹੈ।	यह नीचा है।
ਕੁੜੀ ਬਿਮਾਰ ਹੈ।	लड़की बीमार है।
ਕੁੜੀ ਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਖਰਾਬ ਹਨ।	लड़की की आँखें खराब हैं।
ਉਸ ਦੇ ਕਪੜੇ ਮੈਲੇ ਹਨ।	उस के कपड़े मैले हैं।
ਉਸ ਦੀਆਂ ਜੁੱਤੀਆਂ ਮੈਲੀਆਂ ਹਨ।	उस की जूतियाँ मैली हैं।
ਬਿਮਾਰ ਕੁੜੀ ਬਗੀਚੇ ਵਿਚ ਹੈ।	बीमार लड़की बगीचे में है।
ਬਗੀਚਾ ਸੋਹਣਾ ਹੈ।	बागीचा सुन्दर है।
ਹਰਾ ਹਰਾ ਘਾਹ ਚੰਗਾ ਹੈ।	हरी हरी घास अच्छी है।
ਹਵਾ ਗਰਮ ਨਹੀਂ ਹੈ।	हवा गरम नहीं है।
ਠੰਢੀ ਠੰਢੀ ਹੈ।	ठंडी ठंडी है।
ਵੱਡੀਆਂ ਵੱਡੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਇਥੇ ਹਨ।	बड़ी बड़ी लड़कियाँ यहाँ हैं।
ਨਿੱਕੇ ਨਿੱਕੇ ਮੁੰਡੇ ਉਥੇ ਹਨ।	छोटे छोटे लड़के वहाँ हैं।
ਮੋਟੀਆਂ ਮੋਟੀਆਂ ਪੁਸਤਕਾਂ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਹਨ।	मोटी मोटी पुस्तकें स्कूल में हैं।
ਚੰਗਿਆਂ ਮੁੰਡਿਆਂ ਦੀਆਂ ਪੁਸਤਕਾਂ ਸਾਫ਼ ਹਨ।	अच्छे लड़कों की पुस्तकें साफ़ हैं।
ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਨਿੱਕੀਆਂ ਵੱਡੀਆਂ ਪੁਸਤਕਾਂ ਸਭ ਸੁੰਦਰ ਹਨ।	उनकी छोटी बड़ी पुस्तकें सब सुन्दर हैं।
ਕਿਤਾਬਾਂ ਕਿਸ ਦੇ ਕੋਲ ਹਨ ?	किताबें किस के पास हैं ?
ਸਾਰੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਮੁੰਡਿਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਕੋਲ ਹਨ।	सभी किताबें लड़कों लड़कियों के पास हैं।
ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਕੋਈ ਕਿਤਾਬ ਨਹੀਂ ਹੈ।	मेरे पास कोई किताब नहीं है।

ਤੇਰੇ ਕੋਲ ਕਾਗ਼ਜ਼ ਤਾਂ ਹੈ, ਕਲਮ ਨਹੀਂ ਹੈ। तेरे पास कागज़ तो है, कलम नहीं है।

ਕਲਮ ਕਿੱਥੇ ਹੈ ?	कलम कहाँ है ?
ਕਲਮ ਬਸਤੇ ਵਿਚ ਹੈ।	कलम बस्ते में है।
ਤੂੰ ਚੰਗਾ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਹੈਂ।	तू अच्छा विद्यार्थी हैं।

ਪਾਠ 4

ਸਰਲ ਸਾਧਾਰਣ ਵਾਕ (सरल साधारण वाक्य)

ਇਹ ਕੀ ਹੈ ?
ਇਹ ਫੁੱਲ ਹੈ।
ਉਹ ਕੁੰਡਾ ਹੈ।
ਉਹ ਲੱਤ ਹੈ।
ਇਹ ਹੱਥ ਹੈ।
ਇਹ ਇੱਟ ਹੈ।
ਉਹ ਪੱਥਰ ਹੈ।
ਪੱਥਰ ਕਾਲਾ ਹੈ।
ਇੱਟ ਲਾਲ ਹੈ।
ਕੀ ਇੱਟ ਕਾਲੀ ਹੈ ?
ਨਹੀਂ ਜੀ, ਇੱਟ ਲਾਲ ਹੈ।
ਉਥੇ ਫੁੱਲ ਚਿੱਟਾ ਹੈ।
ਇਥੇ ਫੁਲ ਲਾਲ ਹੈ।
ਇੱਥੇ ਧੁੱਪ ਹੈ, ਉਥੇ ਛਾਂ ਹੈ।
ਉਥੇ ਕੀ ਹੈ ?
ਉਥੇ ਫੁੱਲ ਹੈ।
ਫੁੱਲ ਹੈ ਜਾਂ ਪੱਥਰ ਹੈ ?
ਜੀ ਫੁੱਲ ਹੈ।

ਉਹ	वह	ਇੱਟ	ईंट
ਇਹ	यह	ਪੱਥਰ	पत्थर
ਕੀ	क्या	ਕੀ	क्या
ਫੁੱਲ	फूल	ਨਹੀਂ ਜੀ	जी नहीं
ਕੰਡਾ	काँटा	ਉਥੇ	वहाँ
ਲੱਤ	लात	ਇਥੇ	यहाँ
ਹੱਥ	हाथ	ਧੁਪ	धूप

ਪਾਠ 5

ਹੈ, ਇਕ-ਵਚਨ; ਹਨ, ਬਹੁ-ਵਚਨ

(है, एक-वचन ; हैं, बहु-वचन)

ਇਹ ਕੌਣ ਹੈ ?
ਇਹ ਮੁੰਡਾ ਹੈ।
ਇਹ ਮੁੰਡਾ ਚੰਗਾ ਹੈ।
ਇਹ ਮੁੰਡੇ ਚੰਗੇ ਹਨ।
ਉਹ ਫੁੱਲ ਚਿੱਟੇ ਹਨ।
ਚਿੱਟੇ ਫੁੱਲ ਕਿੱਥੇ ਹਨ ?
ਚਿੱਟੇ ਫੁੱਲ ਉੱਥੇ ਹਨ।
ਉਹ ਇੱਟ ਪਿੱਲੀ ਹੈ।
ਉਹ ਸਾਰੀਆਂ ਇੱਟਾਂ ਪਿੱਲੀਆਂ ਹਨ।
ਇਕ ਇੱਟ ਲਾਲ ਹੈ।
ਪਿੱਲੀਆਂ ਇੱਟਾਂ ਕਿੱਥੇ ਹਨ ?
ਪਿੱਲੀਆਂ ਇੱਟਾਂ ਉੱਥੇ ਹਨ।
ਲਾਲ ਇੱਟਾਂ ਇਥੇ ਹਨ।
ਧੁੱਪ ਚਿੱਟੀ ਹੈ।
ਛਾਂ ਕਾਲੀ ਹੈ।
ਕਾਲੀਆਂ ਛਾਵਾਂ ਠੰਢੀਆਂ ਹਨ।
ਠੰਢੀਆਂ ਠੰਢੀਆਂ ਛਾਵਾਂ ਕਿੱਥੇ ਹਨ ?
ਜਿੱਥੇ ਚਿੱਟੇ ਅਤੇ ਲਾਲ ਲਾਲ ਫੁੱਲ ਹਨ।
ਸਾਰੇ ਬੰਦੇ ਚੰਗੇ ਹਨ।
ਸਾਰੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਚੰਗੀਆਂ ਹਨ।

ਮੁੰਡਾ	लड़का	ਕਿੱਥੇ	कहाँ	ਕੁੜੀ	लड़की
ਚੰਗਾ	अच्छा	ਪਿੱਲੀ	कच्ची	ਕੁੜੀਆਂ	लड़कियाँ
ਹਨ	हैं	ਜਿੱਥੇ	जहाँ		
ਚਿੱਟੇ	श्वेत	ਬੰਦੇ	मनुष्य		

पंजाबी में व्यक्त कीज़िए :

1. छोटी लड़की बीमार थी।
2. डाक्टर साहब कहां थे ?
3. अन्दर कौन था ?
4. अन्दर तो नौकर था।
5. नौकर होशियार है।
6. बाहर गर्मी है।
7. धूप तेज है।
8. कमरा भी ठंडा नहीं।
9. ठंडा पानी कहाँ है ?
10. क्या चाय गर्म है ?
11. वहाँ छोटी लड़कियाँ नहीं थीं।
12. बड़े बड़े लड़के थे।

1. छोटी	ਛੋਟੀ, ਨਿੱਕੀ	8. भी	ਵੀ
बीमार	ਬਿਮਾਰ	10. चाय	ਚਾਹ
2. साहब	ਸਾਹਿਬ	11. छोटी	ਨਿੱਕੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ
4. तो	ਤਾਂ	लड़कियाँ थीं	ਸਨ
5. होशियार	ਹੁਸ਼ਿਆਰ	12. बड़े बड़े	ਵੱਡੇ ਵੱਡੇ
6. गर्मी	ਗਰਮੀ	थी, था	ਸੀ
हैं	ਹਨ	थे	ਸਨ
7. धूप	ਧੁੱਪ		

उच्चारण : ਚਾਹ-ਚਾ^ ; ਨਹੀਂ-ਨ^ਈਂ; ਬਾ^ਰ; ਸਾ^ਬ
^ = उच्च गिरती सुर

ਪਾਠ 6
ਹੈ, ਹਨ; ਸੀ, ਸਨ ਦੀ ਵਰਤੋਂ
(है, हैं; था, थे, थी का प्रयोग)

ਇਕ ਮੁੰਡਾ ਇੱਥੇ ਹੈ।
ਦੂਜਾ ਕਿੱਥੇ ਹੈ ?
ਇੱਥੇ ਦੋ ਮੁੰਡੇ ਹਨ।
ਕੋਈ ਹੋਰ ਬੰਦਾ ਹੈ ?
ਹਾਂ ਜੀ, ਬਹੁਤ ਬੰਦੇ ਹਨ।
ਇਹ ਪੁਰਾਣੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਹਨ।
ਨਵੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਕਿੱਥੇ ਹਨ ?
ਸਾਰੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਕਿੰਨੀਆਂ ਹਨ ?
ਸਾਰੀਆਂ ਇੱਕੀ ਹਨ।
ਭੈਣਾਂ! ਚੰਗੀਆਂ ਚੰਗੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਇਹ ਹਨ।
ਵਪਾਰੀ ਅਮੀਰ ਸੀ।
ਨੌਕਰ ਗ਼ਰੀਬ ਸੀ।
ਮੁੰਡੇ ਬਿਮਾਰ ਸਨ।
ਸਾਰੇ ਬੰਦੇ ਬਿਮਾਰ ਨਹੀਂ ਸਨ।
ਰਾਤ ਤਾਂ ਬਹੁਤ ਠੰਢੀ ਹੈ।
ਹੁਣ ਧੁੱਪ ਚੰਗੀ ਹੈ।

ਹੋਰ	और	ਸਾਰੀਆਂ	सार	ਪੁਰਾਣੀਆਂ	पुरानी
ਕਿਥੇ ਹਨ	कहां हैं	ਕਿਤਾਬਾਂ	किताबें	ਕਿੰਨੀ	कितनी
ਕਿੰਨੀਆਂ	कितनी	ਇੱਕੀ	इक्कीस	ਭੈਣਾਂ !	हे बहन !
ਸੀ	था, थी	ਬਿਮਾਰ	बीमार	ਹੁਣ	अब
ਧੁੱਪ	धूप	ਵਪਾਰੀ	व्यापारी	ਸਨ	थे
ਹਾਂ ਜੀ	जी हां	ਦੀਆਂ	की		

ये वाक्य पंजाबी में व्यक्त कीजिए :

1. वह लड़का कहाँ है ?
2. वह लड़की अच्छी है।
3. यह कौन है ?
4. यह गरीब आदमी है।
5. ये पुस्तकें सुन्दर हैं।
6. चाय ठंडी है, दूध गर्म है।
7. ईंटें लाल हैं, वे काली हैं।
8. पानी गर्म है, पत्थर ठंडा है।
9. क्या वहाँ लाल फूल हैं ?
10. जी नहीं, वहां लाल फूल नहीं, सफ़ेद हैं।
11. एक हाथ साफ़ है, दूसरा मैला है।
12. वे लड़कियाँ अच्छी हैं।

1.	लड़का	ਲੜਕਾ, ਮੁੰਡਾ	8.	पानी	ਪਾਣੀ
2.	अच्छी	ਹੱਛੀ, ਚੰਗੀ		पत्थर	ਪੱਥਰ
3.	कौन	ਕੌਣ	10.	जी नहीं	ਨਹੀਂ ਜੀ
	पुस्तकें	ਪੁਸਤਕਾਂ		सफेद	ਸਫ਼ੇਦ, ਚਿੱਟੇ
6.	चाय	ਚਾਹ	11.	एक हाथ	ਇੱਕ ਹੱਥ
	दूध	ਦੁੱਧ		दूसरा	ਦੂਜਾ
	गर्म	ਗਰਮ	12.	अच्छी हैं	ਚੰਗੀਆਂ ਹਨ

ਪਾਠ 7
ਦਾ, ਦੇ, ਦੀ, ਦੀਆਂ
(का, के, की का प्रयोग)

ਉਸ ਦਾ ਨਾਂ ਕੀ ਹੈ ?
ਉਸ ਦਾ ਨਾਂ ਅਣੋਖ ਸਿੰਘ ਹੈ।
ਉਸ ਦਾ ਕੰਮ ਕੀ ਹੈ ?
ਉਸ ਦਾ ਕੰਮ ਖੇਤੀ-ਬਾੜੀ ਹੈ।
ਪਿੰਡ ਦੇ ਬੰਦੇ ਤਕੜੇ ਹਨ।
ਪਿੰਡ ਦੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਵੀ ਤਕੜੀਆਂ ਹਨ।
ਇਸ ਕੰਧ ਦੀਆਂ ਇੱਟਾਂ ਕਾਲੀਆਂ ਹਨ।
ਉਸ ਕੰਧ ਦੇ ਪੱਥਰ ਕਾਲੇ ਹਨ।
ਦੁੱਧ ਦਾ ਰੰਗ ਚਿੱਟਾ ਹੈ।
ਅਕਾਸ਼ ਦਾ ਰੰਗ ਨੀਲਾ ਹੈ।
ਨੀਲੇ ਪਾਣੀ ਦੀ ਝੀਲ ਕਿੱਥੇ ਸੀ ?
ਪੀਲੇ ਫੁਲਾਂ ਦੀ ਫੁਲਵਾੜੀ ਕਿੱਥੇ ਸੀ ?
ਪਿੰਡ ਦੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਫੁਲਵਾੜੀਆਂ ਵਿਚ ਸਨ।
ਪਿੰਡ ਦੇ ਮੁੰਡੇ ਖੇਤਾਂ ਵਿਚ ਸਨ।
ਇਸ ਵੱਡੇ ਘਰ ਵਿਚ ਕੌਣ ਕੌਣ ਹਨ
ਇਸ ਘਰ ਵਿਚ ਤਿੰਨ ਮੁੰਡੇ ਤੇ ਦੋ ਕੁੜੀਆਂ ਹਨ।
ਕੁੜੀਆਂ ਮੁੰਡਿਆਂ ਤੋਂ ਛੋਟੀਆਂ ਹਨ।

ਦਾ	का	ਕੁੜੀਆਂ	लड़कियाँ	ਖੇਤਾਂ ਵਿਚ	खेतों में
ਦੀ	की	ਤਕੜੀਆਂ	मज़बूत	ਵੱਡੇ	बड़े
ਦੇ	के	ਕੰਧ	दीवार	ਕੌਣ	कौन
ਦੀਆਂ	की	ਦੁੱਧ	दूध	ਕਿਸ ਦਾ	किस का
ਨਾਂ	नाम	ਅਕਾਸ਼	आकाश	ਕਾਹਦਾ	किस चीज़ का
ਕੱਮ, ਕੰਮ	काम	ਪਾਣੀ	पानी		
ਵਾੜੀ	बाड़ी	ਫੁੱਲਾਂ	फूलों		
ਪਿੰਡ	गाँव	ਕਿਥੇ	कहाँ		
ਤਕੜੇ	शक्तिशाली	ਵਿਚ	के बीच, में		

पंजाबी मे अनुवाद कीजिए :

1. यह पुस्तक तो उस विद्यार्थी की है।
2. वे पुस्तकें लड़कियों की थीं।
3. यह किसी बड़े व्यापारी का घर है।
4. वह किसी ग़रीब की कुटिया है।
5. इस ताले की कुंजी कहाँ है ?
6. सिपाहियों की बन्दूकें कहां थीं ?
7. उस बड़े मकान के सामने दो दुकानें हैं।
8. सड़क के मोड़ पर क्या था ?
9. मकान की दीवार के पीछे कौन था ?
10. सड़क के किनारे किनारे कई वृक्ष।

1.	तो	ਤਾਂ	4.	किसी	ਕਿਸੇ	7.	सामने	ਸਾਮ੍ਹਣੇ
	विद्यार्थी	ਵਿਦਿਆਰਥੀ		कुटिया	ਕੁਟੀਆ, ਝੁੱਗੀ		क्या	ਕੀ
2.	वे, वह	ਉਹ	6.	थे, थीं	ਸਨ	9.	दीवार	ਕੰਧ
	लड़कियों	ਲੜਕੀਆਂ		सिपाहियों	ਸਿਪਾਹੀਆਂ		पीछे	ਪਿੱਛੇ
	की	ਦੀਆਂ		की बंदूकें	ਦੀਆਂ ਬੰਦੂਕਾਂ	10.	किनारे	ਕੰਢੇ
3.	बड़े	ਵੱਡੇ					वृक्ष	ਰੁੱਖ
	व्यापारी	ਵਪਾਰੀ						

ਪਾਠ 8
ਆਗਿਆਰਥ ਕ੍ਰਿਆਪਦ
(आज्ञार्थ क्रियापद)

ਇਹ ਗਿਲਾਸ ਇਥੇ ਹੀ ਰਖ, ਦੂਜਾ ਲਿਆ!
ਥੋੜਾ ਕੁ ਪਾਣੀ ਲਿਆ, ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਾਫ਼ ਕਰ!
*ਇਧਰ ਵੇਖ, ਠੀਕ ਠੀਕ ਦਸ!
ਦੇਰ ਮਤ ਕਰ, ਜਲਦੀ ਜਲਦੀ ਤਿਆਰੀ ਕਰ!
ਠੰਢਾ ਪਾਣੀ ਪਰੇ ਰੱਖ, ਗਰਮ ਗਰਮ ਚਾਹ ਲਿਆ!
ਜਰਾ ਬਾਹਰ ਠਹਰ, ਫਾਟਕ ਕੋਲ ਖਲੋ!
ਫਾਟਕ ਬੰਦ ਰਖ, ਮਤ ਖੋਲ!
ਬੱਚਿਆ! ਸੱਜੇ ਖੱਬੇ ਧਿਆਨ ਰਖ!
ਬੋਲੋ ਮਤ, ਹੌਲੀ ਹੌਲੀ ਉਪਰ ਚਲੋ!
ਖੱਬੇ ਮੁੜੋ, ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਕਪੜੇ ਬਦਲੋ!
ਪੰਜ ਵਜੇ ਤਕ ਤੁਸੀਂ ਬਜਾਰ ਹੋ ਆਓ!
ਦੇਰ ਮਤ ਕਰੋ, ਸਾਰਾ ਕੰਮ ਸੰਭਾਲੋ!
ਮਾਲੀ ਨੂੰ ਬੁਲਾਓ।
ਸੜਕ ਦੇ ਕੰਢੇ ਕੰਢੇ ਰੁੱਖ ਲਾਓ!
ਬਚਿਓ! ਫ਼ਸਲਾਂ ਵਿਚੋਂ ਨਾ ਲੰਘੋ!
ਸੜਕ ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਨਾ ਦੌੜੋ!
ਸੁਣਾਉ ਜੀ, ਕੀ ਹਾਲ ਹੈ ?
ਚੰਗਾ ਹੈ, ਤੁਸੀਂ ਦਸੋ ਸਭ ਠੀਕ ਹੈ ਨਾ ?
ਜੀ ਮਿਹਰਬਾਨੀ ਹੈ, ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ ਮਿਹਰ ਹੈ।

ਲਿਆ	ले आ	ਖੋਲ੍ਹ	खोल	ਰੁੱਖ	वृक्ष
ਥੋੜਾ ਕੁ	थोड़ा सा	ਬੱਚਿਆ	हे बच्चे	ਲਾਓ	लगाओ
ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ	अच्छी तरह	ਖੱਬੇ	बाएं	ਫ਼ਸਲਾਂ ਵਿਚੋਂ	फ़सलों में से
ਵੇਖ	देख	ਸੱਜੇ	दाएं	ਲੰਘੋ	गुज़रो
ਦਸ	बता	ਉਪਰ	ऊपर	ਬਚਿਓ	हे बच्चो
ਤਿਆਰੀ	तैयारी	ਵਿਚ	में	ਵਿਚਕਾਰ	बीच में
ਚਾਹ	चाए	ਤੁਸੀਂ	आप, तुम	ਸੁਣਾਓ	सुनाओ
ਕੋਲ	के पास	ਬਜ਼ਾਰ	बाजार	ਕੀ	क्या
ਖਲੋ	खड़ा हो	ਨੂੰ	को	ਦਸੋ	बताओ

* ਤੂੰ ਵੇਖ ਤੁਸੀਂ ਵੇਖੋ ਤੁਸੀਂ ਵੇਖੀਓ

पंजाबी में अनुवाद लिखिए :

1. अब तू जल्दी कर, घर जा !
2. ताला खोल, कमरा साफ़ कर !
3. केला खा और दूध पी !
4. आप पंजाबी सीखिए !
5. चिट्ठी पढ़िए और उत्तर लिखिए !
6. उधर पत्थर मत मारो !
7. लाल ईंटें यहाँ रखो !
8. गर्म गर्म चाए लाओ !
9. अपने मैले हाथ साफ़ करो !
10. दाएं बाएं अच्छी तरह देखो !
11. तुझे पीछे नहीं मुड़ना !

1. अब	ਹੁਣ	पढ़िए	ਪੜ੍ਹੋ		
3. दूध	ਦੁੱਧ	लिखिए	ਲਿਖੋ	9. अपने	ਆਪਣੇ
4. आप	ਤੁਸੀਂ	6. पत्थर	ਪੱਥਰ	10. दाएं	ਸੱਜੇ
सीखिए	ਸਿਖੋ	7. ईंटें	ਇੱਟਾਂ	बाएं	ਖੱਬੇ
बोलिए	ਬੋਲੋ	यहाँ	ਇੱਥੇ	अच्छी तरह	ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ
5. चिट्ठी	ਚਿੱਠੀ	8. चाए	ਚਾਹ	देखो	ਵੇਖੋ
		लाओ	ਲਿਆਓ	11. ਤੂੰ ਪਿਛੇ ਨਹੀਂ ਮੁੜਨਾ.	

ਪਾਠ 9
ਕੁਝ ਨਵੇਂ ਵਾਕ
(कुछ नये वाक्य)

ਖਿਮਾ ਕਰਨਾ ਜੀ, ਤਬੀਅਤ ਠੀਕ ਨਹੀਂ।
ਕੀ ਹਾਲ ਹੈ?
ਜੀ, ਬੁਖ਼ਾਰ ਹੈ, ਸਿਰ ਪੀੜ ਵੀ ਹੈ।
ਪਿੰਡਾ ਗਰਮ ਹੈ।
ਚੰਗਾ, ਹੁਣ ਛੁੱਟੀ ਕਰੋ, ਘਰ ਚਲੇ ਜਾਓ।
ਤਿੰਨ ਵਜੇ ਪਰਤ ਆਓ।
ਇਥੇ ਡਾਕਟਰ ਦੀ ਉਡੀਕ ਕਰੋ।
ਦਵਾਈ ਦੇ ਕਿੰਨੇ ਪੈਸੇ ?
ਸਾਢੇ ਤਿੰਨ ਰੁਪਏ।
ਆਉਣ ਜਾਣ ਦਾ ਭਾੜਾ ਕਿੰਨਾ ?
ਉੱਨੀ ਰੁਪਏ।
ਬਹੁਤ ਅੱਛਾ, ਗੱਡੀ ਤਿਆਰ ਕਰੋ!
ਸਟੇਸ਼ਨ ਕਿੰਨੀ ਦੂਰ ਹੈ ?
ਪੌਣੇ ਪੰਜ ਮੀਲ ਦੂਰ ਹੈ।
ਛੇਤੀ ਕਰੋ !

ਖਿਮਾ	क्षमा	ਪਰਤ ਆਓ	वापस आओ
ਤਬੀਅਤ	तबियत	ਇੱਥੇ	यहाँ
ਗਲ	बात	ਉਡੀਕ	इंतज़ार
ਪੀੜ	पीड़ा	ਕਿੰਨੇ	कितने
ਵੀ	भी	ਸਾਢੇ ਤਿੰਨ	साढ़े तीन
ਪਿੰਡਾ	शरीर	ਆਉਣ ਜਾਣ ਦਾ	आने जाने का
ਚੰਗਾ	अच्छा	ਉੱਨੀ	उन्नीस
ਹੁਣ	अब	ਗਡੀ	गाड़ी
ਛੁੱਟੀ	छुट्टी	ਤਿਆਰ	तैयार
ਤਿੰਨ	तीन	ਪੌਣੇ ਪੰਜ	पौने पाँच
ਵਜੇ	बजे	ਛੇਤੀ	जल्दी

पंजाबी में अनुवाद कीजिए :

1. गाँव-भर में तुम अच्छी लड़कियां हो !
2. सेवा के काम करो और चरखा चलाओ !
3. कल तक यहाँ आ जाना !
4. राह में रुकना मत !
5. लाल ईंटों पर मत बैठ !
6. दूध पी, केले खा !
7. ऊंचे बनो, आगे बढ़ो !
8. अच्छी पुस्तकें पढ़ो, साफ़ लिखो !
9. तेज धूप में मत चलो !
10. छाँव में बैठो, ठंडा पानी पियो !
11. पशुओं को वृक्ष के नीचे रहने दो !

1. में	ਵਿਚ	7. ऊंचे	ਉਚੇ	पानी	ਪਾਣੀ
तुम, आप	ਤੁਸੀਂ	बनो	ਬਣੋ	पियो	ਪੀਓ
अच्छी	ਚੰਗੀਆਂ	आगे	ਅੱਗੇ	11. पशुओं को	ਪਸ਼ੂਆਂ
लड़कियाँ	ਕੁੜੀਆਂ	बढ़ो	ਵਧੋ		ਡੰਗਰਾਂ ਨੂੰ
2. और	ਅਤੇ	अच्छी	ਚੰਗੀਆਂ	वृक्ष	ਰੁੱਖ
3. यहाँ	ਇੱਥੇ	8. पुस्तकें	ਕਿਤਾਬਾਂ	नीचे	ਥੱਲੇ
आ जाना	ਆ ਜਾਣਾ	9. धूप	ਧੁੱਪ		
5. ईंटों पर	ਇੱਟਾਂ ਪੁਰ	10. छांव में	ਛਾਂ ਵਿਚ		
6. दूध	ਦੁੱਧ				

ਪਾਠ 10

'ਹੋਣਾ' ਦੇ ਰੂਪ : ਵਰਤਮਾਨ ਅਤੇ ਭੂਤ ਕਾਲ

'होना' के रूप : वर्तमान एवं भूत काल

ਹੁਣ ਮੈਂ ਤਕੜਾ ਹਾਂ।
ਅਸੀਂ ਸਾਰੇ ਗਰੀਬ ਹਾਂ।
ਕੀ ਤੂੰ ਇਥੇ ਨੌਕਰ ਹੈਂ ?
ਹਾਂ ਜੀ, ਮੈਂ ਇਥੇ ਚਪੜਾਸੀ ਹਾਂ।
ਕੀ ਤੁਸੀਂ ਹੁਣ ਵੈਲ ਹੋ ?
ਨਹੀਂ ਜੀ, ਮੈਂ ਹਾਲੀ ਬੀਮਾਰ ਹਾਂ।
ਭਰਾਓ! ਕੌਣ ਸਭ ਤੋਂ ਤਕੜਾ ਹੈ ?
ਰਾਮ ਸਭ ਤੋਂ ਤਕੜਾ ਹੈ।
ਉਹ ਮੁੰਡੇ ਸਭ ਤੋਂ ਚਲਾਕ ਹਨ।
ਮੈਂ ਕਲ ਬਿਮਾਰ ਸਾਂ।
ਅਸੀਂ ਸਭ ਬਿਮਾਰ ਸਾਂ।
ਤੂੰ ਕੱਦ ਬਿਮਾਰ ਸੈਂ ?
ਮੈਂ ਤਾਂ ਕਲ੍ਹ ਬਿਮਾਰ ਸੀ।
ਤੁਸੀਂ ਕਦ ਬੀਮਾਰ ਸਓ ?
ਅਸੀਂ ਪਰਸੋਂ ਬਿਮਾਰ ਸਾਂ।
ਉਹ ਐਤਵਾਰ ਨੂੰ ਬਿਮਾਰ ਸੀ।
ਉਸ ਦੇ ਮੁੰਡੇ ਵੀ ਬਿਮਾਰ ਸਨ।
ਹਸਪਤਾਲਾਂ ਵਿਚ ਕਈ ਡਾਕਟਰ ਸਨ।
ਕਾਲੇ ਪੱਥਰ ਪੁਰ ਦੋ ਚਿੱਟੀਆਂ ਚਿੜੀਆਂ ਸਨ।
ਲਾਲ ਫੁੱਲ ਪੁਰ ਕਈ ਤਿਤਲੀਆਂ ਸਨ।
ਉਸ ਰੁੱਖ ਤੋਂ ਤਲਾ (ਤਲਾਅ) ਇਕ ਮੀਲ ਦੂਰ ਹੈ।
ਕੀ ਤਲਾ ਵਿਚ ਨਿਰਮਲ ਪਾਣੀ ਹੋਵੇਗਾ ?
ਆਹੋ ਜੀ! ਉਸ ਦਾ ਪਾਣੀ ਨਿਰਮਲ ਤੇ ਮਿੱਠਾ ਹੈ।

ਹੁਣ	अब	ਬਿਮਾਰ	बीमार	ਸਓ, ਸਾਂ, ਸਨ	थे
ਤਕੱੜਾ	स्वस्थ	ਭਰਾਓ	भाइओ	ਐਤਵਾਰ ਨੂੰ	इतवार को
ਅਸੀਂ, ਤੁਸੀਂ	हम	ਸਭ ਤੋਂ	सब से	ਆਹੋਜੀ	जी हां
ਕੀ	क्या	ਮੁੰਡੇ	लड़के	ਵੀ	भी
ਹਾਂ ਜੀ	जी हाँ	ਚਲਾਕ	चालाक	ਪੁਰ	ऊपर
ਵਲ	ठीक	ਤੁਸੀ (ਤੁਸੀਂ)	आप	ਤੋਂ	से
ਹਾਲ	अभी	ਸਾਂ, ਸੈਂ, ਸੀ	था	ਤਲਾ	तालाब

पंजाबी में अनुवाद कीजिये :

1. हम तीन भाई हैं।
2. एक दुकानदार है दूसरा अध्यापक।
3. दोनों ग़रीब आदमी हैं।
4. आप तो अमीर आदमी हैं।
5. इस लड़के को नौकर रख लें।
6. गाँव में कोई पढ़ा लिख नहीं था।
7. सब अनपढ़ किसान थे।
8. उसकी लड़कियाँ भी अनपढ़ थीं।
9. अरी शीला ! कल तू कहाँ थी ?
10. हम तो खेत में थीं, बहुत काम था।

1.	तीन	ਤਿੰਨ		को	ਨੂੰ		भी	ਵੀ
	हैं	ਹਨ		लें	ਲੋ		काम	ਕੰਮ
2.	अध्यापक	ਅਧਿਆਪਕ	6.	गाँव में	ਪਿੰਡ ਵਿਚ		में	ਵਿਚ
4.	तो	ਤਾਂ	7.	अनपढ़	ਅਣਪੜ੍ਹ		थीं	ਸਨ
	आप	ਤੁਸੀਂ	8.	उस की	ਉਸ ਦੀਆਂ	9.	अरी	ਨੀ
				लड़कियाँ	ਲੜਕੀਆਂ		कहाँ	ਕਿੱਥੇ

ਪਾਠ 11
'ਹੋਣਾ' ਤੋਂ ਭਵਿਖਤ ਕਾਲ
(होना के रूप : भविष्यत् काल)

ਮੈਂ ਉਥੇ ਹੋਵਾਂਗਾ।
ਅਸੀਂ ਸਭ ਉਥੇ ਹੋਵਾਂਗੇ।
ਤੂੰ ਕਿੱਥੇ ਹੋਵੇਂਗਾ ?
ਮੈਂ ਬਗੀਚੇ ਦੇ ਨੇੜੇ ਹੋਵਾਂਗਾ।
ਐਤਵਾਰ ਨੂੰ ਤੁਸੀਂ ਕਿੱਥੇ ਹੋਵੋਗੇ ?
ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਘਰ ਹੋਵਾਂਗੇ।
ਮਾਤਾ ਜੀ ਕਿੱਥੇ ਹੋਣਗੇ ?
ਉਹ ਵੀ ਘਰ ਹੋਣਗੇ।
ਨੌਕਰ ਵੀ ਉਥੇ ਹੋਵੇਗਾ।
ਅਗਲੇ ਹਫਤੇ ਰਾਤਾਂ ਚਾਨਣੀਆਂ ਹੋਣਗੀਆਂ।
ਮੁੰਡੇ ਖ਼ੁਸ਼ ਹੋਣਗੇ, ਕੁੜੀਆਂ ਖ਼ੁਸ਼ ਹੋਣਗੀਆਂ।
ਸ਼ੀਲਾ ਲੀਲਾ! ਕਿਥੇ ਹੋਵੋਗੀਆਂ ?
ਅਸੀਂ ਤਾਂ ਆਪਣੇ ਸਕੂਲ ਕੋਲ ਹੋਵਾਂਗੀਆਂ।

ਉਥੇ	वहाँ	ਮਾਤਾ ਜੀ ਹੋਣਗੇ	माता जी होंगे* (होंगी)
ਹੋਵਾਂਗਾ	हूंगा	ਰਾਤਾਂ ਚਾਨਣੀਆਂ ਹੋਣਗੀਆਂ	रातें चाँदनी होंगी
ਹੋਵਾਂਗੇ	होंगे		
ਤੂੰ ਹੋਵੇਂਗਾ	तू होगा	ਹੋਣਗੇ	होंगे
ਦੇ ਨੇੜੇ	के निकट	ਕੁੜੀਆਂ ਹੋਣਗੀਆਂ	लड़कियां होंगी
ਤੁਸੀਂ	आप	ਕੋਲ	के पास
ਆਪਣੇ	अपने	ਹੋਵਾਂਗੀਆਂ	होंगी

* आदर की अभिव्यक्ति के ऐतु एक-वचन स्त्रीलिंग के लिए भी बहुवचन पुल्लिग का प्रयोग पंजाबी की विशेषता है।

पंजाबी में अनुवाद कीजिए :

1. वह वृक्ष यहाँ से कितनी दूर है ?
2. कोई दो सौ गज़ होगा।
3. हम वृक्ष के पास होंगे।
4. तुम वहाँ आ जाना।
5. क्या तुम वृक्ष के पास होगे ?
6. जी हाँ, मैं वहीं हूंगा।
7. काली घोड़ी भी वहीं होगी।
8. जब रात होगी, हम गांव के निकट होंगे।
9. रात चाँदनी होगी, अंधेरा नहीं होगा।
10. गाएं बछड़ों के लिए व्याकुल होंगी।
11. बछड़े भी व्याकुल होंगे।

1.	वृक्ष	ਰੁੱਖ
	यहाँ से	ਇਥੋਂ, ਇਥੇ ਤੋਂ
	होगा	ਹੋਏਗਾ, ਹੋਵੇਗਾ
3.	के पास	ਕੋਲ
4.	वहाँ	ਉਥੇ
	आ जाना	ਆ ਜਾਣਾ
5.	क्या	ਕੀ
6.	जी हाँ	ਹਾਂ ਜੀ; ਆਹੋ ਜੀ
7.	वहीं	ਉਥੇ ਹੀ
8.	के निकट	ਦੇ ਨੇੜੇ
9.	चाँदनी	ਚਾਨਣੀ
	अंधेरा	ਹਨੇਰਾ
10.	गाएं	ਗਾਵਾਂ
	बछड़ों के	ਵਛਿਆਂ
	लिए	ਲਈ
	होंगी	ਹੋਣਗੀਆਂ
11.	भी	ਵੀ

ਪਾਠ 12
ਕੁਝ ਨਵੇਂ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ
(कुछ नये शब्दों के प्रयोग)

ਮੈਨੂੰ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਸੀ।
ਇਹ ਗੱਲ ਸਾਨੂੰ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਸੀ।
ਕੀ ਤੈਨੂੰ ਪਤਾ ਸੀ ?
ਨਹੀਂ ਜੀ, ਮੈਂ ਤਾਂ ਹਾਜ਼ਰ ਨਹੀਂ ਸਾਂ।
ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਾਰੀ ਗੱਲ ਦੱਸੋ!
ਰਾਮ ਨੂੰ ਉਥੇ ਭੇਜੋ!
ਉਸ ਨੂੰ ਪੁੱਛੋ, ਕਿੰਨੇ ਵਜੇ ਜਾਣਾ ਹੈ।
ਤੁਹਾਨੂੰ ਦੇਰ ਨ ਹੋ ਜਾਵੇ।
ਇਸ ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਕੌਣ ਹੈ ?
ਨੌਕਰ ਤੋਂ ਪੁੱਛੋ!
ਸਾਨੂੰ ਤਾਂ ਪਤਾ ਨਹੀਂ।
ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਕੁਝ ਵੀ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਤੈਥੋਂ ਬਹੁਤ ਆਸ ਹੈ।
ਉਸ ਕੋਲ ਬਹੁਤ ਪੈਸਾ ਹੈ।
ਉਸ ਦੇ ਭਰਾ ਅਮੀਰ ਹਨ।
ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੋਲੋਂ ਪੈਸਾ ਮੰਗੋ।
ਤੁਹਾਡੇ ਕੋਲ ਕਿੰਨੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਹਨ ?
ਕਿਤਾਬਾਂ ਦਾ ਗਿਆਨ ਪੇਂਡੂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਦਿਓ।
ਇਸ ਤੋਂ ਹੋਰ ਚੰਗਾ ਕੰਮ ਕੀ ਹੈ!

ਮੈਨੂੰ	मुझे	ਕਿੰਨੇ ਵਜੇ	कितने बजे	ਕਿੰਨੀਆਂ	कितनी
ਗੱਲ	बात	ਤੁਹਾਨੂੰ	तुझे	ਚੱਵੀ	चौबीस
ਸਾਨੂੰ	हमें	(ਤੁਸਾਂ ਨੂੰ)	तुझ को	ਸਾਡੇ	हमारे पास
ਤੈਨੂੰ	तुझे, तुझ को	ਤੈਥੋਂ	तुझ से	(ਅਸਾਡੇ	
ਤਾਂ	तो	ਕੋਲ	पास	ਕੋਲ)	
ਗੱਲ ਦੱਸੋ	बात बताओ	ਤੁਹਾਡੇ ਕੋਲ	आप के पास		
ਪੁੱਛੋ	पूछो				

पंजाबी में अनुवाद कीजिए :

1. वह पुस्तक उस से ले लो और मुझे दे दो !
2. उन्हें बता दो कि हम इस कमरे में होंगे।
3. हम को पता नहीं वे घर में होंगे या नहीं।
4. मुझे समझाओ कि असली बात क्या है ?
5. क्या इन खेतों में फ़सलें हरी भरी हैं ?
6. उन को कहो मेरा नौकर यहीं होगा।
7. उस के सामने सब कापियाँ रख दो !
8. उधर से हम को चिट्ठी ज़रूर भेजो।
9. सड़क के किनारे के साथ साथ चलो !
10. आज उन के गाँव में मेला है।
11. वहाँ बड़ी भीड़ होगी, आज मत जाओ !

1. ले लो	ਲੈ ਲੋ	4. बात	ਗੱਲ	8. उधर से	ਉਧਰੋਂ
और	ਹੋਰ	5. फ़सलें	ਫ਼ਸਲਾਂ	9. सड़क के	ਸੜਕ ਦੇ
मुझे	ਮੈਨੂੰ	हरी	ਹਰੀਆਂ	किनारे	ਕੰਢੇ
2. उन्हें	ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ	भरी हैं	ਭਰੀਆਂ ਹਨ	के साथ	ਦੇ ਨਾਲ
हम होंगे	ਅਸੀਂ ਹੋਵਾਂਗੇ	6. यहीं	ਇਥੇ ਹੀ	साथ	ਨਾਲ
3. हम को	ਸਾਨੂੰ	होगा	ਹੋਵੇਗਾ	10. आज	ਅੱਜ
वे	ਉਹ	7. सब	ਸਭ	11. गाँव में	ਪਿੰਡ ਵਿਚ
होंगे	ਹੋਣਗੇ	कापियाँ	ਕਾਪੀਆਂ	होगी	ਹੋਵੇਗੀ, ਹੋਏਗੀ

ਪਾਠ 13

ਕੁਝ ਪ੍ਰਸ਼ਨਵਾਚੀ ਵਾਕ (कुछ प्रश्नवाची वाक्य)

ਕੀ ਮੇਰਾ ਨੌਕਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਦਫ਼ਤਰ ਵਿਚ ਹੈ ?
ਹਾਂ ਜੀ, ਉਸ ਦਾ ਕੰਮ ਅੱਜ ਉਥੇ ਹੈ।
ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਘਰ ਮੇਰੇ ਘਰ ਤੋਂ ਕਿੰਨੀ ਦੂਰ ਹੈ ?
ਮੇਰੇ ਖ਼ਿਆਲ ਵਿਚ, ਤੁਹਾਡਾ ਘਰ ਉਥੋਂ ਅਧਾ ਮੀਲ ਹੋਵੇਗਾ।
ਰਾਹ ਵਿਚ ਪੀਲੇ ਪੀਲੇ ਮਕਾਨ ਕਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਹਨ ?
ਉਹ ਤਾਂ ਸਾਡੇ ਆਪਣੇ ਮਕਾਨ ਹਨ।
ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਿਛੇ ਡਾਕਖਾਨਾ ਹੈ।
ਤੂੰ ਆਪਣੇ ਭਰਾ ਤੋਂ ਸਾਰੇ ਕਾਗ਼ਜ਼ ਲੈ ਆ।
ਤੇਰਾ ਭਰਾ ਅੱਜ ਕਿਥੇ ਹੈ ?
ਮੇਰਾ ਭਰਾ ਤਾਂ ਅੱਜ ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਹੋਵੇਗਾ।
ਸਾਡੇ ਬੰਦੇ ਸੁਸਤ ਕਿਉਂ ਹਨ ?
ਦਫ਼ਤਰ ਦੇ ਨਵੇਂ ਬੰਦੇ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਕਾਗ਼ਜ਼ ਵਿਖਾਓ!
ਜੀ! ਮੇਰੇ ਕਾਗ਼ਜ਼ ਤਾਂ ਉਸ ਦੇ ਮੇਜ਼ ਪੁਰ ਹਨ।
ਕੀ ਪਤਾ, ਉਸ ਕੋਲ ਹਨ, ਜਾਂ ਉਸ ਦੇ ਸਾਥੀ ਕੋਲ
ਆਪਣੇ ਵਲੋਂ ਪੂਰੀ ਵਾਹ ਲਾਓ।
ਕੁਝ ਨ ਪੁੱਛੋ, ਕਿੰਨਾ ਔਖਾ ਕੰਮ ਹੈ।
ਇਸ ਕੰਮ ਤੇ ਕੌਣ ਕੌਣ ਹੈ ?
ਕੀ ਪਤਾ!

ਕੀ	क्या	ਕਿੰਨੀ, ਕਿੱਨੀ	कितनी	ਤਾਂ	तो
ਕੰਮ, ਕੱਮ	काम	ਤੁਹਾਡਾ ਘਰ	आपका घर	ਪੁਰ	पर
ਚੰਮ	चाम	ਉਥੋਂ	वहां से	ਕੀ ਪਤਾ	क्या पता
ਅੱਜ	आज	ਆਇਆ	आया	ਉਸ ਕੋਲ	उस के पास
ਉਸ ਦਾ	उसका	ਕਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ	किन के	ਜਾਂ	अथवा
ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ	उनका	ਸਾਡੇ ਆਪਣੇ	हमारे अपने	ਵਲੋਂ	ओर से
ਤੋਂ	से	ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਿਛੇ	उनके पीछे	ਵਾਹ ਲਾਓ	प्रयत्न करो
ਤਾਂ	तो	ਵਿਖਾਓ	दिखाओ	ਔਖਾ	कठिन

पंजाबी में अनुवाद कीजिए :

1. लड़कों की मां आज बहुत बीमार थी।
2. आप के गांव वाले गरीब तो नहीं ?
3. उनके गांव से शहर कितनी दूर है ?
4. कोई साढ़े चार मील दूर होगा।
5. मेरी पगड़ी मेरे अपने सिर पर है।
6. सभी अंगुलियां बराबर नहीं, अंगूठा मोटा है।
7. अपने नौकर को यहां पौने आठ बजे भेजना !
8. बहुत अच्छा, मेरा नौकर साढ़े सात बजे ज़रूर यहां होगा।
9. चिंता मत करो, वे सभी ठीक होंगे !
10. आप का धन्यवाद !

1.	लड़कों की	ਲੜਕਿਆਂ ਦੀ
	थी	ਸੀ
2.	आप के	ਤੁਹਾਡੇ
	गांव वाले	ਪਿੰਡ ਵਾਲੇ
	तो	ਤਾਂ
3.	उनको	ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ
	से	ਤੋਂ
	कितनी	ਕਿੰਨੀ
4.	साढ़े	ਸਾਢੇ
	होगा	ਹੋਵੇਗਾ
	पगड़ी	ਪਗੜੀ, ਪੱਗ
5.	पर	ਪੁਰ
6.	सभी	ਸਭੋ
		ਸਾਰੀਆਂ ਸਭ
7.	यहां	ਇਥੇ
	पौने	ਪੌਣੇ
	आठ	ਅੱਠ
8.	सात बजे	ਸੱਤ ਵਜੇ
9.	वे	ਉਹ
	होंगे	ਹੋਣਗੇ
10.	आप का	ਤੁਹਾਡਾ
	धन्यवाद	ਧੰਨਵਾਦ

ਪਾਠ 14

ਸਾਧਾਰਣ ਭਵਿਖਤ (सामान्य भविष्यत्)

ਕੀ ਪਤਾ, ਉਹ ਹੁਣ ਆਏ ਕਿ ਕੱਲ ਆਏ ?

ਸ਼ਾਇਦ ਉਹ ਰਾਤੀ ਆਉਣ।

ਤੂੰ ਕਰੇਂ ਕਿ ਨ ਕਰੇਂ, ਕੀ ਪਤਾ!

ਤੁਸੀ ਇਥੇ ਰਹੋ ਤਾਂ ਚੰਗਾ।

ਤੁਸੀਂ ਪੁੱਛੋ, ਕਿਉਂ ਬਿਮਾਰ ਹਾਂ।

ਜੇ ਮੈਂ ਨ ਆਵਾਂ, ਤੂੰ ਉਥੇ ਨਾ ਜਾਵੀਂ!

ਤੇਰੀ ਕਿਤਾਬ ਮੇਜ਼ ਉਤੇ ਰੱਖਾਂ ਕਿ ਅਲਮਾਰੀ ਵਿਚ ?

ਜੇ ਚਿੱਠੀ ਹੁਣ ਲਿਖੋ ਤਾਂ ਚੰਗਾ ਹੈ।

ਜੀ! ਅਸੀਂ ਅੰਦਰ ਆ ਜਾਵੀਏ ?

ਹਾਂ! ਆਓ, ਕੀ ਗੱਲ ਹੈ ?

ਸੁਣਾਓ ਜੀ! ਕੀ ਹਾਲ ਚਾਲ ਹੈ ? ਕਦੇ ਸਾਡੇ ਘਰ ਵੀ ਪੈਰ ਪਾਓ।

ਕੀ ਆਖਾਂ, ਬਹੁਤ ਕੰਮ ਹੈ, ਵਿਹਲ ਮਿਲੇ ਤਾਂ ਆਵਾਂ।

ਸੇਠ ਸਾਹਿਬ ਵੇਖਣ ਤਾਂ ਕੀ ਆਖਣ!

ਛੇਤ ਸਾਰੀ ਥਾਂ ਸਾਫ਼ ਕਰੋ।

ਸੇਠ ਹੋਰਾਂ ਨੂੰ ਨਾ ਦੱਸੀਂ!

ਬਹੁਤ ਗ਼ੁਸੀਲ ਹਨ, ਮੈਨੂੰ ਕਿਤੇ ਨੌਕਰੀ ਤੋਂ ਨ ਕਢਣ।

ਕੀ	क्या	ਆਵਾਂ	आऊं	ਵੀ	भी
ਹੁਣ	अब	ਉਥੇ	वहां	ਪੈਰ ਪਾਓ	पधारिए
ਰਾਤੀ	रात को	ਤੂੰ ਨਾ ਜਾਵੀਂ	तू न जाना	ਕੀ ਆਖਾਂ	क्या कहूं
ਤੂੰ ਕਰੇਂ	तू करे	ਮੇਜ਼ ਉਤੇ	मेज़ पर	ਵਿਹਲ	फुरसत
ਤੁਸੀਂ	तुम	ਰੱਖਾਂ	मैं रखूं	ਵੇਖਣ	देखें
ਤਾਂ ਚੰਗਾ	तो अच्छा	ਆ ਜਾਵੀਏ	हम आ जाएं	ਨ ਦੱਸੀਂ	न बताना
ਪੁੱਛੋ	पूछो	ਗੱਲ	बात	ਕਿਤੇ	कहीं
ਬਿਮਾਰ ਹਾਂ	बीमार हूं	ਕਦੇ	कभी	ਕਢਣ	निकालें
ਜੇ	यदि	ਸਾਡੇ	हमारे	ਸੇਠ ਹੋਰਾਂ	सेठ महोदय

पंजाबी में अनुवाद कीजिए :

1. आज बादल हैं, शायद बरखा हो।
2. क्या पता ओले पड़ें !
3. किस को अपना कहें, सभी तमाशा देखने वाले हैं।
4. हम शायद देर से आएं। दरवाज़ा बन्द न करना।
5. हम तुम किस गिनती में हैं, यहाँ तो कोई अफ़सर भी आ जाए तो उसकी दाल न गले।
6. लड़ो नहीं, फल आधा आधा बाँट लो।
7. वे यहाँ पहुंचें न पहुंचें, तुम प्रतीक्षा न करना।
8. अंधा भिखारी कहीं कुएं में न गिर जाए।
9. उसको कौन कहे कि तेरा कसूर है।
10. मै भी न जाऊं, वह भी न आए, काम कैसे बने।

1. आज	ਅੱਜ	4. देर से	ਦੇਰ ਨਾਲ	कही	ਕਿਤੇ
बादल	ਬੱਦਲ	आएं	ਆਵੀਏ	कुएं में	ਖੂਹ ਵਿਚ
2. ओले	ਗੜੇ	5. हम तुम	ਅਸੀਂ ਤੁਸੀਂ, ਹਮਾਤੜ ਤੁਮਾਤੜ	गिर जाए	ਡਿਗ ਜਾਏ
पड़ें	ਪੈਣ	6. आधा आधा	ਅੱਧਾ ਅੱਧਾ	9. कौन	ਕੌਣ
3. को	ਨੂੰ	बांट लो	ਵੰਡ ਲੋ	10. भी	ਵੀ
अपना कहें	ਆਪਣਾ ਆਖੀਏ	7. पहुँचें	ਪਹੁੰਚਣ, ਪੁੱਜਣ	काम	ਕੰਮ
सभी	ਸਭੋ	8. अंधा	ਅੰਨ੍ਹਾ	कैसे	ਕਿਵੇਂ
देखने वाले	ਦੇਖਣ ਵਾਲੇ	भिखारी	ਮੰਗਤਾ		

ਪਾਠ 15

ਸਾਧਾਰਣ ਭਵਿਖਤ : ਕੁਝ ਨਵੇਂ ਵਾਕ (साधारण भविष्यत् : कुछ नए वाक्य)

ਉਹ ਅੱਜ ਆਏਗਾ ਕਿ ਕੱਲ ਆਏਗਾ ?
ਉਸ ਦੇ ਪੁੱਤ ਤਾਂ ਰਾਤ ਨੂੰ ਆਉਣਗੇ।
ਉਹ ਸ਼ਾਇਦ ਸਵੇਰ ਨੂੰ ਅਪੜੇਗਾ।
ਕੀ ਤੂੰ ਸਾਰਾ ਕੰਮ ਸ਼ਾਮ ਤਕ ਮੁਕਾਏਂਗਾ ?
ਜੋ ਕੁਝ ਪੁਛੋਗੇ, ਠੀਕ ਠੀਕ ਦੱਸਾਂਗੀ।
ਹੁਣ ਤੁਸੀਂ ਕਿਥੇ ਜਾਓਗੇ, ਰਾਤ ਪੈ ਜਾਏਗੀ।
ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਰਹੋ ਤਾਂ ਚੰਗਾ।
ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਤੁਹਾਡੇ ਕੋਲ ਆਵਾਂਗਾ,
ਕੁਝ ਦਿਨ ਜ਼ਰੂਰ ਠਹਰਾਂਗਾ।
ਅਸੀਂ ਪੁਛਾਂਗੀਆਂ ਤੂੰ ਚੁੱਪ ਹੋ ਜਾਏਂਗਾ।
ਸ਼ਾਹ ਹੋਰੀਂ ਸਾਡੇ ਘਰ ਪੈਰ ਪਾਉਣਗੇ, ਵੱਡੇ ਭਾਗ!
ਵਿਹਲ ਮਿਲੇਗੀ ਤਾਂ ਤੁਹਾਡਾ ਕੰਮ ਜ਼ਰੂਰ ਕਰਾਂਗਾ।
ਸਾਹਿਬ ਵੇਖੇਗਾ ਤਾਂ ਕੀ ਆਖੇਗਾ!
ਨੌਕਰੀ ਤੋਂ ਕਢੇਗਾ ਤਾਂ ਵੀ ਚੰਗਾ।
ਕਿਸੇ ਨਵੀਂ ਥਾਂ ਜਾਵਾਂਗੇ।
ਮਰਣ ਵਾਲੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਦੀਆਂ ਮਾਵਾਂ ਰੋਣਗੀਆਂ।

ਅੱਜ	आज	ਪੈ ਜਾਏਗੀ	पड़ जाएगी	ਵੇਖੇਗਾ	देखेगा
ਪੁੱਤ	पुत्र	ਕੋਲ	पास	ਤਾਂ	तो
ਨੂੰ	को	ਜਦੋਂ	जब	ਆਖੇਗਾ	कहेगा
ਆਉਣਗੇ	आएंगे	ਤੁਹਾਡੇ ਕੋਲ	आप के पास		
ਅਪੜੇਗਾ	पहुँचेगा	ਆਵਾਂਗਾ	आऊंगा	ਤੋਂ	से
ਕੀ	क्या	ਅਸੀਂ	हम	ਕਢੇਗਾ	निकालेगा
ਕੰਮ	काम	ਪੁਛਾਂਗੀਆਂ	पूछेंगी	ਤਾਂ ਵੀ	तो भी
ਮੁਕਾਏਂਗਾ	तूं समाप्त करेगा	ਤੂੰ ਜਾਏਂਗਾ	तू जाएगा	ਨਵੀਂ ਥਾਂ	नई जगह
ਕੁਝ	कुछ	ਸਾਡੇ	हमारे	ਜਾਵਾਂਗੇ	जाएंगे
ਪੁਛੋਗੇ	पूछोगे	ਪੈਰ ਪਾਉਣਗੇ	पधारेंगे	ਕੁੜੀਆਂ	लड़कियाँ
ਦੱਸਾਂਗੀ	बताऊंगी	ਵੱਡੇ ਭਾਗ	बड़े भाग्य	ਰੋਣਗੀਆਂ	रोएंगी
ਹੁਣ	अब	ਵਿਹਲ	फुरसत	ਤੁਸੀਂ	आप
ਕੰਮ	काम	ਕਿਥੇ	कहां	ਕਰਾਂਗਾ	करूंगा

पंजाबी में अनुवाद कीजिए :

1. बादल बरसेगा, खेत हरे-भरे हो जाएंगे।
2. सहायता कोई नहीं करेगा, सभी तमाशा देखेंगे।
3. तुम किस को अपना कहोगे, जब धोखा ही धोखा है।
4. रात अंधेरी होगी, तो कैसे गाँव पहुंचोगी ?
5. मुझ को तो रात–भर नींद नहीं आएगी।
6. जो चोरी करेगा जरूर पकड़ा जाएगा।
7. जब लड़कियाँ रोएंगी, मैं कैसे शान्त रहूंगा।
8. तुम शोर मचाओगी तो हम पढ़ाई कैसे करेंगे ?
9. हम तो मुंह पर सारी बात कह देंगी, तुम मत डरो।
10. कई कहेंगे कि यह सब झूठ है।
11. जब तार आएगा, हम दोनों को जाना पड़ेगा।

1. बादल — ਬੱਦਲ
   बरसेगा — ਵਸੇਗਾ
   हो जाएंगे — ਹੋ ਜਾਣਗੇ
2. सभी तमाशा — ਸਭੋ ਤਮਾਸ਼ਾ
   देखेंगे — ਵੇਖਣਗੇ
3. तुम — ਤੁਸੀਂ
   किस को — ਕਿਸ ਨੂੰ
   अपना — ਆਪਣਾ
   जब — ਜਦੋਂ
4. अंधेरी — ਹਨੇਰੀ
   कैसे — ਕਿਵੇਂ
   पहुंचोगी — ਪੁੱਜੋਗੀਆਂ
5. मुझ को — ਮੈਨੂੰ
   रात-भर — ਰਾਤਭਰ
6. पकड़ा — ਫੜਿਆ
   जाएगा — ਜਾਏਗਾ
7. जब — ਜਦੋਂ
   लड़कियाँ — ਕੁੜੀਆਂ
   रोएंगी — ਰੋਣਗੀਆਂ
   कैसे — ਕਿਵੇਂ
8. तुम — ਤੁਸੀਂ
   हम — ਅਸੀਂ
   करेंगे — ਕਰਾਂਗੇ
9. मुंह पर — ਮੂੰਹ ਤੇ
   यह सब — ਇਹ ਸਭ
   कह देंगी — ਆਖਦਿਆਂ ਗੀਆਂ
11. जाना — ਜਾਣਾ
    पड़ेगा — ਪਏਗਾ

ਪਾਠ 16

ਵਰਤਮਾਨ ਕ੍ਰਿਦੰਤ ਦੀ ਵਰਤੋਂ (वर्तमान कृदंत के प्रयोग)

*ਮੈਂ ਹੁਣ ਘਰ ਨੂੰ ਜਾਂਦਾ ਹਾਂ।
ਕੀ, ਤੁਸੀਂ ਵੀ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਚਲਦੇ ਹੋ ?
ਨਹੀਂ ਜੀ ਮੈਂ ਤਾਂ ਹਾਲੀਂ ਕੰਮ ਕਰਦਾ ਹਾਂ।
ਉਹ ਪੰਜਾਬੀ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਬੋਲਦੀ ਹੈ।
ਉਸ ਦੀਆਂ ਭੈਣਾਂ ਵੀ ਪੰਜਾਬੀ ਜਾਣਦੀਆਂ ਹਨ।
ਅਸੀਂ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਨਹੀਂ ਜਾਣਦੇ।
ਉਹ ਪੁਛਦਾ ਹੈ ਪਈ ਇਹ ਸੜਕ ਕਿਧਰ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।
ਮੈਂ ਦਫ਼ਤਰ ਨੂੰ ਦਸ ਵਜੇ ਜਾਂਦਾ ਸਾਂ।
ਤੁਹਾਡੇ ਦੋਵੇਂ ਭਰਾ ਵੀ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਜਾਂਦੇ ਸਨ।
ਜਦੋਂ ਗਰਮੀਆਂ ਆਉਂਦੀਆਂ ਸਨ ਅਸੀਂ ਸੱਤ ਵਜੇ ਦਫ਼ਤਰ ਅਪੜਦੇ ਸਾਂ।
ਜੇਕਰ ਤੁਸੀਂ ਆਖਦੇ ਤਾਂ ਮੇਰਾ ਨੌਕਰ ਇਥੇ ਆ ਜਾਂਦਾ।
ਜੇਕਰ ਬਾਰਸ਼ ਨ ਹੁੰਦੀ ਤਾਂ ਕਣਕ ਹੋਰ ਮਹੰਗੀ ਹੁੰਦੀ।
ਜੇਕਰ ਤੂੰ ਪਹਲਾਂ ਦਸਦਾ ਤਾਂ ਮੈਂ ਚਿੱਠੀ ਲਿਖ ਭੇਜਦਾ।
ਉਹ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਹੋਣ ਤਾਂ ਰੁਕ ਜਾਵੀਂ।
ਜੇ ਤੁਸੀਂ ਮਿਹਨਤ ਕਰਦੇ ਹੋ ਤਾਂ ਸਫ਼ਲ ਹੋਵੋਗੇ।

ਜਾਂਦਾ ਹਾਂ	जाता हूं	ਪਈ	कि	ਅਪੜਦੇ ਸਾਂ	पहुंचते थे
ਮੇਰੇ ਨਾਲ	मेरे साथ	ਜਾਂਦੀ ਹੈ	जाती है	ਤੁਸੀਂ ਆਖਦੇ	आप कहते
ਤੁਸੀਂ ਚਲਦੇ ਹੋ	आप चलते हैं	ਜਾਂਦਾ ਸਾਂ	जाता था	ਜੇਕਰ	यदि
ਹਾਲੀਂ	अभी	ਤੁਹਾਡੇ ਦੋਵੇਂ ਭਰਾ	आप के दोनों भाई	ਹੁੰਦੀ (ਹੋਂਦੀ)	होती
ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ	भली प्रकार	ਜਾਂਦੇ ਸਨ	जाते थे	ਕਣਕ	गेहूं
ਉਹ ਬੋਲਦੀ ਹੈ	वह बोलती है	ਜਦੋਂ	जब	ਹੋਰ	और
ਵੀ	भी	ਗਰਮੀਆਂ	ग्रीष्म ऋतु	ਪਹਲਾਂ	पहले
ਜਾਣਦੀਆਂ ਹਨ	जानती हैं	ਆਉਂਦੀਆਂ ਸਨ	आती थीं	ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਹੋਣ	काम करते हो
ਪੁਛਦਾ ਹੈ	पूछता है	ਸੱਤ	सात	ਰੁਕ ਜਾਵੀਂ	तू रुक जाना

* ਮੈਂ ਜਾਂਦਾ ਹਾਂ (ਆਂ, ਵਾਂ), ਮੈਂ ਜਾਨਾਂ

पंजाबी में अनुवाद कीजिए :

1. बड़ी बहन खाना पकाती है, छोटी पानी भरती है।
2. वे बालक गली में क्या करते हैं ?
3. वे आपस में बातें करते हैं।
4. क्या आप पंजाबी नहीं बोलते ?
5. हम पंजाबी समझ लेते हैं, पर अच्छी तरह बोल नहीं सकते।
6. यदि वे सवेरे से काम करते तो अब तक समाप्त कर लेते।
7. क्या आप उसी गली में रहते थे, जहां छोटा सा मंदिर है ?
8. हम तो पंजाबी सीखती हैं, आप क्या सीखती हैं ?
9. तुम हर रोज़ कितने बजे उठते हो ?
10. पहले तो मैं चार बजे उठता था, अब सर्दी में पाँच बजे जागता हूं।
11. वह जब मिलता है, हंसता हंसता दीखता है।

1.	बड़ी बहन	ਵੱਡੀ ਭੈਣ		अच्छी तरह	ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ		मंदिर	ਮੰਦਰ
	पकाती	ਪਕਾਉਂਦੀ ਹੈ	6.	अब तक	ਹੁਣ ਤਕ	8.	हम	ਅਸੀਂ
							सीखती हैं	ਸਿਖਦੀਆਂ ਹਾਂ
	भरती है	ਭਰਦੀ ਹੈ		समाप्त कर लेते	ਮੁਕਾਂ ਦੇਂਦੇ		आप	ਤੁਸੀਂ
							सीखती हैं	ਸਿਖਦੀਆਂ ਹੋ
2.	क्या करते हैं	ਕੀ ਕਰਦੇ ਹਨ	7.	उसी	ਉਸੇ	9.	कितने बजे	ਕਿੰਨੇ ਵਜੇ
3.	आपस में	ਆਪੋ ਵਿਚ		आप रहते थे	ਤੁਸੀਂ ਰਹਿੰਦੇ ਸਓ	10.	पहले तो	ਪਹਲਾਂ ਤਾਂ
	बातें करते	ਗੱਲਾਂ ਕਰਦੇ ਹਨ		जहाँ	ਜਿਥੇ		मैं उठता था	ਮੈਂ ਉਠਦਾ ਸਾਂ
5.	समझ लेते हैं	ਸਮਝ ਲੈਂਦੇ ਹਾਂ		छोटा सा	ਛੋਟਾ ਜੇਹਾ			

ਪਾਠ 17

ਵਾਧੂ ਵਾਕ (अतिरिक्त वाक्य)

ਚਲਦੀ ਗੱਡੀ ਤੋਂ ਮਤ ਉਤਰੋ।
ਵਗਦਾ ਪਾਣੀ ਵੇਖ ਕੇ ਅਸੀਂ ਖੁਸ਼ ਹੁੰਦੇ ਹਾਂ।
ਸ਼ਾਇਦ ਤੂੰ ਭੁਲਦੀ ਹੋਵੇਂ।
ਉਹ ਦੌੜਦਾ ਭਜਦਾ ਕਿਧਰ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ?
ਉਹ ਸਾਰੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਘਰ ਜਾ ਕੇ ਦਸਦਾ ਹੋਵੇਗਾ।
ਕੀ ਪਤਾ, ਕਿਸ ਕਿਸ ਅੱਗੇ ਗੱਲਾਂ ਕਰਦਾ ਹੋਵੇਗਾ ?
ਗਾਈਆਂ ਪਿੰਡ ਦੇ ਬਾਹਰ ਘਾਹ ਚਰਦੀਆਂ ਹੋਣਗੀਆਂ।
ਜੇ ਸੂਰਜ ਨ ਹੁੰਦਾ, ਜੀਵਨ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਨ ਹੁੰਦਾ।
ਉਹ ਆਖਦੇ ਸਨ 'ਕਰ ਸੇਵਾ, ਖਾ ਮੇਵਾ'।
ਮੈਂ ਆਖਦਾ ਹਾਂ, ਫਿਰ ਵੀ ਦਇਆ ਚੰਗੀ ਹੈ।
ਟੁਰਦਿਆਂ ਟੁਰਦਿਆਂ ਅਸੀਂ ਅਗਲੇ ਪਿੰਡ ਜਾ ਪੁਜਾਂਗੇ।
ਮੈਂ ਤਾਂ ਤੁਹਾਡੀ ਭੈਣ ਨੂੰ ਜਾਣਦੀ ਹਾਂ।
ਅਸੀਂ ਇਕੋ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਦੀਆਂ ਸਾਂ।

ਚਲਦੀ	चलती	ਸਾਰੀਆਂ ਗੱਲਾਂ	सब बातें	ਆਖਦੇ ਸਨ	कहते थे
ਗੱਡੀ	गाड़ी				
ਵਗਦਾ ਪਾਣੀ	बहता पानी	ਦਸਦਾ ਹੋਵੇਗਾ	बताता होगा	ਆਖਦਾ ਹੈ	कहता है
ਵੇਖ ਕੇ	देख कर	ਕਿਸ ਅੱਗੇ	किस के आगे	ਟੁਰਦਿਆਂ ੨	चलते चलते
ਅਸੀਂ	हम	ਗੱਲਾਂ ਕਰਦਾ ਹੋਵੇਗਾ	बातें करता होगा	ਅਸੀਂ ਪੁਜਾਂਗੇ	हम पहुँचेंगे
ਹੁੰਦੇ ਹਾਂ	होते हैं	ਘਾਹ	घास	ਤੁਹਾਡੀ ਭੈਣ ਨੂੰ	आपकी बहन को
ਤੂੰ ਭੁਲਦੀ ਹੋਵੇਂ	तू भूलती हो	ਗਾਈਆਂ ਚਰਦੀਆਂ ਹੋਣੀਆਂ	गाएं चरती होंगी	ਜਾਣਦੀ ਹਾਂ	जानती हूं
ਭਜਦਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ	भागता जाता है	ਨ ਹੁੰਦਾ	न होता	ਪੜ੍ਹਦੀਆਂ ਸਾਂ	पढ़ती थीं

ਉਹ ਆਪਣੇ ਨਿੱਕੇ ਭਰਾ ਨੂੰ ਝਿੜਕਦਾ ਹੈ।
ਨਿੱਕਾ ਭਰਾ ਦੁਖੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।
ਦੁਖ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਉਦਾਸ ਕਰਦਾ ਹੈ।
ਕੀ ਛਕੜਾ ਪਿੰਡ ਨੂੰ ਚਲਦਾ ਹੈ।
ਛਕੜੇ ਵਿਚ ਕੌਣ ਕੌਣ ਬੈਠਦੇ ਹਨ ?
ਮੇਰੀਆਂ ਭੈਣਾਂ ਸ਼ਹਰ ਤੋਂ ਰੋਜ਼ ਪਿੰਡ ਨੂੰ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ।
ਗਵਾਂਢਣ ਦੀ ਕੁੜੀ ਵੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਟੁਰ ਪੈਂਦੀ ਹੈ।
ਕਿਸਾਨ ਬਲਦਾਂ ਨੂੰ ਕੁਟਦਾ ਹੈ।
ਬਲਦ ਦੌੜਦੇ ਦੌੜਦੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।
ਧੂੜ ਉਡਦੀ ਹੈ, ਕੁਝ ਵੀ ਦਿਸਦਾ ਨਹੀਂ।
ਜਦੋਂ ਭੇਡਾਂ ਬਕਰੀਆਂ ਵਾਪਸ ਆਉਂਦੀਆਂ ਸਨ, ਬੱਚੇ ਖੁਸ਼ ਹੁੰਦੇ ਸਨ।
ਉਹ ਮੇਮਣਿਆਂ ਨਾਲ ਖੇਡਦੇ ਸਨ।
ਕਾਲੇ ਚਿਟੇ ਸੋਹਣੇ ਸੋਹਣੇ ਮੇਮਣੇ ਮੈਨੂੰ ਚੰਗੇ ਲਗਦੇ ਹਨ।
ਕਿਸਾਨ ਪਸ਼ੂ ਪਾਲਦੇ ਹਨ, ਸ਼ਹਿਦ ਦੀਆਂ ਮੱਖੀਆਂ ਵੀ ਪਾਲਦੇ ਹਨ।
ਜੇਕਰ ਉਹ ਚੰਗੀ ਵਾਹੀ ਕਰਦਾ, ਉਸਨੂੰ ਚੰਗਾ ਝਾੜ ਲਭਦਾ।
ਆਟਾ ਪੀਸਦਿਆਂ ਪੀਸਦਿਆਂ ਵੀ ਬੁੱਢੀ ਸੌਂ ਜਾਂਦੀ ਸੀ।
ਉਹ ਧਨ ਕਮਾਉਂਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਜੂਏ ਵਿਚ ਹਾਰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ।
ਕੀ ਕਰੀਏ ਵਖਤ ਕਢਣਾ ਵੀ ਔਖਾ ਜਾਪਦਾ ਹੈ।
ਹੁਣ ਤਾਂ ਅੰਬ ਜਾਂਦੀ ਰੁਤ ਦਾ ਮੇਵਾ ਹੈ।
ਰਾਹੇ ਰਾਹੇ ਜਾਂਦਿਆਂ! ਸਿਪਾਹੀਆ, ਇਹ ਪੰਡ ਚੁਕਾਈਂ!

ਨਿੱਕੇ	छोटे	ਕੁੜੀ	लड़की	ਸੋਹਣੇ	सुन्दर
ਭਰਾ ਨੂੰ	भाई को	ਦੇ ਨਾਲ	के साथ	ਚੰਗੇ ਲਗਦੇ	अच्छे लगते हैं
ਹੁੰਦਾ ਹੈ	होता है	ਟੁਰ ਪੈਂਦੀ	चल पड़ती	ਜੇਕਰ	यदि
ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ	मनुष्य को	ਬਲਦਾਂ ਨੂੰ	बैलों को	ਵਾਹੀ	हल चलाना
ਕੌਣ	कौन	ਕੁਟਦਾ	पीटता	ਝਾੜ	फ़सल, उपज
ਬੈਠਦੇ ਹਨ	बैठते हैं	ਧੂੜ	धूल	ਲਭਦਾ	उपलब्ध होता
ਪਿੰਡ ਨੂੰ	गाँव को	ਉਡਦੀ	उड़ती	ਪੀਸਦਿਆਂ	पीसते
ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ	जाती हैं	ਕੁਝ ਵੀ	कुछ भी	ਸੌਂ ਜਾਂਦੀ ਸੀ	सो जाती थी
ਗਵਾਂਢਣ	पड़ोसन	ਦਿਸਦਾ	दीखता	ਕਮਾਉਂਦਾ ਹੈ	कमाता है
ਅੰਬ	आम	ਜਦੋਂ	जब	ਵਖਤ ਕਢਣਾ	समय काटना

ਰਾਹੇ ਰਾਹੇ	हे रास्ते पर	ਭੇਡਾਂ	भेड़ें	ਔਖਾ	कठिन
ਜਾਂਦਿਆਂ!	जाने वाले	ਆਉਂਦੀਆਂ ਸਨ	आती थीं	ਜਾਪਦਾ ਹੈ	प्रतीत होता है
				ਹੁਣ ਤਾਂ	अब तो
		ਮੇਮਣਿਆਂ	मेमनों के	ਜਾਂਦੀ ਰੁੱਤ	जाती ऋतु
		ਨਾਲ	साथ	ਪੰਡ	गठड़ी
		ਖੇਡਦੇ ਸਨ	खेलते थे	ਚੁਕਾਈਂ	उठवाना

ਪਾਠ 18

ਭੂਤ ਕ੍ਰਿਦੰਤ ਕੇ ਪ੍ਰਯੋਗ (भूत कृंदत के प्रयोग)

ਕੱਲ ਉਹ ਜਲੰਧਰੋਂ ਆਇਆ।
ਉਥੇ ਚੰਗਾ ਮੀਂਹ ਪਇਆ।
ਸ਼ਾਮੀਂ ਕੁੜੀਆਂ ਅੰਦਰ ਨੂੰ ਗਈਆਂ।
ਮੈਂ ਆਪ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜਾਂਦਿਆਂ ਵੇਖਿਆ।
ਅਸੀਂ ਦਰਿਆ ਦੇ ਕੰਢੇ ਪਹੁੰਚੇ।
ਪਰ ਉਥੇ ਕੋਈ ਬੇੜੀ ਨਹੀਂ ਸੀ ਲਭੀ।
ਤੁਸੀਂ ਉਸ ਬਿਚਾਰੀ ਦਾ ਹਾਲ ਨਹੀਂ ਸਮਝ ਸਕੇ।
ਕੀ ਤੁਸੀਂ ਉਸਦੀ ਬੋਲੀ ਨਹੀਂ ਸਮਝੀ ?
ਜਦੋਂ ਉਹ ਸ਼ੇਰ ਕੋਲੋਂ ਲੰਘੇ ਉਹ ਘਬਰਾ ਗਏ।
ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਬੰਦੂਕ ਕਿਥੇ ਡਿਗੀ।
ਅਸੀਂ ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਆ ਕੇ ਬਹੁਤ ਪਛਤਾਏ।
ਸਾਥੀ ਵਿਛੜ ਗਏ, ਘੋੜੇ ਗਵਾਚ ਗਏ।
ਨੌਕਰ ਸਵੇਰੇ ਸੁਨੇਹਾ ਲੈ ਆਇਆ ਪਈ ਸਾਰੇ ਬੰਦੇ ਰਾਹ ਭੁੱਲ ਕੇ ਹੋਰ ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਜਾ ਅਪੜੇ।
ਬਿਚਾਰੇ ਬਹੁਤ ਖੱਜਲ ਖੁਆਰ ਹੋਏ।
ਸਾਰੀ ਰਾਤ ਨਹੀਂ ਸੁੱਤੇ*।

ਜਲੰਧਰੋਂ	जालंधर से	ਉਥੇ	वहां	ਵਿਛੜ ਗਏ	बिछड़ गए
ਉਥੇ	वहाँ	ਲਭੀ ਸੀ	मिलती थी	ਗਵਾਚ ਗਏ	गुम हो गए
ਪਇਆ	पड़ा	ਗੱਲ	बात	ਪਈ	कि
ਸ਼ਾਮੀਂ	शाम को	ਜਦੋਂ	जब	ਭੁੱਲ ਕੇ	भूलकर
ਕੁੜੀਆਂ	लड़कियां	ਕੋਲੋਂ ਲੰਘੇ	के पास	ਅਪੜੇ	पहुँचे

* इस प्रकार के शब्दों के लिए देखिए अंतिका

ਗਈਆਂ	गई		से गुज़रे		
ਮੈਂ	मैं ने	ਡਿਗੀ	गिरी	ਖਜਲ	परेशान
ਵੇਖਿਆ	देखा	ਪਿੰਡ ਵਿਚ	गांव में	ਸੁੱਤੇ	सोए
ਕੰਢੇ	किनारे				

पंजाबी में अनुवाद कीजिए :

1. क्या पता मेरा तोता कहाँ उड़ गया ?
2. शाम को लड़कियां कुएं पर पानी भरने आईं।
3. रस्सी टूट गई तो बालटी कुएं में गिर गई।
4. माली कुएं में उतरा और बालटी निकाल लाया।
5. किसान बोला बाढ़ से मेरी सारी फसल खराब हो गई।
6. मैं सवेरे चार बजे उठा, बाहर निकला तो आंगन में एक बच्चे को धरती पर सोया पाया।
7. क्या आप के गाँव में भी बारिश नहीं हुई ?
8. हमें पौधे लगाने का कोई लाभ नहीं हुआ।
9. जब हम उसे दफ़तर में मिले तो वह बोला, मैं तो तुम्हें पहचानता नहीं।
10. रात पड़ गई, पर उन की भैंसें वापस नहीं आईं।
11. आप का कागज़ कहां गुम हो गया। मुझे कुछ भी पता नहीं।

1. क्या	ਕੀ	4. उतरा	ਉਤਰਿਆ	7. भी	ਵੀ
कहां	ਕਿਥੇ	और	ਅਤੇ	8. पौधे	ਬੂਟੇ
उड़ गया	ਉਡ ਗਇਆ	निकाल	ਕਢ	लगाने का	ਲਾਉਣ ਦਾ
2. शाम को	ਸ਼ਾਮੀ	लाया	ਲਿਆਇਆ	हुआ	ਹੋਇਆ
कुएं पर	ਖੂਹ ਤੇ	5. बोला	ਬੋਲਿਆ	9. जब	ਜਦੋਂ
पानी	ਪਾਣੀ ਭਰਨ	बाढ़ से	ਹੜ੍ਹ ਨਾਲ	उसे	ਉਸ ਨੂੰ
भरने आईं	ਆਈਆਂ	6. मैं उठा	ਮੈਂ ਉਠਿਆ	पहचानता	ਪਛਾਣਦਾ
3. टूट गईं	ਟੁੱਟ ਗਈ	निकला	ਨਿਕਲਿਆ	10. पड़ गई	ਪੈ ਗਈ
गिरना	ਡਿਗਣਾ	आंगन में	ਵਿਹੜੇ ਵਿਚ	भैंसें	ਮਝਾਂ
		सोया	ਸੁੱਤਾ	11. गुम हो	ਗੁਆਚ
		पाया	ਵੇਖਿਆ	गया	ਗਇਆ
				कुछ भी	ਕੁਝ ਵੀ

ਪਾਠ 19
ਭੂਤ ਕਾਲ ਦੇ ਰੂਪ
(भूत काल के रूप)

ਮੈਂ ਹਾਲੀਂ ਇਕ ਮੀਲ ਗਇਆ ਸਾਂ ਕਿ ਬਾਰਿਸ਼ ਹੋਣ ਲੱਗੀ।
ਅਸੀਂ ਸਾਰਾ ਰਾਹ ਚਿੱਕੜ ਵਿਚ ਲੰਘਦੇ ਗਏ ਸਾਂ।
ਖਵਰੇ ਤੂੰ ਕਿਥੇ ਗਇਆ ਸੈਂ, ਮੈਂ ਉਡੀਕਦਾ ਰਹਿਆ, ਅਧੀ ਰਾਤ ਪੈ ਗਈ ਸੀ।
ਸਾਰਾ ਪਿੰਡ ਸੌਂ ਗਇਆ ਸੀ, ਮੇਰੀ ਵਾਜ ਕੌਣ ਸੁਣਦਾ।
ਇਹ ਬਚਾ ਕਿਉਂ ਉਦਾਸ ਹੋ ਗਇਆ ਹੈ ?
ਸ਼ਾਇਦ ਰਾਹ ਭੁੱਲ ਗਇਆ ਹੈ।
ਪਤਾ ਕਰੋ ਇਹ ਕਿਹੜੇ ਪਿੰਡ ਤੋਂ ਆਇਆ ਹੈ।
ਮੇਰੇ ਘਰ ਕੋਲ ਕੁਝ ਕੁੜੀਆਂ ਵਿਆਹ ਤੇ ਆਈਆਂ ਹਨ।
ਇਹ ਮੁੰਡਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਹੋਣਾ ਹੈ।
ਕੀ ਤੂੰ ਪਤਾ ਕਰ ਆਇਆ ਹੈਂ ?
ਹਾਂ ਜੀ, ਮੈਂ ਸਭ ਥਾਂਈ ਹੋ ਆਇਆ ਹਾਂ।
ਉਹ ਸੜਕ ਮੇਰੇ ਪਿੰਡ ਤਕ ਗਈ ਹੈ।
ਮੈਂ ਪਿੰਡ ਤੋਂ ਨਵੀਂ ਖਬਰ ਲਿਆਇਆ ਹਾਂ,
ਪਈ ਰਾਤ ਨੂੰ ਸਰਪੰਚ ਦੀ ਗਾਂ ਗੁਆਚ ਗਈ ਹੈ।
ਤੁਸੀਂ ਇਥੇ ਕਿੰਨੇ ਵਜੇ ਅਪੜੇ ਹੋ ?

ਹਾਲੀਂ	अभी	ਉਡੀਕਦਾ	प्रतीक्षा करता	ਹੋਣਾ ਹੈ	होगा
ਗਇਆ ਸਾਂ	गया था	ਰਹਿਆ	रहा	ਤੂੰ ਆਇਆ ਹੈਂ	तू आया हैं
ਹੋਣ ਲੱਗੀ	होने लगी	ਪੈ ਗਈ	पड़ गई	ਹਾਂ ਜੀ	जी हां
ਚਿੱਕੜ	कीचड़	ਸੌਂ ਗਇਆ	सो गया	ਸਭ ਥਾਂਈ	सब जगह
ਲੰਘ ਕੇ	गुज़र के	ਵਾਜ	आवाज़	ਲਿਆਇਆ	ले आया
ਗਏ ਸਾਂ	गए थे	ਭੁੱਲ ਗਇਆ	भूल गया	ਹਾਂ	हूं
ਖਵਰੇ	न जाने	ਕਿਹੜੇ	कौनसे	ਪਈ	कि
ਕਿੱਥੇ	कहां	ਕੋਲ	के पास	ਗਾਂ	गाए
ਤੂੰ ਗਇਆ ਸੈਂ	तू गया था	ਮੁੰਡਾ	लड़का	ਗੁਆਚ ਗਈ	गुम हो गई
				ਕਿੰਨੇ ਵਜੇ	कितने बजे
				ਅਪੜੇ ਹੋ	पहुंचे हो

पंजाबी में अनुवाद कीजिए :

हम अपने घर से अभी एक मील ही गये थे कि बारिश होने लगी। हम कीचड़ में से गए थे। न जाने तुम कहां गए थे। गोल मार्कीट के पास हम तुम्हारी प्रतीक्षा करते रहे।

जब मैं वापस आया सूरज डूब चुका था। रात पड़ गई थी, सारा गांव सो गया था। मैं देर तक अपने मित्र को आवाज देता रहा। कोई नहीं बोला। थक कर मैं धर्मशाला में चला गया। वहीं मैंने रात काटी।

अभी	ਹਾਲੀਂ	के पास	ਦੇ ਕੋਲ	गांव	ਪਿੰਡ
हम गए थे	ਅਸੀਂ ਗਏ ਸਾਂ	तुम्हारी	ਤੁਹਾਡੀ	सो गया था	ਸੌਂ ਗਇਆ ਸੀ
होने लगी	ਹੋਣ ਲਗੀ	प्रतीक्षा	ਉਡੀਕ	देता रहा	ਦੇਂਦਾ ਰਹਿਆ
कीचड़ में से	ਚਿੱਕੜ ਵਿਚ	जब	ਜਦੋਂ	काटी थी	ਕੱਟੀ ਸੀ
न जाने	ਖਵਰੇ	डूब चुका था	ਡੁੱਬ ਚੁਕਾ ਸੀ		
कहां	ਕਿਥੇ	पड़ गई थी	ਪੈ ਗਈ ਸੀ		

ਪਾਠ 20
ਭੂਤ ਕਾਲ ਦੇ ਹੋਰ ਰੂਪ
(भूत काल के और रूप)

ਉਸ ਨੇ ਤਾਂ ਹਾਲੀਂ ਮੈਨੂੰ ਕੋਈ ਚਿੱਠੀ ਨਹੀਂ ਲਿਖੀ।
ਮੈਂ ਪੰਜ ਚਿੱਠੀਆਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਲਿਖੀਆਂ ਸਨ।
ਮੈਨੂੰ ਨੌਕਰ ਨੇ ਦਸਿਆ ਪਈ ਤੁਸੀਂ ਸਵੇਰੇ ਵੀ ਆਏ ਸਓ।
ਖਾਣਾ ਬਣਿਆ ਪਇਆ ਹੈ, ਖਾ ਕੇ ਜਾਣਾ ਜੀ।
ਬਾਰੀਆਂ ਕਿਉਂ ਬੰਦ ਕੀਤੀਆਂ ਨੇ, ਹਨੇਰਾ ਵਧ ਗਇਆ ਹੈ।
ਅਸਾਂ ਅਖ਼ਬਾਰ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਿਆ ਸੀ, ਤੁਹਾਨੂੰ ਇਨਾਮ ਮਿਲਿਆ ਹੈ।
ਸਾਡੇ ਫ਼ੌਜੀਆਂ ਨੇ ਦੁਸ਼ਮਨ ਦੇ ਕਈ ਹਵਾਈ ਜਹਾਜ਼ ਡੇਗੇ ਹਨ।
ਦੇਰ ਨਾਲ ਖ਼ਬਰ ਮਿਲੀ, ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਪਹਲਾਂ ਹੀ ਅਪੜ ਜਾਂਦੇ।
ਸਿਪਾਹੀ ਨੇ ਵੇਖਿਆ ਕਿ ਕੰਧ ਦੇ ਉਹਲੇ ਇਕ ਡਾਕੂ ਖਲੋਤਾ ਹੈ।
ਉਹ ਬਹੁਤ ਘਬਰਾਇਆ, ਉਸ ਕੋਲ ਕੋਈ ਹਥਿਆਰ ਨਹੀਂ ਸੀ।
ਸਾਡੇ ਬੰਦਿਆਂ ਨੇ ਕਹਿਆ—ਡਰਨ ਦੀ ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ, ਇਸ ਡਾਕੂ ਦਾ ਪਿਸਤੌਲ ਤਾਂ ਛੱਤ ਤੇ ਪਇਆ ਹੈ।

ਤਾਂ	तो	ਅਸਾਂ	हम ने	ਵੇਖਿਆ	देखा
ਹਾਲੀਂ	अभी	ਤੁਹਾਨੂੰ	आप को	ਕੰਧ ਦੇ ਓਹਲੇ	दीवार की ओट में
ਮੈਨੂੰ	मुझे	ਮਿਲਿਆ	मिला		
ਲਿਖੀਆਂ ਸਨ	लिखी थीं	ਸਾਡੇ	हमारे	ਖਲੋਤਾ ਹੈ	खड़ा है
ਦਸਿਆ	बताया	ਡੇਗੇ ਹਨ	गिराए हैं	ਸਾਡੇ	हमारे
ਪਈ	कि	ਦੇਰ ਨਾਲ	देर से	ਬੰਦਿਆਂ ਨੇ	आदमियों ने
ਤੁਸੀਂ ਆਏ	आप आए	ਪਹਲਾਂ	पहले ही	ਕਹਿਆ	कहा
ਸਓ	थे	ਅਪੜ ਜਾਂਦੇ	पहुँच जाते	ਗੱਲ	बात
ਜਾਣਾ ਜੀ	अजी जाना			ਪਇਆ ਹੈ	पड़ा है
ਕੀਤੀਆਂ ਨੇ (ਹਨ)	की हैं				
ਵਧ ਗਇਆ	बढ़ गया				

पंजाबी में अनुवाद कीजिए :

1. तुम कब आए मुझे तो पता नहीं चला।
2. मेरे आम किस ने खाए हैं ?
3. उन्होंने किताबें लीं और घर को चले गए।
4. मैंने गलतियां तो कई कीं पर वे उदार रहे।
5. जब हम पहाड़ पर रहे थे, हम सवेरे छः बजे उठते थे।
6. इस विषय में मैंने बहुत सोचा, पर कुछ कर न सकी।
7. तुम्हारे बच्चों ने बहुत शोर मचाया, फिर भी मैंने कुछ नहीं कहा।
8. मकान पर किन का नाम लिखा है ?
9. अभी अभी खबर आई है कि काश्मीर में दो दो फुट बर्फ पड़ी है, रास्ते रुक गए हैं।
10. नौकर ने सारी पुस्तकें अलमारी में रख दी थीं।

1.	कब	ਕਦੋਂ	5.	रहे थे	ਰਹੇ ਸਾਂ	9.	अभी अभी	ਹੁਣੇ ਹੁਣੇ
	मुझे	ਮੈਨੂੰ	6.	विषय में	ਬਾਰੇ		पड़ी है	ਪਈ ਹੈ
2.	आम	ਅੰਬ	7.	मचाया	ਮਚਾਇਆ	10.	सारी	ਸਾਰੀਆਂ
	खाए	ਖਾਧੇ		फिर भी	ਫਿਰ ਵੀ		पुस्तकें	ਕਿਤਾਬਾਂ
3.	किताबें	ਕਿਤਾਬਾਂ		कुछ	ਕੁਝ		रख दी थीं	ਰਖ ਦਿੱਤੀਆਂ ਸਨ
	लीं	ਲਈਆਂ	8.	किन का	ਕਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ			
4.	कीं	ਕੀਤੀਆਂ						

ਪਾਠ 21

ਦੁਹਰਾਈ (दुहराई)

1. ਤੁਸੀਂ ਛੁਟੀ ਤੋਂ ਕਦੋਂ ਵਾਪਸ ਆਓਗੇ ?
2. ਕੀ ਪਤਾ ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਹੀ ਰਹਣਾ ਪਵੇ।
3. ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਕਿਵੇਂ ਰਹੋਗੇ; ਨ ਉੱਥੇ ਅਖ਼ਬਾਰਾਂ ਆਉਂਦੀਆਂ ਹਨ ਨ ਫਿਲਮਾਂ।
4. ਉਨ੍ਹਾਂ ਸਾਡੇ ਨਾਲ ਚੰਗਾ ਸਲੂਕ ਕੀਤਾ।
5. ਉਹ ਸਭ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪ੍ਰਸੰਨ ਸਨ।
6. ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕੋਈ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਨਹੀਂ ਸੀ।
7. ਤੁਸੀਂ ਖਵਰੇ ਕਿਉਂ ਨਾਰਾਜ਼ ਹੋ ਗਏ ?
8. ਮੈਂ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਮਝਾਂ ਕਿ ਨੌਕਰ ਨੇ ਚਾਹ ਵਿਚ ਬਰਫ ਪਾ ਦਿੱਤੀ ਹੈ?
9. ਕਿਹੋ ਜੇਹਾ ਕਪੜਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ?
10. ਮੈਂ ਕੀ ਦੱਸਾਂ, ਇਥੇ ਭਲਾ ਕੋਈ ਕੰਮ ਦਾ ਟੋਟਾ ਹੈ ?
11. ਜੇ ਕੰਮ ਦਾ ਕਪੜਾ ਨ ਹੁੰਦਾ ਤਾਂ ਕਿਉਂ ਛੇਤੀ ਵਿਕ ਜਾਂਦਾ ?
12. ਫੇਰੀ ਵਾਲਾ ਕਿਹੜੇ ਪਾਸੇ ਗਇਆ ਹੈ ?
13. ਜ਼ਰਾ ਧਿਆਨ ਨਾਲ ਭਾਲ ਕੇ ਦੱਸੋ, ਕਿਥੇ ਹੈ।
14. ਕੀ ਉਸ ਕੋਲ ਰੇਸ਼ਮੀ ਕਪੜੇ ਵੀ ਹਨ ?
15. ਕਿੰਨੇ ਪੈਸੇ ਗਜ਼ ਦਏਂਗਾ ?
16. ਪਿੰਡ ਦੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਤਾਂ ਛੀਟ ਦੇ ਕਪੜੇ ਖਰੀਦਦੀਆਂ ਹਨ।

1. ਕਦੋਂ	कब	7. ਤੁਸੀਂ	तुम	ਵਿਕ ਜਾਂਦਾ	बिक जाता
2. ਕੀ ਪਤਾ	क्या पता	ਖਵਰੇ	न जाने	12. ਕਿਹੜੇ ਪਾਸੇ	किस तरफ़
ਪਿੰਡ ਵਿਚ	गांव में	8. ਮੈਂ ਸਮਝਾਂ	मैं समझूं	13. ਭਾਲ ਕੇ	ढूंढ कर
ਰਹਣਾ ਪਵੇ	रहना पड़े	ਪਾ ਦਿੱਤੀ	डाल दी	ਦੱਸੋ	बताओ
3. ਕਿਵੇਂ	कैसे	ਹੈ	है	ਕਿਥੇ	कहां
ਉਥੇ	वहां	9. ਕਿਹੋ	किस तरह	14. ਉਸ ਕੋਲ	उस के पास
ਆਉਂਦੀਆਂ	आती हैं	ਜੇਹਾ	का	15. ਕਿੰਨੇ	कितनें
ਹਨ		ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ	चाहिए	ਦਏਂਗਾ	देगा
4. ਸਾਡੇ ਨਾਲ	हम से	10. ਕੀ ਦੱਸਾਂ	क्या बताऊं	16. ਪਿੰਡ ਦੀਆਂ	गाँव की
ਕੀਤਾ	किया	ਟੋਟਾ	कमी	ਕੁੜੀਆਂ	लड़कियां
5. ਸਭ ਤਰ੍ਹਾਂ	सब तरह	11. ਜੇ	यदि	ਖਰੀਦਦੀਆਂ	खरीदती
	से	ਛੇਤੀ	तुरंत	ਹਨ	हैं
6. ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ	उनको				

ਪਾਠ 22

ਗੁਣਵਾਚਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ (गुणवाचक विशेषण)

ਆਪਣਿਆਂ ਬੰਦਿਆਂ ਨਾਲੋਂ ਕੋਈ ਵਧੇਰੇ ਹਮਦਰਦੀ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ।
ਸ਼ੇਰ ਨਾਲੋਂ ਬਿੱਲੀ ਛੋਟੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।
ਪ੍ਰਾਣਾਂ ਨਾਲੋਂ ਪਤ ਵਧੇਰੇ ਪਿਆਰੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।
ਸਖੀ ਨਾਲੋਂ ਸ਼ੂਮ ਭਲਾ, ਜਿਹੜਾ ਤੁਰਤ ਦਏ ਜਵਾਬ।
ਸੋਨੇ ਤੋਂ ਚਾਂਦੀ ਸਸਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।
ਇਹ ਘੜਾ ਉਸ ਤੋਂ ਘਟ ਪਕਿਆ ਹੈ।
ਅਰਬੀ ਘੋੜਾ ਦੇਸੀ ਘੋੜੇ ਕੋਲੋਂ ਤੇਜ਼ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।
ਮੂਰਖ ਮਿਤ੍ਰਾਂ ਨਾਲੋਂ ਸਿਆਣੇ ਦੁਸ਼ਮਣ ਚੰਗੇ।
ਗੁਲਾਬ ਦਾ ਫੁੱਲ ਗੇਂਦੇ ਨਾਲੋਂ ਵਧੇਰੇ ਸੁੰਦਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।
ਸਾਡਾ ਮਕਾਨ ਸ਼ਹਰ ਦੇ ਸਾਰਿਆਂ ਮਕਾਨਾਂ ਨਾਲੋਂ ਉੱਚਾ ਹੈ।
ਦੱਸੋ, ਕਿਹੜੀ ਤਸਵੀਰ ਸਾਰਿਆਂ ਤੋਂ ਸੋਹਣੀ ਹੈ ?
ਤੇਰੇ ਕੋਲੋਂ ਹੋਰ ਕਿਹੜਾ ਬੰਦਾ ਮੇਰੇ ਨੇੜੇ ਹੈ ?
ਮੇਰੀ ਪੰਡ ਸਭ ਤੋਂ ਭਾਰੀ ਸੀ, ਇਸੇ ਲਈ ਮੈਂ ਦੇਰ ਨਾਲ ਪਹੁੰਚਿਆ ਸਾਂ।
ਆਪਣਾ ਘਰ ਹੋਰ ਸਾਫ ਕਰੋ, ਹੋਰ ਸੁੰਦਰ ਬਣਾਓ।
ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਗੱਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਕ੍ਰਿਤਘਣ ਨਿਕਲਿਆ।

ਆਪਣਿਆਂ	अपने लोगों	ਸ਼ੂਮ	कंजूस	ਸਾਡਾ	हमारा
ਬੰਦਿਆਂ ਨਾਲੋਂ	से	ਜਿਹੜਾ	जो	ਸਾਰਿਆਂ ਨਾਲੋਂ	सब से
ਸ਼ੇਰ ਨਾਲੋਂ	शेर से	ਦਏ	दे	ਉੱਚਾ	ऊंचा
ਹੁੰਦੀ ਹੈ	होती है	ਤੋਂ	से	ਕਿਹੜੀ	कौनसी
ਪਤ	प्रतिष्ठा	ਨਾਲੋਂ, ਕੋਲੋਂ	की अपेक्षा	ਸੋਹਣੀ	सुन्दर
ਵਧੇਰੇ	अधिक	ਸਿਆਣੇ	सयाने	ਨੇੜੇ	निकट
ਸਖੀ	सखी	ਫੁੱਲ	फूल	ਪੰਡ (ਗੰਢ)	गठड़ी

पंजाबी में अनुवाद कीजिए :

1. अपनी आन से बढ़ कर किसी चीज को कीमती मत समझो !
2. उपदेश देने से बढ़कर और कोई काम सरल नहीं।
3. अरबी घोड़ा दुबला पतला था, परन्तु दौड़ में सब से आगे निकल गया।
4. मुझे तो चमेली से गुलाब अधिक सुन्दर लगता है।
5. मेरा भाई अपने स्कूल में सब से तेज़ दौड़ता है।
6. यह कपड़ा तो सब से घटिया है, कोई बढ़िया सा दिखाओ।
7. कुत्ता गीदड़ से तेज़ भागता है।
8. इस से तो यही अच्छा था कि तुम मां के पास रहते !
9. बत्ती और ऊंची करो, रोशनी अधिक हो।
10. बिल्ली शेर से छोटी होती है किन्तु अधिक चालाक होती है।

1. आन	ਅਣਖ	7. गीदड़ से तेज	ਗਿੱਦੜ ਨਾਲੋਂ ਤੇਜ਼
से बढ़ कर	ਤੋਂ ਵਧੇਰੇ	भागता है	ਭੱਜਦਾ ਹੈ
किसी	ਕਿਸੇ	8. अच्छा था	ਚੰਗਾ ਸੀ
2. काम	ਕੰਮ	के पास	ਦੇ ਕੋਲ
सरल	ਸੌਖਾ	रहते	ਰਹੰਦੇ
3. सब से आगे	ਸਭ ਤੋਂ ਅੱਗੇ	9. और ऊंची	ਹੋਰ ਉਚੇਰੀ
4. चमेली से अधिक	ਚਮੇਲੀ ਨਾਲੋਂ ਵਧੇਰੇ	10. होती है	ਹੋਂਦੀ ਹੈ (ਹੁੰਦੀ ਹੈ)
6. सब से घटिया	ਸਭ ਤੋਂ ਘਟੀਆ		
बढ़िया सा	ਵਧੀਆ ਜੇਹਾ		

ਪਾਠ 23
ਵਿਸਮੇ ਆਦਿ ਬੋਧਕ ਸ਼ਬਦ
(विस्मयादि बोधक)

ਵੇਖ ਖਾਂ, ਕਿੰਨਾ ਰੋਅਬ ਪਾਉਂਦਾ ਏ।
ਹਲਾ! ਉਸ ਇੰਵ ਕੀਤਾ !
ਆ ਹਾਂ! ਉਥੇ ਨਾ ਜਾਈਂ !
ਆਹੋ! ਮੈਂ ਵੀ ਉਥੇ ਸਾਂ।
ਉਸ ਮੈਨੂੰ ਮੋਢਾ ਮਾਰਿਆ ਅਖੇ, ਇੰਵ ਨ ਬੋਲ।
ਮਜਾਲ ਏ! ਵੇਲੇ ਸਿਰ ਨਾ ਪਹੁੰਚਾਂ।
ਜਮ ਜਮ ਆਓ, ਸਿਰ ਮੱਥੇ! ਜੀ ਸਦਕੇ !
ਅਸ਼ਕੇ ਓਏ ਮੁੰਡਿਆ! ਇੰਨਾ ਭਾਰਾ ਪੱਥਰ ਚੁਕ ਲਇਆ ਈ।
ਸ਼ਾਬਾ! ਸਾਰੀ ਗਲੀ ਸਾਫ ਕਰ ਦਿੱਤੀ ਆ।
ਸ਼ੁਕਰੇ! ਉਸ ਆਪ ਗੱਲ ਕਰ ਦਿੱਤੀ, ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਮੇਰਾ ਨਾਂ ਲਗਦਾ।
ਜ਼ੀਵੇਂ ਤੂੰ! ਲਖ ਸੈ ਵਰ੍ਹੇ ਉਮਰਾਂ।
ਭਲਿਆ ਲੋਕਾ! ਪੰਡ ਚੁਕਾਈ ਜਾਈਂ।

ਵੇਖ ਖਾਂ	देखो तो	ਸਿਰ ਮੱਥੇ	सिर माथे पर
ਪਾਉਂਦਾ ਏ	डालता है	ਜੀ ਸਦਕੇ	वारी जाऊं
ਹਲਾ !	अच्छा !	ਅਸ਼ਕੇ ਓਏ	वाह उई
ਆ ਹਾ	ना जी	ਸ਼ਾਬਾ	शाबाश
ਆਹੋ	जी हाँ	ਸ਼ੁਕਰੇ	ईश्वर का धन्यवाद
ਅਖੇ	अर्थात	ਨਾਂ ਲਗਦਾ	नाम लिया जाता
ਇੰਵ	यों	ਭਲਿਆ ਲੋਕਾ	हे भले मानस
ਜਮ ਜ਼ਮ ਆਓ	बड़ी खुशी से आओ नित्य	ਚੁਕਾਈ ਜਾਈਂ	उठवाते जाना

ਪਾਠ 24

ਰਹਣਾ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ (रहना के प्रयोग)

ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਬਜ਼ਾਰ ਤੋਂ ਆ ਰਹਿਆ ਸਾਂ ਤੁਸੀਂ ਤਾਂ ਦਿੱਸੇ ਨਹੀਂ।
ਦਰਜ਼ੀ ਪੁਛ ਰਹਿਆ ਸੀ, ਕੋਟ ਕਿੰਨਾ ਲੰਮਾ ਰਹੇ ?
ਧੋਬਣ ਕਪੜੇ ਧੋ ਰਹੀ ਸੀ, ਉਸ ਦੇ ਬੱਚੇ ਪਾਣੀ ਵਿਚ ਖੇਡ ਰਹੇ ਸਨ।
ਅਸੀਂ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲ ਰਹੇ ਸਾਂ, ਸਾਹਬ ਨੂੰ ਕੁਝ ਵੀ ਸਮਝ ਨਹੀਂ ਆਈ।
ਜਦੋਂ ਮੁੰਡਾ ਚਿਕੜ ਵਿਚ ਡਿਗ ਪਇਆ, ਸਭ ਕੁੜੀਆਂ ਹੱਸ ਰਹੀਆਂ ਸਨ।
ਵਪਾਰੀ ਸੰਕਟ ਕਾਲ ਵਿਚ ਵੀ ਪੈਸਾ ਕਮਾ ਰਹਿਆ ਹੈ।
ਗਰੀਬ ਬੱਚੇ ਰੋਟੀ ਲਈ ਤਰਸ ਰਹੇ ਹਨ।
ਅਸੀਂ ਪੰਜਾਬੀ ਸਿਖ ਰਹੇ ਹਾਂ, ਤੁਸੀਂ ਵੀ ਸਿਖੋ।
ਹਾਲੀ ਬਾਰਸ਼ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ, ਗੜੇ ਵੀ ਪੈ ਰਹੇ ਹਨ।
ਤੁਸੀਂ ਥੋੜੀ ਦੇਰ ਇਥੇ ਹੀ ਰੁਕੇ ਰਹੋ।
ਅਸੀਂ ਸ਼ਿਮਲੇ ਕੇਵਲ ਇਕ ਮਹੀਨਾ ਰਹੇ, ਪਿਤਾ ਜੀ ਦੀ ਬਿਮਾਰੀ ਦੀਆਂ ਚਿੱਠੀਆਂ ਆ ਰਹੀਆਂ ਸਨ।
ਕਿਤੇ ਫੁਲਾਂ ਦੇ ਬੂਟੇ ਹੋਣੇ ਨੇ, ਸੁਗੰਧ ਆ ਰਹੀ ਹੈ।
ਅੱਗ ਵਧ ਰਹੀ ਸੀ, ਧਾਂ ਧਾਂ ਦੀ ਅਵਾਜ ਆ ਰਹੀ ਸੀ।
ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਘਰ ਅਪੜਾਂਗਾ ਉਹ ਸੌਂ ਰਹੇ ਹੋਣਗੇ।

ਜਦੋਂ	जब	ਅਸੀਂ	हम	ਪੈ ਰਹੇ ਹਨ	पड़ रहे हैं
ਬਜ਼ਾਰ ਤੋਂ	बाज़ार से	ਕੁਛ ਵੀ	कुछ भी	ਇਥੇ ਹੀ	यहीं
ਆ ਰਹਿਆ	आ रहा था	ਮੁੰਡਾ	लड़का	ਬਿਮਾਰੀ ਦੀਆਂ	बीमारी की
ਸਾਂ		ਚਿੱਕੜ ਵਿਚ	कीचड़ में	ਚਿੱਠੀਆਂ	चिट्ठियां
ਤੁਸੀਂ ਤਾਂ	आप तो	ਡਿਗ ਪਇਆ	गिर पड़ा	ਕਿਤੇ	कहीं
ਦਿੱਸੇ ਨਹੀਂ	दिखाई नहीं दिए	ਕੁੜੀਆਂ	लड़कियां	ਫੁੱਲਾਂ ਦੇ	फूलों के
		ਹੱਸ ਰਹੀਆਂ	हंस रही	ਵਧ ਰਹੀ ਸੀ	बढ़ रही थी
ਪੁੱਛ ਰਹਿਆ	पूछ रहा	ਸਨ	थीं	ਜਦੋਂ	जब
ਸੀ	था	ਤਰਸ ਰਹੇ ਸਨ	तरस रहे थे	ਅਪੜਾਂਗਾ	पहुँचूंगा
ਕਿੰਨਾ	कितना	ਸਿਖ ਰਹੇ ਹਾਂ	सीख रहे हैं	ਸੌਂ ਰਹੇ	सो रहे
ਲੰਮਾ	लम्बा	ਹਾਲੀਂ	अभी	ਹੋਣਗੇ	होंगे
ਖੇਡ ਰਹੇ ਸਨ	खेल रहे थे	ਗੜੇ	ओले		

पंजाबी में अनुवाद कीजिए :

1. वह देर तक पुकारती रही, बेटा नदी चढ़ रही है मत जाओ।
2. जब वह गा रहा था मुझे नींद आ रही थी।
3. ऐसा अन्याय देख कर मुझ से तो रहा नहीं जाता।
4. उन्हें एक तंग और अंधेरे कमरे में रहना पड़ा।
5. लड़कियां हंस रही थीं कि इतना बड़ा पहलवान हो कर भी वह छिपकली से डर रहा है।
6. अभी यहीं रुके रहो, बारिश थम गई तो चले जाना।
7. परीक्षा में केवल एक महीना रह गया है।
8. वे देर से पहुंचे थे, गाड़ी से रह गए।
9. उस की चालाकी देख कर मैं हैरान रह गया।
10. चाय वाय रहने दो, मुझे देर हो रही है।

1.	पुकारती रही	ਆਵਾਜ਼ ਦੇਂਦੀ ਰਹੀ
2.	जब	ਜਦੋਂ
	गा रहा	ਗਾ ਰਹਿਆ
	था	ਸੀ
3.	अन्याय	ਅਨਿਆਂ
	मुझ से	ਮੈਤੋਂ, ਮੈਥੋਂ
4.	रहना	ਰਹਣਾ
	पड़ा	ਪਇਆ
5.	हंस रही थीं	ਹਸ ਰਹੀਆਂ ਸਨ
	इतना बड़ा	ਇੱਨਾ ਵੱਡਾ
	छिपकली	ਕਿਰਲੀ
6.	अभी	ਹਾਲੀ
7.	परीक्षा	ਪਰੀਖਿਆ
8.	देर से	ਦੇਰ ਨਾਲ
	पहुंचे थे	ਪੁੱਜੇ ਸਨ
9.	चालाकी	ਚਲਾਕੀ
10.	चाय वाय	ਚਾਹ ਚੂਹ
	रहने दो	ਰਹਣ ਦਿਓ
	मुझ	ਮੈਨੂੰ

ਪਾਠ 25

ਸੰਯੁਕਤ ਕ੍ਰਿਆਵਾਂ : ਸਕਣਾ ਚੁਕਣਾ

(संयुक्त क्रियाएं : सकना एवं चुकना)

ਦੋ ਮਹੀਨੇ ਹੋਏ ਉਹ ਪੰਜਾਬੀ ਨਹੀਂ ਸਨ ਬੋਲ ਸਕਦੇ, ਹੁਣ ਤਾਂ ਉਹ ਪੰਜਾਬੀ ਲਿਖ ਵੀ ਸਕਦੇ ਹਨ।
ਉਸ ਬੁੱਢੇ ਬੰਦੇ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਕੋਈ ਉਰਦੂ ਲਿਖ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ।
ਖਵਰੇ ਉਹ ਵੇਲੇ ਸਿਰ ਗੱਡੀ ਫੜ ਸਕੇਗਾ ਜਾਂ ਨਹੀਂ।
ਅਸੀਂ ਬਾਬੂ ਅੱਗੇ ਬੋਲ ਨਹੀਂ ਸਕਦੀਆਂ ਸਾਂ।
ਮੈਂ ਉਸ ਦਾ ਮਕਾਨ ਖਾਲੀ ਕਰ ਚੁਕਿਆ ਹਾਂ।
ਧੋਬੀ ਤਾਂ ਘਾਟ ਤੇ ਜਾ ਚੁਕਿਆ ਸੀ, ਕਪੜੇ ਨਹੀਂ ਲਿਆ ਸਕਿਆ।
ਡਾਕਟਰ ਦੇ ਪੁੱਜਣ ਤੋਂ ਪਹਲਾਂ ਰੋਗੀ ਮਰ ਚੁਕਿਆ ਸੀ।
ਸਾਡੇ ਆਉਣ ਤੋਂ ਇਕ ਘੰਟਾ ਪਹਲਾਂ ਉਹ ਰੋਟੀਆਂ ਪਕਾ ਚੁਕੀਆਂ ਸਨ।
ਸੂਰਜ ਡੁਬਣ ਤਕ ਉਹ ਕੰਮ ਕਰ ਚੁਕਣਗੇ।
ਛੁੱਟੀ ਹੋਣ ਤਕ ਪੜ੍ਹਾਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਉਸਤਾਨੀਆਂ ਕਾਪੀਆਂ ਵੇਖ ਚੁਕਣਗੀਆਂ।
ਮੈਂ ਕੀ ਆਖ ਸਕਦਾ ਹਾਂ, ਗੱਡੀ ਕਿਸ ਵੇਲੇ ਪੁਜੇਗੀ।
ਅਸੀਂ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਨਹੀਂ ਮਿਲ ਸਕਦੇ।
ਮਿਲ ਜੁਲ ਕੇ ਕੰਮ ਕਰਨ ਨਾਲ ਸੌਖ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

ਹੋਏ	हुए	ਬਾਪੂ ਅੱਗੇ	बाप के सामने	ਡੁੱਬਣ ਤਕ	डूबने तक
ਨਹੀਂ ਬੋਲ	नहीं बोल	ਬੋਲ ਨਹੀਂ	बोल नहीं	ਕਰ ਚੁਕਣਗੇ	कर चुकेंगे
ਸਕਦੇ ਸਨ	सकते थे	ਸਕਦੀਆਂ ਸਾਂ	सकती थीं	ਵੇਖ ਚੁਕਣਗੀਆਂ	देख चुकेंगी
(ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲ		ਕਰ ਚੁਕਿਆ	कर चुका हूं	ਕੀ ਆਖ ਸਕਦਾ	क्या कह
ਨਹੀਂ ਸਕਦੇ		ਹਾਂ		ਹਾਂ (ਕੀ ਆਖ	सकता हूं
ਸਨ)		ਨਹੀਂ ਲਿਆ	नहीं ला	ਸਕਨਾਂ)	
ਹੁਣ ਤਾਂ	अब तो	ਸਕਿਆ	सका	ਵੱਡੀ	बड़ी
ਬੁੱਢੇ	बूढ़े	ਪੁੱਜਣ ਤੋਂ	पहुँचने से	ਕੰਮ ਕਰਨ	काम करने
ਖਵਰੇ	क्या खबर	ਪਹਲਾਂ	पहले	ਨਾਲ	से
ਵੇਲੇ ਸਿਰ	समय पर	ਪਕਾ ਚੁਕੀਆਂ	पका चुकी	ਸੌਖ	सौख्य,
ਗੱਡੀ	गाड़ी	ਸਨ	थीं		सुगमता
ਫੜ	पकड़				

ਟਿਪੱਣ : ਚੁਕਿਆ ਦੀ ਥਾਂ 'ਚੁਕਾ', ਸਕਿਆ ਦੀ ਥਾਂ 'ਸਕਾ', ਰੂਪ ਵੀ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਹਨ।

पंजाबी में अनुवाद कीजिए :

1. सूरज डूब भी चुका था पर वह सारा काम समाप्त नहीं कर सका।
2. जब तुम्हारा मालिक नहीं मानता तो मैं क्या कर सकता हूं।
3. ठीक ठीक बता नहीं सकती, पिता जी कब आएंगे।
4. क्या आप रेशमी कपड़े पर ऐसा चित्र बना सकते हैं ?
5. इस रंग से किसी कपड़े पर सुन्दर चित्र नहीं बन सकता।
6. क्या तू इतना भी नहीं बता सकता कि लड़का नदी से वापस आ चुका है या नहीं ?
7. रोने धोने से कुछ नहीं हो सकेगा धीरज से काम लेने वाले संकट से बच सकते हैं।
8. बिल्ली वृक्ष पर चढ़ सकती है, शेर नहीं।
9. मेरी भतीजी पंजाबी भी बोल सकती है, अंग्रेजी भी।
10. लड़कियाँ इतनी लम्बी दौड़ में भाग नहीं ले सकतीं।

1.	डूब	ਡੁੱਬ
	भी	ਵੀ
	समाप्त	ਮੁਕਾ ਨਹੀਂ
	नहीं कर सका	ਸਕਿਆ
2.	तुम्हारा	ਤੁਹਾਡਾ
	मानता	ਮੰਨਦਾ
3.	बता	ਦੱਸ
	कब	ਕਦ
	आएंगे	ਆਉਣਗੇ
4.	ऐसा	ਅਜੇਹਾ
	आप बना	ਤੁਸੀਂ ਬਣਾ
	सकते हैं	ਸਕਦੇ ਹੋ
5.	किसी	ਕਿਸੇ ਕਪੜੇ
	कपड़े पर	ਪੁਰ
6.	इतना भी	ਇੰਨਾ ਵੀ
	या	ਜਾਂ
7.	रोने धोने से	ਰੋਣ ਧੋਣ ਨਾਲ
	काम लेने वाले	ਕੰਮ ਲੈਣ ਵਾਲੇ
8.	वृक्ष	ਰੁਖ
9.	नहीं ले	ਨਹੀਂ ਲੈ
	सकती	ਸਕਦੀਆਂ

ਪਾਠ 26

'ਪੈਣਾ' ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ

('पड़ना' का प्रयोग)

ਤੂੰ ਕਿਥੇ ਜਾਣਾ ਹੈ ? ਦਫ਼ਤਰ ਕਿ ਬਜ਼ਾਰ।
ਮੈਨੂੰ ਤਾਂ ਹੁਣ ਪਿੰਡ ਜਾਣਾ ਪਏਗਾ।
ਉਥੋਂ ਚਿੱਠੀਆਂ ਲਿਆਉਣੀਆਂ ਪੈਣਗੀਆਂ।
ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਨਕਲਾਂ ਬਣਵਾਉਣੀਆਂ ਪੈਣਗੀਆਂ।
ਜਦੋਂ ਹਵਾਈ ਹੱਲਾ ਹੋਇਆ ਸੀ, ਸਾਨੂੰ ਖਾਈਆਂ ਪੁਟਣੀਆਂ ਪਈਆਂ ਸਨ।
ਕੁਝ ਦਿਨਾਂ ਮਗਰੋਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਮਕਾਨ ਬਦਲਨਾ ਪਏਗਾ।
ਜੇਕਰ ਪਰੀਖਿਆ ਵਿਚ ਪਾਸ ਹੋਣਾ ਹੈ ਤਾਂ ਸਖਤ ਕੰਮ ਕਰਨਾ ਪਏਗਾ।
ਜੇਕਰ ਗੱਡੀ ਫੜਨੀ ਹੈ ਤਾਂ ਵੇਲੇ ਸਿਰ ਪੁਜਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।
ਚਾਹੀਦਾ ਤਾਂ ਇਹੋ ਸੀ ਕਿ ਉਹ ਆਪ ਡਾਕਟਰ ਕੋਲ ਜਾ ਕੇ ਨਵੀਂ ਦਵਾਈ ਪੁੱਛ ਆਉਂਦਾ।
ਮੈਂ ਅਜੇਹੀ ਥਾਂ ਜਾਣਾ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਚਾਹੁੰਦਾ ਪਰ ਮੈਨੂੰ ਜਾਣਾ ਪਏਗਾ, ਸਰਕਾਰੀ ਹੁਕਮ ਹੈ।
ਆਗਿਆ ਬਿਨਾ, ਛਾਵਨੀ ਦੀ ਹਦ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਜਾਣਾ ਨਹੀਂ ਚਾਹੀਦਾ ਸੀ।
ਹੁਣ ਤਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਜ਼ੁਰਮਾਨਾ ਦੇਣਾ ਪਏਗਾ।
ਇਕਨਾਂ ਨੂੰ ਇਨਾਮ ਮਿਲਦੇ ਹਨ, ਇਕਨਾਂ ਨੂੰ ਜ਼ੁਰਮਾਨੇ ਦੇਣੇ ਪੈਂਦੇ ਹਨ।

ਤੂੰ ਕਿਥੇ ਜਾਣਾ	तुझे कहाँ	ਦਿਨਾਂ ਮਗਰੋਂ	दिनों के बाद	ਅਜੇਹੀ	ऐसी
ਹੈ	जाना है	ਤੁਹਾਨੂੰ	आप को	ਚਾਹੁੰਦਾ	चाहता
ਮੈਨੂੰ ਤਾਂ	मुझे तो	ਗੱਡੀ	गाड़ी	ਜਾਣਾ ਪਏਗਾ	जाना पड़ेगा
ਜਾਣਾ ਪਏਗਾ	जाना पड़ेगा	ਫੜਨੀ	पकड़नी	ਜਾਣਾ ਨਹੀਂ	जाना नहीं
ਲਿਆਉਣੀਆਂ	लानी पड़ेंगी	ਪੁਜਣਾ	पहुंचना	ਚਾਹੀਦਾ ਸੀ	चाहिए था
ਪੈਣਗੀਆਂ		ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ	चाहिए	ਇਕਨਾਂ ਨੂੰ	कुछ एक को
ਬਣਵਾਉਣੀਆਂ	बनवानी	ਚਾਹੀਦਾ ਤਾਂ	चाहिए तो	ਦੇਣੇ ਪੈਂਦੇ	देने पड़ते हैं
ਪੈਣਗੀਆਂ	पड़ेंगी	ਇਹੋ	यही	ਹਨ	
ਪੁਟਣੀਆਂ	खोदनी पड़ीं	ਪੁਛ ਆਉਂਦਾ	पूछ आता		
ਪਈਆਂ ਸਨ	थी				

पंजाबी में अनुवाद कीजिए :

1. अब सुस्त रहोगे तो बाद में पछताना पड़ेगा।
2. इस रोग के लिए तो कड़वी दवाई भी पीनी पड़ेगी।
3. इतने महीनों के बाद बच्चे को मिल कर माता रो पड़ी।
4. जब पहाड़ों पर बर्फ पड़ती है तो घास मर जाती है।
5. आँखों पर सूर्य का तेज़ प्रकाश पड़ जाए तो आदमी अंधा हो जाता है।
6. गिरते पड़ते बच्चा दरवाजे तक पहुँच गया।
7. मुझे तार देना पड़ा कि मैं तो बीमार पड़ा हूं।
8. मानना पड़ता है कि वारिस शाह ने 'हीर' लिख कर उत्तम काव्य का आदर्श स्थापित किया है।
9. यह तो फोन कर के पूछना पड़ेगा कि गाड़ी कितनी देर से आ रही है।

1. सुस्त	ਸੁਸਤ, ਅਵੇਸਲੇ	4. पड़ती है	ਪੈਂਦੀ ਹੈ	बीमार	ਬਿਮਾਰ
पछताना	ਪਛਤਾਉਣਾ	घास	ਘਾਹ	पड़ा हूं	ਪਇਆ ਹਾਂ
पड़ेगा	ਪਏਗਾ	5. आँखों पर	ਅੱਖਾਂ ਪੁਰ	8. मानना	ਮੰਨਣਾ
2. कड़वी	ਕੌੜੀ	सूर्य	ਸੂਰਜ	स्थापित	ਥਾਪਿਆ
पीनी	ਪੀਣੀ	अंधा	ਅੰਨ੍ਹਾ	किया है	ਹੈ
पड़ेगी	ਪਏਗੀ	6. गिरते	ਢਹੰਦੇ	9. पूछना	ਪੁਛਣਾ
3. इतने	ਇੰਨੇ	पड़ते	ਰੁੜ੍ਹਦੇ	पड़ेगा	ਪਏਗਾ
महीनों	ਮਹੀਨਿਆਂ	पहुंच गया	ਪੁੱਜ ਗਇਆ	गाड़ी	ਗੱਡੀ
के बाद	ਮਗਰੋਂ	7. तार देना	ਤਾਰ ਦੇਣੀ		
रो पड़ी	ਰੋ ਪਈ	पड़ा	ਪਈ		

ਪਾਠ 27

ਕੁਝ ਹੋਰ ਸੰਜੁਕਤ ਕ੍ਰਿਆਵਾਂ
(कुछ और संयुक्त क्रियाएं)

ਵਿਛੜੀ ਭੈਣ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰਦਿਆਂ ਕਰਦਿਆਂ ਉਹ ਰੋਣ ਲਗ ਪਇਆ।
ਜਦੋਂ ਬੰਬ ਵਸਣ ਲੱਗੇ ਅਸੀਂ ਖਾਈਆਂ ਵਿਚ ਲੁਕ ਗਏ।
ਪਿਤਾ ਜੀ ਆਖਣ ਲੱਗੇ ਹੁਣ ਤੂੰ ਜੁਆਨ ਹੈਂ, ਨਿੱਕੀਆਂ ਨਿੱਕੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਦੀ ਪਰਵਾਹ ਨ ਕੀਤਾ ਕਰ।
ਤੁਸੀਂ ਕਿੰਨੇ ਮਹੀਨਿਆਂ ਵਿਚ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲਣ ਲਗ ਪਏ ?
ਗੁੱਸੇ ਨੂੰ ਜਾਣ ਦਿਓ, ਸਾਂਤੀ ਨਾਲ ਗੱਲ ਕਰੋ।
ਥੋੜੀ ਦੇਰ ਅਰਾਮ ਕਰਨ ਦਿਓ, ਮੈਂ ਰਾਤੀ ਵੀ ਸੁੱਤਾ ਨਹੀਂ।
ਉਨ੍ਹਾਂ ਮੈਨੂੰ ਘਰ ਵੀ ਜਾਣ ਨ ਦਿੱਤਾ।
ਇਹ ਚਿੱਠੀ ਵੀ ਹੁਣ ਲਿਖ ਸੁੱਟੋ।
ਅਸੀਂ ਗਲਾਂ ਕਰਦੇ ਕਰਦੇ ਦੂਜੇ ਫਾਟਕ ਤੇ ਜਾ ਪੁੱਜੇ।
ਖਾ ਪੀ ਕੇ, ਹਸ-ਖੇਡ ਕੇ ਦਿਨ ਲੰਘਾ ਦੇਣਾ ਉਤਮ ਕੰਮ ਨਹੀਂ।

ਵਿਛੜੀ	बिछड़ी हुई	ਹੁਣ	अब	ਸੁੱਤਾ	सोया
ਗੱਲ	बात	ਤੂੰ ਹੈਂ	तू है	ਜਾਣ ਨ	जाने न
ਕਰਦਿਆਂ	करते करते	ਨਿੱਕੀਆਂ	छोटी बातें	ਦਿੱਤਾ	दिया
ਕਰਦਿਆਂ		ਗੱਲਾਂ		ਲਿਖ ਸੁੱਟੋ	लिख छोड़ो
ਉਹ ਰੋਣ	वह रोने	ਨ ਕੀਤਾ ਕਰ	न किया कर	ਜਾ ਪੁੱਜਾ	जा पहुंचे
ਲਗ ਪਇਆ	लग पड़ा	ਬੋਲਣ ਲਗ	बोलने लग	ਲੰਘਾ ਦੇਣਾ	बिता देना
ਵਸਣ ਲੱਗੇ	बरसने लगे	ਪਏ	पड़े	ਮੈਥੋਂ	मुझ से
ਖਾਈਆਂ ਵਿਚ	खाइयों में	ਜਾਣ ਦਿਓ	जाने दो		
ਲੁਕ ਗਏ	छिप गए	ਸ਼ਾਂਤੀ ਨਾਲ	शांति से		
ਆਖਣ ਲੱਗੇ	कहने लगे	ਰਾਤੀ ਵੀ	रात को भी		

ਚੋਰ ਨੂੰ ਬੁੱਢੇ ਨੇ ਜਾਨੋਂ ਮਾਰ ਸੁੱਟਿਆ।
ਖਵਰੇ ਉਸ ਦੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਕਿਥੇ ਮਾਰ ਛਡਿਆ।
ਖਵਰੇ ਕਿਹੜੇ ਜਨਮ ਦਾ ਬਦਲਾ ਲੈ ਲਇਆ।
ਮੇਰੇ ਆਉਣ ਤਕ ਗੁਤਾਵਾ ਕਰ ਛਡੀਂ।
ਮੈਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਸਾਰੀਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਸ਼ਹਰੋਂ ਲਿਆ ਦਿਆਂਗਾ।
ਤਾਰ ਸੁਣਦਿਆ ਸਾਰ ਉਹ ਤਾਂ ਪੈਰੋਂ ਵਾਹਣਾ ਟੁਰ ਪਇਆ।
ਉਹ ਤਾਂ ਮਰ ਚਲਿਆ ਸੀ ਜੇ ਮੈ ਨ ਅਪੜਦਾ।
ਬੱਤੀਆਂ ਪਈਆਂ ਬਲਦੀਆਂ ਨੇ।
ਹਲ ਪਏ ਵਗਦੇ ਹੋਣਗੇ।
ਉਹ ਕਈ ਵਰ੍ਹੇ ਡੰਗਰ ਚਾਰਦਾ ਰਹਿਆ।
ਗੱਡੀ ਤਾਂ ਟੁਰ ਚਲੀ ਸੀ, ਮੈਂ ਮਸਾਂ ਅਪੜਿਆ।
ਕੰਮ ਕਰੀ ਚਲ।
ਕਿਧਰ ਟੁਰੀ ਜਾਂਦਾ ਸੀ।
ਪੜ੍ਹਿਆ ਵੀ ਕਰ ਤੇ ਲਿਖਿਆ ਵੀ ਕਰ।
ਮੇਰੀ ਗਲ ਧਿਆਨ ਨਾਲ ਸੁਣਿਆ ਕਰ।
ਉਹ ਗੁਰਦੁਆਰੇ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੁੰਦਾ ਸੀ।
ਹੁਣ ਹਲ ਵਾਹੁਣ ਲੱਗਾ।
ਦੂਰ ਜਾ ਕੇ ਫਿਰ ਵਿਖਾਲੀ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤਾ।
ਮੈਂ ਉਸ ਨੂੰ ਇਥੇ ਟੁਰਦਿਆਂ ਫਿਰਦਿਆਂ ਡਿਠਾ।
ਮੇਰੇ ਕੋਲੋਂ ਸਿਧਿਆਂ ਨਹੀਂ ਸੀ ਖਲੋਤਾ ਜਾਂਦਾ।
ਸੱਪ ਤਾਂ ਮੈਂ ਮਾਰ ਛਡਿਆ ਹੈ।
ਨੌਕਰ ਨੂੰ ਮਾਰ ਕੁੱਟ ਕੇ ਘਰੋਂ ਕਢ ਦਿੱਤਾ।
ਝਖੜ ਚਲ ਪਇਆ ਏ, ਕਣਕਾਂ ਗਾਹੁਣੀਆਂ ਰਹ ਗਈਆਂ।
ਕਪੜੇ ਸੁਕਣੇ ਪਾਏ ਹੋਏ ਸਨ।
ਆਖਣ ਲੱਗਾ—ਮੈਂ ਤਾਂ ਗਰੀਬ ਆਂ।
ਕੁੜੀ ਰੋਣ ਲੱਗੀ।
ਭਲਕੇ ਸਾਰੀ ਗੱਲ ਦਾ ਜਵਾਬ ਦੇਣਾ ਪਏਗਾ।
ਛੇਕੜਾਂ ਉਸੇ ਬੰਦੇ ਦੀ ਮਿੰਨਤ ਕਰਨੀ ਪਈ।
ਤੁਹਾਨੂੰ ਸਭ ਕੁਝ ਦੱਸਣਾ ਹੋਵੇਗਾ ਪਈ ਕਤਲ ਕਿਵੇਂ ਹੋਇਆ।
ਇੰਨੇ ਔਖੇ ਸੁਆਲ ਮੁੰਡੇ ਕੋਲੋਂ ਹੋਣ ਨਹੀਂ ਲੱਗੇ।
ਕਿਤਾਬਾਂ ਪੜ੍ਹਨੀਆਂ ਚਾਹੀਦੀਆਂ ਨੇ।

ਚਾਹੀਦਾ ਸੀ ਕਿ ਤੂੰ ਪਹਲਾਂ ਸਾਰਾ ਕੰਮ ਮੁਕਾ ਛਡਦਾ।
ਤੂੰ ਖਲੋ ਜਾ ਮੈਂ ਭੱਜ ਕੇ ਵੇਖ ਆਵਾਂ।
ਥੋੜੀ ਦੇਰ ਸਾਹ ਲੈਣ ਦੇ, ਫਿਰ ਚਲ ਪਵਾਂਗੇ।
ਇਕ ਵੇਰ ਆਖ ਛਡ ਪਈ ਪੈਲੀ ਵਿਚ ਡੰਗਰ ਨ ਵਾੜੇ।
ਕਿਤਾਬ ਤਾਂ ਪੜ੍ਹ ਲਈ ਏ, ਵਾਪਸ ਘਲ ਦਿਓ।
ਉਸ ਨੂੰ ਪੁਛੋ ਪਈ ਤੂੰ ਗਾ ਸਕਦਾ ਏਂ।

ਸੂਚਨਾ : ਔਖੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਅਰਥਾਂ ਲਈ ਵੇਖੋ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਪੰਜਾਬੀ ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ, ਅੰਤਿਕਾ

ਪਾਠ 28
ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਚ ਕਰਮ ਵਾਚ
(पंजाबी में कर्म वाच्य)

ਜੋ ਕੁਝ ਹੋਏਗਾ ਵੇਖਿਆ ਜਾਏਗਾ।
ਸਾਰਾ ਕੰਮ ਕੱਲ ਦੱਸ ਦਿੱਤਾ ਜਾਏਗਾ।
ਜਦੋਂ ਚਿੱਠੀ ਆਈ ਸੀ ਸਾਰੀਆਂ ਪੁਸਤਕਾਂ ਭੇਜ ਦਿੱਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਸਨ।
ਸਾਰਾ ਕੰਮ ਵੇਲੇ ਸਿਰ ਕੀਤਾ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।
ਮੇਰੇ ਕੋਲੋਂ ਤਾਂ ਤੁਹਾਡਾ ਖਤ ਪੜ੍ਹਿਆ ਨਹੀਂ ਗਇਆ।
ਚੋਰ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲਨ ਵੇਲੇ ਪਕੜਿਆ ਗਇਆ।
ਕਪੜੇ ਰਖਣ ਲਈ ਵੱਡੀਆਂ ਵੱਡੀਆਂ ਅਲਮਾਰੀਆਂ ਬਣਵਾਈਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ।
ਦਵਾਈ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਹੈ, ਥੋੜੀ ਦੇਰ ਮਗਰੋਂ ਅਸਰ ਹੋਏਗਾ।
ਸਾਰੀਆਂ ਬੋਤਲਾਂ ਮਸ਼ੀਨ ਵਿਚ ਭਰੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹੋਣਗੀਆਂ।
ਤਵਾ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਗਰਮ ਨਹੀਂ ਸੀ, ਰੋਟੀਆਂ ਛੇਤੀ ਕਿਵੇਂ ਪਕਾਈਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ।
ਮੱਛੀਆਂ ਜਾਲ ਨਾਲ ਫੜੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ।
ਦੋ ਰੁਪਏ ਸਾਈ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਸੀ।

ਵੇਖਿਆ	देखा	ਨਿਕਲਨ ਵੇਲੇ	निकलते समय	ਮਗਰੋਂ	बाद
ਦੱਸ ਦਿੱਤਾ	बता दिया			ਭਰੀਆਂ	भरी
ਜਾਏਗਾ	जाएगा	ਪਕੜਿਆ	पकड़ा गया	ਜਾਂਦੀਆਂ	जाती
ਸਾਰੀਆਂ	सब पुस्तकें	ਗਇਆ		ਹੋਣਗੀਆਂ	होंगी
ਪੁਸਤਕਾਂ		ਰੱਖਣ ਲਈ	रखने के लिए	ਮੱਛੀਆਂ	मछलियाँ
ਕੀਤਾ ਜਾਣਾ	किया जाना	ਵੱਡੀਆਂ	बड़ी बड़ी	ਫੜੀਆਂ	पकड़ी
ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ	चाहिए	ਵੱਡੀਆਂ		ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ	जाती हैं
ਮੇਰੇ ਕੋਲੋਂ	मुझ से	ਬਣਵਾਈਆਂ	बनवाई	ਸਾਈ	पेशगी
		ਗਈਆਂ ਹਨ	गई हैं	ਦਿੱਤੀ	दी
		ਦਿੱਤੀ ਗਈ	दी गई		

ये वाक्य ऊपर न रखने योग्य हैं :

ਮੇਰੇ ਕੋਲੋਂ ਲਿਖਣ ਨਹੀਂ ਹੋਂਦਾ	मुझ से लिखा नहीं जाता
ਮੇਰੇ ਕੋਲੋਂ ਲਿਖ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ	मुझ से लिखते नहीं बनता
ਇੰਞ ਨਹੀਂ ਲਿਖੀਦਾ	ऐसे नहीं लिखते

पंजाबी में अनुवाद कीजिए :

1. सेठ का लड़का लुटेरों के हाथों मारा गया था।
2. जहाज पर चढ़ने से पहले सारे सामान की पड़ताल करवाई जाती है।
3. यदि आप जल्दी न जगाए जाते तो आज गाड़ी न पकड़ सकते।
4. मेरे हाथ को चोट लगी है, शायद मैं चिट्ठी ठीक ठीक न लिख सकूं।
5. हम चाहे शत्रु की गोलाबारी से मारे जाएंगे पर हम पीछे नहीं हटेंगे।
6. जब भिखारियों को भोजन बांटा गया उन से अपनी अपनी बारी की प्रतीक्षा न की जा सकी।
7. मुझ से रहा नहीं गया, मैंने आगे बढ़ कर उस का बाजू पकड़ लिया।
8. समय विकट था, गोद में बच्चा था, बेचारी से भागा नहीं गया।
9. यह बाजा उंगली से बजांया जाता है।

1.	लूटेरों	ਲੁਟੇਰਿਆਂ
	के हाथों	ਦੇ ਹੱਥੋਂ
2.	चढ़ने से	ਚੜ੍ਹਨ ਤੋਂ
	पहले	ਪਹਲਾਂ
	सामान	ਸਮਾਨ
	आज	ਅੱਜ
3.	यदि	ਜੇਕਰ
	गाड़ी	ਗੱਡੀ
4.	हाथ को	ਹੱਥ ਨੂੰ
	शायद	ਸ਼ਾਇਦ
	लिख सकू	ਲਿਖ ਸਕਾਂ
5.	चाहे	ਭਾਵੇਂ
	शत्रु	ਸ਼ਤਰੂ, ਦੁਸ਼ਮਣ
	से	ਨਾਲ
6.	बांटा	ਵੰਡਿਆ
	गया	ਗਇਆ
7.	मुझ से	ਮੈਥੋਂ
	रहा नहीं	ਰਹਿਆ ਨਹੀਂ
	गया	ਗਇਆ
	आगे बढ़	ਅੱਗੇ ਵਧ
	कर	ਕੇ
	का बाजू	ਦੀ ਬਾਂਹ
8.	विकट	ਔਖਾ
	गोद में	ਝੋਲੀ ਵਿਚ
	बेचारी	ਵਿਚਾਰੀ
	भागा नहीं	ਨਸਿਆ ਨਹੀਂ
	गया	ਗਇਆ
9.	बाजा	ਵਾਜਾ

ਪਾਠ 29
ਵਾਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼
(वाक्य विशेष)

1.	ਪਿੰਡ ਦੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਜਲਦੀ ਘਬਰਾ ਜਾਇਆ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ।	गांव की लड़कियां जल्दी घबरा जाया करती हैं।
2.	ਚਿਲਕਣੇ ਫ਼ਰਸ਼ ਪੁਰ ਜੋ ਕੋਈ ਤੇਜ਼ ਟੁਰਦਾ ਹੈ ਉਸ ਦਾ ਪੈਰ ਤਿਲਕ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।	चिकने फर्श पर जो तेज़ चलता है उसका पांव फिसल जाता है।
3.	ਇਨ੍ਹੀਂ ਦਿਨੀਂ ਦੁੱਧ ਮਹਿੰਗਾ ਵਿਕਿਆ ਕਰਦਾ ਹੈ।	इन दिनों दूध महंगा बिका करता है।
4.	ਸਾਰਾ ਦਿਨ ਇਸ ਸੜਕ ਤੇ ਮੋਟਰਾਂ ਚਲਦੀਆਂ ਰਹਿੰਦੀਆਂ ਹਨ।	दिन भर इस सड़क पर मोटरें चलती रहती हैं।
5.	ਝੂਠੀਆਂ ਕਸਮਾਂ ਨ ਖਾਇਆ ਕਰੋ, ਵਿਸਾਹ ਉਡ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।	झूठी कसमें न खाया करो, विश्वास उड़ जाता है।
6.	ਚਮਚੇ ਨਾਲ ਦੁੱਧ ਹਿਲਾਉਂਦੇ ਜਾਓ, ਕਿਤੇ ਉਭਰ ਨ ਜਾਏ।	चमचे से दूध हिलाते जाओ कहीं उभर न जाए।
7.	ਦੋਵੇਂ ਭਰਾਵਾਂ ਦਾ ਮੁਹਾਂਦਰਾ ਆਪੋ ਵਿਚ ਮਿਲਦਾ-ਜੁਲਦਾ ਹੈ।	दोनों भाइयों की शक्ल आपस में मिलती है।
8.	ਇਸੇ ਰਾਹ ਤੇ ਆਉਂਦਿਆਂ ਜਾਂਦਿਆਂ ਉਹ ਫਕੀਰ ਮੈਨੂੰ ਮਿਲ ਜਾਂਦਾ ਸੀ।	इसी राह पर आते जाते वह फकीर मुझे मिल जाता था।
9.	ਸੇਠਾਂ ਕੋਲ ਰਹਣ ਵਾਲੇ ਨੌਕਰਾਂ ਨੂੰ ਵੱਡੀਆਂ ਵੱਡੀਆਂ ਤਨਖਾਹਾਂ ਮਿਲਦੀਆਂ ਹਨ।	सेठों के यहां रहने वाले नौकरों को बड़ी बड़ी तनखाहें मिलती हैं।
10.	ਬੈਠਿਆਂ ਬੈਠਿਆਂ ਤਾਂ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਮਿਲਣਾ।	बैठे बैठे तो कुछ नहीं मिलेगा।
11.	ਉਸ ਨੇ ਕੰਬਦਿਆਂ ਕੰਬਦਿਆਂ ਕਹਿਆ ਮੇਰਾ ਬੱਚਾ ਕਿਥੇ ਹੈ।	कांपते कांपते उस ने कहा मेरा बेटा कहां है।
12.	ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਮੰਦਰ ਤੋਂ ਪਰਤਦਿਆਂ ਵੇਖਿਆ।	उन्होंने मुझे मन्दिर से लौटते देखा।
13.	ਹਸਦਿਆਂ ਹਸਦਿਆਂ ਸਾਡੇ ਪੇਟ ਵਿਚ ਵਲ ਪੈ ਗਏ।	हंसते हंसते हमारे पेट में बल पड़ गए।

14.	ਪੁੱਤਰ ਦੇ ਮਰਨ ਦੀ ਖਬਰ ਸੁਣਦਿਆਂ ਸਾਰ ਉਹ ਡਿਗ ਪਈ ਅਤੇ ਬੇਹੋਸ਼ ਹੋ ਗਈ।	बेटे के मरने की खबर सुनते ही वह गिर पड़ी और बेहोश हो गई।
15.	ਪਰਤਦੀ ਵੇਰ ਸਾਨੂੰ ਮਿਲਦੇ ਜਾਣਾ ਜੀ।	अजी ! लौटती बार हमें मिलते जाना।
16.	ਜੀਂਦਿਆਂ ਜਾਗਦਿਆਂ ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਮਰਿਆਦਾ ਖਰਾਬ ਨਹੀਂ ਹੋਣ ਦਿਆਂਗੇ।	जीते जी हम अपने देश की मर्यादा खराब नहीं होने देंगे।
17.	ਇਹ ਤਾਂ ਘਾਤਕ ਜ਼ਹਰ ਹੈ, ਖਾਧੀ ਤੇ ਮਰੇ।	यह तो घातक विष है। खाया और मरे।
18.	ਜੇਕਰ ਵਚਨ ਦੇਵੇ, ਤਾਂ ਉਸਨੂੰ ਇਸ ਵੇਰ ਛੱਡ ਦਿਆਂਗਾ।	यदि वचन दे, तो उसे अब की छोड़ दूँगा।
19.	ਸੇਉ ਇਓਂ ਝੜਦੇ ਸਨ ਜਿਵੇਂ ਗੜੇ ਪੈਂਦੇ ਹੋਣ।	सेब ऐसे झड़ते थे जैसे ओले पड़ते हों।
20.	ਪਿਓ ਸਿਰ ਤੇ ਹੁੰਦਾ ਤਾਂ ਮੁੰਡਾ ਅਵਾਰਾ ਕਿਉਂ ਬਣਦਾ।	पिता सिर पर होता तो लड़का आवारा क्यों बनता।
21.	ਉਸ ਵਿਚਾਰੀ ਕੋਲ ਕੋਈ ਗਹਣਾ ਨਹੀਂ, ਨਨਾਣ ਦੇ ਵਿਆਹ ਤੇ ਕਿਵੇਂ ਜਾਏ!	उस बेचारी के पास कोई गहना नहीं, ननद के विवाह पर कैसे जाए !
22.	ਚੋਕੀਦਾਰ ਕੋਲ ਨ ਲਾਲਟੈਨ ਸੀ ਨ ਡਾਂਗ।	चौकीदार के पास न लालटैन थी न लाठी।
23.	ਨੰਬਰਦਾਰ ਕੋਲ ਦੋ ਖੂਹ ਤੇ ਦੋ ਹਵੇਲੀਆਂ ਹਨ।	नम्बरदार के पास दो कूएं और दो हवेलियां हैं।
24.	ਬਲਦ ਨੂੰ ਖੰਘ ਲੱਗੀ ਹੈ, ਕੋਈ ਦਵਾ ਦਾਰੂ ਕਰੋ।	बैल को खांसी हो गई है, इलाज करवाओ।
25.	ਰੱਬ ਦੀ ਕੁਦਰਤ ਨਿਆਰੀ ਹੈ; ਘੜੀ ਵਿਚ ਜਲਥਲ ਕਰ ਦਿੰਦਾ ਹੈ।	ईश्वर की कुदरत न्यारी है, घड़ी में जल थल कर देता है।
26.	ਤੁਮਾਤੜਾਂ ਲਈ ਕੀ ਔਖ ਏ।	आप जैसे महानुभावों के लिए क्या कठिन है।
27.	ਹਮਾਤੜਾਂ ਲਈ ਵਸੀਲਾ ਕਿਥੇ।	हमारे लिए वसीला कहां।
28.	ਆਪਾਧਾਪੀ ਪੈ ਜਾਏ ਤਾਂ ਸਤਿਆ ਉਡ ਜਾਂਦੀ ਏ।	स्वार्थ सिद्धि की बान पड़ जाए तो सात्विकता उड़ जाती है।

29. ਇੱਕੋ ਭਾ ਰਹਣਾ ਏ, ਵਧ ਘੱਟ ਨਹੀਂ ਹੋਣਾ।	एक ही भाव रहेगा अधिक कम नहीं होने का।
30. ਤੁਹਾਡੇ ਗੋਚਰਾ ਕੰਮ ਪੈ ਗਇਆ।	आप के प्रति काम पड़ गया।
31. ਬਾਬੇ ਦਾ ਸਦਕਾ ਸਭ ਕੁਝ ਬਹੁਤ ਹੈ।	बाबा के प्रताप से सब कुछ बहुत है।
32. ਲਾਲੇ ਹੋਰਾਂ ਦੀ ਦੁਕਾਨ ਲੁੱਟੀ ਗਈ।	लाला जी की दुकान लूटी गई।
33. ਭੋਲੇ ਹੋਰਾਂ ਦੀ ਝੋਟੀ ਗੁਆਚ ਗਈ।	भोला जी की भैंस गुम हो गई।
34. ਮਣ ਦੇ ਕਿੰਨੇ ਰੁਪਏ ਬੈਠੇ ?	मन के कितने रुपए बने ?
35. ਰੋਟੀ ਖਾਧੀ ਆ ਕਿ ਨਹੀਂ ?	तू ने रोटी खाई है कि नहीं ?
36. ਕੀ ਆਖਿਆ ਸੂ ?	उस ने मुझे क्या कहा है ?
37. ਅਜੇ ਰੋਟੀ ਵੀ ਖਾਣੀ ਜੇ।	अभी रोटी भी खानी है।

— — —

खण्ड 5

पंजाबी बात चीत

वार्तालाप के इन प्रकरणों में प्रायः बोल चाल का उच्चारण सुरक्षित रखने के प्रयत्न किये गये हैं, यथा :

करदा ए	(करदा है)	=	करता है
करदे ओ	(करदे हो)	=	करते हो
करदे ने	(करदे हन)	=	करते हैं
करदां	(करदा हां)	=	करता हूं
			आदि आदि

कुछ मुहावरे अभी साहित्यिक भाषा में स्थान नहीं पा सके, किन्तु बोल चाल में प्रचलित हैं। इस लिए कहीं कहीं इन्हें भी अपने प्रचलित रूप में लिखा गया है।

यहां व्याकरण की व्याख्या देना उपयुक्त नहीं समझा गया। कठिन शब्दों के अर्थ सरल पंजाबी में दिए गए हैं। हिन्दी रूपांतर परिशिष्ट में संकलित है।

ਪ੍ਰਸੰਗ 1
ਜਾਣ-ਪਛਾਣ

ਤੁਹਾਡਾ ਨਾਂ ਕੀ ਏ ?
ਮੇਰਾ ਨਾਂ ਏ ਰਣਜੀਤ ਸਿੰਘ।
ਤੁਸੀਂ ਇਥੇ ਕਦੋਂ ਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਓ ?
ਕੋਈ ਦੋ ਵਰ੍ਹੇ ਹੋਏ ਨੇ।
ਤੁਹਾਡਾ ਵੱਡਾ ਭਰਾ ਕੀ ਕੰਮ ਕਰਦਾ ਏ ?
ਉਹ ਤਾਂ ਬਜ਼ਾਜ਼ੀ ਦੀ ਦੁਕਾਨ ਕਰਦੇ ਨੇ।
ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਘਰ ਕਿੱਥੇ ਏ ?
ਉਹ ਤਾਂ ਛਾਵਣੀ ਵਿਚ ਰਹਿੰਦੇ ਨੇ।
ਛਾਵਣੀ ਇੱਥੋਂ ਕਿੰਨੀ ਦੂਰ ਏ ?
ਕੋਈ ਪੌਣੇ ਤਿੰਨ ਮੀਲ ਦੂਰ ਏ।
ਕੀ ਤੁਸੀਂ ਵੀ ਉੱਥੋਂ ਹੀ ਆਉਂਦੇ ਓ ?
ਹਾਂ ਜੀ, ਉੱਥੋਂ ਬਸ ਵਿਚ ਆਉਂਦਾ ਹਾਂ।
ਤੁਸੀਂ ਕੱਲ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਆ ਸਕੋਗੇ ?
ਹਾਂ ਜੀ, ਮੈਂ ਸਾਢੇ ਅੱਠ ਵਜੇ ਆ ਜਾਵਾਂਗਾ।
ਆਪਣੀ ਬੱਚੀ ਨੂੰ ਵੀ ਲੈਂਦੇ ਆਉਣਾ, ਉਹ ਬੜੀ ਪਿਆਰੀ ਬੱਚੀ ਏ।
ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ, ਉਹ ਵੀ ਆ ਜਾਏਗੀ।
ਸਾਢੇ ਅੱਠ ਵਜੇ ਠੀਕ ਏ ਨਾ ?
ਹਾਂ ਜੀ, ਬਹੁਤ ਠੀਕ ਏ, ਧੰਨਵਾਦ।*

ਜਾਣ ਪਛਾਣ = ਪਰਿਚੈ
ਕਦੋਂ ਦੇ = ਕਦ ਤੋਂ
ਏ = ਹੈ
ਹੋਏ ਨੇ = ਹੋਏ ਹਨ
ਕਿੰਨੀ = ਕਿਤਨੀ
ਪੌਣੇ ਤਿੰਨ = 2¾
ਆਉਂਦੇ ਓ = ਆਉਂਦੇ ਹੋ
ਸਾਢੇ ਅੱਠ = 8½

* ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਾਕਾਂ ਦੇ ਹਿੰਦੀ ਰੂਪਾਂਤਰ ਲਈ ਵੇਖੋ ਪਰਿਸ਼ਿਸ਼ਟ।

ਤੁਹਾਡਾ ਪਤਾ ਕੀ ਏ ?
ਦੋ ਸੌ ਬਵੰਜਾ ਵਾਣਵੱਟਾਂ ਦੀ ਗਲੀ, ਬਾਂਸ ਮੰਡੀ।
ਫਿਰ ਦਸਿਆ ਜੇ, ਮੈਂ ਲਿਖ ਲਵਾਂ।
ਅੱਛਾ ਜੀ।
ਹਾਂ ਜੀ ਦੋ ਸੌ ਕਿੰਨਾ ਨੰਬਰ ?
ਦੋ ਸੌ ਬਵੰਜਾ।
ਜੀ, ਤੇ ਕਿਹੜੀ ਗਲੀ ?
ਗਲੀ ਵਾਣਵੱਟਾਂ ਦੀ।
ਛਾਵਣੀ ਵਿਚ ਬਾਂਸ ਮੰਡੀ ਹੈ ਨਾ ?
ਹਾਂ ਜੀ।
ਬਸ ਉਸ ਦੇ ਲਾਗੇ।
ਚੰਗਾ ਜੀ।
ਤੁਸੀਂ ਆਪੇ ਪੁੱਜ ਜਾਣਾ ਜੀ।
ਬਹੁਤ ਅੱਛਾ।
ਧੰਨਵਾਦ।

ਬਵੰਜਾ = 52
ਦਸਿਆ ਜੇ = ਦੱਸਣਾ ਜੀ
ਲਾਗੇ = ਨੇੜੇ
ਪੁੱਜ ਜਾਣਾ = ਪਹੁੰਚ ਜਾਣਾ

ਅਭਿਆਸ

ਮੇਰੇ ਘਰ ਵੀ ਆਉਣਾ।
ਤੁਸੀਂ ਵੀ ਮੇਰੇ ਘਰ ਆਉਣਾ।
ਆਪਣੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਵੀ ਲਿਆਉਣਾ।
ਅਗਲੇ ਹਫ਼ਤੇ ਵੀ ਜ਼ਰੂਰ ਆਉਣਾ।
ਅਸੀਂ ਕੱਲ ਮਿਲਾਂਗੇ।
ਬੱਚੀਆਂ ਵੀ ਕੱਲ ਮਿਲਣਗੀਆਂ।
ਅਸੀਂ ਕੱਲ ਕਿੱਥੇ ਮਿਲਾਂਗੇ ?
ਚਲੋ, ਬਾਗ ਵਿਚ ਮਿਲਾਂਗੇ।
ਤੁਸੀਂ ਕਿੰਨੇ ਵਜੇ ਮਿਲੋਗੇ ?
ਮੈਂ ਸ਼ਾਮੀ ਛੇ ਵਜੇ ਉੱਥੇ ਪੁੱਜ ਕੇ ਆਣ ਮਿਲਾਂਗਾ।

ਕਿੰਨੇ = ਕਿਤਨੇ
ਸ਼ਾਮੀ = ਸ਼ਾਮ ਨੂੰ
ਪੁੱਜ ਕੇ = ਪਹੁੰਚ ਕੇ

ਪ੍ਰਸੰਗ 2
ਸਤਕਾਰ

ਆਓ ਜੀ, ਜੀ ਆਇਆ ਨੂੰ!
ਧੰਨਵਾਦ!
ਅਸੀਂ ਤੁਹਾਡੀ ਉਡੀਕ ਕਰ ਰਹੇ ਸਾਂ।
ਮਾਫ਼ ਕਰਨਾ, ਸਾਨੂੰ ਰਾਹ ਵਿਚ ਦੇਰ ਲਗ ਗਈ।
ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ, ਹਾਲੀ ਤਾਂ ਕੁੱਲ ਪੰਜ ਮਿੰਟ ਹੋਏ ਨੇ।
ਫਿਰ ਵੀ ਤੁਹਾਨੂੰ ਕਸ਼ਟ ਹੋਇਆ ਏ।
ਇਹ ਤੁਹਾਡੀ ਉਦਾਰਤਾ ਏ। ਧੰਨਵਾਦ !
ਕੀ ਪੀਓਗੇ ?, ਚਾਹ ਕਿ ਸ਼ਰਬਤ ?
ਮੈਨੂੰ ਤਾਂ ਸ਼ਰਬਤ ਸੁਖਾਉਂਦਾ ਨਹੀਂ।
ਚੰਗਾ ਚਾਹ ਹੀ ਬਣੇਗੀ, ਬੱਚੀ ਕੀ ਪੀਏਗੀ ?
ਬੱਚੀ ਵੀ ਚਾਹ ਪੀ ਲਏਗੀ।
ਤੁਹਾਡੀਆਂ ਬੱਚੀਆਂ ਕਿਹੜੇ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਜਾਂਦੀਆਂ ਨੇ ?
ਉਹ ਤਾਂ ਜਨਤਾ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਜਾਂਦੀਆਂ ਨੇ।
ਉਥੇ ਪੜ੍ਹਾਈ ਚੰਗੀ ਹੁੰਦੀ ਏ ?
ਹਾਂ ਜੀ, ਉੱਥੇ ਚੰਗਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਏ।

ਸਤਕਾਰ = ਸੁਆਗਤ
ਉਡੀਕ = ਇੰਤਜ਼ਾਰ
ਹੋਏ ਨੇ = ਹੋਏ ਹਨ
ਹੋਇਆ ਏ = ਹੋਇਆ ਹੈ
ਸੁਖਾਉਂਦਾ = ਮਾਫ਼ਕ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦਾ
ਕਿਹੜੇ ਵਿਚ = ਕਿਸ ਵਿਚ

ਆਓ ਜੀ, ਚਾਹ ਪੀਵੀਏ। ਕੁਰਸੀ ਤੇ ਬੈਠੋ।
ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ, ਮੈਨੂੰ ਮੰਜਾ ਈ ਠੀਕ ਏ।
ਬੱਚੀ ਕੁਰਸੀ ਤੇ ਬੈਠ ਜਾਏ ?
ਬੈਠ ਜਾ ਪੁੱਤਰ।
ਬਾਦਸ਼ਾਹੋ! ਕੁਝ ਖਾਓ ਨਾ!
ਖਾਂਦੇ ਪਏਆਂ ਜੀ।
ਚਾਹ ਹੋਰ ਲਓ, ਠੰਡੀ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ?
ਨਹੀਂ ਜੀ, ਚੰਗੀ ਗਰਮ ਏ।
ਬੱਚੀ ਨੇ ਤਾਂ ਠੰਡੀ ਕਰ ਲਈ ਏ
ਹਾਂ ਜੀ, ਇਹ ਗ਼ਰਮ ਚਾਹ ਘੱਟ ਈ ਪੀਂਦੀ ਏ।
ਮੇਰੀਆਂ ਬੱਚੀਆਂ ਵੀ ਚਾਹ ਠੰਡੀ ਕਰ ਕੇ ਪੀਂਦੀਆਂ ਨੇ।
ਹਾਲੀ ਸਕੂਲੋਂ ਆਈਆਂ ਨਹੀਂ ?
ਬੱਸ ਆਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਨੇ।
ਸਕੂਲ ਦੀ ਬਸ ਛੱਡ ਜਾਂਦੀ ਹੋਣੀ ਏ ?
ਹਾਂ ਜੀ ਪਰਲੇ ਚੌਂਕ ਤੇ ਛੱਡ ਜਾਂਦੀ ਏ, ਫਿਰ ਪੈਦਲ ਆਉਂਦੀਆਂ ਹਨ।
ਤੁਹਾਡਾ ਮੁੰਡਾ ਤਾਂ ਸਾਈਕਲ ਤੇ ਜਾਂਦਾ ਏ ?
ਹਾਂ ਜੀ, ਉਸ ਪਾਸੇ ਕੋਈ ਬਸ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦੀ।
ਬੜਾ ਪਿਆਰਾ ਮੁੰਡਾ ਏ। ਜਿਥੇ ਮਿਲੇ ਪ੍ਰੇਮ ਨਾਲ 'ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ' ਬੋਲਦਾ ਏ।

ਮੰਜਾ = ਚਾਰਪਾਈ
ਬਾਦਸ਼ਾਹੋ! = ਮਹਾਰਾਜ!
ਖਾਂਦੇ ਪਏਆਂ = ਖਾ ਰਹੇ ਆਂ
ਬੱਸ = ਥੋੜੀ ਮਾਤ੍ਰਾ ਦਾ ਭਾ
ਉਸ ਪਾਸੇ = ਉਸ ਤਰਫ਼
ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ = ਸੁਆਗਤ ਅਤੇ ਪ੍ਰਣਾਮ ਦਾ ਵਾਕ

ਅਭਿਆਸ

ਉਹ ਨਕਲ ਕਰ ਰਹਿਆ ਏ।
ਉਹ ਉਡੀਕ ਕਰ ਰਹੇ ਨੇ।
ਤੁਸੀਂ ਲਿਪਾਈ ਕਰ ਰਹੀਆਂ ਓ।
ਤੂੰ ਜਿੱਦ ਕਰ ਰਹੀ ਏਂ।
ਮੈਂ ਵਿਚਾਰ ਕਰ ਰਹਿਆਂ।
ਅਸੀਂ ਪਾਠ ਕਰ ਰਹੇ ਆਂ।

ਮਕਾਨ ਨੂੰ ਅੱਗ ਲਗ ਗਈ ਏ।
ਸਾਨੂੰ ਦੇਰ ਲਗ ਗਈ ਏ।
ਤੁਹਾਨੂੰ ਪਿਆਸ ਲਗ ਰਹੀ ਏ।
ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਧੁੱਪ ਲਗ ਰਹੀ ਏ।
ਮਾਈ ਨੂੰ ਠੰਢ ਲਗ ਗਈ ਏ।
ਕੁੱਤੇ ਨੂੰ ਮਾਜ ਲਗ ਗਈ ਏ।
ਬੂਟਿਆਂ ਨੂੰ ਕੀੜਾ ਲਗ ਗਇਆ ਏ।
ਕੰਧ ਨੂੰ ਕੱਲਰ ਲਗ ਗਇਆ ਏ।
ਕੁੱਕੜਾਂ ਨੂੰ ਛੂਤ ਲਗ ਗਈ ਏ।
ਰਾਹੀ ਨੂੰ ਲੋ ਲਗ ਗਈ ਏ।

ਮੈਂ ਕਰ ਰਹਿਆਂ = ਕਰ ਰਿਹਾ ਹਾਂ
ਅਸੀਂ ਕਰ ਰਹੇ ਆਂ = ਅਸੀਂ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ
ਪਿਆਸ = ਤੇਹ

ਪ੍ਰਸੰਗ 3

ਛੁੱਟੀ ਲਈ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ

ਬਾਬਾ! ਕੀ ਸਾਹਬ ਘਰ ਨੇ ?

ਹਾਂ ਜੀ, ਅਰਾਮ ਕਰਦੇ ਨੇ, ਦੱਸੋ ਕੀ ਹਾਲ ਏ ?

ਮੇਰਾ ਬੱਚਾ ਸਖਤ ਬਿਮਾਰ ਏ, ਮੈਂ ਛੁਟੀ ਲੈ ਕੇ ਹੁਣੇ ਜਾਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ।

ਤੁਹਾਡਾ ਨਾਂ ?

ਗੁਲਜਾਰ ਸਿੰਘ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਕਲਰਕ!

ਅੱਛਾ ਜੀ, ਚਲੋ ਮੇਰੇ ਨਾਲ!

ਕੀ ਗੱਲ ਏ, ਛੁੱਟੀ ਕੇਵਲ ਇਕ ਦਿਨ ਦੀ ਲਿਖੀ ਜੇ ?

ਹਾਂ ਜੀ, ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਭਾਈ ਨੂੰ ਉੱਥੇ ਠਹਰਾ ਕੇ ਮੁੜ ਆਵਾਂਗਾ।

ਬੱਚਾ ਸਖਤ ਬਿਮਾਰ ਏ, ਤਾਂ ਤਿੰਨ ਦਿਨ ਦੀ ਛੁਟੀ ਲੈ ਜਾਓ।

ਬੜੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਏ ਆਪਦੀ, ਸਾਹਬ! ਜੇਕਰ ਬੱਚਾ ਛੇਤੀ ਵਲ ਹੋ ਗਇਆ, ਤਾਂ ਪਰਸੋਂ ਮੁੜ ਆਵਾਂਗਾ।

ਚੰਗਾ।

ਧੰਨਵਾਦ!

ਗੱਲ ਸੁਣ ਗੁਲਜਾਰ ਸਿੰਹਾਂ!

ਜੀ।

ਇਹ ਆਪਣੀ ਦਰਖਾਸਤ ਜਰਾ ਓਂਸ ਟ੍ਰੇ ਵਿਚ ਪਾ ਦੇ ਤਾਂ ਜੋ ਚਪੜਾਸੀ ਕਲ ਦਫ਼ਤਰ ਲੈਂਦਾ ਜਾਏ।

ਚੰਗਾ ਜੀ, ਸਤ ਬਚਨ।

ਕਰਦੇ ਨੇ = ਕਰਦੇ ਹਨ

ਏ = ਹੈ

ਲਿਖੀ ਜੇ = ਤੁਸਾਂ ਨੇ ਲਿਖੀ ਹੈ (ਜੇ—ਭਾਵ, ਸਾਵਧਾਨ)

ਆਪਦੀ = ਤੁਹਾਡੀ

ਛੇਤੀ = ਜਲਦੀ

ਵਲ = ਠੀਕ

ਅਭਿਆਸ

ਨੌਕਰ ਛੁੱਟੀ ਲੈ ਗਇਆ।
ਆਪਣੀ ਤਨਖਾਹ ਵੀ ਲੈ ਗਇਆ।
ਉਹ ਵੱਡੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਲੈ ਗਈ।
ਉਹ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਲੈ ਗਈਆਂ।
ਮੈਂ ਬਿਸਤਰਾ ਵੀ ਲੈ ਗਇਆ।
ਅਸੀਂ ਕੁਝ ਵੀ ਨਹੀਂ ਲੈ ਗਏ।
ਸੇਵਕ ਜਸ ਲੈ ਗਏ।
ਬੁੱਢੇ ਨੂੰ ਬਿਮਾਰੀ ਲੈ ਗਈ।
ਚਿੜੀ ਨੂੰ ਬਾਜ਼ ਲੈ ਗਇਆ।
ਬਾਜ਼ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਮੌਤ ਲੈ ਗਈ।

ਪ੍ਰਸੰਗ 4
ਓਪਰੇ ਬੰਦੇ ਨਾਲ

ਕੀ, ਤੁਸੀਂ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲ ਲੈਂਦੇ ਓ ?
ਹਾਂ ਜੀ, ਹੁਣ ਤਾਂ ਮੈਂ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲ ਲੈਂਦਾ ਹਾਂ।
ਤੁਸੀਂ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਵੀ ਜਾਣਦੇ ਓ (ਹੋ) ?
ਨਹੀਂ ਜੀ, ਮੈਂ ਤਾਂ ਹਿੰਦੀ ਤੇ ਤਮਿਲ ਜਾਣਦਾਂ (ਜਾਣਦਾ ਹਾਂ)।
ਤਮਿਲ ਤਾਂ ਮੈਂ ਵੀ ਸਿਖੀ ਸੀ, ਪਰ ਹੁਣ ਭੁਲਦੀ ਜਾਂਦੀ ਏ (ਹੈ)।
ਰੇਡੀਓ ਦੇ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਸੁਣੋ, ਪਤ੍ਰਿਕਾਵਾਂ ਪੜ੍ਹੋ, ਫਿਰ ਸਾਰੀ ਬੋਲੀ ਤਾਜ਼ਾ ਹੋ ਜਾਏਗੀ।
ਤੁਹਾਨੂੰ ਇਹ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਚੰਗਾ ਲੱਗਾ ਏ (ਹੈ) ?
ਹਾਂ ਜੀ, ਮੈਨੂੰ ਬਹੁਤ ਚੰਗਾ ਲੱਗਾ ਏ (ਹੈ)।
ਤੁਹਾਡੇ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਵੀ ਭੰਗੜਾ ਪਾਉਂਦੇ ਨੇ ?
ਨਹੀਂ ਜੀ, ਉੱਥੇ ਹੋਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਚ ਹੁੰਦੇ ਨੇ।
ਤੁਸੀਂ ਤਾਂ ਕਰਨਾਟਕ ਸੰਗੀਤ ਜਾਣਦੇ ਹੋਵੋਗੇ ?
ਹਾਂ ਜੀ, ਮਾੜਾ-ਮੋਟਾ ਜਾਣਦਾ (ਜਾਣਦਾ ਹਾਂ)।
ਕਿਸੇ ਦਿਨ ਸਾਡੇ ਘਰ ਆਉਣਾ ਸੀ।
ਬਹੁਤ ਅੱਛਾ ਜੀ, ਮੈਂ ਅਗਲੇ ਐਤਵਾਰ ਆ ਜਾਵਾਂਗਾ।
ਜ਼ਰੂਰ ਆਉਣਾ, ਆਪਾਂ ਗੀਤ ਗਾਵਾਂਗੇ।
ਚੰਗਾ ਜੀ।
ਚੰਗਾ।

ਲੈਂਦੇ ਓ = ਲੈਂਦੇ ਹੋ
ਭੰਗੜਾ = ਮਰਦਾਂ ਦਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਨਾਚ
ਭੰਗੜਾ ਪਾਉਣਾ = ਭੰਗੜਾ ਨਾਚ ਕਰਨਾ
ਆਪਾਂ = ਅਸੀਂ (ਵਕਤਾ ਤੇ ਸ੍ਰੋਤਾ) ਦੋਵੇਂ

ਅਭਿਆਸ

ਤੁਸੀਂ ਪੰਜਾਬੀ ਸਮਝ ਲੈਂਦੇ ਓ ?
ਹਾਂ ਜੀ ਮੈਂ ਬੋਲ ਵੀ ਲੈਂਦਾ।
ਇਹ ਕੁੜੀ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਲਿਖ ਲੈਂਦੀ ਏ।
ਸਾਡੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਵਾਢੀਆਂ ਵੀ ਕਰ ਲੈਂਦੀਆਂ ਨੇ।
ਛੋਟਾ ਮੁੰਡਾ ਚਿੱਠੀ ਪੜ੍ਹ ਲੈਂਦਾ ਏ।
ਮੈਂ ਮੂਰਤ ਵਾਹ ਲੈਨਾਂ।
ਓਹ ਹਲ ਵਾਹ ਲੈਂਦਾ ਏ।
ਅਸੀਂ ਮਾੜੀ-ਮੋਟੀ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਪੜ੍ਹ ਲੈਂਦੇ ਆਂ।
ਤੂੰ ਗਾਣਾ ਗਾ ਲੈਂਦਾ ਏ ?
ਨਹੀਂ ਜੀ, ਮੈਂ ਕੇਵਲ ਸੁਣ ਲੈਨਾਂ।
ਮੇਰਾ ਮੁੰਡਾ ਚਾਰ ਰੁਪਏ ਦੀ ਮਜ਼ਦੂਰੀ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਏ।
ਮੈਂ ਵੀ ਦਿਹਾੜੀ ਪੰਜ ਰੁਪਏ ਦਾ ਵਾਣ ਵਟ ਲੈਂਦਾਂ।

ਵਾਢੀ = ਫ਼ਸਲ ਦੀ ਕਟਾਈ
ਮੂਰਤ ਵਾਹੁਣਾ = ਚਿਤ੍ਰ ਬਣਾਉਣਾ
ਮੈਂ ਵਾਹ ਲੈਨਾਂ = ਮੈਂ ਵਾਹ ਲੈਂਦਾ ਹਾਂ
ਮਾੜੀ ਮੋਟੀ = ਥੋੜੀ ਬਹੁਤ, ਕੁਝ ਕੁ
ਤੂੰ ਗਾ ਲੈਂਦਾ ਏ = ਤੂੰ ਗਾ ਲੈਂਦਾ ਹੈਂ

ਪ੍ਰਸੰਗ 5
ਰਿਕਸ਼ੇ ਵਾਲੇ ਦੇ ਨਾਲ

ਰਿਕਸ਼ੇ ਵਾਲੇ! ਠਾਹਰ ਜਾ! ਰਿਕਸ਼ਾ ਖਾਲੀ ਏ ?
ਜੀ, ਦੱਸੋ ਕਿਥੇ ਜਾਣਾ ਜੇ ?
ਕਸ਼ਮੀਰ ਹੋਟਲ ਪਤਾ ਈ ? ਕਿੱਥੇ ਏ ?
ਹਾਂ ਜੀ, ਉਹ ਤਾਂ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਹੋਟਲ ਏ।
ਕਿੰਨੀ ਦੂਰ ਹੋਵੇਗਾ ?
ਬੱਸ ਕੋਈ ਢਾਈ ਮੀਲ।
ਮੇਰੀ ਰਿਕਸ਼ਾ ਅੱਧੇ ਘੰਟੇ ਵਿਚ ਪਹੁੰਚਾ ਦਏਗੀ।
ਕਿੰਨੇ ਪੈਸੇ ?
ਸਾਹਬ! ਪੰਜਾਹ ਨਵੇਂ ਪੈਸੇ।
ਪੰਜਾਹ, ਪੈਸੇ ਹੈਨ ਤਾਂ ਬਹੁਤ, ਪਰ ਮੈਨੂੰ ਜਲਦੀ ਏ, ਚਲ!
ਬਿਸਤਰਾ ਪਿੱਛੇ ਰਖ ਦੇਂਦੇ ਆਂ (ਵਾਂ), ਟ੍ਰੰਕ ਅਗੇ ਠੀਕ ਏ।
ਜਲਦੀ ਚਲੋ।
ਲੋ ਜੀ, ਚਲੀ ਮੇਰੀ 'ਤੁਫਾਨ ਮੇਲ' ਰਿਕਸ਼ਾ!
ਅਗਲੇ ਮੋੜ ਤੇ ਹੋਲੀ ਹੋਲੀ ਚਲਣਾ, ਖਵਰੇ ਮੇਰਾ ਭਰਾ ਉੱਥੇ ਮੈਨੂੰ ਉਡੀਕਦਾ ਹੋਵੇ।
ਬਹੁਤ ਅੱਛਾ ਜੀ, ਉਥੇ ਰੁਕ ਜਾਵਾਂਗੇ।
ਧਿਆਨ ਨਾਲ ਵੇਖਾਂਗੇ ਚਿੰਤਾ ਨ ਕਰੋ।

ਪਤਾ ਈ ? = ਤੈਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ? ('ਤੈਨੂੰ ਪਤਾ ਊ, ਤੇ ਪਤਾ ਹੈਈ, ਵੀ ਬੋਲਦੇ ਹਨ')
ਪੰਜਾਹ = 50
ਖਵਰੇ = ਸ਼ਾਇਦ, ਕੀ ਪਤਾ

ਪ੍ਰਸੰਗ 6
ਫਲ ਵਾਲੇ ਦੇ ਨਾਲ

ਕਿਉਂ ਭਈ! ਏਹ ਸੰਗਤਰੇ ਤਾਜ਼ੇ ਨੇ ?
ਹਾਂ ਜੀ, ਵੇਖੋ ਤਾਂ ਹੁਣੇ ਲਿਆਂਦੇ ਨੇ।
ਮੇਰਾ ਭਰਾ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਚ ਬਿਮਾਰ ਪਇਆ ਏ;
ਉਸ ਵਾਸਤੇ ਤਾਜ਼ਾ ਫਲ ਚਾਹੀਦਾ ਏ।
ਇਸ ਲਈ ਤਾਂ ਅਸੀਂ ਹਸਪਤਾਲ ਕੋਲ ਤਾਜ਼ੇ ਫਲਾਂ ਦੀ ਦੁਕਾਨ ਖੋਲ੍ਹੀ ਏ।
ਇਹ ਦੋ ਸੰਗਤਰੇ ਦੇ ਦਿਓ।
ਬਹੁਤ ਅੱਛਾ ਜੀ।
ਪੈਸੇ ?
ਸੱਠ ਨਵੇਂ ਪੈਸੇ।
ਕੱਲ ਤਾਂ ਪੱਚੀ ਪੱਚੀ ਪੈਸੇ ਸੀ।
ਹਾਂ ਜੀ ਕੱਲ ਵਾਲੇ ਭਾਵੇਂ ਵੀਹ ਵੀਹ ਪੈਸੇ ਲੈ ਜਾਓ।
ਗਰਮੀਆਂ ਵਿਚ ਫਲ ਛੇਤੀ ਖਰਾਬ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਏ।
ਇਸੇ ਲਈ ਤਾਜ਼ਾ ਫਲ ਮਹਿੰਗਾ ਹੁੰਦਾ ਜਾਂਦਾ ਏ।
ਗੱਲ ਤਾਂ ਠੀਕ ਏ; ਪਰ ਇੱਨਾਂ ਮਹਿੰਗਾ ਕੌਣ ਕੌਣ ਲਏਗਾ :
ਕਦੋਂ ਤਕ ਲਏਗਾ।
ਇਹ ਤਾਂ ਪੁੱਜਣ ਦਾ ਸੌਦਾ ਏ।
ਚੰਗਾ, ਇਕੋ ਸੰਗਤਰਾ ਲੈ ਜਾਂਦਾਂ।
ਤੀਹ ਪੈਸੇ ਜੀ।
ਏਹ ਲੈ ਤੀਹ। ਠੀਕ ?
ਠੀਕ।

ਭਈ = ਪਈ
ਇਸੇ ਲਈ = ਇਸੇ ਕਾਰਨ
ਪੈਸੇ ? = ਭਾਵ, ਕਿੰਨੇ ਪੈਸੇ
ਪੱਚੀ ਪੱਚੀ ਪੈਸੇ = 25 ਪੈਸੇ ਦਾ ਇਕ
ਮਹਿੰਗਾ = ਮਹੰਗਾ
ਪੁੱਜਣ ਦਾ ਸੌਦਾ = ਉਹ ਸੌਦਾ ਜੋ ਵਾਰਾ ਖਾਏ, ਠੀਕ ਲੱਗੇ
ਲੈ = ਤੂੰ ਲੈ
ਤੀਹ = 30

ਅਭਿਆਸ

ਗੱਡੀ ਟੁਰ ਚੱਲੀ ਜੇ
ਗੱਡੀ ਟੁਰਨ ਵਾਲੀ ਏ
ਗੱਡੀ ਜਾਣ ਨੂੰ ਤਿਆਰ ਏ
ਗੱਡ ਟੁਰੀ ਕਿ ਟੁਰੀ
ਗੱਡੀ ਦਾ ਵੇਲਾ ਹੋ ਗਇਆ ਏ
ਗੱਡੀ ਹੁਣ ਜਾਏਗੀ
ਗੱਡੀ ਨੇ ਹੁਣ ਜਾਣਾ ਏ
ਗੱਡੀ ਜਾਣ ਲੱਗੀ ਏ
ਗੱਡੀ ਟੁਰੀ ਚਾਹੁੰਦੀ ਏ

ਵੇਲੇ ਸਿਰ ਪਹੁੰਚ ਜਾਈਂ
ਇਸ ਦਾ ਦੋਸ਼ ਮੇਰੇ ਸਿਰ ਨ ਲਾਈਂ
ਸਿਰ ਸਿਰ ਕਰਜਾ ਚੜ੍ਹਿਆ ਪਇਆ ਏ।

ਟੁਰੀ ਕਿ ਟੁਰੀ = ਹੁਣੇ ਟੁਰ ਚਲੀ
ਵੇਲੇ ਸਿਰ = ਸਮੇਂ ਅਨੁਸਾਰ
ਮੇਰੇ ਸਿਰ = ਮੇਰੇ ਜ਼ਿੰਮੇ
ਸਿਰ ਸਿਰ ਕਰਜਾ = ਬਹੁਤ ਭਾਰਾ ਕਰਜਾ

ਪ੍ਰਸੰਗ 7
ਬਜ਼ਾਜ਼ ਦੀ ਦੁਕਾਨ ਤੇ

ਸ਼ਾਹ ਜੀ, ਜੈ ਰਾਮ ਜੀ ਦੀ!
ਜੈ ਰਾਮ ਜੀ! ਆਓ! ਮੁੱਦਤਾਂ ਹੋਈਆਂ ਦਰਸ਼ਨ ਦਿੱਤੇ।
ਵਾਢੀਆਂ 'ਚ ਲੱਗੇ ਰਹੇ, ਸਾਥੋਂ ਆਉਣ ਨਹੀਂ ਹੋਇਆ।
ਮੈਂ ਕਿਹਾ, ਛੱਬੀ ਦੀ ਮਲਮਲ ਲਈ ਤਾਂ ਵੀਰ ਭਗਵਾਨ ਅਵੱਸ਼ ਆਏਗਾ।
ਹੁਣ ਤਾਂ ਆ ਈ ਗਿਆਂ, ਵੇਖ ਪਿਆਰ ਦੀ ਖਿੱਚ!
ਸੱਚਾ ਵਖਰ-ਵਪਾਰ ਪਿਆਰ ਈ ਏ।
ਸੁੱਕੇ ਪ੍ਰੇਮ ਨਾਲ ਪਿੰਡਾ ਤਾਂ ਕਜਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦਾ, ਨਾ ਪਗੜੀ ਬਣ ਸਕਦੀ ਏ।
ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ। ਲੈ ਜਾ ਭਗਵਾਨਿਆ ਪਗੜੀ। ਤੈਥੋਂ ਪਗੜੀ ਸਾਨੂੰ ਵਧੇਰੇ ਪਿਆਰੀ ਏ ?
ਨਹੀਂ ਮੈਂ ਹਸਦਾਂ। ਹੁਣ ਇਹ ਦੱਸੋ, ਕਮੀਜ ਤੇ ਕਿੰਨਾ ਕਪੜਾ ਲਗੇਗਾ, ਜੇ ਬਰ ਹੋਵੇ ਪੌਣਾ ਮੀਟਰ ?
ਸਾਢੇ ਤਿੰਨ ਮੀਟਰ ਕਪੜਾ ਕਮੀਜ ਤੇ ਮੁਕਦਾ ਨਹੀਂ।
ਮੁਕਦਾ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਅਗਲੀ ਵੇਰ ਤਾਂ ਪੌਣੇ ਚਾਰ ਮੀਟਰ ਲਗਿਆ ਸੀ?
ਉਸ ਦਾ ਬਰ ਘੱਟ ਸੀ, ਫਿਰ ਉਹ ਸੀ ਸੁੰਗੜਨ ਵਾਲਾ ਕਪੜਾ।
ਇਹ ਤਾਂ ਮੱਖਣ ਜੇ ਮੱਖਣ।
ਰਜਾਈਆਂ ਲਈ ਨਵੀਆਂ ਛੀਟਾਂ ਵੀ ਆਈਆਂ ਜੇ।
ਉਹ ਵੀ ਵਿਖਾਓ, ਤੁਹਾਡੀ ਭਰਜਾਈ ਆਖਦੀ ਸੀ, ਚੰਗੀ ਚੀਜ਼ ਹੋਵੇ, ਕੁੜੀ ਦੇ ਦਾਜ ਲਈ।
ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ, ਆਪਣੀ ਕੁੜੀ ਲਈ ਚੰਗੀ ਚੀਜ ਨਾ ਦਿਆਂਗੇ ਤਾਂ ਕਾਹਦੇ ਲਈ ਦੁਕਾਨ ਖੋਲ੍ਹੀ ਏ। ਮਹੂਰਤ ਕੀ ਨਿਕਲਿਆ ਏ ?
ਕੱਤੇ ਦੀ ਪੁੰਨਿਆਂ।

ਮੁੱਦਤਾਂ = ਮੁੱਦਤ, ਕਾਫੀ ਸਮਾਂ
ਵਾਢੀਆਂ = ਫ਼ਸਲਾਂ
ਸਾਥੋਂ = ਅਸਾਂ ਤੋਂ
ਆਉਣ ਨਹੀ = ਆ ਨਹੀਂ
ਹੋਇਆ = ਸਕੇ
ਛੱਬੀ = ਨੰ. 26
ਅਵੱਸ਼ = ਜ਼ਰੂਰ
ਵਖਰ-ਵਪਾਰ = ਸੌਦਾ
ਬਰ = ਚੌੜਾਈ
ਮੁਕਦਾ ਨਹੀਂ = ਕਾਫੀ ਹੈ
ਸੁੰਗੜਨ = ਘਣਾ ਹੋ ਕੇ ਘਟ ਜਾਣਾ
ਮੱਖਣ ਜੇ = ਵੇਖੋ ਜੀ ਇਹ ਮੱਖਣ ਵਾਂਗ ਮੁਲਾਇਮ ਹੈ
ਭਰਜਾਈ = ਭਾਬੀ
ਦਾਜ = ਦਹੇਜ਼
ਪੁੰਨਿਆਂ = ਪੂਰਨਮਾਸ਼ੀ

ਤਾਂ ਹੋਰ ਕਪੜੇ ਵੀ ਲੈ ਜਾਓ, ਉਨ੍ਹੀਂ ਦਿਨੀਂ ਭੀੜ ਪੈ ਜਾਏਗੀ, ਕਪੜੇ ਦੀ ਥੁੜ ਪੈ ਜਾਏਗੀ।
ਮੇਰਾ ਤਾਂ ਹੱਥ ਤੰਗ ਏ ਕੋਈ ਨਹੀਂ, ਉਧਾਰ ਸੁਧਾਰ ਸਹੀ।
ਕੋਈ ਸੋਹਣਾ ਜਿਹਾ ਚਿਕਨ ਵਿਖਾਓ।
ਲੋ ਜੀ, ਵੰਨ ਸਵੰਨੇ ਚਿਕਨ ਲਖਨਊ ਦੇ।
ਦੂਜੀ ਗਠ ਵੀ ਵਿਖਾਉਂਦੇ ਆਂ।
ਬੜੀ ਪਾਣ ਲਗੀ ਏ, ਖਵਰੇ ਧੋ ਕੇ ਕੀ ਨਿਕਲੇਗਾ!
ਵਹਮ ਨ ਕਰੋ ਜੀ। ਇਹ ਮਾਲ ਸੋਲ੍ਹਾਂ ਆਨੇ ਖਰਾ ਜੇ।
ਖਰਾ ਤਾਂ ਹੋਏਗਾ, ਭਾ ਕੀ ਬਣਾਇਆ ਜੇ ?
ਸਾਢੇ ਤਿੰਨ ਰੁਪਏ ਮੀਟਰ, ਕੁਟ ਕੁਟ ਕੇ ਹੰਢਾਓ।
ਤੋਹਫਾ ਚੀਜ਼ ਜੇ। ਬੂਟੀ ਵੀ ਬਰੀਕ, ਵਧੀਆ।
ਆਪੇ ਸਲਾਹੀ ਜਾਂਦੇ ਓ; ਵੇਖੋ ਦੋ ਥਾਈਂ ਟੁਕਿਆ ਹੋਇਆ ਏ।
ਕੀ ਆਖਾਂ ਭਗਵਾਨਾਂ, ਇਨ੍ਹਾਂ ਚੂਹਿਆਂ ਨੇ ਮੇਰੇ ਨਕ ਵਿਚ ਦਮ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਏ।
ਖਵਰੇ ਕਿੰਨੇ ਟੋਟੇ ਟੁੱਕੇ ਪਏ ਨੇ!
ਦਰਜ਼ੀ ਲੈ ਜਾਂਦੇ ਨੇ, ਕਪ-ਟੁਕ ਕੇ ਕਪੜੇ ਬਣਾ ਲੈਂਦੇ ਨੇ।
ਸਾਡੀ ਤਾਂ ਸਾਰੀ ਮੂੜ੍ਹੀ ਦੁਕਾਨ 'ਚ ਲਗਦੀ ਜਾਂਦੀ ਏ।
ਗਲ ਗਲ ਕੇ ਘਿਓ ਬਣੇਗੀ।
ਮਾਖੀਓਂ ਨ ਸਚੀ ਬਣੇਗੀ ਸੋਨਾ।
ਦੱਸੋ ਕਪੜਾ ਤਿੰਨ ਕਮੀਜ਼ਾਂ ਦਾ, ਜਾਂ ਚਾਰ ਦਾ ਫ਼ਾੜੀਏ ?
ਚਾਹੀਦੀ ਤਾਂ ਇਕੋ ਸੀ, ਚਲੋ ਦੋ ਦਾ ਫਾੜ ਦਿਓ।
ਇਕ ਪਗੜੀ, ਇਕ ਰਜਾਈ ਦਾ ਉਛਾੜ, ਚਿਕਨ ਅੱਧਾ ਥਾਨ, ਕੁੱਲ ਹੋਏ, ਰਬ ਤੇਰੀ ਭਲੀ ਵਾਰ ਕਰੇ, ਸਾਢੇ ਪੈਂਠ ਰੁਪਏ, ਅੱਜ ਤਰੀਕ ਏ ਪੰਜ।
ਜੇ ਰਾਮ ਜੀ ਦੀ!

ਕੱਜਣਾ = ਢਕ ਲੈਣਾ
ਤੈਥੋਂ = ਤੇਰੇ ਤੋਂ
ਵੰਨ ਸੁਵੰਨੇ = ਰੰਗ ਬਰੰਗੇ
ਪਾਣ = ਮਾਇਆ, ਮਾਵਾ
ਖਵਰੇ = ਕੀ ਪਤਾ
ਭਾ = ਭਾਉ, ਭਾਵ, ਕੀਮਤ
ਵਧੀਆ = ਸੁੰਦਰ
ਥਾਈਂ = ਥਾਵਾਂ ਤੇ
ਥੁੜ = ਘਾਟ, ਕਮੀ
ਮੂੜੀ = ਮੂਲਧਨ
ਘਿਓ = ਘੀ
ਮਾਖੀਓਂ = ਸ਼ਹਦ
ਉਛਾੜ = ਗ਼ਿਲਾਫ਼
ਪੈਂਠ = 65
ਤਰੀਕ = ਮਿਤੀ

ਅਭਿਆਸ

ਉਹ ਸਾਰਿਆਂ ਨਾਲੋਂ ਮਾੜਾ ਹੈ।
ਉਹ ਸਾਰਿਆਂ ਤੋਂ ਮਾੜਾ ਹੈ।
ਉਹ ਸਾਰਿਆਂ ਵਿਚੋਂ ਮਾੜਾ ਹੈ।

ਵੱਡਾ ਸਾਰਾ ਗਡਵਾ ਸੀ।
ਵੱਡੇ ਸਾਰੇ ਰੁਖ ਸਨ।
ਵੱਡੀ ਸਾਰੀ ਦੇਗ਼ ਸੀ।
ਵੱਡੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਕੋਠੀਆਂ ਸਨ।

ਮਤੇ! ਤੂੰ ਗਲਤ ਆਖਦਾ ਹੋਵੇਂ
ਵੇਖਾਂ! ਸ਼ਾਇਦ ਰਾਹ 'ਚ ਆਉਂਦਾ ਹੋਵੇ।
ਖਵਰੇ, ਖੂਹ ਤੇ ਰੁਕ ਗਇਆ ਹੋਵੇ।
ਖਵਰੇ ਮਾਮਿਆਂ ਨੇ ਰੋਕ ਲਇਆ ਹੋਵੇ।

ਇਧਰ ਅਸੀਂ ਉਡੀਕ ਕਰਦੇ ਹੋਵੀਏ,
ਉਧਰੋਂ ਉਹ ਉਡੀਕ ਕਰਦੇ ਹੋਵਨ,
ਗੱਲ ਕਿਵੇਂ ਬਣੇਗੀ ?

ਮਾੜਾ = ਨਿਰਬਲ
ਸਾਰਿਆਂ ਨਾਲੋਂ = ਸਭ ਤੋਂ
ਵੱਡਾ ਸਾਰਾ = ਵੱਡਾ ਜੇਹਾ
ਖਵਰੇ = ਸ਼ਾਇਦ, ਮਤੇ
ਉਡੀਕ = ਇੰਤਜ਼ਾਰ
ਗੱਲ ਬਣੇਗੀ = ਕੰਮ ਹੋਏਗਾ

ਪ੍ਰਸੰਗ 8
ਮਾਂ ਪੁਤ

ਦੀਪਿਆ! ਰੋਨਾਂ ਕਿਉਂ ਏਂ ?
ਬੇਬੇ! ਮੁੰਡੇ ਆਖਦੇ ਨੇ ਮੈਂ ਯਤੀਮਆਂ।
ਉਹ ਤਾਂ ਤੈਨੂੰ ਐਵੇਂ ਛੇੜਦੇ ਨੇ।
ਨਹੀਂ ਉਹ ਆਖਦੇ ਨੇ—ਤੈਨੂੰ ਯਤੀਮ ਖਾਨੇ 'ਚੋਂ ਆਂਦਾ ਸੀ।
ਦੱਸਦੇ ਨੇ, ਜਿਥੇ ਮੈਂ ਮੁੰਡਿਆਂ ਨਾਲ ਰਹਿੰਦਾ ਸਾਂ, ਯਤੀਮਖਾਨਾ ਸੀ।
ਉਹ ਝੂਠ ਬੋਲਦੇ ਨੇ। ਵੇਖੀਂ ਨਾ, ਜਦੋਂ ਤੂੰ ਨਿੱਕਾ ਸੈਂ, ਤੇ ਮੈਂ ਬਿਮਾਰ ਪੈ ਗਈ ਸਾਂ, ਡਾਢੀ ਬਿਮਾਰ ਬਚਣ ਦੀ ਵੀ ਕੋਈ ਆਸ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਮੈਂ ਇਕੱਲੀ ਸਾਂ। ਮੈਂ ਪਈ ਮੇਰੇ ਪੁਤ ਨੂੰ ਰੋਟੀ ਕੋਣ ਪਕਾ ਕੇ ਦਏਗਾ। ਕੁਝ ਚਿਰ ਲਈ ਮੈਂ ਤੈਨੂੰ ਓਥੇ ਘਲ ਦਿੱਤਾ ਸੀ।
ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਠੀਕ ਹੋ ਗਈ, ਮੈਂ ਤੈਨੂੰ ਵਾਪਸ ਲੈ ਆਈ ਸਾਂ।
ਪੁੱਤ! ਤੂੰ ਕਿਉਂ ਯਤੀਮ ਹੋਵੇਂ, ਉਹ ਝੂਠ ਬੋਲਦੇ ਨੇਂ।
ਝੂਠ ਹੀ ਹੋਵੇਗਾ, ਤਾਂਹੀਓਂ ਹਸਦੇ ਸਨ।
ਹਾਂ, ਸਾਡਾ ਦੀਪਾ ਤਾਂ ਸਾਡਾ ਪੁਤ ਏ।
ਤੇਰਾ ਬਾਪੂ ਜੀਉਂਦਾ ਏ, ਮਾਂ ਜੀਉਂਦੀ ਏ।
ਕੋਈ ਯਤੀਮ ਕਿਵੇਂ ਆਖ ਸਕਦਾ ਏ।
ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦੱਸ ਦਿਆਂਗਾ, ਬੇਬੇ ਜਦੋਂ ਡਾਢੀ ਬਿਮਾਰ ਸੀ ਮੈਂ ਕੁਝ ਦਿਨ ਯਤੀਮਖਾਨੇ ਰਹਿਆ ਸਾਂ, ਫਿਰ ਆਪਣੇ ਘਰ ਆ ਗਇਆ।
ਬੇਬੇ! ਠੀਕ ਏ ਨਾ ਗੱਲ ?
ਹਾਂ ਪੁੱਤ ਨਿਪਟ ਠੀਕ। ਹੁਣ ਮੂੰਹ ਹੱਥ ਧੋ ਕਪੜੇ ਬਦਲ, ਬਾਪੂ ਆਉਣ ਵਾਲਾ ਈ।
ਚੰਗਾ।

ਦੀਪਿਆ = ਓਏ ਦੀਪ
ਰੋਨਾ ਏਂ = ਰੋਂਦਾ ਹੈਂ
ਆਖਣਾ = ਕਹਣਾ
ਆਂਦਾ ਸੀ = ਲਿਆਂਦਾ ਸੀ
ਵੇਖੀ ਨਾ = ਵਿਚਾਰ ਕਰ
ਨਿੱਕਾ = ਛੋਟਾ
ਡਾਢੀ = ਸਖਤ
ਚਿਰ = ਦੇਰ
ਘੱਲ = ਭੇਜ
ਤਾਂਹੀਓਂ = ਤਦੇ

ਅਭਿਆਸ

ਜੀ, ਤੁਹਾਡਾ ਨਾਂ ਕੀ ਏ ?
ਤੁਸੀਂ ਕਿਥੇ ਰਹਿੰਦੇ ਓ ?
ਤੁਸੀਂ ਕੀ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਓ ?
ਤੁਹਾਡੇ ਕਿਨੇ ਬੱਚੇ ਨੇਂ ?
ਤੁਹਾਡੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਦਾ ਕੀ ਹਾਲ ਏ ?
ਤੁਹਾਡੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਦਾ ਕੀ ਹਾਲ ਏ ?
ਤੁਸੀਂ ਦਫ਼ਤਰ ਗਏ ਸਓ ?
ਤੁਸੀਂ ਕੀ ਪੜ੍ਹਦੇ ਓ ?
ਡਾਕਖਾਨਾ ਕਿਥੇ ਏ ?
ਹਸਪਤਾਲ ਕਿਹੜੇ ਪਾਸੇ ਏ ?
ਫਲ ਕਿਵੇਂ ਲਾਇਆ ਜੇ ?
ਅੱਜ ਕੀ ਵਾਰ ਏ ?
ਖਾਣਾ ਲਿਆ ਦਿਓਗੇ ਜੀ ?
ਮੈਂ ਮਦਦ ਕਰਾਵਾਂ ?
ਇਹ ਕੰਮ ਕਿਵੇਂ ਕਰਨਾ ਏ ?
ਤੁਸੀਂ ਫਿਰ ਕਦੋਂ ਆਓਗੇ ?
ਅਗਲੀ ਵੇਰ ਭੈਣ ਜੀ ਨੂੰ ਨਾਲ ਲਿਆਓਗੇ ?
ਕੀ ਪਤਾ!

ਤੁਹਾਨੂੰ ਮਿਲ ਕੇ ਬੜੀ ਖੁਸ਼ੀ ਹੋਈ।
ਤੁਹਾਡੀ ਬੜੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਏ।
ਤੁਸੀਂ ਬੜੀ ਖੇਚਲ ਕੀਤੀ।
ਮੈਨੂੰ ਭੁੱਖ ਲੱਗੀ ਏ।
ਮੈਨੂੰ ਪਿਆਸ ਲੱਗੀ ਏ।
ਮੈਂ ਥਕ ਗਇਆ ਹਾਂ।
ਹੁਣ ਮੈਂ ਘਰ ਜਾਣਾ ਹੈ।
ਤੁਹਾਨੂੰ ਫਿਰ ਮਿਲਣ ਦੀ ਆਸ ਰਖਦਾ ਹਾਂ।
ਧੰਨਵਾਦ ਜੀ।
ਖਿਮਾ ਕਰਨਾ, ਮੈਂ ਤੁਹਾਡੀ ਬੋਲੀ ਨਹੀਂ ਜਾਣਦਾ।

ਮੈਂ ਤੁਹਾਡੀ ਬੋਲ ਸ਼ਿਖ ਰਹਿਆ ਹਾਂ।
ਉਸ ਦਾ ਨਾਂ ਕੀ ਏ,
ਜਰਾ ਫਿਰ ਦੱਸਣਾ ਜੀ।
ਜਰਾ ਹੋਲੀ ਹੋਲੀ ਬੋਲੋ ਜੀ।
ਇਹ ਉਚਾਰਨ ਮੇਰੇ ਲਈ ਔਖਾ ਏ।
ਜੀ, ਮੇਰੀ ਟੁੱਟੀ ਭੱਜੀ ਬੋਲੀ ਵਲ ਧਿਆਨ ਨ ਦੇਣਾ।
ਮੈਂ ਹਾਲੀ ਸਿਖ ਰਹਿਆ ਹਾਂ।

प्रसंग 1

*पंजाबी बात चीत के प्रसंगों का हिन्दी रुपान्तर

आप का नाम क्या है ?
मेरा नाम है रणजी सिंह।
आप यहाँ कब से रहते हैं ?
कोई दो वर्ष हुए।
आप का बड़ा भाई क्या काम करता है ?
वह तो बजाजी की दुकान करता है।
उनका घर कहां है ?
वह तो छावनी में रहते हैं।
छावनी यहां से कितनी दूर है ?
कोई पौने तीन मील दूर है।
क्या आप भी वहां से आते हैं ?
जी हां, वहां से बस में आ जाता हूं।
आप कल मेरे पास आठ बजे आ सकेंगे ?
जी हां, मैं साढ़े आठ बजे आ जाऊंगा।
अपनी बच्ची को भी लेते आइए, वह बड़ी प्यारी बच्ची है।
क्यों नहीं वह भी आ जाएगी।
साढ़े आठ बजे ठीक है ना।
जी हाँ बहुत ठीक है।
आप का पता क्या है ?
दो सौ बावन बाण बट्टों की गली, बांस मंडी।
अजी, फिर बताना, मैं लिख लूं।
अच्छा जी।
हांजी, दो सौ कितना नम्बर ?
दो सौ बावन।
जी, तो कौन सी गली ?
गली बाण–बट्टों की।

---

* इन प्रसंगों को फिर पंजाबी में लिखने का अभ्यास कीजिए और अपने वाक्यों को मूल पंजाबी में छपे प्रसंग के वाक्यों के साथ मिला कर देखिए।

छावनी में बाँस मंडी है ना।

हाँ जी।

बस उस के निकट।

अच्छा जी।

आप स्वयं पहुंच जाइएगा जी।

बहुत अच्छा।

धन्यवाद

प्रसंग 2

आइए जी, स्वागतम् (आने वालों को हम सत्कार पूर्वक जी कहते हैं)
धन्यवाद।
हम आप की प्रतीक्षा कर रहे थे।
क्षमा करना, हमें राह में देर हो गई।
कोई बात नहीं, अभी तो कुल पाँच मिनट हुए हैं।
फिर भी आप को कष्ट हुआ है।
कोई कष्ट नहीं हमें तो खुशी है।
यह आपकी उदारता है, धन्यवाद।
क्या पियेंगे ? चाय कि शर्बत।
मुझे तो शर्बत सुखद नहीं (भाता नहीं)
अच्छा चाय ही बनेगी, बच्ची क्या पीएगी ?
बच्ची भी चाय पी लेगी।
आपकी बच्चियाँ कौन से स्कूल में पढ़ती हैं ?
वे तो जनता स्कूल में जाती हैं।
वहां पढ़ाई अच्छी होती है ?
जी हां, वहां अच्छा प्रबन्ध है।
आओ जी, चाय पीएं। कुर्सी पर बैठिए।
कोई बात नहीं, मेरे लिए तो चारपाई ही ठीक है।
बच्ची कुर्सी पर बैठ जाए।
बैठ जा बेटा।
महाराज ! कुछ खाइए ना।
जी, खा रहे हैं।
चाय और लीजिए, ठंडी तो नहीं ?
जी नहीं, अच्छी खासी गर्म है।
बच्ची ने तो ठंडी कर ली है।
जी हाँ, यह गर्म चाय (कम) विरले ही पीती है।
मेरी बच्चियां भी चाय ठंडी करके पीती हैं।
अभी (वे) स्कूल से आई नहीं ?
बस, आने वाली हैं।
स्कूल की बस छोड़ जाती होगी ?

जी हाँ, पहले चौक पर छोड़ जाती है, फिर पैदल आती हैं।
आप का लड़का तो साईकल पर जाता है ?
जी हाँ, उस तरफ कोई बस नहीं जाती।
बड़ा प्यारा लड़का है, जहाँ मिले प्रेम से सत श्री अकाल कहता है।

प्रसंग 3

छुट्टी कि लिए प्रार्थना

बाबा : क्या साहब घर हैं ?

जी हाँ, आराम करते हैं, कहो क्या बात है ?

मेरा बच्चा सखत बीमार है, मैं छुट्टी ले के अभी जाना चाहता हूं।

आप का नाम ?

गुलज़ार सिंह, उनका कलर्क।

अच्छा जी, चलो मेरे साथ।

क्या बात है, छुट्टी केवल एक दिन की लिखी है (आपने)।

जी हाँ, मैं अपने भाई को वहाँ छोड़ कर लौट आऊंगा।

बच्चा सखत बीमार है तो तीन दिन की छुट्टी ले जाओ।

बड़ी कृपा है आपकी, साहब। यदि बच्चा जल्दी ठीक हो गया तो परसों लौट आऊंगा।

अच्छा धन्यवाद।

बात सुन गुलज़ार सिंह।

जी।

यह अपनी दरखास्त (निवेदन पत्र) ज़रा ट्रे में डाल दे ताकि चपड़ासी कल दफतर लेता जाए।

अच्छा जी, सत्य वचन (मुझे स्वीकार है)।

प्रसंग 4

अजनबी के साथ

क्या आप पंजाबी बोल लेते हैं ?

जी हां, अब तो मैं पंजाबी बोल लेता हूं।

क्या आप अंग्रेज़ी भी जानते हैं ?

नहीं जी मैं तो हिन्दी और तमिल जानता हूं।

तमिल तो मैं ने भी सीखी थी पर अब भूलती जाती है।

रेडियो के प्रोग्राम सुनो, पत्रिकाएं पढ़ो फिर सारी बोली ताज़ा हो जाएगी।

आप को यह प्रदेश अच्छा लगा है ?

जी हां, मुझे बहुत अच्छा लगा है ?

आप के प्रदेश में भी भंगड़ा (नृत्य विशेष) खेलते हैं ?

अजी नहीं, वहां और तरह के नाच होते हैं ।

आप तो कर्नाटक संगीत जानते होंगे ?

जी हाँ, मामूली सा जानता हूं।

अजी किसी दिन हमारे घर आना।

जी, बहुत अच्छा, मैं अगले इतवार आ जाऊंगा।

जरूर आना, हम (दोनों) गीत गाऐंगे।

अच्छा जी !

अच्छा !

प्रसंग 5
रिक्षा वाले के साथ

रिक्षा वाले ठहर जा, रिक्षा खाली है ?
जी हाँ, बताइए कहाँ जाना है ?
कश्मीर होटल का पता है ? कहाँ है ?
जी हां, वह तो सब से बड़ा होटल है।
कितनी दूर होगा ?
बस, कोई अढ़ाई मील, मेरी रिक्षा आध घंटे में पहुँचा देगी।
कितने पैसे ?
साहब ! पचास पैसे।
पचास पैसे हैं तो बहुत पर मुझे जल्दी है, चलो।
बिस्तर पीछे रख देते हैं, ट्रंक आगे, ठीक है जल्दी चलो।
लो जी, चली मेरी तूफान मेल रिक्षा।
अगले मोड़ पर हौले चलना, न जाने मेरा भाई वहाँ मेरी प्रतीक्षा करता हो।
बहुत अच्छा, अजी वहाँ रुक जाऊंगा।
ध्यान से देखेंगे चिन्ता न कीजिए।

प्रसंग 6

फल वाले के साथ

क्यों भाई ये संतरे ताजे हैं ?
जी हाँ, देखिए तो अभी लाए गए हैं।
मेरा भाई हस्पताल में बीमार पड़ा है।
उस के वास्ते ताज़ा फल चाहिए।
इसी लिए तो हम ने हस्पताल के पास ताज़ा फलों की दुकान खोली है।
वे दो संतरे दे दीजिए।
बहुत अच्छा जी।
पैसे ?
साठ नए पैसे।
कल तो पच्चीस पच्चीस पैसे था।
जी हां, कल वाले चाहे बीस बीस पैसे ले जाओ।
गर्मियों में फल जल्दी खराब हो जाता है।
इसी लिए तो ताजा फल महंगा होता है।
बात तो ठीक है, पर इतना महंगा ! कौन कौन लेगा, कब तक लेगा !
यह तो (अपनी अपनी) औकात का सौदा है।
अच्छा, एक ही संतरा ले जाता हूं।
अजी तीस पैसे।
यह लो तीस। ठीक ?
ठीक।

प्रसंग 7
बज़ाज की दुकान

शाह जी ! जय राम जी की !
जय राम जी ! आओ !! मुदतें हुईं दर्शन दिए।
फसलो को काटने में लगे रहे, हम से आया नहीं गया।
मैं ने कहा 26 की मलमल के लिए तो वीर (भाई) भगवाना अवश्य आएगा।
अब तो आ गया हूं। देख प्यार की खिचावट। सच्चा सौदा प्यार ही है।
क्यों नहीं ! ले जा भगवाना पगड़ी। तुझ से पगड़ी हमें क्या अधिक भनी है ?
नहीं मैं तो हंसता हूं। अब यह बताइए—कमीज़ पर कितना कपड़ा लगेगा यदि चौड़ाई पौना मीटर हो ?
साढ़े तीन मीटर से अधिक कपड़ा कमीज़ पर लगता नहीं।
लगता क्यों नहीं, पिछली बार तो पौने चार मीटर लगा था।
उस का बर कम था और वह सिकुड़ने वाला कपड़ा था।
यह तो मक्खन है मक्खन।
अजी रजाइओं के लिए नई छींटें भी आई हैं।
वह भी दिखाओ, आपकी भरजाई कहती थी, अच्छी चीज हो, लड़की के दहेज के लिए।
क्यों नहीं, अपनी लड़की के लिए अच्छी चीज न देंगे तो किस लिए दुकान खोली है, महूरत क्या निकला है ?
कार्तिक की पूर्णिमा।
तो और कपड़े भी ले जाओ। उन दिनों भीड़ हो जाएगी, कपड़े की कमी हो जाएगी।
मेरा तो हाथ तंग है।
कोई नहीं, उधार सही।
कोई सुन्दर सा चिकन दिखाइए।
लो जी, रंग बरंगे चिकन लखनऊ के।
दूसरी गांठ भी दिखाते हैं।
बड़ी मांडी (कलफ) लगी है, क्या जाने धोकर क्या निकलेगा।
वहम न करो जी। यह माल सोलह आने खरा है।

खरा तो होगा, भाव क्या बनाया है ?
साढ़े तीन रुपए मीटर, कूट पीट कर बरतो, टिकाऊ है।
एक तोहफा (उत्तम) चीज़ है। बूटी भी बारीक बढ़िआ।
अपने आप ही सराहते जा रहे हो, देखो दो जगह से कटा हुआ है।
क्या कहूं भगवाना, इन चूहों ने मेरे नाक में दम कर दिया है।
क्या जाने कितने टुकड़े कुतरे पड़े हैं।
दरजी ले जाते हैं, काट–कटा के कपड़े बना लेते हैं।
हमारा तो सारा धन दुकान में लगता जाता है।
गल गल के घी बनेगा, शहद, सच पूछो तो बनेगा सोना।
बताओ कपड़ा तीन कमीज़ या चार का फाड़ें।
चाहिए तो एक ही था, चलो दो का फाड़ दो।
एक पगड़ी, एक रजाई का गिलाफ, चिकन आधा थान, कूल हुए, राम तेरा भला करे, साढ़े पैंसठ रुपए। आज तारीख है पांच।
जय राम जी की।

प्रसंग 8
मां पुत्र

दीपा ! रोता क्यों है ?

माँ ! लड़के कहते हैं, मैं यतीम हूं।

वे तो तुझे यों ही छेड़ते हैं।

नहीं, वे कहते है : तुझे यतीमखाना से लाया गया था बताते हैं, जहां मैं लड़कों के साथ रहता था, यतीमखाना था।

वे झूठ बोलते हैं, देख तो, जब तू छोटा था तब मैं बीमार पड़ गई थी,सखत बीमार, बचने की आस नहीं थी। मैं अकेली थी, मैं ने सोचा कि मेरे पुत्र को रोटी कौन पका के देगा। कुछ समय के लिए मैं ने तुझे वहाँ भेज दिया था। जब मैं ठीक हो गई, मैं तुझे वापस ले आई थी। पुत्र तू क्यों यतीम होगा, वे झूठ बोलते हैं।

झूठ ही होगा, तभी हंसते थे।

जी हाँ, हमारा दीपा तो हमारा पुत्र है। तेरा बापू जीता है, माँ जीती है।

कोई यतीम कैसे क़ह सकता है।

मैं उनको बता दूंगा; माँ जब सखत बीमार थी, मैं कुछ दिन यतीमखाने रहा था, फिर अपने घर आ गया।

माँ ठीक है ना बात ?

हाँ बेटा बिल्कुल ठीक। अब हाथ मुंह धो ले, कपड़े बदल, बापू आने वाले हैं।

अच्छा।

खण्ड 6

हिन्दी से भिन्न शब्द निर्माण की विशेषताएं

पुरानी हिन्दी और पंजाबी के शब्द–निर्माण की प्रवृत्तियों में अधिक साम्या था। ध्वनी परिर्वतन और अर्थ परिवर्तन के कारण इन प्रवृत्तियों की दिशाओं में कुछ अंतर आ गया है। यहां केवल विभिन्न रूपों का उल्लेख संक्षेप से किया गया है।

उपसर्ग :

ਅਣ—	ਅਣਜਾਣ,	ਅਣਛਾਤਾ,	ਅਣਪੜ੍ਹ
	अनजान,	अनछाना,	अनपढ़
ਪੜ—	ਪੜਦਾਦਾ,	ਪੜ ਨਾਂ,	ਪੜਪੋਤ੍ਰਾ
	परदादा,	उपनाम,	परपोता
ਮਹਾਂ—	ਮਹਾਂ ਕਵੀ,	ਮਹਾਂ ਪ੍ਰਸਾਦ,	ਮਹਾਂਬੀਰ
	महाँ कवि,	महाँ प्रसाद,	महाँवीर
ਵਡ—	ਵਡ ਹੰਸ,	ਵਡ ਭਾਗੀ,	ਵਡ ਮੁੱਲਾ
	राज हंस,	बड़ भागी,	बहु मूल्य

***स्त्री प्रत्यय :**

1. ਕੁੱਤਾ, ਕੁੱਤੀ ; ਪੁੜਾ, ਪੁੜੀ ;
   (कुतिया) (पुड़िया)
   ਬੰਦਰ, ਬੰਦਰੀ ; ਸ਼ਾਹ, ਸ਼ਾਹਣੀ ;
   (बंदरिया) (साहुकारिन)
2. ਦੇਰ, ਦੇਉਰ (देवर) ; ਦਿਰਾਣੀ
3. ਪਹਾੜਨ, ਧੋਬਣ, ਪਾਪਣਾ, ਮਿਰਾਸਣ
   पहाड़न, धोबिन, पापिन, मिरासिन

---

* पंजाबी में कुछ स्त्रीलिंग फुटकल स्रोतों से आए हैं :
ਟੱਟੂ ਟੈਰ; ਪੁੱਤਰ ਧੀ; ਖਸਮ ਰੰਨ।

4. ਹਲਵਾਈ, ਹਲਵੈਣ; ਨਾਈ, ਨੈਣ; ਭੈਣ, ਭਾਈ,
   (हलवाहन) (नाहन) बहन भाई

1.6 पंजाबी में निम्नलिखित नाम पुलिंग एवं स्त्रलिंग दोनों रूपों में व्यवहृ होते हैं :

ਵਿਚਾਰ	ਰੂਹ
ਉਦਾਹਰਣ	ਵਿਹਲ
ਚਰਚਾ	ਦਰਦ
ਛਤ	ਆਵਾਜ਼
ਥਾਂ	ਅਕਲ
ਦਹੀਂ	ਕਦਰ
ਫਿਕਰ	ਕਿਆਸ
ਯਾਰ	ਦਾਤਣ

बहुवचन प्रत्यय :

ਮੁੰਡੇ,	ਬੰਦੇ,	ਡੰਡੇ
लड़के,	बंदे,	डंडे
ਭੈਣਾਂ,	ਕੁੜੀਆਂ,	ਨਿੱਕੀਆਂ
बहन,	लड़कियां,	छोटिआं
ਗਾਂਵਾਂ,	ਮਾਵਾਂ,	ਛਾਵਾਂ
गाओं,	माएं,	छावें
ਗਾਂਈਂ,	ਬਲਾਈਂ,	ਆਹੀਂ
गाऐं,	बलाऐं,	आहें

कुछ शब्द बहु वचन में भी अविकृत रहे हैं :

ਘੁਮਾਂ,	ਭਰਾ,	ਮੁੱਲਾਂ
घुमाओं,	भाई,	मुल्ला लोग

प्रत्यय :

1. **संक्षावाची :**

-ਤਣ	ਕੁੜਤਣ,	ਪਿਲਤਣ	
	कड़वापन,	पीलापन	
-ਪੁਣਾ	ਸਾਊਪੁਣਾ,	ਮੁੰਡਪੁਣਾ,	ਲੁਚਪੁਣਾ
	साधुपन,	लड़कपन,	लुच्चापन

2. **विशेषणवाची :**

-ਅਈ	ਸੁਲਫ਼ਈ,	ਝਟਕਈ,	ਨਸ਼ਈ
	सुलफा खाने वाला,	झटका करने वाला,	नशेबाज
-ੜਾ	ਦੁਰੇੜਾ,		
	दूरतर		
-ਵਾਂ	ਢੁਕਵਾਂ,	ਲੁਕਵਾਂ,	ਵਿਕਾਵਾਂ
	उपयुक्त रूप में,	लुप्त रूप में,	बिकाऊ
-ਰਾ	ਵਧੇਰਾ,	ਬਥੇਰਾ,	ਅਗਲੇਰਾ
	अधिकतर,	बहुतर,	अग्रतर

3. **क्रिया विशेषण :**

-ਓਂ	ਬਾਹਰੋਂ,	ਅੰਦਰੋਂ,	ਅੱਗੋਂ,	ਪਿਛੋਂ,	ਕੋਲੋਂ
	बाहर से,	अंदर से,	आगे से,	पीछे से,	पास से
-ਏ	ਅਜੇ,	ਹੁਣੇ,	ਨੇੜੇ		
	आज ही,	अभी,	निकट		
-ਈਂ	ਦਿਨੀਂ,	ਸ਼ਾਮੀਂ,	ਦੁਪਹਰੀਂ,	ਰਾਤੀਂ	
	दिन को,	शाम को,	दोपहर को,	रात को	

विकृत रूप :

पु॰ एक व॰=	ਬਾਬੇ,	ਰਾਜੇ,	ਰਾਮੇ,	ਚੰਗੇ,	ਮਾੜੇ,	ਮੁੰਡੇ
	बाबे ने,	राजा ने,	राम ने,	अच्छे,	बुरे,	लड़के
पु॰ बहु व॰=	ਕਾਮਿਆਂ,	ਬਹੁਤਿਆਂ,	ਮੁੰਡਿਆਂ,	ਜਿਹੜਿਆਂ		
	काम करने वाले,	बहुतों,	लड़कों,	जिन		
स्त्री बहु व॰=	ਕੁੜੀਆਂ,	ਜਿਹੜੀਆਂ,	ਮਾਵਾਂ,	ਬਹੁਤੀਆਂ		
	लड़किआँ,	जो जिन,	माताओं,	बहुत सी		

ਚੰਗਾ ਮੁੰਡਾ,	ਚੰਗੇ ਮੁੰਡੇ,	ਚੰਗਿਆਂ ਮੁੰਡਿਆਂ ਨੂੰ
अच्छा लड़का,	अच्छे लड़के,	अच्छे लड़कों के
ਚੰਗੀ ਕੁੜੀ,	ਚੰਗੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ,	ਚੰਗੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਨੂੰ
अच्छी लड़की,	अच्छी लड़किआँ,	अच्छी लड़कीयों को

संबोधन प्रत्यय :

पु॰ एक व॰=	(ਵੇ) ਮੁੰਡਿਆ !	ਰੱਬਾ,	ਕਾਂਵਾਂ,	ਭਰਾਵਾਂ,
	लड़के !	भगवान,	कावाँ,	भाई

पु॰ बहु व॰= (ਵੇ) ਮੁੰਡਿਓ, ਬੰਦਿਓ, ਬਾਬਿਓ, ਕਾਂਵੇਂ, ਭਰਾਓ
लड़कों, बंदों, बाबाओं; काँवें, भाईओ

स्त्री एक व॰=(ਨੀ) ਕੁੜੀ ਏ, ਭੈਣੇ, ਮਾਏ
हे लड़की, हे बहन, हे मां

स्त्री बहु व॰= ਕੁੜੀਓ, ਭੈਣੋ, ਮਾਵੇਂ
लड़किओ, बहनों, माताओं

ਨੀ ਮੇਰੀਏ ਬਚੀਏ	अरी (री) मेरी बच्ची !
ਨੀ ਭੈਣੇ	री बहन
ਵੇ ਪਿੰਡ ਦਿਆ ਮੁੰਡਿਆ	रे गांव के लड़के !
ਨੀ ਪਿੰਡ ਦੀਏ ਕੁੜੀਏ	री गांव की लड़की !
ਵੇ ਪਿੰਡ ਦਿਓ ਮੁੰਡਿਓ	रे गांव के लडको;
ਨੀ ਪਿੰਡ ਦੀਓ ਕੁੜੀਓ	री गांव की लड़कियो !

कारक :

करण एवं अधिकरण :	ਹਥੀਂ,	ਘਰੀਂ	ਰਾਹੀਂ	ਵੀਹੀਂ
	हाथों,	घर में	के द्वारा,	बीस में
अपादान :	ਘਰੋਂ	ਵੇਹੜਿਓਂ,	ਕਲਕੱਤਿਓਂ	
	घर से,	आंगन से,	कलकत्ता से	

सार्वनामिक विशेषण :

ਏਹ	ਇਡਾ,	ਇੰਨਾ,	ਇੰਨੇ	ਏਹੋ,	ਜਿਹਾ
यह,	इस प्रकार का	इतना;	इतने;	इस,	जैसा
ਓਹ,	ਓਡਾ,	ਓਨਾ	ਓਨੇ,	ਓਹੋ	ਜਿਹਾ
वह,	उस प्रकार का	इतना,	उतने,	उस,	जैसा
ਜੋ,	ਜਿਡਾ,	ਜਿੰਨਾ,	ਜਿੰਨਾ,	ਜਿੰਨੇ,	ਜਿਹਾ
जो,	जिस प्रकार का,	जितना,	जितना;	जितने	जैसा
ਕੀ,	ਕੌਣ,	ਕਿਡਾ,	ਕਿੰਨਾ	ਕਿਨੇ,	ਕਿਹਾ
क्या	किए	किस प्रकार का	कितना,	कितने	कैसा

भूतकालिक कृदन्त :

ਵੇਖਿਆ,	ਡਿਗਿਆ	ਬਾਲਿਆ,	ਅਖਵਾਇਆ	ਮੋਇਆ
देखा	गिरा	जलाया	कहलाया	मरा (मुआ)

ਸੁਤਾ,	ਕੀਤਾ	ਸੀਤਾ	ਖਲੋਤਾ,	ਦਿਤਾ,	ਧੋਤਾ
सोया	किया	सिया	खड़ा हुआ	दिया	धोया
ਪਹੁਤਾ,	ਨਾਹਾਤਾ,	ਪੀਤਾ,	ਪਰੋਤਾ		
पहुंचा	नहाया	पीया	पिरोया		
ਵੁਆ	ਨਠਾ,	ਰੁਠਾ	ਤ੍ਰੁਠਾ,	ਡਿਠਾ	ਮਠਾ,
बरसा	भागा	रुष्ट हुआ	त्रसित हुआ	देखा	लूटा गया
ਪੀਠਾ,	ਕੁਠਾ	ਵਿਧਾ	ਬਧਾ,	ਖਾਧਾ,	ਗੁਧਾ
पीसा	गया	बेधा	बांधा	खाया	गूंधा
ਵਿਰਿਧਾ,	ਲਧਾ,	ਰੁਧਾ	ਘੁਥਾ	ਛੁਥਾ	ਫਾਥਾ,
रीझा	उपलब्ध,	वयस्त हुआ	चूक गया	धुआ (शुरू किया)	फास गया
ਭੁਲਾਣਾ,	ਰੁੱਨਾ,	ਭੱਨਾਂ	ਭਿੰਨਾ		
भूल गया	रोया	तोड़ा	गिला किया		

वर्तमान कालिक कृदन्त :

पु॰ एक व॰	ਆਉਂਦਾ	ਜਾਂਦਾ	ਦੌੜਦਾ
	आता	जाता	दौड़ता
पु॰ बहु व॰	ਆਉਂਦੇ	ਜਾਂਦੇ	ਦੌੜਦੇ
	आते	जाते	दौड़ते
स्त्री॰ एक व॰	ਆਉਂਦੀ,	ਜਾਂਦੀ	ਦੌੜਦੀ
	आती	जाती	दौड़ती
स्त्री॰ बहु व॰	ਆਉਂਦੀਆਂ,	ਜਾਂਦੀਆਂ,	ਦੌੜਦੀਆਂ
	आतीं	जातीं	दौड़तीं

कुछ पंजाबी समास

ਦਾਣਾ ਫੱਕਾ	दाना दुनका
ਕਲ ਮੁਕੱਲਾ	इकेला
ਔਤਰਾ ਨਿਖਤਰ	निस्सन्तान
ਡਿੰਗ ਫੜਿੱਗਾ	टेढ़ा मेढ़ा
ਚੰਗਾ ਚੁਖਾ	अच्छा खासा
ਫਲਾਣਾ ਢਿਮਕਾਣਾ	अमका ढमका

ਪੁਛ ਗਿਛ	पूछ ताछ
ਉੱਕਾ ਪੁੱਕਾ	निपट
ਕਾੜ ਬਰੜਾ	खिचड़ी
ਅੰਗ ਸੰਗ	साथ साथ
ਨੇੜੇ ਤੇੜੇ	अड़ोस पड़ोस में
ਦਾਣਾ ਪਾਣੀ	दाना पानी
ਇਕੜ ਦੁਕੜ	इक्का दुक्का
ਆਲੇ ਦੁਆਲੇ	आस पास
ਭਾਂਡਾ ਟਿੰਡਰ	बरतन वरतन
ਢਹੰਦੇ ਗੁੜਦੇ	गिरते पड़ते
ਸੰਗ ਤੰਗ	मांग तांग के
ਹਾਸਾ ਫਾਸਾ	हंसी ठठोल
ਐਵੇਂ 'ਕੈਂਵੇ'	ऐसे वैसे, योंही
ਠੋਕਠਾਕ ਕੇ	ठोंक पीट कर
ਚੂਪ ਚਾਪ ਕੇ	चूस चास के
ਹੱਡ ਬੀਤੀ,	आप बीती
ਆਪ ਹੁਦਰਾ	मन चला
ਉਤਸ਼ਾਹ ਵਧਾਊ	उत्साह वर्धक
ਉਪਰ ਥਲੇ	ऊपर नीचे
ਬੋਲ ਬੁਲਾਰਾ	कहा सुनी
ਵਾਧਾ ਘਾਟਾ	कमी बेशी
ਵਿਚੋਂ ਵਿਚ	बीचों बीच
ਕਹਿਆ ਧਰਿਆ	करा धरा
ਵਿਚਾਰ ਵਟਾਂਦਰਾ	विचार विमर्श
ਖਿੱਚੋ ਤਾਣ	खींच तान
ਗਰਮਾ ਗਰਮ	गर्म गर्म
ਵੇਖਣਾ ਚਾਖਣਾ	देखना भालना
ਘਰੋ ਘਰ	अपने अपने घर की
ਦਿਨੋ ਦਿਨ	दिन प्रतिदिन
ਹਥੋ ਹਥ	हाथों हाथ
ਵਖੋ ਵਖ	अलग अलग

ਸਮਾਸ

ਗੁਰ ਪੀਰ	गुर पीर
ਚਿੱਠੀ ਚਪਾਠੀ	चिट्ठी पत्री
ਕਾਰ ਵਿਹਾਰ	काम काज
ਚੇਲਾ ਚਾਟੜਾ	चेला चांटा
ਗੰਦ ਮੰਦ	कूड़ा कर्कट
ਕਿਰਤ ਕਮਾਈ	कृत्य
ਡੰਗਰ ਵੱਛਾ	ढोर डंगर
ਨਾਂਹ ਨੁੱਕਰ	आना कानी
ਉਠਣੀ ਬਹਣੀ	संगीत
ਗੰਢ ਤੋਪਾ	सांठ गाँठ
ਉਘ ਸੁਧ	सूचना, पता
ਸੋ ਬੋ	घू घास
ਰੌਲਾ ਰੱਪਾ	शोर गुल
ਲਾਰਾ ਲੱਪਾ	झांसा
ਠੀਆ ਠੱਪਾ	तोड़ जोड़
ਰੂੰਹਦ ਖੂੰਦ	रहा सहा
ਚੋੜ ਚਪਟ	चौपट
ਛੇਕੜ ਬਾਕੜ	तलछट
ਛਾਈ ਮਾਈ	ओझल, अलोप
ਵਿਹਲਾ ਵਾਂਦਾ	निठल्ला, निकम्मा
ਖੁਲ੍ਹਾ ਡੁਲ੍ਹਾ	उदार
ਇਕੱਲ ਮੁਕੱਲਾ	इकेला
ਸੁੰਨ ਮਸੁੰਨਾ	खाली
ਰੰਕ ਕੰਨ	बाल बच्चा
ਪੀਲਾ ਹਰਦਲ	पीला ज़र्द
ਸੁੱਕਾ ਕੜੰਗ	सूख सूख
ਹਲਕਾ ਫੁੱਲ	हलका फुलका
ਇਟ ਖੜਿੱਕਾ	अन बन

पंजाबी क्रिया पद

5.1. (क) धातु से बने क्रिया–पदों की काल संरचना

5.1. आज्ञार्थ क्रिया रूप दोनों भाषाओं में समान हैं :

ਜਾ	ਖਾ	ਪੀ	ਨਿਕਲ	ਚਲ	ਕਰ
जा	खा	पी	निकल	चल	कर
ਜਾਓ	ਖਾਓ	ਪੀਓ	ਨਿਕਲੋ	ਚਲੋ	ਕਰੋ
जाओ	खाओ	पियो	निकलो	चलो	करो

स्वराँत धातु के साथ /–ओ/ लगाने से पूर्व पंजाबी में /–व/ ध्वनि भी जोड़ी जाती है /दे/ से हिन्दी में /दो/ बना है, /ले से/लो/जो पुरात रूप में /देवो/ और /लेवो/ या पंजाबी में /दिओ/ एव /देवो/ दोनों रूप विकल्प से प्रचलित हैं।

प्रत्यक्ष विधिकाल (साधारण) पुलिंग वा स्त्री लिंग :

1. ਮੈਂ ਚਲਾਂ — ਅਸੀਂ ਚਲੀਏ
   ਤੂੰ ਚਲ — ਤੁਸੀਂ ਚਲੋ
   ਉਹ ਚਲੇ — ਉਹ ਚਲਣ
2. ਮੈਂ ਲਵਾਂ — ਅਸੀਂ ਲਵੀਏ
   ਤੂੰ ਲੈ — ਤੁਸੀਂ ਲਵੋ
   ਉਹ ਲਵੇ — ਉਹ ਲੈਣ

5.1.2. परोक्ष विधि काल :

(क) उधर न देखना कर के जाना उत्तर लिख भेजना

(ख) देखियो, आइयो भेजियो

मध्य पुरुष बहुवचन (तुम अथवा आप) के लिए ये दोनों प्रकार के परीक्ष विधि काल (साधारण) पंजाबी में भी प्रयुक्त हैं किन्तु/ना के स्थान पर/–णा/बनता जाता है, तथा, ਵੇਖਣਾ (ਦੇਖਣਾ), ਜਾਣਾ, ਲਿਖਣਾ। और आदर के लिए/जी, शब्द भी अन्त में बढ़ा दिया जाता है। ਵੇਖੀਓ, ਜਾਈਓ, ਭੇਜੀਓ। इनकी वर्तनी पंजाबी में हिन्दी से विभिन्न है।

मध्यम पुरुष एक वचन के लिए पंजाबी में यों कहेंगे :

ਤੂੰ ਉਧਰ ਨ ਵੇਖੀਂ। — ਇਹ ਕਰ ਕੇ ਜਾਈਂ

ਉਤਰ ਛੇਤੀ ਲਿਖੀਂ। — ਉਸ ਨੂੰ ਦਸੀਂ

5.1.3. (अनिश्चित वर्तमान)

	काल	पुलिंग	अथवा	स्त्रीलिंग
1.	मैं करूं	ਮੈਂ ਕਰਾਂ	ਚਲਾਂ	ਹੋਵਾਂ
	हम करें	ਅਸੀਂ ਕਰੀਏ	ਚਲੀਏ	ਹੋਵੀਏ
2.	तू करे	ਤੂੰ ਕਰੇਂ	ਚਲੇਂ	ਹੋਵੇ
	तुम करो	ਤੁਸੀਂ ਕਰੋ	ਚਲੋ	ਹੋਵੋ
*3.	वह करे	ਉਹ ਕਰੇ	ਚਲੇ	ਕਰੇ
	वे करें	ਉਹ ਕਰਨ	ਚਲਨ	ਹੋਵਣ

5.1.4. जो धातुएं व्यंजनांत अथवा अकारांत नहीं हैं उन में प्रायः/व/ जोड़ कर रूप बनते हैं, यथा

ਹੋ	ਹੋਆਂ	ਹੋਵਾਂ	ਹੋਈਏ	(ਹੋਵੀਏ)
हो	होआ	होवां	होईए	होवीए
ਖਾ	ਖਾਵਾਂ	ਖਾਵੀਏ	ਖਾਵੋ ਆਦਿ	
खा	खावां	खाइए	खावो	आदि
ਦੇ	ਦਿਆਂ	ਦੇਵਾਂ, ਦੇਈਏ, ਦੇਵੀਏ; ਦਿਓ, ਦੇਵੋ		
ਲੈ	ਲਵਾਂ,	ਲਵੀਏ,	ਲਵੋ	ਆਦਿ

5.1.5. सामान्य भविष्यत काल

				स्त्री लिंग
1.	ਮੈਂ ਕਰਾਂਗਾ	ਚਲਾਂਗਾ	ਹੋਵਾਂਗਾ	(-ਗੀ**
1.	ਅਸੀਂ ਕਰਾਂਗੇ	ਚਲਾਂਗੇ	ਹੋਵਾਂਗੇ	(-ਗੀਆਂ
2.	ਤੂੰ ਕਰੇਗਾ	ਚਲੇਗਾ	ਹੋਵੇਗਾ	(-ਗੀ
2.	ਤੁਸੀਂ ਕਰੋਗੇ	ਚਲੋਗੇ	ਹੋਵੇਗੇ	(-ਗੀਆਂ

---

* ये विशेष अंक याद रखिए :

1.	उत्तम पुरुष	एक वचन	मैं के लिए
	उत्तम पुरुष	बहु वचन	हम के लिए
2.	मध्यम पुरुष	एक वचन	तू के लिए
	मध्यम पुरुष	बहु वचन	तुम (आप) के लिए
3.	अन्य पुरुष	एक वचन	वह के लिए
	अन्य पुरुष	बहु वचन	वे के लिए

** पंजाबी में गा, गे, गी, का अतिरिक्त प्रयोग भी बोल चाल में मिलता है, यथा आया हैगा, आया होगा, आदि,
ਆਇਆ ਹੈਗਾ, ਆਇਆ ਸੀਗਾ, आदि।

3.	ਉਹ ਕਰੇਗਾ	ਚਲੇਗਾ	ਹੋਵੇਗਾ	(-ਗੀ
3.	ਉਹ ਕਰਨਗੇ	ਚਲਣਗੇ	ਹੋਵਣਗੇ	(-ਗੀਆਂ

वर्तमान कालिक कृदन्त (–दा) से बने काल

5.2.1. सामान्य संकेतार्थ काल

1,2,3,	ਕਰਦਾ	ਚਲਦਾ	ਹੋਂਦਾ*	(-ਦੀ
1,2,3,	ਕਰਦੇ	ਚਲਦੇ	ਹੋਂਦੇ	(-ਦੀਆਂ

5.2.2. सामान्य वर्तमान काल :

1.	ਕਰਦਾ ਹਾਂ	ਚਲਦਾ ਹਾਂ	ਹੋਂਦਾ ਹਾਂ	(-ਦੀ ਹਾਂ
1.	ਕਰਦੇ ਹਾਂ	ਚਲਦੇ ਹਾਂ	ਹੋਂਦੇ ਸਾਂ	(-ਦੀਆਂ ਹਾਂ
2.	ਕਰਦਾ ਹੈ	ਚਲਦਾ ਹੈ	ਹੋਂਦਾ ਹੈ	(-ਦੀ ਹੈ
2.	ਕਰਦੇ ਹੈਂ	ਚਲਦੇ ਹੈਂ	ਹੋਂਦੇ ਹੈਂ	(-ਦੀਆਂ ਹੈ
3.	ਕਰਦੀ ਹੈ	ਚਲਦਾ ਹੈ	ਹੋਂਦਾ ਹੈ	(-ਦੀ ਹੈ
3.	ਕਰਦੇ ਹਨ	ਚਲਦੇ ਹਨ	ਹੋਂਦੇ ਹਨ	(-ਦੀਆਂ ਹਨ

5.2.3. अपूर्ण भूत काल :

1.	ਕਰਦਾ ਹੋਵਾਂ	ਚਲਦਾ ਹੋਵਾਂ	ਹੋਂਦਾ ਹੋਵਾਂ	(-ਦੀ ਹੋਵਾਂ
1.	ਕਰਦੇ ਹੋਵੀਏ	ਚਲਦੇ ਹੋਵੀਏ	ਹੋਂਦੇ ਹੋਵੀਏ	(-ਦੀਆਂ ਹੋਵੀਂ
2.	ਕਰਦਾ ਹੋਵੇ	ਚਲ਼ਦਾ ਹੋਵੇ	ਹੋਂਦਾ ਹੋਵੇ	(-ਦੀ ਹੋਵੇ
2.	ਕਰਦੇ ਹੋਵੇ	ਚਲਦੇ ਹੋਵੇ	ਹੋਂਦੇ ਹੋਵੇ	(-ਦੀ ਹੋਵੇ
3.	ਕਰਦਾ ਹੋਵੇ	ਚਲਦਾ ਹੋਵੇ	ਹੋਂਦਾ ਹੋਵੇ	(-ਦੀ ਹੋਵੇ
3.	ਕਰਦੇ ਹੋਵਣ	ਚਲਦੇ ਹੋਵਣ	ਹੋਂਦੇ ਹੋਣ	(-ਦੀਆਂ ਹੋਵਣ

5.2.4. सामान्य वर्तमान काल :

1.	ਕਰਦਾ ਹੋਣਾਂ ਹਾਂ	ਚਲਦਾ ਹੋਣਾ ਹਾਂ	ਹੋਂਦਾ ਹੋਣਾ ਹਾਂ	(-ਦੀ ਹੋਣੀ
1.	ਕਰਦੇ ਹੋਣੇ ਹਾਂ	ਚਲਦੇ ਹੋਣੇ ਹਾਂ	ਹੋਂਦੇ ਹੋਣੇ ਹਾਂ	(-ਦੀਆਂ ਹੋਣੀਆਂ
2.	ਕਰਦਾ ਹੋਣਾ ਹੈਂ	ਚਲਦਾ ਹੋਣਾ ਹੈਂ	ਹੋਂਦਾ ਹੋਣਾ ਹੈਂ	(-ਦੀਆਂ ਹੋਣੀਆਂ
2.	ਕਰਦੇ ਹੋਣੇ ਹੈਂ	ਚਲਦੇ ਹੋਣੇ ਹੈਂ	ਹੋਂਦੇ ਹੋਣੇ ਹੈਂ	(-ਦੀਆਂ ਹੋਣੀਆਂ
3.	ਕਰਦਾ ਹੋਣਾ ਹੈ	ਚਲਦਾ ਹੋਣਾ ਹੈ	ਹੋਂਦਾ ਹੋਣਾ ਹੈ	(-ਦੀ ਹੋਣੀ

** होंदे के स्थान पर हुंदे/हुंदे/रूप पहाड़र बोली की भान्ति पंजाबी में भी प्रचलित है।

(हन्) के स्थान पर बोल चाल में/ने/ਨੇ/का प्रयोग अधिक है, यथा हां, हैं, हो, है के स्थान पर ओ, ऐं, ओ, ए भी प्रयुक्त हैं यथा ਕਰਦੇ ਨੇ, ਆਖਦੇ ਨੇ = करते हैं, कहते।

3.	ਕਰਦੇ ਹੋਣੇ ਹਨ	ਚਲਦੇ ਹੋਣੇ ਹਨ	ਹੋਂਦੇ ਹੋਣੇ ਹਨ	(-ਦੀਆਂ ਹੋਣੀਆਂ

5.2.5. **संदिग्ध वर्तमान काल :**

1.	ਕਰਦਾ ਸਾਂ	ਚਲਦਾ ਸੋ	ਹੋਂਦਾ ਸਾਂ	(-ਦੀ ਸਾਂ*
1.	ਕਰਦੇ ਸਾਂ	ਚਲਦੇ ਸਾਂ	ਹੋਂਦੇ ਸਾਂ	(-ਦੀਆਂ ਸਾਂ
2.	ਕਰਦਾ ਸੈਂ	ਚਲਦਾ ਸੈਂ	ਹੋਂਦਾ ਸੈਂ	(-ਦੀ ਹਸੈਂ
2.	ਕਰਦੇ ਸਉ	ਚਲਦੇ ਸਉ	ਹੋਂਦੇ ਸਉ	(-ਦੀ ਸਉ
3.	ਕਰਦਾ ਸੀ	ਚਲਦਾ ਸੀ	ਹੋਂਦਾ ਸੀ	(-ਦੀ ਸੀ
3.	ਕਰਦੇ ਸਨ	ਚਲਦੇ ਸਨ	ਹੋਂਦੇ ਸਨ	(-ਦੀਆਂ ਸਨ

5.2.6. **अपूर्ण संकेतार्थ काल :**

1,2,3	ਕਰਦਾ ਹੋਂਦਾਂ	ਚਲਦਾ ਹੋਂਦਾਂ	ਹੋਂਦਾ	**(-ਦੀ ਹੋਂਦੀ
1,2,3	ਕਰਦੇ ਹੋਂਦੇ	ਚਲਦੇ ਹੋਂਦੇ	ਹੋਂਦੇ	(-ਦੀਆਂ ਹੋਂਦੀਆਂ

सूचना—1. 'दा' वर्तमान कृदंत धातु के साथ लगता है :
किन्तु स्वरांत धातु के साथ पहले अनुनासिक लग जाता है :
ਜਾਂਦਾ, ਕਰਾਉਂਦਾ, ਪੀਂਦਾ, ਹੋਂਦਾ।

2. पंजाबी शब्दों के बीच में अथवा अन्त में (ह) ध्वनि काफी कमज़ोर है। वह प्रायः समीपवर्ती स्वर में गुम हो जाती है और एक सुर सा बाकी रह जाता है। ऐसी परिस्थिति में (ह) के साथ आया हुआ क्रिया पद वर्तमान काल में अनुसारयुक्त हो जाता है :
ਬੁੱਢੀ ਚੱਕੀ ਪੀਹਦੀਂ ਹੈ; ਮਕਾਨ ਢਹਿੰਦਾ ਹੈ, ਬੱਚੀ ਕਹਿੰਦੀ ਹੈ।
बुड्ढ़ी चक्की पी͡न्दी है, मकान ढ͡न्दा है। बच्ची क͡न्दी है।

5.3 पंजाबी के क्रिया पदों का भूतकालिक कृदंत /—आ/ के स्थान पर प्रायः /—इआ/ है :

ਡੁੱਬਿਆ	डूबा
ਆਇਆ	आया
ਗਾਇਆ	गाया
ਦੌੜਿਆ	दौड़ा
ਜਾਗਿਆ	जागा

---

* बोल चाल की पंजाबी में सब रूपों केवल/—सी/लगाते हैं :
ਅਸੀ ਆਏ ਸੀ, ਉਹ ਆਏ ਸੀ, ਤੂੰ ਆਇਆ ਸੀ, आदि।

** ਹੋਂਦਾ ਹੋਂਦਾ रूप अच्छा प्रतीत होता, इस लिए केवल ਹੋਂਦਾ प्रयुक्त है।
ਕਰ+ਦਾ = ਕਰਦਾ, ਦੌੜ+ਦਾ = ਦੌੜਦਾ

ਛੁਟਿਆ	छूटा
ਚਲਿਆ	चला

कुछ क्रिया पदों के रूप पंजाबी में अलग ध्वनियां रखते हैं :

देख	ਵੇਖਿਆ
चला	ਟੁਰਿਆ
टूटा	ਟੁਟਿਆ
गिरा	ਡਿਗਿਆ
सूखा	ਸੁਕਿਆ
खट खटाया	ਖੜਕਾਇਆ
बजाया	ਬਜਾਇਆ
जलाया	ਬਾਲਿਆ ਬਾੜਿਆ
सुनाया	ਸੁਣਾਇਆ
बिठाया	ਬਿਠਾਲਿਆ
खिलाया	ਖਵਾਲਿਆ
सिलवाया	ਸਿਵਾਇਆ
कहलाया	ਅਖਵਾਇਆ
गिरवाया	ਡਿਗਵਾਇਆ
गिर पड़ा	ਡਿਗ ਪਇਆ
रो पड़ा	ਰੋ ਪਇਆ*

भूत कालिक कृदंत से बने क्रिया पद

5.3.1 सामान्य भूत काल

			स्त्री लिंग
ਮੈਂ (ਨੇ)** ਕੀਤਾ	ਮੈਂ ਚਲਿਆ ਚਲੀ	ਹੋਇਆ	(ਹੋਈ
ਅਸਾਂ (ਨੇ) ਕੀਤਾ	ਅਸੀਂ ਚਲੇ/ਚਲੀਆਂ	ਹੋਏ	(ਹੋਈਆਂ
ਤੂੰ ਕੀਤਾ	ਤੂੰ ਚਲਿਆ/ਚਲੀ	ਹੋਇਆ	(ਹੋਈ
ਤੁਸਾਂ (ਨੇ) ਕੀਤਾ	ਤੁਸੀਂ ਚਲੇ/ਚਲੀਆਂ	ਹੋਏ	(ਹੋਈਆਂ
ਉਸ (ਨੇ) ਕੀਤਾ	ਉਹ ਚਲਿਆ/ਚਲੀ	ਹੋਇਆ	(ਹੋਈਆਂ
ਉਨ੍ਹਾਂ (ਨੇ) ਕੀਤਾ	ਉਹ ਚਲੇ/ਚਲੀਆਂ	ਹੋਏ	(ਹੋਈਆਂ

---

* ਰਹਿਆ, ਪਇਆ, ਗਇਆ, एवं ਰਿਹਾ, ਪਿਆ, ਗਿਆ, ਕਿਹਾ दोनों रूप पंजाबी प्रकाशनों में मिलते हैं

** ने का प्रयोग पंजाबी सुस्थिर नहीं है इसी लिए ਅਸਾਂ ਨੇ ਜਾਣਾ ਹੈ = हम ने जाना है जैसे प्रयोग अकर्मक क्रियाओं के साथ भी हो जाते हैं।

5.3.2. **आसन्न भूत काल**

ਮੈਂ ਕੀਤਾ ਹੈ	ਮੈਂ ਚਲਿਆ ਹਾਂ/ਲੀ ਹਾਂ	ਹੋਇਆ ਹਾਂ	(ਈ ਹਾਂ
ਅਸਾਂ ਕੀਤਾ ਹੈ	ਅਸੀ ਚਲੇ ਹਾ/-ਲੀਆਂ	ਹੋਏ ਹਾਂ	(-ਈਆਂ
ਤੂੰ ਕੀਤਾ	ਤੂੰ ਚਲਿਆ ਹੈ/-ਲੀ-	ਹੋਈ ਹੈ	(-ਈ-
ਤੁਸਾਂ ਕੀਤਾ ਹੈ	ਤੁਸੀਂ ਚਲੇਹੋ/-ਲੀਆਂ	ਹੋਏ ਹੋ	(-ਹੋਈਆਂ
ਉਸ ਕੀਤਾ ਹੈ	ਉਹ ਚਲਿਆ ਹੈ/-ਲੀ-	ਹੋਇਆ ਹੈ	(-ਈ-
ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੀਤਾ ਹੈ	ਉਹ ਚਲੇ ਹਨ/-ਲੀਆਂ-	ਹੋਏ ਹਨ	(-ਈਆਂ-

5.3.3. **पूर्ण भूत काल**

ਮੈਂ ਕੀਤਾ ਸੀ	ਮੈਂ ਚਲਿਆ ਸਾਂ/-ਲੀ ਸਾਂ	ਹੋਇਆ ਸਾਂ	(-ਈ ਸਾਂ
ਅਸਾਂ ਕੀਤਾ ਸੀ	ਅਸੀ ਚਲੇ ਸਾਂ/ਲੀਆਂ--	ਹੋਏ ਸਾਂ	(-ਈਆਂ-
ਤੂੰ ਕੀਤਾ ਸੀ	ਤੂੰ ਚਲਿਆ ਸੈਂ/-ਲੀਆਂ-	ਹੋਇਆ ਸੈ-	(-ਈ-
ਤੁਸਾਂ ਕੀਤਾ ਸੀ	ਤੁਸੀਂ ਚਲੇ ਸਉ/-ਲੀਆਂ-	ਹੋਏ ਸਉ	(-ਈਆਂ
ਉਸ ਕੀਤਾ ਸੀ	ਉਹ ਚਲਿਆ ਸੀ/-ਲੀ-	ਹੋਇਆ ਸੀ	(-ਈ-
ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੀਤਾ ਸੀ	ਉਹ ਚਲੇ ਸਨ/-ਲੀਆਂ	ਹੋਏ ਸਨ	(-ਈਆਂ-

5.3.4. **सामान्य भूत काल**

ਮੈਂ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ	ਮੈਂ ਚਲਿਆ ਹੋਵਾਂ/-ਲੀ-	ਹੋਇਆ ਹੋਵਾਂ	(-ਈ ਸਾਂ
ਅਸਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ	ਅਸੀਂ ਚਲੇ ਹੋਵੀਏ/-ਲੀਆਂ	ਹੋਏ ਹੋਈਏ	(-ਦੀਆਂ-
ਤੂੰ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ	ਤੂੰ ਚਲਿਆ ਹੋਵੇਂ/-ਲੀ	ਹੋਇਆ ਹੋਵੇਂ	(-ਈ-
ਤੁਸਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ	ਤੁਸੀਂ ਚਲੇ ਹੋਵੇ/-ਲੀਆਂ	ਹੋਈਆਂ ਹੋਵੇ	(-ਈਆਂ
ਉਸ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ	ਉਹ ਚਲਿਆ ਹੋਵੇ/-ਲੀ-	ਹੋਇਆ ਹੋਵੇ	(-ਈ-
ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ	ਉਹ ਚਲੇ ਹੋਵਣ/-ਲੀਆਂ-	ਹੋਏ ਹੋਵਣ	(-ਦੀਆਂ

5.3.5. **संदिग्ध भूत काल**

ਮੈਂ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇਗਾ	ਮੈਂ ਚਲਿਆ ਹੋਵਾਂਗਾ/ਚਲੀ ਹੋਵਾਂਗੀ	ਹੋਇਆ ਹੋਵਾਂਗਾ	/ਹੋਈ ਹੋਵਾਂਗੀ
ਅਸਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇਗਾ	ਅਸੀਂ ਚਲੇ ਹੋਵਾਂਗੇ/-ਲੀਆਂ -ਗੀਆਂ	ਹੋਵਾਂਗੇ/-ਈ	ਗੀਆਂ
ਤੂੰ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇਗਾ	ਤੂੰ ਚਲਿਆ ਹੋਵੇਗਾ/-ਲੀਆਂ	ਹੋਵੇਗਾ	(-ਈ-ਹੀ
ਤੁਸਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇਗਾ	ਤੁਸੀਂ ਚਲੇ ਹੋਵੋ/ਲਿਆਂ	ਹੋਇਆ ਹੋਵੇਗਾ	(-ਈ-
ਉਸ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ	ਉਹ ਚਲਿਆ ਹੋਵੇ/-ਲੀ-	ਹੋਇਆ ਹੋਵੇ	(-ਈ-
ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ	ਉਹ ਚਲੇ ਹੋਵਣ/-ਲੀਆਂ-	ਹੋਏ ਹੋਵਣ	(ਈਆਂ

5.3.6. पूर्ण संकेतार्थ काल

ਮੈਂ ਕੀਤਾ ਹੋਂਦਾ	ਮੈਂ ਚਲਿਆ ਹੋਂਦਾ/-ਲੀ-ਦੀ	ਹੋਇਆ ਹੋਂਦਾ	(-ਈ ਦੀ
ਅਸਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਂਦਾ	ਅਸੀਂ ਚਲੇ ਹੋਂਦੇ/-ਲੀਆਂ -ਦੀਆਂ	ਹੋਏ ਹੋਂਦੇ ਦੀਆਂ	(-ਈਆਂ
ਤੂੰ ਕੀਤਾ ਹੋਂਦਾ	ਤੂੰ ਚਲਿਆ ਹੋਂਦਾ/-ਲੀ-ਦੀ	ਹੋਇਆ ਹੋਂਦਾ	(-ਈ-ਦੀ
ਤੁਸਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਂਦਾ	ਤੁਸੀਂ ਚਲੇ ਹੋਂਦੇ/-ਲੀਆਂ -ਦੀਆਂ	ਹੋਏ ਹੋਂਦੇ ਦੀਆਂ	(-ਈਆਂ
ਉਸ ਕੀਤਾ ਹੋਂਦਾ	ਤੁਸੀਂ ਚਲੇ ਹੋਂਦੇ/-ਲੀ-ਦੀ	ਹੋਇਆ ਹੋਂਦਾ	(-ਈ, ਦੀ
ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੀਤਾ ਹੋਂਦਾ	ਉਹ ਚਲੇ ਹੋਂਦੇ/-ਲੀਆਂ	ਹੋਏ ਹੋਂਦੇ -ਦੀਆਂ	(-ਈਆਂ

5.4. प्रेरणार्थक क्रिया प्रायः हिन्दी जैसी हैं किन्तु जहां हिन्दी में/—लाना/रैथ रूप नहीं आता बल्कि/—आन/एवं/बाना होता है वहां पंजाबी में /आऊण/ रूप बनता है।

ਜਲਣਾ	ਜਾਣਾ	ਸੁਣਨਾ	ਸੁਣਾਉਣਾ	ਸੁਣਵਾਉਣਾ
ਬਲਣਾ	ਬਾਲਣਾ	ਪੜ੍ਹਨਾ	ਪੜ੍ਹਾਉਣਾ	ਪੜ੍ਹਵਾਉਣਾ
		ਸਿਖਣਾ	ਸਿਖਾਉਣਾ	ਸਿਖਵਾਉਣਾ
		ਸੀਣਾ	ਸਿਉਣਾ	ਸਿਣਵਾਉਣਾ

ਬੈਠਣਾ	ਬਿਠਲਣਾ
	ਬਿਹਾਉਣਾ
ਪੜ੍ਹਨਾ	ਪੜ੍ਹਾਉਣਾ
ਦੇਣਾ	ਦਿਵਾਉਣਾ
ਮਿਲਣਾ	ਮਿਲਾਉਣਾ
ਧੋਣਾ	ਧਵਾਉਣਾ
ਪੀਣਾ	ਪਿਆਉਣਾ
ਦਬਾਣਾ	ਦਬਾਉਣਾ
ਲੁਟਣਾ	ਲੁਟਾਉਣਾ
ਘੁਲਣਾ	ਘੋਲਣਾ
ਮਰਨਾ	ਮਾਰਣਾ
ਫਿਰਨਾ	ਫੇਰਣਾ
ਖੁਲ੍ਹਨਾ	ਖੋਲਣਾ
ਡਿਗਣਾ	ਡੇਗਣਾ

ਛੁਟਣਾ	ਛੋੜਣਾ
ਟੁਟਣਾ	ਤੋੜਣਾ
ਫਟਣਾ	ਫੋੜਨਾ
ਵਿਕਣਾ	ਵੇਚਣਾ
ਉਡਣਾ	ਉਡਾਉਣਾ
ਜਾਗਣਾ	ਜਗਾਉਣਾ
ਭਿਜਣਾ	ਭਿਉਣਾ

5.5. **पंजाबी में/ने/का प्रयोग**

(क) पंजाबी में सकर्मक क्रिया के भूत काल के साथ 'ने' का प्रयाग अस्थाई रूप में होता है :

1. ਮੈਂ ਕਹਿਆ ਜੀ=अजी, मैं ने कहा।
2. ਉਸ ਮੇਰੀ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਸਮਝੀ=उस ने मेरी बात नहीं समझी।
3. ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਾਰੀਆਂ ਰਾਜਿਆਂ ਫਕੀਰ ਕੀਤੇ।
4. ਕਾਲੂ ਕਹਿਆ, ਨਾਨਕ! ਤੂੰ ਪੜ੍ਹ।

(ख)

1. ਉਨ੍ਹਾਂ ਮੇਰੀ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਸਮਝੀ।
2. ਤੁਸਾਂ ਮੇਰੀ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਸਮਝੀ।
3. ਅਸਾਂ ਤੁਹਾਡੀ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਸਮਝੀ।

इन वाक्यों में उन्हां, तुसां एवं असां के साथ (ने) का उल्लेख नहीं, किन्तु उस की छाया के कारण ही ਉਹ; ਤੁਸੀਂ, ਅਸੀਂ के रूप बदल गए हैं और क्रिया का रूप कर्म (गाल) के अनुसार है।

(ग) दूसरी ओर ऐसे वाक्य भी मिलते हैं :

1. ਨੌਕਰ ਨੇ ਸਾਰੀ ਗੱਲ ਦੱਸ ਦਿੱਤੀ।
2. ਮੁੰਡੇ ਨੂੰ ਕਿਸ ਨੇ ਝਿੜਕਿਆ ਹੈ ?
3. ਉਸ ਨੇ ਹਾਲੀ ਤਕ ਚਿੱਠੀ ਨਹੀਂ ਲਿਖੀ।
4. ਤੁਸਾਂ ਨੇ ਵੀ ਤਰਸ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ।
5. ਅਸਾਂ ਨੇ ਦੱਸ ਦਿੱਤਾ ਸੀ, ਪਈ ਉਹ ਚੋਰ ਹੈ।

(घ) ऐसे वाक्यों में (ने) का प्रयोग स्पष्ट रूप में मिलता है।

1. ਉਸ ਨੇ ਕਿਥੇ ਜਾਣਾ ਹੈ।
2. ਅਸਾਂ ਨੇ ਖਵਰੇ ਕੀ ਕੁਝ ਵੇਖਣਾ ਹੈ।
3. ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਜਦੋਂ ਵੀ ਇਥੇ ਆਉਣਾ ਸਾਨੂੰ ਜ਼ਰੂਰ ਮਿਲਣਾ।

इन वाक्यों में [ने] को अतिरिक्त और अयोग्य रूप में बरता गया है, हिन्दी में कहेंगे :

1. उसको (उसे) कहां जाना है।
2. हम को (हमें) जाने क्या कुछ देखना है।
3. उनका जब भी यहाँ जाना होता, (वे) हमें जरूर मिलते।

यह भी पंजाबी बात चीत में स्वाभाविक है कि मैं के साथ (ने) का प्रयोग बिरले ही होता है।

अंकों के नाम :

1	ਏਕਾ	5	ਪਾਂਜਾ	8	ਆਠਾ
2	ਦੂਆ	6	ਛੱਕਾ	9	ਨਾਇਆਂ
3	ਤੀਆ	7	ਸਾਤਾ	10	ਇਕਾ ਬਿੰਦੀ ਦਸ
4	ਚੋਕਾ				

संख्यावाचक :

1	ਇਕ	18	ਅਠਾਰਾਂ	35	ਪੈਂਤੀ
2	ਦੋ	19	ਉੱਨੀ	36	ਛੱਤੀ
3	ਤਿੰਨ	20	ਵੀਹ	37	ਸੈਂਤੀ
4	ਚਾਰ	21	ਇੱਕ	38	ਅਠੱਤੀ
5	ਪੰਜ	22	ਬਾਈ	39	ਉਣਤਾਲੀ
6	ਛੇ	23	ਤੇਈ	40	ਚਾਲੀ
7	ਸੱਤ	24	ਚੋਵੀ	41	ਇਕਤਾਲੀ
8	ਅੱਠ	25	ਪੰਝੀ	42	ਬਿਤਾਲੀ
9	ਨੌਂ	26	ਛੱਬੀ	43	ਤ੍ਰਿਤਾਲੀ
10	ਦਸ	27	ਸਤਾਈ	44	ਚੋਤਾਲੀ
11	ਗਿਆਰਾਂ ਯਾਰਾਂ	28	ਅਠਾਈ	45	ਪੈਂਤਾਲੀ
12	ਬਾਰਾਂ	29	ਉੱਨਤੀ	46	ਛਿਤਾਲੀ
13	ਤੇਰਾਂ	30	ਤੀਹ	47	ਸੈਂਤਾਲੀ
14	ਚੋਦਾਂ	31	ਇਕੱਤੀ	48	ਅਠਤਾਲੀ
15	ਪੰਦਰਾਂ	32	ਬੱਤੀ	49	ਉਣੰਜਾ
16	ਸੋਲਾਂ	33	ਤੇਤੀ	50	ਪੰਜਾਹ
17	ਸਤਾਰਾਂ	34	ਚੋਂਤੀ	51	ਇਕਵੰਜਾ

52	ਬਵੰਜਾ	69	ਉਨੱਤਰ	86	ਛਿਆਸੀ
53	ਤ੍ਰਿਵੰਜਾ	70	ਸੱਤਰ	87	ਸਤਾਸੀ
54	ਚੁਰੰਜਾ	71	ਇੱਕਹਤਰ	88	ਅਠਾਸੀ
55	ਪਚਵੰਜਾ	72	ਬਹੱਤਰ	89	ਉਣਾਨਵੇ
56	ਛਿਵੰਜਾ	73	ਤਿਹੱਤਰ	90	ਨੱਵੇ
57	ਸਤਵੰਜਾ	74	ਚੋਹੱਤਰ	91	ਇਕਾਨਵੇ
58	ਅਠਵੰਜਾ	75	ਪੰਜੱਤਰ	92	ਬਾਨਵੇ
59	ਉਣਾਠ	76	ਛਿਹੱਤਰ	93	ਤ੍ਰਿਨਵੇ
60	ਸੱਠ	77	ਸਤੱਤਰ	94	ਚੋਰਾਨਵੇ
61	ਇਕਾਠ	78	ਅਠੱਤਰ	95	ਪਚਾਨਵੇ
62	ਬਾਹਠ	79	ਉਣਾਸੀ	96	ਛਿਆਨਵੇ
63	ਤੇਰਠ	80	ਅੱਸੀ	97	ਸਤਾਨਵੇਂ
64	ਚੌਂਹਠ	81	ਇਕਾਸੀ	98	ਅਠਾਨਵੇਂ
65	ਪੈਂਹਠ	82	ਬਿਆਸੀ	99	ਨੜਿਨੰਵੇਂ
66	ਛਿਆਹਠ	83	ਤ੍ਰਿਆਸੀ	100	ਸੋ
67	ਸਿਤਾਹਠ	84	ਚੋਰਾਸੀ	1000	ਹਜ਼ਾਰ
68	ਅਠਾਹਠ	85	ਪੰਜਾਸੀ	100000	ਲੱਖ

परिणाम वाचक :

¼ ਪਾਇਆ, ਪਾ	पाव	2 ½ ਢਾਈ	अढ़ाई
½ ਅੱਧਾ	आधा	3½ ਸਾਢੇ ਤਿੰਨ	साढ़े तीन
¾ ਪੋਣਾ	पौना	4¼ ਸਵਾ ਚਾਰ	सवा चार
1¼ ਸਵਾ	सवा	4½ ਸਾਢੇ ਚਾਰ	साढ़े चार
1½ ਡੇਢ	डेढ	4¾ ਪੋਣੇ ਚਾਰ	पौने चार

क्रम वाचक :

ਪਹਲਾ	ਦੂਜਾ	ਤੀਜਾ	ਚੋਥਾ	ਪੰਜਵਾਂ	ਛੇਵਾਂ
पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवाँ	छटा
ਸਤਵਾਂ	ਅਠਵਾਂ	ਨੋਂਵਾਂ	ਦਸਵਾਂ आदि		
सातवाँ	आठवाँ	नवां	दसवाँ		

समूह वाचक :

ਦੋਵੇਂ ਭਰਾ	दोनों भाई
ਤਿੰਨੇ ਭਰਾ	तीनों भाई

ਚਾਰੇ ਭਰਾ	चारों भाई
ਪੰਜੇ	पाचों
ਛੇਵੇਂ	छेओं
ਸੱਤੇ	सातों
ਅੱਠੇ	आठों

आवृत्ति वाचक :

दो गुणा	ਦੁਗਣਾ ;	ਦੂਣਾ
तिगुणा	ਤਿਗੁਣਾ ;	ਤੀਣਾ
चौगुणा	ਚਾਰ ਗੁਣਾ ;	ਚੌਣਾ
पाँचगुणा	ਪੰਜ ਗੁਣਾ ;	ਪੰਜਣਾ

अनिश्चित परिमाण :

ਚੋਖਾ	काफी
ਕੁਝ	कुछ
ਵੀਹ ਕੁ	कोई बीस
ਸੌ ਕੁ	कोई सौ

गुणवाली विशेषण अवस्था :

संस्कृत (–तर) लगा कर बने उत्तरावस्था रूप पंजाबी में प्रचलित हैं :

ਅਗੇਤਰ	उपसर्ग
ਪਿਛੇਤਰ	परसर्ग
ਉਚੇਰਾ	उच्चतर
ਅਗਲੇਤਰਾ	अग्रतर

ਚੰਗੇਰਾ, ਛੁਟੇਰਾ, ਪਤਲੇਰਾ, ਬਥੇਰਾ, ਲੰਮੇਰਾ, ਵਡੇਰਾ ਦੁਰੇੜਾ (दूरतर)

उत्तमावस्था–ਸਭ ਤੋਂ ਚੰਗਾ, ਸਭ ਨਾਲੋਂ ਚੰਗਾ, ਸਭ ਵਿਚੋਂ ਚੰਗਾ।

ਪਹਾੜੇ

2

ਇਕ ਦੂਣੀ ਦੂਣੈ	ਛੇ ਦੂਣੇ ਬਾਰਾਂ
ਦੋ ਦੂਣੇ ਚਾਰ	ਸੱਤ ਦੂਣੇ ਚੋਦਾਂ
ਤਿੰਨ ਦੂਣੇ ਛੇ	ਅੱਠ ਦੂਣੇ ਸੋਲਹਾਂ
ਚਾਰ ਦੂਣੇ ਅੱਠ	ਨੌ ਦੂਣੇ ਅਠਾਰਾਂ
ਪੰਜ ਦੂਣੇ ਦਸ	ਦਸ ਦੂਣੇ ਵੀਹ

3

ਇਕ ਤੀਆ ਤੀਆ	ਛੇ ਤੀਏ ਅਠਾਰਾਂ
ਦੋ ਤੀਏ ਛੇ	ਸਤ ਤੀਏ ਇੱਕੀ
ਤਿੰਨ ਤੀਏ ਨੌ	ਅੱਠ ਤੀਏ ਚੌਵੀ
ਚਾਰ ਤੀਏ ਬਾਰਾਂ	ਨੌ ਤੀਏ ਸਤਾਈ
ਪੰਜ ਤੀਏ ਪੰਦ੍ਰਾਂ	ਦਸ ਤੀਆ ਤੀਹ

4	5
ਇਕ ਚੌਕਾ ਚੌਕਾ	ਇਕ ਪਾਂਜਾ ਪਾਂਜਾ
ਦੋ ਚੌਕੇ ਅੱਠ	ਦੋ ਪਾਂਜਾ ਦਸ
ਤਿੰਨ ਚੌਕੇ ਬਾਰਾਂ	ਤਿੰਨ ਪਾਂਜਾ ਪੰਦ੍ਰਾਂ
ਚਾਰ ਚੌਕੇ ਸੋਲਹਾ	ਚਾਰ ਪਾਂਜਾ ਵੀਹ
ਪੰਜ ਚੌਕੇ ਵੀਹ	ਪੰਜ ਪਾਂਜਾ ਪੱਚੀ
ਛੇ ਚੌਕੇ ਚੌਵੀ	ਛੇ ਪਾਂਜਾ ਤੀਹ
ਸੱਤ ਚੌਕੇ ਅਠਾਈ	ਸੱਤ ਪਾਂਜਾ ਪੈਂਤੀ
ਅੱਠ ਚੌਕੇ ਬੱਤੀ	ਅੱਠ ਪਾਂਜਾ ਚਾਲੀ
ਨੌ ਚੌਕੇ ਛੱਤੀ	ਨੌ ਪਾਂਜਾ ਪੰਜਤਾਲੀ
ਦਸ ਚੌਕਾ ਚਾਲ੍ਹੀ	ਦਸ ਪਾਂਜਾ ਪੰਜਾਹ

ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਨਾਂ दिनों के नाम

ਐਤਵਾਰ	इतवार	ਬੁਧਵਾਰ	बुधवार	ਸ਼ਨੀਚਰਵਾਰ	शनिवार, सनीचरवार
ਸੋਮਵਾਰ	सोमवार	ਵੀਰਵਾਰ	वीरवार, ब्रहस्पतिवार, गुरुवार		
ਮੰਗਲਵਾਰ	मंगलवार	ਸ਼ੁਕ੍ਰਵਾਰ	शुक्रवार		

ਮਹੀਨਿਆਂ ਦੇ ਨਾਂ महीनों के नाम

ਚੇਤ	चेत	ਹਾੜ	हाड़	ਅੱਸੂ	असू	ਪੋਹ	पोह
ਵਿਸਾਖ	विसाख	ਸਾਉਣ	साउण	ਕੱਤਕ	कत्तक	ਮਾਘ	माघ
ਜੇਠ	जेठ	ਭਾਦੋਂ	भादों	ਮੱਘਰ	मघर	ਫਗਣ	फगण

कुछ पंजाबी मुहावरे

1. ਉਭੇ ਸਾਹ ਲੈਣੇ — ठंडी साँस भरना
2. ਆਪਣੀ ਪੀੜ੍ਹੀ ਹੇਠ ਸੋਟਾ ਫੇਰਨਾ — अपने अवगुण देखने का साहस करना

3.	ਅਲਖ ਮੁਕਾਉਣਾ	समूल नष्ट करना
4.	ਅਲੂਣੀ ਸਿਲ ਚਟਣੀ	नीरस एवं कठिन काम करना
5.	ਆਖੇ ਲਗਣਾ	कहना मानना
6.	ਆਢਾ ਲਾਉਣਾ	लड़ाई छेड़ देना
7.	ਆਵਾ ਊਤ ਜਾਣਾ	सारी टोली का बिगड़ जाना
8.	ਅੰਗ ਪਾਲਣਾ	साथ देना
9.	ਅੰਨ੍ਹੀ ਪੈ ਜਾਣੀ	अंधेर–र्गदी मच जाना
10.	ਇਕੋ ਡਗੇ ਪਿੰਡ ਮੰਗਣਾ	एक ही बार में बड़ा काम समाप्त करने का प्रयत्न करना
11.	ਸਲੂਣਾ ਚਾੜ੍ਹਨਾ	सालन पकाना
12.	ਸੁੱਤੀ ਕਲ੍ਹਾ ਜਗਾਉਣੀ	पुराने मुरदे उखेड़ना
13.	ਸਿਰ ਤੇ ਕੁੰਡਾ ਨ ਹੋਣਾ	बुरे कामों से रोकने वाले का अभाव होना
14.	ਸਿਰ ਮੁਨਾ ਕੇ ਐਤਵਾਰ ਪੁਛਣਾ	गलती कर चुकने के पश्चात सलाह पुछना
15.	ਹੱਥ ਪੈਰ ਪੈ ਜਾਣਾ	घबरा जाना
16.	ਹੱਥ ਵੱਢ ਕੇ ਦੇਣੇ	हस्ताक्षर कर देना
17.	ਹਥੀਂ ਛਾਵਾਂ ਕਰਨੀਆਂ	बहुत सत्कार करना
18.	ਹੱਥੀ ਪੈਣਾ	हाथा पाई करना
19.	ਹਿੱਕ ਤੇ ਮੂੰਗ ਦਲਣਾ	छाती पर मूंग दलना
20.	ਹੋਲਿਆਂ ਪੈਣਾ	लज्जित होना
21.	ਕੱਖਾਂ ਤੋਂ ਹੋਲੇ ਹੋਣਾ	बहुत हीन होना
22.	ਕੱਚਾ ਪੈਣਾ	लज्जित होना, खसियाना होना
23.	ਕੰਮ ਟੋਰਨਾ	काम चलाना
24.	ਕਰੀਦ ਆਉਣੀ	घृणा होना
25.	ਕਾਹਲਾ ਪੈਣਾ	उतावला होना
26.	ਕੁਛੜ ਬਹਿ ਕੇ ਦਾੜ੍ਹੀ ਪੁੱਟਣੀ	मित्र बन के अपमान करना
27.	ਕੰਨ ਹੋਣਾ	चेतावनी होना
28.	ਕੰਨੀ ਕਤਰਾਉਣਾ	जी चुराना, खिसक जाना
29.	ਖਾਨਿਓਂ ਜਾਣੀ	कुछ न सूझना बुद्धि भ्रष्ट होना
30.	ਖੁੰਬ ਟਪਣੀ	बहुत ज्यादा पीटना

31. ਗਲ ਪੈਣਾ — लड़ने को तैयार होना
32. ਗਿਲਾ ਪੀਹਣਾ ਪਾਉਣਾ — लबा टंटा खड़ा करना
33. ਘਰ ਪੂਰਾ ਕਰਨਾ — हक देना
34. ਘਾਹ ਵਢਣਾ — जल्दी में, बेपरवाही में काम करना
35. ਘੋਟਾ ਲਾਉਣਾ — रटा लगाना, कंठस्थ करना
36. ਚਪਣੀ ਵਿਚ ਨੱਕ ਡੋਬ ਕੇ ਮਰਨਾ — चुल्लु भर पानी में डूब मरना
37. ਚਾਂਦੀ ਦੀ ਜੁੱਤੀ ਮਾਰਨੀ — घूंस देना
38. ਛਾਲ ਮਾਰਨੀ — छलांग लगाना
39. ਜੱਫਾ ਪਾਉਣਾ — आलंगन करना
40. ਜਾਨ ਮਾਰਨੀ — कठोर परिश्रम करना
41. ਜੁਤੀਆਂ ਭਿਉਂ ਭਿਉਂ ਕੇ ਮਾਰਨੀਆਂ — बुरी तरह लज्जित करना
42. ਜਬਾਨ ਫੇਰ ਲੈਣੀ — मुकर जाना
43. ਜੰਦਰਾ ਮਾਰਨਾ — ताला लगाना
44. ਝੱਗ ਛਡਣੀ — क्रोध से पागल होना
45. ਟਿੱਲ ਲਾਉਣਾ — ऐढ़ी चोटी का जोर लगाना
46. ਠੰਡੇ ਦੁੱਧ ਨੂੰ ਫੂਕਾਂ ਮਾਰਨੀਆਂ — अकारण ही किसी को धमकाना
47. ਠੁੱਡਾ ਖਾਣਾ — ठोकर खाना
48. ਢਿਡ ਵਿਚ ਰਖਣਾ — भेद रखना
49. ਢੇਰੀ ਢਾਹੁਣੀ — हिम्मत हार के बैठना
50. ਤਾ ਦੇਣਾ — आंच दिखाना
51. ਤਾਟ ਪੈਣੀ — टीस उठता
52. ਥੁੱਕੀਂ ਵੜੇ ਪਕਾਉਣੇ — केवल बातों से काम चलाना
53. ਦਾ ਲਾਉਣਾ — दांव लगाना
54. ਦਲ੍ਹਜਾਂ ਉਚੇੜ ਮਾਰਨੀਆਂ — बार बार दर पर आना
55. ਦੂਰੋਂ ਮੱਥਾ ਟੇਕਣਾ — दूर से प्रणाम (सलाम)
56. ਦਿਲ ਹੌਲਾ ਕਰਨਾ — जी हारना
57. ਨਾਂ ਕਢਣਾ — प्रसिद्ध होना
58. ਨੱਕ ਤੇ ਮੱਖੀ ਨ ਬਹਿਣ ਦੇਣੀ — अपने आप को बड़ा समझना
59. ਨੱਕ ਰਖਣਾ — लाज रखना
60. ਨੱਕ ਚਾੜ੍ਹਨਾ — घृणा करना
61. ਪੱਗ ਲਾਹੁਣੀ — पगड़ी उतारना

62. ਪਿੱਠ ਪੂਰਨੀ	सहायता करनी
63. ਪੈਰ ਪਾਉਣਾ	पधारना
64. ਫੂਕ ਚਾੜ੍ਹਨੀ (ਦੇਣੀ)	चापलूसी करना
65. ਫੂਹੜੀ ਪਾਉਣੀ	सोग मनाना
66. ਫੇਰਾ ਮਾਰਨਾ	फेरी लगाना
67. ਬੁੱਲੇ ਲੁਟਣਾ	मौज करना
68. ਬੂਹਾ ਲਾਹੁਣਾ	दरवाजा खोलना
69. ਭੱਠਾ ਬਹਿਣਾ	हानी होना
70. ਭਾਰਾ ਤੇ ਪੈਣਾ	मिन्नत करवाना
71. ਭੰਗ ਭੁਜਣੀ	उजड़ जाना, दरिद्र होना
72. ਭੈੜਾ ਪੈਣਾ	लज्जित होना
73. ਭੰਗੜਾ ਪੈਣਾ	भंगड़ा नाच होना
74. ਭੱਬਲ ਭੂਸੇ ਖਾਣਾ	चक्कर में पड़ना
75. ਮਰਚਾਂ ਲਗਣੀਆਂ	बुरा मानना, जलभुन जाना
76. ਮੱਕੂ ਠਪਣਾ	नाका बंदी करना
77. ਮੱਸ ਫੁੱਟਣੀ	मसें भीगना लवान होना
78. ਮਗਰ ਪੈਣਾ	पीछे पड़ना
79. ਮੱਥਾ ਡਾਹਣਾ	लड़ाई छेड़ बैठना
80. ਮੱਥੇ ਲਾਉਣਾ	जिम्मे लगाना, किसी के सिर जिम्मेवारी डालना
81. ਮੂੰਹ ਤੋਂ ਲੋਈ ਲਾਹੁਣੀ	मर्यादा एवं लाज की अवहेलना
82. ਮਿੱਟੀ ਪਾਉਣਾ	बात छिपाना
83. ਲਹੂ ਪੰਘਰਨਾ	कोह ममता का भाव जगाना
84. ਲੱਕ ਬੰਨ੍ਹਣਾ	कमर बांधना, तैयार होना
85. ਲੂਤੀ ਲਾਉਣੀ	चुगनी करना, लगाई बुझाई करना
86. ਲੀਕ ਲਗਣੀ	बदनामी होना
87. ਲੀਕ ਮਾਰਨੀ	रद्द करना, लेखा साफ कर देना
88. ਵੱਟਾ ਪੈਣਾ	उदास होना
89. ਵਾ ਨਾਲ ਲੜਨਾ	अकारण लड़ना
90. ਵਾ ਵੱਗ ਜਾਣੀ	बुरे विचारों की हवा लग जाना

शोभन भाषा

शिष्टाचार के कारण कई बार अशुभ बात विशेष शब्दों में ढांप कर कही जाती है। इसे शोभन भाषा कहते हैं। यहां पंजाबी में इसके कुछ नमूने दिये जाते हैं :

ਦੁਕਾਨ ਵਧਾ ਦਿੱਤੀ	—	ਦੁਕਾਨ ਬੰਦ ਕਰ ਦਿੱਤੀ
ਚੂੜਾ ਵਧਾ ਦਿੱਤਾ	—	ਚੂੜਾ ਲਾਹ ਦਿੱਤਾ
ਦਾਣੇ ਵਧ ਗਏ	—	ਦਾਣੇ ਮੁਕ ਗਏ
ਦੀਵਾ ਵਡਾ ਕੀਤਾ	—	ਦੀਵਾ ਬੁਝਾ ਦਿੱਤਾ
ਦੁਧ ਸੋਰ ਗਇਆ	—	ਦੁਧ ਫਟ ਗਇਆ
ਦੂਜੀ ਸ਼ੈ	—	ਗਊ ਦਾ ਮਾਸ
ਸੁਰੀ ਸ਼ੈ	—	ਗਊ ਦਾ ਮਾਸ ਹਰਾਮ
ਪੂਰਾ ਹੋ ਗਇਆ	—	ਮਰ ਗਇਆ
ਫੁੱਲ ਗੰਗਾ ਵਿਚ ਤਾਰਨ ਗਏ	—	ਹੱਡੀਆਂ ਗੰਗਾ ਵਿਚ ਪ੍ਰਵਾਹ ਕਰਨ ਗਏ
ਮਿੱਟੀ ਟਿਕਾਣੇ ਲਾਈ	—	ਸਰੀਰ ਦਾ ਦਾਹ ਕੀਤਾ
ਤੁਹਾਨੂੰ ਸਾਹਬ ਨੇ ਯਾਦ ਕੀਤਾ ਹੈ	—	ਸਾਹਬ ਨੇ ਤੁਹਾਨੂੰ ਬੁਲਾਇਆ ਹੈ
ਦੁਧ ਵਧਾਉਣਾ	—	ਦੁੱਧ ਜਮਾਉਣਾ
ਜੰਗਲ ਜਾਣਾ	—	ਟੱਟੀ ਜਾਣਾ
ਕਪੜੇ ਆਉਣਾ	—	ਮਾਹਵਾਰੀ ਆਉਣਾ
ਉਮੇਦਵਾਰੀ ਹੋਣਾ	—	ਗਰਭਵਤੀ ਹੋਣਾ
ਕੇਸ ਕਤਲ ਕਰਕੇ	—	ਜ਼ੋਰੀ ਕੇਸ ਕਟਣੇ
ਦਾੜ੍ਹੀ ਫੂਲ ਪਾਉਣਾ	—	ਨਿਰਾਦਰ ਕਰਨਾ

खण्ड 7

हस्तलेख एवं साहित्यिक नूमने

पंजाबी हस्तलेख

मुद्रित अक्षर अधिक स्पष्ट और निश्चित रूप में रेखाएं रखते हैं। लेखनी से लिखते समय उन में कई प्रकार के परिवर्तनों की सम्भावना बनी रहती है। प्रायः शिक्षा गुरु अथवा माता–पिता की लेख–शैली का प्रभाव देर तक रहता है किन्तु व्यक्तिगत रुचियों के कारण भी अक्षरों के आकार में अन्तर पड़ जाता है। लेखनी जब वेग से चलती है तो मात्राओं से अंकित करने में व्यंजनों के सिर पैर भी जुड़ने लगते हैं।

पंजाबी हस्त–लेख पढ़ सकने की योग्यता उत्पन्न करने के लिए यहाँ कुछ नमूने प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इन को पढ़ने का अभ्यास अवश्य लाभप्रद होगा।

ਸਾਡੇ ਅੰਦਰ ਇਹ ਭੁਲੇਖਾ ਪਾਇਆ ਹੋਇਆ ਹੈ ਕਿ ਮਨੁਖ ਵਿਚਾਰਵਾਨ ਜੀਵ ਹੈ ਅਤੇ ਹਰ ਕੰਮ ਕਰਨ ਲਗਿਆਂ ਇਹ ਵਿਚਾਰ ਦੇ ਆਸਰੇ ਤੁਰਦਾ ਹੈ। ਅਜਕਲ ਦੀ ਮਾਨਸਿਕ ਖੋਜ ਇਸ ਸਿਟੇ ਤੇ ਪੁਜੀ ਹੈ ਕਿ ਮਨੌਤ ਗ਼ਲਤ ਹੈ। ਮਨੁਖ ਸੁਭਾਵ ਦੇ ਆਸਰੇ ਤੁਰਦਾ ਹੈ। ਵਿਚਾਰ ਦੇ ਆਸਰੇ ਨਹੀਂ ਤੁਰਦਾ। ਵਿਚਾਰ ਨੂੰ ਮਨੁਖ ਆਪਣੀ ਸੁਭਾਵਿਕ ਕਿਰਿਆ ਨੂੰ ਠੀਕ ਸਾਬਤ ਕਰਨ ਲਈ ਬਹੁਤਾ ਵਰਤਦਾ ਹੈ। ਭਾਵ ਇਹ ਹੈ ਕਿਰਿਆ ਦੀ ਨੀਂਹ ਤਾਂ ਕਾਮ, ਕ੍ਰੋਧ ਆਦਿ ਦੇ ਆਸਰੇ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਪਰ ਆਪਣੇ ਕਰਮਾਂ ਨੂੰ ਠੀਕ ਸਾਬਤ ਕਰਨ ਲਈ ਮਨੁਖ ਵਿਚਾਰ ਦਾ ਪਰਦਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੇ ਪਾਂਦਾ ਹੈ। ਦੂਜੀ ਗੱਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੀ ਬੁਧੀ ਕੋਈ ਨਵਾਂ ਨਿਰਣਾ ਕਰਨ ਲਗਿਆਂ ਆਪਣੇ ਪਿਛਲੇ ਤਜਰਬਿਆਂ ਨੂੰ ਘੋਖ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਚਾਨਣੇ ਵਿਚ ਹੀ ਨਵਾਂ ਫੈਸਲਾ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਆਦਮੀ ਦੇ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਪਰਤਾਵੇ ਹੀ ਉਸ ਦੇ ਗਿਆਨ ਨੂੰ ਸੀਮਿਤ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਜਿਹੜਾ ਫਲ ਕਿਸੇ ਨੇ ਚਖਿਆ ਨਹੀਂ ਉਸਦਾ ਸੁਆਦ ਉਹ ਦਸ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ। ਜੇ ਉਹ ਨਵਾਂ ਫਲ ਚਖ ਵੀ ਲਵੇ ਤਾਂ ਉਸ ਦੇ ਸੁਆਦ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਫਲਾਂ ਦੇ ਸੁਆਦ ਰਾਹੀਂ ਦਸਣ ਦਾ ਜਤਨ ਕਰੇਗਾ ਜਿਹੜਾ ਉਸ ਨੇ ਮਸੇ ਖਾਧੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਕਿਸੇ ਇਕ ਵਿਅਕਤੀ ਦਾ ਗਿਆਨ ਉਸਦੇ ਆਪਣੇ ਤਜਰਬੇ ਤੇ ਹੀ ਨਿਰਭਰ ਹੈ।

ਜੋਧ ਸਿੰਘ

ਅਸਲ ਵਿਚ ਪੈਸ਼ਾਚੀ ਵਿਧਰਮੀਆਂ
ਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਅਖਵਾਈ ਜਾਣ ਕਰਕੇ
ਭਾਰਤੀਆਂ ਵਲੋਂ ਅਣਗਹਿਲੀ ਦੀ
ਨਿਗਾਹ ਨਾਲ ਵੇਖੀ ਜਾਂਦੀ ਰਹੀ ਹੈ
ਤਾਹੀਓਂ ਤਾਂ ਗੁਣਾਢਯ ਨੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ
ਅਧਿਆਪਨ ਦੀ ਸ਼ਰਤ ਵਿਚ
ਹਾਰ ਖਾ ਕੇ ਇਸ ਉਪੇਖਿਆਤ
ਬੋਲੀ ਵਿਚ ਲਿਖਿਆ ਸੀ। ਇਹ
ਤਾਂ ਬਾਹਰਲੇ ਪ੍ਰਮਾਣ ਹਨ। ਪੈਸ਼ਾਚੀ
ਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਦਾ ਵਿਗਿਆਨਕ
ਟਾਕਰਾ ਵੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਜਨਨੀ-
ਜਨਿਤ ਦੇ ਸੰਬੰਧਾਂ ਦੀ ਪੁਸ਼ਟੀ
ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ। ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਫ਼ਰਕ
ਧੁਨੀਆਂ ਦੇ ਅਘੋਸ਼ੀ ਪਰਿਵਰਤਨ
ਵਿਚ ਮਿਲਦਾ ਹੈ।

— ਪ੍ਰਿਯੇਸ਼ਵਰ ਸ਼ਰਮਾ
੨੦-੬-੧੯੬੭

ਅਸਲ ਵਿਚ ਪੈਸ਼ਾਚੀ ਵਿਧਰਮੀਆਂ ਦੁਆਰਾ ਅਪਣਾਈ ਜਾਣ ਕਰਕੇ ਭਾਰਤੀਆਂ ਵਲੋਂ ਅਣਗਹਲੀ ਦੀ ਨਿਗਾਹ ਨਾਲ ਵੇਖੀ ਜਾਂਦੀ ਰਹੀ ਹੈ। ਤਾਹੀਉਂ ਤਾਂ ਗੁਣਾਢਯ ਨੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਅਧਿਆਪਨ ਦੀ ਸ਼ਰਤ ਵਿਚ ਹਾਰ ਖਾ ਕੇ ਇਸ ਉਪੇਖਿਅਤ ਬੋਲੀ ਵਿਚ ਲਿਖਿਆ ਸੀ। ਇਹ ਤਾਂ ਬਾਹਰਲੇ ਪ੍ਰਮਾਣ ਹਨ। ਪੈਸ਼ਾਕੀ ਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਦਾ ਵਿਗਿਆਨਕ ਟਾਕਰਾ ਵੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਜਨਨੀ-ਜਨਿਤ ਦੇ ਸੰਬੰਧਾਂ ਦੀ ਪੁਸ਼ਟੀ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ। ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਫਰਕ ਧੁਨੀਆਂ ਦੇ ਅਪਭ੍ਰੰਸ਼ੀ ਪਰਿਵਰਤਨ ਵਿਚ ਮਿਲਦਾ ਹੈ।

20.6.1967 —ਸਿੱਧੇਸ਼ਵਰ ਵਰਮਾ

ਵਿਦਿਆ ਉਹ ਹੈ ਜੋ ਮਨੁਖ ਨੂੰ
ਛੁਟਕਾਰਾ ਦਿਵਾਉਂਦੀ ਹੈ ਅਗਿਆਨ
ਤੋਂ, ਡਰ ਤੋਂ ਅਤੇ ਅਸਮਰਥਤਾ ਤੋਂ।
ਇਸ ਛੁਟਕਾਰੇ ਤੋਂ ਮੁਕਤੀ ਦਾ
ਸਾਧਨ ਹੈ ਤਪਸਿਆ ਤੇ ਹੋਰ
ਤਪਸਿਆ।

ਇੰਦਰਜੀਤ ਕੌਰ
28.8.67

ਵਿਦਿਆ ਉਹ ਹੈ ਜੋ ਮਨੁਖ ਨੂੰ ਛੁਟਕਾਰਾ ਦਿਵਾਉਂਦੀ ਹੈ—ਅਗਿਆਨ ਤੋਂ, ਡਰ ਤੋਂ ਅਤੇ ਅਸਮਰਥਤਾ ਤੋਂ, ਇਸ ਛੁਟਕਾਰੇ ਤੋਂ ਮੁਕਤੀ ਦਾ ਸਾਧਨ ਹੈ ਤਪਸਿਆ ਤੇ ਹੋਰ ਤਪਸਿਆ।

28.8.67 ਇੰਦਰਜੀਤ ਕੌਰ

ਫੇਰ ਤੈਨੂੰ ਯਾਦ ਕੀਤਾ

ਅੱਗ ਨੂੰ ਚੁੰਮਿਆ ਅਸਾਂ

ਇਸ਼ਕ ਪਿਆਲਾ ਜ਼ਹਿਰ ਦਾ

ਇੱਕ ਘੁੱਟ ਫਿਰ ਮੰਗਿਆ ਅਸਾਂ

ਘੋਲ ਕੇ ਸੂਰਜ ਅਸਾਂ

ਧਰਤੀ ਨੂੰ ਡੋਬਾ ਦੇ ਲਿਆ

ਤਾਰਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ

ਕੋਠਾ ਗਗਨ ਦਾ ਲਿੰਬਿਆ ਅਸਾਂ

ਫੇਰ ਤੈਨੂੰ ਯਾਦ ਕੀਤਾ......

12.1.67

—ਅਮ੍ਰਿਤਾ ਪ੍ਰੀਤਮ

ਪਾਣੀ ਸਰਾਂ ਦੇ
ਸੁਕ ਚੱਲੇ, ਸੁਕ ਚੱਲੇ, ਸੁਕ ਚੱਲੇ।
ਹੱਥ ਤਾਰਿਆਂ ਦੇ
ਰੁਕ ਚੱਲੇ, ਰੁਕ ਚੱਲੇ, ਰੁਕ ਚੱਲੇ ॥

ਬੜੇ ਮਾਣਾਂ ਦੇ ਮਤੇ,
ਲਹੂ ਤੇਜ਼ ਤੇ ਤੱਤੇ,
ਝੁਕ ਚੱਲੇ, ਝੁਕ ਚੱਲੇ, ਝੁਕ ਚੱਲੇ ॥

ਗਿਣ ਗਿਣ ਕਦਮ ਧਰੇ,
ਸੰਭਲ ਬੁੱਕ ਭਰੇ,
ਤਲ ਥੁਹਰੜੇ ਜੀ,
ਮੁਕ ਚੱਲੇ, ਮੁਕ ਚੱਲੇ, ਮੁਕ ਚੱਲੇ ॥

14 ਸਤੰਬਰ, 1967

—ਮੋਹਨ ਸਿੰਘ

ਜੋ ਲੇਖਕ ਆਪਣੀਆਂ ਮਨ-ਘੜਤ ਕਹਾਣੀਆਂ ਆਪਣੇ ਬਜ਼ੁਰਗਾਂ ਦੇ ਜੀਵਨ ਬ੍ਰਿਤਾਂਤਾਂ ਵਿਚ ਮਿਲਾ ਦੇਣਾ ਸ਼ੁਭ ਸੇਵਾ ਸਮਝਦੇ ਹਨ, ਜਿਤਨਾ ਅੰਨਿਆਇ ਓਹ ਆਪਣੇ ਬਜ਼ੁਰਗਾਂ ਨਾਲ ਅਭੋਲ ਹੀ ਕਰ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਉਤਨਾ ਸ਼ਾਇਦ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕੱਟੜ ਵਿਰੋਧੀ ਭੀ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ। ਸਮਾਂ ਪੈ ਜਾਣ ਨਾਲ ਜਦ ਇਕ ਅੱਧੀ ਮਿਲਾਵਟ ਉੱਘੜ ਆਉਂਦੀ ਹੈ, ਤਾਂ ਸ਼ੱਕ ਵਿਚ ਪਏ ਹੋਏ ਵਿਚਾਰਵਾਨ ਪਾਠਕ ਕਈ ਇਕ ਠੀਕ ਵਾਕਿਆਤ ਨੂੰ ਭੀ ਸ਼ੱਕ ਦੀ ਨਜ਼ਰ ਨਾਲ ਵੇਖਦੇ ਹੋਏ ਠੁਕਰਾ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਚ ਮਨੋ ਕਲਪਤ ਮਿਲਾਵਟਾਂ ਨਾਲ ਫ਼ਾਇਦੇ ਨਾਲੋਂ ਨੁਕਸਾਨ ਸਦਾ ਲਈ ਪੱਕਾ ਅਤੇ ਕਈ ਗੁਣਾਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਹੁੰਦਾ ਚਲਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜਿਸਨੂੰ ਮੁੜ ਕਦੀ ਭੀ ਪੂਰਾ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਝੂਠ ਆਖਰ ਝੂਠ ਹੈ, ਉਹ ਉੱਘੜ ਭੀ ਜ਼ਰੂਰ ਆਉਣਾ ਹੈ। ਕੂੜ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦਾ ਲੁਕਿਆ ਸੋ ਘਾੜਤ ਘੜੀਏ।

—ਗੰਡਾ ਸਿੰਘ

19.7.67

ਵੈਸਾਖੀ ਪੁਰਬ

ਵੈਸਾਖੀ ਮੌਸਮੀ ਤਿਓਹਾਰ ਹੈ। ਸੰਸਾਰੀ ਲੋਕ ਇਸ ਨੂੰ ਚਿਰਾਂ ਤੋਂ ਮਨਾਉਂਦੇ ਆ ਰਹੇ ਹਨ । ਸਿੱਖਾਂ ਵਿਚ ਵੈਸਾਖੀ ਨੂੰ ਵਿਸੇਖਤਾ, ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਮਰਦੇਵ ਨੇ ਇਸ ਕਰਕੇ ਬਖਸ਼ੀ ਕਿ ਪਹਿਲੇ ਤੇ ਦੂਜੇ ਗੁਰੂਜਾਮੇ ਦਾ ਪ੍ਰਗਾਸ ਵੈਸਾਖ ਮਹੀਨੇ ਅੰਦਰ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਹਜ਼ੂਰੀ ਤੇ ਸਥਾਨਕ ਸਿੱਖਾਂ ਨੇ ਸਰਬ ਖਾਲਿਸਾ ਸਿੱਖਾਂ ਦੇ ਦਰਸ-ਪਰਸ ਦੀ ਅਭਿਲਾਖਾ ਪ੍ਰਗਟ ਕੀਤੀ ਸੀ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਸੰਮਤ 1626 ਬਿੱਕ੍ਰਮੀ (1569 ਈ.) ਵਿੱਚ ਵੈਸਾਖ ਮਹੀਨੇ 'ਸਰਬ ਸਿੱਖ ਸਮੇਲਨ' ਸੱਦਕੇ, ਸਿੱਖਾਂ ਦੀ ਇਹ ਸੱਧਰ ਪੂਰੀ ਕੀਤੀ। ਇਹ ਮਹਾਸਮਾਗਮ ਦਾ ਸੁਭ ਨਾਮ, ਆਪਣੇ 'ਵਿਸੋਅ ਦਰਸ' ਰੱਖ ਕੇ, ਸਦਾ ਲਈ ਪ੍ਰਚਲਤ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਇਤਿਫਾਕ ਦੀ ਗੱਲ ਹੈ; ਕਿ ਤੀਜੇ ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਦਾ ਆਪਣਾ ਜੋਤਿਜਾਮਾ ਭੀ ਵੈਸਾਖ ਮਹੀਨੇ ਵਿਚ ਹੀ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਇਸ ਲਈ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਾਮਦਾਸ ਵਾਸਤੇ 'ਵਿਸੋਆ ਦ ਰਸ' ਦੀ ਮਹਾਨਤਾ ਤ੍ਰੈਗੁਣੀ ਹੋ ਗਈ। ਸਿੱਖਾਂ ਦਾ ਇਹ ਮਹਾਨ ਸਤਿ-ਸੰਗ ਸਾਰਾ ਵੈਸਾਖ ਮਹੀਨਾ ਬਣਿਆ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ।

ਪਹਿਲੇ ਤਿੰਨਾਂ ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਦੀ ਸੰਸਾਰਕ ਪੀੜ੍ਹੀ, ਰਘੁਬੰਸੀ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮਚੰਦ੍ਰ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਦੋ ਭਰਾਵਾਂ ਭਰਥ ਤੇ ਲਛਮਨ ਨਾਲ ਜਾ ਮਿਲਦੀ ਹੈ; ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਵੈਸਾਖੀ ਪੁਰਬ ਭੀ ਤਿੰਨਾਂ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਬਣ ਗਇਆ।

ਰਣਧੀਰ ਸਿੰਘ
ਮਿਤੀ 15.6.67

ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਪਹਾੜ, ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਫੁਲ, ਉਸਦੇ ਪੰਛੀਆਂ ਦੇ ਗੀਤ, ਉਸ ਦੀਆਂ ਮੁਟਿਆਰਾਂ ਦੇ ਹਾਸੇ, ਸਮੁਚੇ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਤਰਤੀਬ ਵਿੱਚ ਪੰਜਾਬ ਦੀਆਂ ਸਮਸਿਆਵਾਂ ਉਸਦੇ ਸਾਹਿਤ ਚੋਂ ਸਾਮਰਤਖ ਦਿਸਣ—ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਹੋਵੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ।

ਸਾਹਿਤ ਉਚਾ ਉਠੇ ਜ਼ਾਤੀ ਸ਼ੁਹਰਤ ਦੀ ਭੁੱਖ ਤੋਂ, ਉਸਦੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਿਚੋਂ ਨਿਰਵੈਰਤਾ ਅਤੇ ਨਿਰਭੈਤਾ ਲਿਸ਼ਕਦੀਆਂ ਦਿਸਣ ਇਹੀ ਉਤੇਜਨਾ ਹੈ ਜੋ ਇਸ ਪਲ ਬੇਕਰਾਰੀ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ।

23.1.1967 —ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਿੰਘ ਸਫ਼ੀਰ

ਇਹ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਬੜਾ ਦੁਰਭਾਗ ਹੈ
ਕਿ ਅਸੀ ਕਈ ਵਾਰੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਸਵਾਲ ਨੂੰ ਧਰਮ
ਨਾਲ ਜੋੜ ਲੈਂਦੇ ਹਾਂ ਜਦ ਕਿ ਅਸਲ ਵਿਚ ਭਾਸ਼ਾ
ਦਾ ਧਰਮ ਦੇ ਨਾਲ ਕੋਈ ਸਿੱਧਾ ਸੰਬੰਧ ਨਹੀਂ
ਹੈ। ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਕੰਮ ਹੈ ਸਾਡੇ ਦਿਲ ਦੇ ਭਾਵਾਂ
ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਨ ਕਿਸੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਪ੍ਰਗਟਾਉਣਾ. ਇਸ
ਕਰਕੇ ਭਾਸ਼ਾ ਮੁਖ ਰੂਪ ਤੇ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜਿਕ ਜੀਵਨ
ਦਾ ਅੰਗ ਹੈ, ਪਰ ਧਰਮ ਸਾਡੀ ਅੰਦਰੂਨੀ ਤੇ
ਨਿਜੀ ਚੀਜ਼ ਹੈ। ਦੋਹਾਂ ਨੂੰ ਆਪਸ ਵਿਚ ਰਲਾ-
ਉਣਾ ਠੀਕ ਨਹੀਂ।

ਦੇਵੀ ਦੱਤ ਸ਼ਰਮਾ
23.6.67

ਇਹ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਬੜਾ ਦੁਰਭਾਗ ਹੈ ਕਿ ਅਸੀ ਕਈ ਵਾਰੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਸਵਾਲ ਨੂੰ ਧਰਮ ਨਾਲ ਜੋੜ ਲੈਂਦੇ ਹਾਂ, ਜਦ ਕਿ ਅਸਲ ਵਿਚ ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਧਰਮ ਦੇ ਨਾਲ ਕੋਈ ਸਿੱਧਾ ਸੰਬੰਧ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਕੰਮ ਹੈ ਸਾਡੇ ਦਿਲ ਦੇ ਭਾਵਾਂ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਨ ਕਿਸੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਪ੍ਰਗਟਾਉਣਾ, ਇਸ ਕਰਕੇ ਭਾਸ਼ਾ ਮੁਖ ਰੂਪ ਤੇ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜਿਕ ਜੀਵਨ ਦਾ ਅੰਗ ਹੈ, ਪਰ ਧਰਮ ਸਾਡੀ ਅੰਦਰੂਨੀ ਤੇ ਨਿਜੀ ਚੀਜ਼ ਹੈ। ਦੋਹਾਂ ਨੂੰ ਆਪਸ ਵਿਚ ਰਲਾਉਣਾ ਠੀਕ ਨਹੀਂ।

23.6.67 —ਦੇਵੀ ਦੱਤ ਸ਼ਰਮਾ

ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਦੇ

ਪੰਜਾਬ ਤਕ

ਸੀਮਿਤ ਨ ਰਹੇ।

ਅਸੀ ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਹਾਂ।

ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਨੂੰ
ਪੰਜਾਬ ਤਕ ਸੀਮਿਤ ਨ ਰਖੋ

ਅਸੀਂ ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਹਾਂ।
ਕਾਲਾਤੀਤ
ਦੇਸ਼ਾਤੀਤ
ਸਬਦਾਤੀਤ
ਅਰਥਾਤੀਤ

ਸ਼ਬਦਾਂ ਤੋਂ ਪਰ੍ਹੇ।
ਅਰਥਾਂ ਤੋਂ ਪਰ੍ਹੇ।
ਦੇਸ਼ ਤੋਂ ਪਰ੍ਹੇ।
ਕਾਲ਼ ਤੋਂ ਪਰ੍ਹੇ।
ਆਪਣੇ ਆਪ ਤੋਂ ਪਰ੍ਹੇ।

12 ਜਨਵਰੀ 1967 —ਦੇਵਿੰਦਰ ਸਤਿਆਰਥੀ

ਅਗਿਆਨ ਅਤੇ ਹਉਮੈ ਦੇ ਅਧੀਨ ਕੀਤੇ ਕਰਮ ਪੁਨਰ ਜਨਮ ਦਾ ਕਾਰਨ ਬਣਦੇ ਹਨ। ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਨਾਮ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਤੋਂ ਬਿਨਾ ਜਨਮ ਮਰਨ ਦਾ ਗੇੜ ਕਟਣਾ ਔਖਿਆ ਹੈ। ਪੁੰਨ ਅਤੇ ਪਾਪ, ਸੁਖ ਅਤੇ ਦੁਖ — ਇਹ ਸਭ ਤ੍ਰੈਗੁਣੀ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਉਤਪਤੀ ਸਮੇਂ ਨਾਲ ਹੀ ਆਏ। ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਭਗਤ ਨੂੰ ਸੰਸਾਰ ਵਿਚ ਮਾਇਆ ਦੀ ਦੌੜ ਵਿਚਲਿਤ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ, ਨਾ ਹੀ ਉਹ ਦੁਖ ਤੋਂ ਭੈਭੀਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਸੱਚਾ ਸਿਖ ਪੁੰਨ ਪਾਪ, ਸੁਖ ਦੁਖ ਤੋਂ ਉਪਰ ਉਠ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਉਹ ਪ੍ਰਭੂ ਨੂੰ ਆਤਮ-ਸਮਰਪਣ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਉਸ ਦਾ ਆਦਰਸ਼ ਕੇਵਲ ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਚਰਨ-ਕਮਲਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਹੈ।

ਸੁਰਿੰਦਰ ਸਿੰਘ
ਕੋਹਲੀ

20-6-67

ਮਾਇਆ ਅਤੇ ਹਉਮੈ ਦੇ ਅਧੀਨ ਕੀਤੇ ਕਰਮ ਪੁਨਰ ਜਨਮ ਦਾ ਕਾਰਨ ਬਣਦੇ ਹਨ। ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਨਾਮ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਤੋਂ ਬਿਨਾ ਜਨਮ ਮਰਨ ਦਾ ਗੇੜ ਚਲਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਪੁੰਨ ਅਤੇ ਪਾਪ, ਸ੍ਵਰਗ ਅਤੇ ਨਰਕ—ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਤ੍ਰੈਗੁਣੀ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਉਤਪਤੀ ਮਗਰੋਂ ਵਰਤੋਂ ਵਿਚ ਆਏ। ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਭਗਤਾਂ ਨੂੰ ਸ੍ਵਰਗ ਵਿਚ ਜਾਣ ਦੀ ਵੀ ਇੱਛਾ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦੀ, ਨਾ ਹੀ ਉਹ ਨਰਕ ਤੋਂ ਭੈਭੀਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਸੱਚਾ ਸਿਖ ਪੁੰਨ ਪਾਪ, ਸ੍ਵਰਗ ਨਰਕ ਤੋਂ ਉਪਰ ਉਠ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਉਹ ਪ੍ਰਭੂ ਨੂੰ ਆਤਮ-ਸਮਰਪਣ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਉਸ ਦਾ ਆਦਰਸ਼ ਕੇਵਲ ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਚਰਨ-ਕੰਵਲਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਹੈ।

20.6.67 —ਸੁਰਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਕੋਹਲੀ

ਮੇਰੇ ਜਨਮ ਵੇਲੇ ਮੇਰੀਆਂ ਭੈਣਾਂ ਤੇ ਮਾਸੀਆਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਪ੍ਰਸੰਨਤਾ ਦੇ ਉਦਗਾਰ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਾਕਾਂ ਤੇ ਗੀਤਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਗਟ ਕੀਤੇ ਉਹ ਮੇਰੇ ਅਚੇਤ ਮਨ ਪੁਰ ਅਵੱਸ਼ ਪ੍ਰਭਾਵ ਰਖਦੇ ਰਹੇ। ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲੀ ਦੀ ਮਧੁਰ ਧੁਨੀ ਨੂੰ ਮਾਣਕੇ ਮੈਂ ਇਕ ਸਮਾਜਕ ਪ੍ਰਾਣੀ ਬਣਿਆਂ। ਮੇਰੀ ਪਿਆਰੀ ਮਾਂ ਦੇ ਦੁਧ ਵਾਂਗ ਇਹ ਬੋਲੀ ਮੇਰੀ ਰੋਮ ਰੋਮ 'ਚ ਰਚ ਗਈ ਅਤੇ ਮੇਰੇ ਅੰਤਹਕਰਣ ਵਿਚ ਇਸ ਪ੍ਰਤਿ ਮਾਂ ਵਰਗਾ ਹੀ ਪਿਆਰ ਵਿਗਸਦਾ ਰਹਿਆ। ਮਾਂ ਦੀ ਝੋਲੀ ਸੁਰਗ ਸਮਾਨ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਮਾਤ ਬੋਲੀ ਭੀ ਸਾਨੂੰ ਸੁਚੱਜਾ, ਵਿਚਾਰਸ਼ੀਲ ਨਾਗਰਿਕ ਬਣਾਕੇ ਸੁਰਗਾਂ ਵਰਗਾ ਸੁਖ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਇਸੇ ਲਈ ਮਾਤ ਬੋਲੀ ਦੀ ਮਹੱਤਾ ਬਹੁਤ ਵਿਸ਼ਾਲ ਹੈ।

15.6.67

—ਗੁਰਦੇਵ ਸਿੰਘ

ਬੋਲੀ ਦਾ ਧਰਮ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ
ਜੋੜਨਾ ਠੀਕ ਨਹੀਂ। ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ
ਇਹ ਵਿਚਾਰ ਕਰਨਾ ਭਾਵੇਂ ਸ਼ੋਭਾ ਨਹੀਂ ਦੇਂਦਾ
ਕਿ ਕਿਸੇ ਬੋਲੀ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਧਰਮ ਦੇ ਲੋਕਾਂ
ਦੀ ਕਿੰਨੀ ਦੇਣ ਹੈ, ਪਰ ਅੱਜ ਇਹ ਜ਼ਰੂਰਤ
ਮਹਿਸੂਸ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ ਕਿ ਆਪਣੇ ਹਿੰਦੂ ਵੀਰਾਂ ਨੂੰ
ਸਮਝਾਇਆ ਜਾਵੇ ਤੇ ਦੱਸਿਆ ਜਾਵੇ ਕਿ ਜਿਸ ਬੋਲੀ
ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਆਪ ਪਾਲ-ਪੋਸ ਕੇ ਜਵਾਨ ਕੀਤਾ ਹੈ,
ਅੱਜ ਉਸ ਦਾ ਵਿਰੋਧ ਕਰਨਾ - ਠੀਕ ਨਹੀਂ।

ਵਿਸ਼ਵਾ ਨਾਥ ਤਿਵਾੜੀ

ਅਗਸਤ, 15, 1967.

ਬੋਲੀ ਦਾ ਧਰਮ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ ਜੋੜਨਾ ਠੀਕ ਨਹੀਂ। ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਇਹ ਵਿਚਾਰ ਕਰਨਾ ਭਾਵੇਂ ਸ਼ੋਭਾ ਨਹੀਂ ਦੇਂਦਾ ਕਿ ਕਿਸੇ ਬੋਲੀ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਧਰਮ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਕਿੰਨੀ ਦੇਣ ਹੈ, ਪਰ ਅੱਜ ਇਹ ਜ਼ਰੂਰਤ ਮਹਿਸੂਸ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ ਕਿ ਆਪਣੇ ਹਿੰਦੂ ਵੀਰਾਂ ਨੂੰ ਸਮਝਾਇਆ ਜਾਵੇ ਤੇ ਦੱਸਿਆ ਜਾਵੇ ਕਿ ਜਿਸ ਬੋਲੀ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਆਪ ਪਾਲ-ਪੋਸ ਕੇ ਜਵਾਨ ਕੀਤਾ ਹੈ, ਅੱਜ ਉਸਦਾ ਵਿਰੋਧ ਕਰਨਾ—ਠੀਕ ਨਹੀਂ।

ਅਗਸਤ, 15 1967 —ਵਿਸ਼ਵਾ ਨਾਥ ਤਿਵਾੜੀ

ਪਾਣਿਨੀ ਦੇ ਵਿਆਕਰਣ ਦਾ ਮਹਤ੍ਵ ਬਹੁਤ ਘਟ ਲੋਕ ਸਮਝਦੇ ਹਨ। ਵਾਸਤਵ ਵਿਚ ਉਸ ਨੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਅਨੁਪਮ ਸੇਵਾ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਪਾਣਿਨੀ ਦਾ ਵਿਆਕਰਣ ਸਮੇਂ ਦੀ ਇਕ ਬੜੀ ਭਾਰੀ ਆਵੱਸ਼ਕਤਾ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਸੀ। ਆਰਿਆਈ ਭਾਸ਼ਾ ਬੜੀ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਵਿਚ ਫੈਲ ਰਹੀ ਸੀ ਜੋ ਆਰਿਆਈ ਨਸਲ ਦੇ ਨਹੀਂ ਸਨ। ਅਨਾਰੀਆ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਬੋਲਣ ਨਾਲ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਸ਼ੁੱਧਤਾ ਉਤੇ ਸੱਟ ਵਜਣੀ ਸੁਭਾਵਿਕ ਸੀ ਜਿਸ ਦਾ ਉੱਲੇਖ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਗ੍ਰੰਥਾਂ ਵਿਚ ਸ੍ਪਸ਼ਟ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਦੂਸਰੇ ਪਾਸੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਭਿੰਨ ਭਿੰਨ ਭਾਗਾਂ ਦੀਆਂ ਬੋਲੀਆਂ ਆਪਣੇ ਵਿਕਾਸ ਦੀ ਤੋਰ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਤੁਰਦੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਆਰੀਆ ਭਾਸ਼ਾ ਤੋਂ ਦੂਰ ਹੁੰਦੀਆਂ ਜਾ ਰਹੀਆਂ ਸਨ।

21.7.67 —ਵਿਦਿਆਭਾਸ਼ਕਰ ਅਰੁਣ

कुछ साहित्यिक रचनाएं

प्रायः भाषा सिखाने वाली पुस्तकों में साहित्य की कोई चर्चा नहीं होती, किन्तु भाषा का अभ्यास वाङ्मय के अध्ययन बिना निर्बल और अधूरा जी रह जाता है। पंजाबी जीवन की विशेषता तो यहां के निवासियों की संस्कृति, दिनचर्या और भावभंगिमा की झांकियों द्वारा ही प्रकट होती है। इसी लिए यहाँ पंजाबी साहित्य में से कुछ संक्षिप्त उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। इन की सुगंधि का महत्व व्याकरण के नियमों से अधिक है।

पाठकगण अपनी अपनी रुचि के अनुसार साहित्यकारों की रचनाएं पढ़ने का उद्यम करेंगे, ऐसी आशा रखना अवाँछनीय नहीं है।

पंजाबी उदाहरणों के लिए हिन्दी रूपान्तर भी दिए गए हैं, किन्तु इन के बिना भी भाव समझने का प्रयत्न कीजिए।

ਵਾਰਸ ਸ਼ਾਹ	**बारस शाह**
ਕੀਕੂੰ ਕੰਨ ਪੜ੍ਹਾਇਕੇ ਜੀਂਵਦਾ ਹੈ,	कैसे कान फड़वा के जी रहा है
ਗਲ ਸੁਣਦਿਆਂ ਹੀ ਜਿੰਦਾ ਗਈ ਜੇ ਨੀ।	बात सुनते ही जान गई है री।
ਉਹਦਾ ਦੁਖੜਾ ਰੋਵਣਾ ਜਦੋਂ ਸੁਣਿਆ,	उस का दुःख औ' रुदन सुना जब से
ਮੁਠੀ ਮੀਟ ਕੇ ਮੈਂ ਬਹਿ ਗਈ ਜੇ ਨੀ।	बन्द कर मुट्ठी बैठ गई हूं री॥
ਮਸੂ ਭਿੰਨੇ ਦਾ ਨਾਉਂ ਜਾ ਲੈਂਦੀਆਂ ਓ,	भीगी मसों वालों का नाम जब तुम लेती हो,
ਜਿੰਦ ਸੁਣਦਿਆਂ ਹੀ ਲੁੜ੍ਹ ਗਈ ਜੇ ਨੀ।	तब वारती प्राण हूं री।
ਕਿਵੇਂ ਵੇਖੀਏ ਉਸ ਮਸਤਾਨੜੇ ਨੂੰ,	कैसे देखिए मुग्ध मस्तान प्रिय को
ਜੇਂਦੀ ਧੁੰਮ ਤ੍ਰਿੰਜਣੀਂ ਪਈ ਜੇ ਨੀ।	भटू–मंडली में मची धूम जिस की।
ਵੇਖਾਂ ਕੇਹੜੇ ਦੇਸ ਦਾ ਉਹ ਜੋਗੀ	देखूं कौन से देश का वह जोगी
ਉਸ ਤੋਂ ਕੌਣ ਪਿਆਰੀ ਰੁਸ ਗਈ ਜੇ ਨੀ।	उस से कौन प्यारी रूठ गई है री॥

ਇਹ ਕਾਵਿ-ਟੋਟਾ 'ਹੀਰ' ਦੇ ਕਿੱਸੇ ਵਿਚੋਂ ਲਇਆ ਗਇਆ ਹੈ। ਰਾਂਝਾ ਜਦੋਂ ਨਿਰਾਸ ਹੋ ਕੇ ਕੰਨ ਪੜਵਾ ਲੈਂਦਾ ਹੈ, ਉਹ ਹੀਰ ਦੇ ਦਰਸ਼ਨ ਲਈ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਹੀਰ ਇਹ ਬ੍ਰਿਤਾਂਤ ਸੁਣ ਕੇ ਦੁਖ ਵਿਚ ਆਖਦੀ ਹੈ।

ਪ੍ਰੋ: ਪੂਰਨ ਸਿੰਘ	प्रो० पूरन सिंह
ਇਹ ਬੇਪਰਵਾਹ ਪੰਜਾਬ ਦੇ,	ये बेपरवाह पंजाब के (वासी)
ਮੌਤ ਨੂੰ ਮਖ਼ੌਲਾਂ ਕਰਨ,	मौत को ठठोल करते
ਮਰਨ ਥੀਂ ਨਹੀਂ ਡਰਦੇ!	मरने से नहीं डरते !
ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਇਹ ਕਰਨ ਗ਼ੁਲਾਮੀ	प्यार से ये करें गुलामी
ਜਾਨ ਕੋਹ ਆਪਣੀ ਵਾਰ ਦਿੰਦੇ	अपनी जान मार कर वार देते
ਪਰ ਟੈਂ ਨਾ ਮੰਨਣ ਕਿਸੀ ਦੀ	पर हेकड़ी न मानते किसी की
ਖਲੋ ਜਾਣ ਡਾਗਾਂ ਮੋਢੇ ਤੇ	मोंढे पर लाठियाँ कर कर ऊंची
ਉਲਾਰ ਕੇ।	खड़े जो जाते डट कर !
ਮੰਨਣ ਬਸ ਇਹ ਆਪਣੀ ਜਵਾਨੀ ਦੇ	मानते ये केवल
ਜੋਰ ਨੂੰ ਅਖੜ-ਖਾਂਦ, ਅਲਬੇਲੇ, ਧੁਰ ਥੀਂ	अपनी जवानी के ज़ोर को।
ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਦੇ	नटखट, अलबेले धुर से
ਅਜ਼ਾਦ ਕੀਤੇ ਇਹ ਬੰਦੇ।......	सद् गुरुओं के आज़ाद किये ये बंदे।
ਪਿਆਰ ਦਾ ਨਾਮ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਿੱਖਿਆ,	प्यार का नाम इन्हों ने सीखा
ਦਿਲ ਜਾਨ ਵਾਰਨ ਇਹ ਪਿਆਰ ਤੇ,	दिल जान वारें ये प्यार पर
ਸੱਚੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਵਾਸੀ ਦਾ ਇਹ	सच्चे पंजाब के वासी का यह
ਈਮਾਨ ਹੈ,	ईमान है।
ਰਾਂਝੇਟੜੇ ਦੇ ਨਿੱਕੇ ਵੱਡੇ ਭਰਾ ਸਾਰੇ,	राँझटे के छोटे बड़े भाई सारे
ਬੇਲਿਆਂ ਤੇ ਰੱਖਾਂ ਵਿਚ ਕੂਕਾਂ ਮਾਰਦੇ!	जगल वनस्थली में कूकं रहे !

ਇਹ ਕਵਿਤਾ 'ਜਵਾਨ ਪੰਜਾਬ ਦੇ' ਪ੍ਰੋ: ਪੂਰਨ ਸਿੰਘ ਦੀ ਪੁਸਤਕ 'ਖੁਲ੍ਹੇ ਮੈਦਾਨ' ਵਿਚੋਂ ਲਈ ਗਈ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਕਵੀ ਨੇ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ ਦਸੀ ਹੈ।

ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਘ	भाई वीर सिंह
ਸ਼ਹਿਰ, ਗਿਰਾਂ, ਮਹਿਲ ਨਹੀਂ ਮਾੜੀ,	शहर ग्राम महल नहीं मंडप,
ਕੁੱਲੀ ਢੋਕ ਨਾ ਭਾਲਾਂ	पुरा कुटी न ढूंढूं
ਮੀਂਹ, ਹਨੇਰੀ, ਗੜੇ, ਧੁੱਪ ਵਿਚ,	वर्षा, आँधी, तुषारए धूप में,
ਨੰਗੇ ਸਿਰ ਦਿਨ ਘਾਲਾ।	नंगे सिंर दिन काटूं।

ਲੋ ਅਰਸ਼ਾਂ ਦੇ ਵਾਲੀ ਵੰਨੇ,	लौ स्वर्गों के स्वामी प्रति
ਹੋਰ ਲਾਲਸਾ ਨਾਹੀਂ।	और लालसा नाहीं।
ਗਿੱਠ ਥਾਉਂ ਧਰਤੀ ਤੋਂ ਲੀਤੀ,	हाथ–भर जगह धरती से ली है।
ਵਧਾਂ ਟਿਕਾਂ ਇਸ ਮਾਹੀਂ।	बढ़ूं टिकूं इस माहीं।
ਫੁੱਲਾ, ਫਲਾਂ, ਖਿੜਾਂ, ਰਸ ਚੋਵਾਂ,	फूलूं फलूँ, खिलूं रस घूता
ਰਹਿ ਅਛੋਤ ਟੁਰ ਜਾਵਾਂ।	रह अछूत चल बसता।
ਕੁਲੀ, ਗੁਲੀ, ਜੁਲੀ ਦੁਨੀਆਂ	घर, रोटी औ' कपड़ा दुनिया !
ਬਿਨ ਮੰਗੇ ਮਰ ਜਾਵਾਂ।	बिन माँगे मर जाता

ਇਹ ਪੰਗਤੀਆਂ ਕਵਿਤਾ 'ਕਿੱਕਰ' ਵਿਚੋਂ ਲਈਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਕਵੀ ਨੇ ਕਿੱਕਰ ਦੇ ਇਕਰਸ ਵਿਰਾਗ ਦਾ ਚਿਤ੍ਰ ਖਿਚਿਆ ਹੈ। ਵੇਖੋ ਸੰਗ੍ਰਹਿ 'ਲਹਿਰਾਂ ਦੇ ਹਾਰ'।

ਅਮ੍ਰਿਤਾ ਪ੍ਰੀਤਮ	अमृता प्रीतम
ਅਜ ਆਖਾਂ ਵਾਰਸਸ਼ਾਹ ਨੂੰ	वारह शाह को आज कहूं मैं
ਕਿਤੋਂ ਕਬਰਾਂ ਵਿਚੋਂ ਬੋਲ!	कबरों में से बोल !
ਤੇ ਅੱਜ ਕਿਤਾਬੇ ਇਸ਼ਕ ਦਾ	आज किताब–ए–इश्क का
ਕੋਈ ਅਗਲਾ ਵਰਕਾ ਫੋਲ!	कोई अगला पन्ना खोल !
ਇਕ ਰੋਈ ਸੀ ਧੀ ਪੰਜਾਬ ਦੀ	इक बेटी रोई पंजाब की
ਵੇ ਤੂੰ ਲਿਖ ਲਿਖ ਮਾਰੇ ਵੈਣ,	तु लिख लिख गाए बैन।
ਅੱਜ ਲਖਾਂ ਧੀਆਂ ਰੋਂਦੀਆਂ	पुत्रियाँ लाखों रो रहीं
ਤੇ ਤੈਨੂੰ, ਵਾਰਸ ਸ਼ਾਹ ਨੂੰ ਕਹਿਣ।	तुझ बारस प्रति पुकार।
ਵੇ ਦਰਦਮੰਦਾਂ ਦਿਆਂ ਦਰਦੀਆ!	हे ददेमंदों के मित्रवर !
ਉਠ! ਤਕ ਆਪਣਾ ਪੰਜਾਬ,	उठ देख अपना पंजाब,
ਅੱਜ ਬੇਲੇ ਲਾਸ਼ਾਂ ਵਿੱਛੀਆਂ	बन में लाशें बिछ गईं।
ਤੇ ਲਹੂ ਦੀ ਭਰੀ ਚਨਾਬ।......	औ' लहू से भरी चनाब।
ਅੱਜ ਸਭੇ ਕੈਦੋ ਬਣ ਗਏ	सब कैदो आज हैं बन गए
ਹੁਸਨ ਇਸ਼ਕ ਦੇ ਚੋਰ।	रे प्रेम हुस्न के चोर।
ਅੱਜ ਕਿਥੋਂ ਲਿਆਈਏ ਟੋਲਕੇ।	लाएं कहां से ढूंढ कर
ਵੇ ਵਾਰਸ ਸ਼ਾਹ ਇਕ ਹੋਰ।	रे वारस शाह इक और।

ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਵੰਡ ਮਗਰੋਂ ਜੋ ਫ਼ਸਾਦ ਹੋਏ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਪੰਜਾਬ ਦੀਆਂ ਧੀਆਂ ਨੂੰ ਵਧੇਰੇ ਦੁਖ ਸਹਣੇ ਪਏ। ਕਵਿਤ੍ਰੀ ਨੇ ਭਾਵੁਕਤਾ ਨਾਲ ਇਹ ਕਵਿਤਾ 'ਵਾਰਸ਼ ਸ਼ਾਹ ਨੂੰ' ਲਿਖੀ ਹੈ।

ਲੋਕ-ਸਾਹਿਤ	लोक साहित्य
ਅੰਨ੍ਹਾ ਵਿਆਜ ਸ਼ਾਹ ਨੂੰ ਖੋਵੇ	अंधा ब्याज शाह को खोए,
ਰੰਨ ਨੂੰ ਖੋਵੇ ਹਾਂਸੀ।	नारी को खोए हांसी।
ਆਲਸ ਨੀਂਦ ਕਿਰਸਾਨ ਨੂੰ ਖੋਵੇ	आलस्य नींद किसान को खोए
ਜਿਵੇਂ ਚੋਰ ਨੂੰ ਖਾਂਸੀ ॥ ੧ ॥	जैसे चोर को खाँसी॥ १॥
ਕੱਲਰ ਖੇਤ, ਕਸੂਤ ਹਲ	कल्लर खेत, बेढब हल
ਘਰ ਕਲਹਿਣੀ ਨਾਰ।	और घर में कुलच्छिनी नार।
ਚੌਥੇ ਮੈਲੇ ਕਪੜੇ	चौथे मैले कपड़े
ਮਰਗ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਚਾਰ ॥ ੨ ॥	मृत्यु–चिह्न ये चार॥ २॥
ਕੱਲਰ ਖੇਤਰ, ਨ ਲੱਗੇ ਰੁੱਖ।	कल्लर खेत न लगे वृक्ष
ਖੇਤ ਲਗ ਲਗ ਜਾਂਦੀ ਸੁੱਕ ॥	खेती लग लग जाए सूख
ਭਾਵੇਂ ਕਿਤਨੀਆਂ ਕਹੀਆਂ ਪੁਟ।	चाहे कितनी चलाए कुदाल
ਉਥੇ ਮੂਲ ਨਾ ਲਥੇ ਭੁੱਖ ॥ ੩ ॥	वहाँ निपट न उतरे भूख ॥ ३॥
ਅੱਤ ਨਾ ਬਾਹਲੇ ਮੇਘਲੇ।	अति वृष्टि न अच्छी मेघ की
ਅੱਤ ਨਾ ਬਾਹਲੀ ਧੁੱਪ ॥	अति आतप न सुहाए
ਅੱਤ ਨਾ ਬਾਹਲਾ ਬੋਲਣਾ	अति भाषण न काम का
ਅੱਤ ਨਾ ਬਾਹਲੀ ਚੁੱਪ ॥ ੪ ॥	अति चुप काम न आए॥ ४॥

ਇਨ੍ਹਾਂ ਅਖਾਣਾਂ ਵਿਚ ਜੀਵਨ ਦੇ ਉਪਯੋਗੀ ਤਥ ਦਿਤੇ ਹਨ।

ਕੁੜੀ ਦਾ ਵਿਦਾਈ ਗੀਤ	कन्या का विदा गीत
ਸਾਡਾ ਚਿੜੀਆਂ ਦਾ ਚੰਬਾ ਵੇ ਬਾਬਲਾ	हम चिड़ियों की डार, हे बाबुल
ਅਸੀਂ ਉਡ ਜਾਣਾ।	हमें उड़ जाना।
ਸਾਡੀ ਲੰਮੀ ਉਡਾਰੀ ਵੇ ਬਾਬਲਾ!	लम्बी उड़ान हमारी हे बाबुल !
ਅਸੀਂ ਦੂਰ ਜਾਣਾ।	हमें उड़ जाना।
ਔਹ! ਮੇਰੀਆਂ ਗੁੱਡੀਆਂ	'वे रहीं मेरी गुड़ियाँ
ਵੇ ਬਾਬਲਾ! ਅਜ ਕੌਣ ਖੇਡੇ?	हे बाबुल ! आज कौन खेले ?'
'ਮੇਰੀਆਂ ਖੇਡਣ ਪੋਤ੍ਰੀਆਂ	'मेरी खेलेंगी पोतियां आप
ਜਾਈਏ ਘਰ ਜਾਹ ਆਪਣੇ।'	बेटी ! तु जा घर अपने।'
'ਮੇਰਾ ਛੁਟਾ ਕਸੀਦੜਾ	'मेरा छूटा कसीदा आज
ਵੇ ਬਾਬਲਾ! ਅੱਜ ਕੌਣ ਕੱਢੇ?	हे बाबुल कौन काढ़े ?

'ਮੇਰੀਆਂ ਕੱਢਣ ਪੋਤ੍ਰੀਆਂ,	मेरी पोतियां काढ़ेंगी आप
ਨੀ ਧੀਏ! ਘਰ ਜਾਹ ਆਪਣੇ।'	हे बेटी ! तू जा घर अपने ॥

ਕੁੜੀ ਆਪਣੇ ਵਿਆਹ ਮਗਰੋਂ ਜਦੋਂ ਪੇਕਾ ਘਰ ਛਡਣ ਲਗਦੀ ਹੈ ਇਹ ਵਿਦਾਈ ਗੀਤ ਉਸ ਵੇਲੇ ਦੇ ਭਾਵਾਂ ਦਾ ਚਿਤ੍ਰਨ ਕਰਦਾ ਹੈ।

ਸਾਊਪੁਣਾ

ਸਾਊ ਲੋਕ 'ਭਈ ਨਈਂ ਦੇ ਸਾਈਂ' ਹੁੰਦੇ ਸਨ। ਚੰਗੇ ਖਾਂਦੇ ਤੇ ਸੋਹਣਾ ਹੰਢਾਂਦੇ ਸਨ। ....ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਪਹਿਰਾਵਾ ਠੁਕ ਅਬਰੋ ਵਾਲਾ ਤੇ ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਲਈ ਨਮੂਨੇ ਦਾ ਕੰਮ ਦਿੰਦਾ ਸੀ। ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਬੋਲ ਮਿੱਠੇ, ਕੋਮਲ ਤੇ ਸਭਿੱਤਾ ਵਾਲੇ ਹੁੰਦੇ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮੌਕੇ ਸਿਰ ਪਹਿਲੀ ਗੱਲ ਆਖਣ ਦੀ ਜਾਚ ਆਉਂਦੀ ਸੀ। ਚਾਲ ਢਾਲ ਵਿਚ ਬਿਨਾਂ ਹੈਕੜ ਦੇ ਗੰਭੀਰ, ਅਝੱਕ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਨਿਮ੍ਹੀ ਨਿਮ੍ਹੀ ਲੱਜਾ ਵਾਲੇ ਤੇ ਹੋਛੇ ਦਿਖਾਵੇ ਤੋਂ ਬਿਨਾ ਉਦਾਰ-ਚਿੱਤ ਤੇ ਮਿਤਰਾਨਾ ਸਲੂਕ ਵਾਲੇ ਹੁੰਦੇ ਸਨ। ਆਪਣੀ ਅਣਖ ਉਤੇ ਮਰ ਮਿਟਣਾ, ਬਾਂਹ ਫੜੀ ਦੀ ਲਾਜ ਰਖਣੀ, ਬਚਨ ਦਾ ਪੱਕਾ ਹੋਣਾ, ਔਕੜ ਦੇ ਵੇਲੇ ਢੇਰੀ ਨ ਢਾਹ ਬਹਿਣਾ, ਬਲਕਿ ਖਿੜੇ ਮਥੇ ਹੌਸਲੇ ਨਾਲ ਮੁਸੀਬਤ ਦਾ ਟਾਕਰਾ ਕਰਨਾ—ਇਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਖਾਸ ਗੁਣ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

—ਪ੍ਰਿੰ. ਤੇਜਾ ਸਿੰਘ

ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਤੇਜਾ ਸਿੰਘ ਆਧੁਨਿਕ ਪੰਜਾਬੀ ਗੱਦ ਦੇ ਉਘੇ ਲਿਖਾਰੀ ਸਨ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਲੇਖ ਬਹੁਤ ਸੁੰਦਰ ਤੇ ਠੇਠ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਚ ਅੰਕਿਤ ਹੋਏ ਹਨ। ਇਹ ਟੋਟਾ ਵੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਇਕ ਲੇਖ ਦਾ ਅੰਸ਼ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਇਹ ਪੁਸਤਕਾਂ ਪੜ੍ਹਨ-ਯੋਗ ਹਨ :

ਨਵੀਆਂ ਸੋਚਾਂ, ਸਹਿਜ ਸੁਭਾ, ਸਭਿਆਚਾਰ, ਆਰਸੀ, ਘਰ ਦਾ ਪਿਆਰ।

साधुता

साधुजन जल थल के स्वामी होते थे। अच्छा खाते और सुन्दर पहनते थे। ....उनका पहरावा उपयुक्त प्रतिष्ठा वाला एवं आम लोगों के लिए आदर्श का काम देता था। विशेष कर उन के बोल मीठे, कोमल एवं सभ्यता वाले होते थे।

उनको मौके पर पहली बात कहने का ढंग आता था। चाल ढाल में बिना हेकड़ के गंभीर, निर्भीक होने के बावजूद हलकी सी लज्जा वाले और ओछे दिखावे के बिना उदार–चित एवं मित्रता के व्यवहार वाले होते थे। अपनी आन पर मर मिटना, जिसका हाथ पकड़ते (शरण देने के) कर्तव्य की लाज

रखते। वचन के पक्के होते थे, बल्कि खिले माथे हौसले के साथ मुसीबत का सामना करना—ये उन के खास गुण होते थे।

—ਪ੍ਰਿੰ. ਤੇਜਾ ਸਿੰਹ

ਮੇਰਾ ਪੰਜਾਬ

ਮੇਰੇ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਦਾ ਨਾਂ ਹੈ ਪੰਜਾਬ। ਹਰੇ-ਭਰੇ ਖੇਤਾਂ ਵਾਲਾ, ਮਿੱਠੇ ਨਿਰਮਲ ਪਾਣੀਆਂ ਵਾਲਾ ਖੁਲ੍ਹਾ ਡੁਲ੍ਹਾ ਹਸਦਾ ਰਸਦਾ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਹੈ ਮੇਰਾ ਪੰਜਾਬ।

ਹਾਲੀਆਂ, ਕਾਮਿਆਂ ਤੇ ਜੋਧਿਆਂ ਦੀ ਇਹ ਭੂਮੀ ਸੰਤਾਂ, ਸੂਫ਼ੀਆਂ ਤੇ ਗੁਰੂਆਂ ਦੀ ਬਾਣੀ ਨਾਲ ਗੂੰਜਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਸਾਂਝੀਵਾਲਤਾ, ਉਦਾਰ-ਮਨੁਖਤਾ ਤੇ ਸਹਨਸ਼ੀਲਤਾ ਦੀ ਤਪਸਿਆ ਇਥੋਂ ਦੀ ਵਸੋਂ ਨੇ ਚਿਰਾਂ ਤੋਂ ਸਿੱਖੀ ਹੈ। ਸੁਨਹਰੀ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਉਸਾਰਨ ਵੇਲੇ ਗੁਰੂ ਅਮਰਦਾਸ ਨੇ ਲਾਹੌਰ ਦੇ ਸੂਫ਼ੀ ਮੀਆਂ ਮੀਰ ਦੇ ਹੱਥੋਂ ਇਸ ਦਾ ਨੀਂਹ-ਪੱਥਰ ਰਖਵਾ ਕੇ ਸੰਪ੍ਰਦਾਇਕਤਾ ਅਤੇ ਜਾਤ-ਪਾਤ ਦੇ ਵਿਤਕਰਿਆਂ ਤੋਂ ਜਨ-ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਮੁਕਤ ਕਰਨ ਦਾ ਉਪਰਾਲਾ ਕੀਤਾ।

ਦਿਵਾਲੀ ਦੀ ਰਾਤ ਨੂੰ ਹਰਿਮੰਦਰ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਜਗਮਗ ਮਹਿਮਾ ਵੇਖਣ-ਜੋਗ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਲਿਸ਼ਕਦਾ ਪਾਣੀ, ਟਿਮ-ਟਿਮ ਦੀਵੇ, ਸ਼ਰਧਾਂ-ਭਰੀਆਂ ਅੱਖਾਂ—ਮਾਨੋ ਕਵਿਤਾ ਨੂੰ ਨੂਰ ਦੇ ਅੱਖਰਾਂ ਵਿਚ ਚਿਤ੍ਰਿਆ ਗਇਆ ਹੋਵੇ।

ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਜੀਵਨ-ਕਾਵਿ ਸੂਰਬੀਰਤਾ ਦੀ ਅਣਖ ਰਖਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਅਣਖ ਨੇ ਸਿਕੰਦਰ ਮਹਾਨ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬ ਤੋਂ ਅੱਗੇ ਜਾਣ ਜੋਗਾ ਨਹੀਂ ਸੀ ਛਡਿਆ। ਪੋਰਸ ਦੇ ਜੋਧਿਆਂ ਨੇ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ ਤੇ ਦ੍ਰਿੜ੍ਹਤਾ ਦਾ ਸਬੂਤ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਚ ਅੰਕ੍ਰਿਤ ਕੀਤਾ ਸੀ।

ਬਾਬਰ ਦੇ ਹੱਲੇ ਵੇਲੇ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਨੇ ਖੂਨ ਦੇ ਸੋਹਲੇ ਗਾ ਗਾ ਕੇ ਜਨਤਾ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਦੁਰਦਸ਼ਾ ਤੋਂ ਮੁਕਤ ਹੋਣ ਦਾ ਹੋਸਲਾ ਬਖਸ਼ਿਆ। ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ, ਗੁਰੂ ਤੇਗ਼ ਬਹਾਦਰ, ਅਤੇ ਹਕੀਕਤ ਰਾਇ ਨੇ ਮਹਾਨ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਕਰ ਕੇ ਅਹਿੰਸਾਵਾਦੀ ਸਾਧਨਾਂ ਨਾਲ ਜਨ-ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਦੇ ਉਪਰਾਲੇ ਕੀਤੇ।

ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ਾਂ ਦੇ ਸਮੇਂ ਜਲਿਆਂਵਾਲਾ ਬਾਗ਼ ਵਿਚ ਜਨਰਲ ਓ ਡਾਇਰ ਨੇ ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਬੰਦਿਆਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਅਜ਼ਾਦੀ ਲਈ ਅਵਾਜ਼ ਉਠਾਉਣ ਵਜੋਂ ਗੋਲੀਆਂ ਨਾਲ ਸ਼ਹੀਦ ਕੀਤਾ।

ਮਹਾਰਾਜਾ ਰਣਜੀਤ ਸਿੰਘ ਤੋਂ ਬਾਦ ਲਾਲਾ ਲਾਜਪਤ ਰਾਏ ਨੂੰ 'ਪੰਜਾਬ ਕੇਸਰੀ' ਆਖਿਆ ਗਇਆ। ਭਗਤ ਸਿੰਘ, ਰਾਜਗੁਰੂ, ਸੁਖਦੇਵ ਦੀ ਸਮਾਧ ਸਤਲੁਜ ਦੇ ਕੰਢੇ ਅਜ ਵੀ ਮੋਜੂਦ ਹੈ। ਉਥੋਂ ਅਵਾਜ ਗੂੰਜਦੀ ਹੈ—'ਪਗੜੀ ਸੰਭਾਲ ਜੱਟਾ!'

ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ, ਲੁਧਿਆਣੇ, ਬਟਾਲੇ, ਜਲੰਧਰ ਆਦਿ ਨਗਰਾਂ ਵਿਚ ਭਾਰੀ ਉਦਯੋਗ ਵਧ-ਫੁਲ ਰਹੇ ਹਨ ਅਤੇ ਭਾਖੜੇ ਦੀ ਸਿੰਚਾਈ ਤੇ ਬਿਜਲੀ ਯੋਜਨਾ ਨੇ ਖਾਧ ਸਮਸਿਆ ਨੂੰ

ਹੱਲ ਕਰਨ ਵਿਚ ਚੋਖੀ ਸਹਾਇਤਾ ਦਿਤੀ ਹੈ।

ਵਿਸਾਖੀ ਉਤੇ ਭੰਗੜੇ ਪਾਉਂਦੇ ਗਭਰੂਆਂ ਤੇ ਗਿੱਧਾ ਪਾਉਂਦੀਆਂ ਮੁਟਿਆਰਾਂ ਦੇ ਇਕੱਠ ਮਾਨੋ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਲੋਕ-ਜੀਵਨ ਦੇ ਉਤਸ਼ਾਹ ਨੂੰ ਸਾਕਾਰ ਕਰਨ ਵਿਚ ਰੁਝ ਜਾਂਦੇ ਹਨ—

1. ਤੇਰੇ ਲੌਂਗ ਦਾ ਪਿਆ ਲਿਸ਼ਕਾਰਾ, ਹਾਲੀਆਂ ਦੇ ਹਲ ਰੁਕ ਗਏ।
2. ਜਦੋਂ ਬਿਸ਼ਨੀ ਬਾਗ਼ ਚੋਂ ਨਿਕਲੀ, ਭੌਰਾਂ ਨੂੰ ਭੁਲੇਖਾ ਪੈ ਗਿਆ।
3. ਜਾਗਦੇ ਰਹਿਣਾ, ਜਾਗਦੇ ਰਹਿਣਾ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਰਾਖੀ ਖਾਤਰ, ਤੁਸੀਂ ਜਾਗਦੇ ਰਹਿਣਾ!

—ਡਾ. ਸੀਤਾਰਾਮ ਬਾਹਰੀ

मेरा पंजाब

मेरे प्रदेश का नाम है पंजाब हरे–भरे खेतों वाला; मीठे, निर्मल पानियों वाला; खुला, उदार हंसता मालता प्रदेश है मेरा पंजाब।

कृषिकों, मज़दूरों, योद्धाओं की यह भूमि संतों, सूफियों और गुरुओं की बानी से गूंजती रहती है। सहयोग, उदार मनुष्यता एवं सहनशीलता की तपस्या यहाँ के निवासियों ने देर से सीखी हुई है। स्वर्ण गुरुद्वारा अमृतसर के निर्माण के समय गुरु अमर दास ने लाहौर सूफी मियांमीर के हाथों इसका शिला–न्यास करवा कर मानो साम्प्रदायिकता एवं जाति पांति के बखेड़ों से जनजीवन को मुक्त करने का प्रयत्न किया।

दिवाली की रात को हरिमंदिर साहब की जगमग महिमा देखने योग्य होती है। चमकता पानी, टिमटिमाते दीपक, श्रद्धा–भरी आँखें–मानो कविता को प्रकाश के अक्षरों में चित्रित किया गया हो।

पंजाब का जीवन–काव्य शूरवीरता की आन रखता है। इस आन ने सिकन्दर महान को पंजाब से आगे जाने योग्य नहीं छोड़ा था। पोरस के येद्धाओं ने पंजाब की शक्ति एवं दृढता की साक्षी इतिहास में अंकित की थी।

बाबर के आक्रमण के समय गुरु नानक देव ने खून के सोहले गा गा कर जनता को अपनी दुर्दशा से मुक्त होने का हौसला प्रदान किया। गुरु अर्जुन देव, गुरु तेग बहादुर, एवं हकीकत राए ने महान बलिदान करके अहिंसावादीर साधनों के साथ जन–क्रान्ति के प्रयत्न किए।

अंग्रेजों के समय जलियाँवाला बाग में जनरल ओ डायर ने हजारों आदमियों को अपनी आज़ादी के लिए आवाज उठाने के कारण गोलियों के

साथ शहीद किया।

महाराजा रणजीत सिंह के बाद लाला लाजपत राए को 'पंजाब केसरी' कहा गया। भक्त सिंह, राज गुरु, सुखदेव की समाधि सतलुज के किनाने आज भी मौजूद है। वहाँ आवाज़ गूंजती है—'पगड़ी संभल जट्टा !'

अमृतसर, लुधियाना, बटाला, जालंधर आदि नगरों में भारी उद्योग फल फूल रहे हैं और भाखड़ा की सिंचाई एवं बिजली योजना ने खाद्य समस्या को हल करने में काफी सहायता दी है।

बैसाखी पर भंगड़ा नृत्य करते नवयुवक और 'गिधा' नृत्य करती नवयुवतियों का समूह मानो पंजाब के लोक—जीवन के उत्साह को साकार करने में व्यस्त है :

1. तेरे लौंग दा पिआ लिशकारा, हालीआँ दे हल रुक गए;
2. जदों बिशनी बाग चों निकली, भौंरा नूं भुलेखा पै गिआ।
3. जागदे रहिणा, देश दी राखी खातर। तुसीं जागदे रहिणा !

खण्ड 8

शब्द कोश

(क) हिन्दी-पंजाबी सामान्य शब्दावली

हिन्दी	ਪੰਜਾਬੀ	हिन्दी	ਪੰਜਾਬੀ
अंगीठी	ਅੰਗੀਠੀ	असर	ਅਸਰ
अंगूठी	ਅੰਗੂਠੀ	असामी	ਅਸਾਮੀ
अंगूर	ਅੰਗੂਰ	आटा	ਆਟਾ
अंदर	ਅੰਦਰ	आदत	ਆਦਤ
अंदाजा	ਅੰਦਾਜ਼ਾ	आदमी	ਆਦਮੀ
अगला	ਅਗਲਾ	आदर	ਆਦਰ
अच्छा	ਅੱਛਾ	आना	ਆਉਣਾ
अजब	ਅਜਬ	आप	ਆਪ
अटकना	ਅਟਕਣਾ	आफ़त	ਆਫ਼ਤ
अटकल	ਅਟਕਲ	आरती	ਆਰਤੀ
अड़	ਅੜ	आरा	ਆਰਾ
अड़ना	ਅੜਨਾ	आरी	ਆਰੀ
अदल–बदल	ਅਦਲ-ਬਦਲ	आलू	ਆਲੂ
अधेड़	ਅਧੇੜ	आस	ਆਸ
अनथक	ਅਣਥੱਕ	आसन	ਆਸਨ
अनपढ़	ਅਣਪੜ੍ਹ	आसरा	ਆਸਰਾ
अनबोल	ਅਣਬੋਲ	इतवार	ਐਤਵਾਰ
अनाज	ਅਨਾਜ	इधर	ਇਧਰ/ਏਧਰ
अनार	ਅਨਾਰ	इधर–उधर	ਇਧਰ-ਉਧਰ
अनोखा	ਅਨੋਖਾ/ਅਣੋਖਾ	इनाम	ਇਨਾਮ
अपना	ਅਪਣਾ	इमारत	ਇਮਾਰਤ
अफरा–तफरी	ਹਫੜਾ-ਦਫੜੀ	इलाका	ਇਲਾਕਾ

अफीमची	ਅਫ਼ੀਮਚੀ	इलाज	ਇਲਾਜ
अभिमान	ਅਭਿਮਾਨ	उंगली	ਉਂਗਲੀ
अमिट	ਅਮਿਟ	उगना	ਉਂਗਣਾ
अमृत	ਅੰਮ੍ਰਿਤ	उचक्का	ਉਚੱਕਾ
अरदली	ਅਰਦਲੀ	उछलना	ਉਛਲਨਾ
अरमान	ਅਰਮਾਨ	उजाड़	ਉਜਾੜ
अरोग	ਅਰੋਗ	उजाड़ना	ਉਜਾੜਨਾ
अर्क	ਅਰਕ	उठना	ਉਠਣਾ
अलबेला	ਅਲਬੇਲਾ	उड़ना	ਉਡਣਾ
अलमारी	ਅਲਮਾਰੀ	उड़ाना	ਉਡਾਉਣਾ
उतावला	ਉਤਾਵਲਾ	काका	ਕਾਕਾ
उधार	ਉਧਾਰ	काज	ਦਾਜ
उलटना	ਉਲਟਣਾ	काठी	ਕਾਠੀ
उलटा	ਉਲਟਾ	काना	ਕਾਣਾ
उल्लू	ਉੱਲੂ	काबू	ਕਾਬੂ
उसरना	ਉਸਰਨਾ	काला	ਕਾਲਾ
ऊत	ਊਤ	किराया	ਕਿਰਾਇਆ
एक	ਇਕ	कीड़ा	ਕੀੜਾ
ऐंठ	ਐਂਠ	कीलना	ਕੀਲਣਾ
ऐनक	ਐਨਕ	कुंजी	ਕੁੰਜੀ
ऐब	ਐਬ	कुंभी	ਕੁੰਭੀ
ऐबी	ਐਬੀ	कुत्ता	ਕੁੱਤਾ
कंघा	ਕੰਘਾ	कुप्पा	ਕੁੱਪਾ
कंजूस	ਕੰਜੂਸ	कुरकी	ਕੁਰਕੀ
कच्चा	ਕੱਚਾ	कुल्फी	ਕੁਲਫ਼ੀ
काजल	ਕੱਜਲ	कुश्ती	ਕੁਸ਼ਤੀ
कट्टा	ਕੱਟਾ	कूची	ਕੂਚੀ
कटाई	ਕਟਾਈ	कूड़ा	ਕੂੜਾ
कटोरा	ਕਟੋਰਾ	कृपाण	ਕ੍ਰਿਪਾਨ
कड़ाही	ਕੜਾਹੀ	कैंची	ਕੈਂਚੀ
कतरना	ਕੱਤਰਨਾ	कोठा	ਕੋਠਾ

कताई	ਕਤਾਈ
कपड़छान	ਕੱਪੜਛਾਣ
कपड़े	ਕਪੜੇ
कबड्डी	ਕਬੱਡੀ
कबीलदार	ਕਬੀਲਦਾਰ
कबूतर	ਕਬੂਤਰ
कमाई	ਕਮਾਈ
कल	ਕਲ੍ਹ
कसना	ਕਸਣਾ
कसाई	ਕਸਾਈ
कसूर	ਕਸੂਰ
कसौटी	ਕਸੌਟੀ
कहानी	ਕਹਾਣੀ
खाकी	ਖ਼ਾਕੀ
खारा	ਖਾਰਾ
खिचड़ी	ਖਿੱਚੜੀ
खीर	ਖੀਰ
खीरा	ਖੀਰਾ
खुर	ਖੁਰ
खुरपा	ਖੁਰਪਾ
खेत	ਖੇਤ
खोखला	ਖੋਖਲਾ
खोटा	ਖੋਟਾ
खोलना	ਖੋਲ੍ਹਣਾ
खौलना	ਖੌਲਣਾ
गंजा	ਗੰਜਾ
गंडासा	ਗੰਡਾਸਾ
गंदगी	ਗੰਦਗੀ
गंदा	ਗੰਦਾ
गत्ता	ਗੱਤਾ
गदेला	ਗਦੇਲਾ
कोरा	ਕੋਰਾ
कोल्हू	ਕੋਹਲੂ
कौड़ी	ਕੌਡੀ
खच्चर	ਖੱਚਰ
खजूर	ਖਜੂਰ
खटमिट्ठा	ਖਟਮਿੱਠਾ
खटास	ਖਟਾਸ
खट्टा	ਖੱਟਾ
खमीर	ਖਮੀਰ
खर्चना	ਖਰਚਣਾ
खरा	ਖਰਾ
खराब	ਖ਼ਰਾਬ
खसम	ਖਸਮ
गीत	ਗੀਤ
गुंडा	ਗੁੰਡਾ
गुच्छा	ਗੁੱਛਾ
गुज़ारा	ਗੁਜ਼ਾਰਾ
गुड	ਗੁੜ
गुड्डा	ਗੁੱਡਾ
गुफा	ਗੁਫ਼ਾ
गुबारा	ਗੁਬਾਰਾ
गुम	ਗੁੰਮ
गुरगाबी	ਗੁਰਗਾਬੀ
गुलकन्द	ਗੁਲਕੰਦ
गुलदस्ता	ਗੁਲਦਸਤਾ
गुलाबी	ਗੁਲਾਬੀ
गुलूबन्द	ਗੁਲੂਬੰਦ
गोंद	ਗੋਂਦ
गोट	ਗੋਟ
गोटा	ਗੋਟਾ
गोदाम	ਗੋਦਾਮ

गद्दी	ਗੱਦੀ	गोभी	ਗੋਭੀ
गप्प	ਗਪ	गोरा	ਗੋਰਾ
गमला	ਗਮਲਾ	गोल	ਗੋਲ
गरीब	ਗਰੀਬ	गोला	ਗੋਲਾ
गलत	ਗਲਤ	गोली	ਗੋਲੀ
गला	ਗਲਾ	घटा	ਘਟਾ
गली	ਗਲੀ	घड़ा	ਘੜਾ
गवाह	ਗਵਾਹ	घड़ी	ਘੜੀ
गाजना	ਗੱਜਣਾ	घर	ਘਰ
गाजर	ਗਾਜਰ	घर–घाट	ਘਰ-ਘਾਟ
गारा	ਗਾਰਾ	घसीटना	ਘਸੀਟਣਾ
गाहक	ਗਾਹਕ	घाट	ਘਾਟ
गिनती	ਗਿਣਤੀ	घुट्टी	ਘੁੱਟੀ
गिनना	ਗਿਣਨਾ	घूरना	ਘੂਰਨਾ
गिलास	ਗਿਲਾਸ	घृणा	ਘ੍ਰਿਣਾ
घेरना	ਘੇਰਨਾ	चुभना	ਚੁਭਣਾ
घोड़ा	ਘੋੜਾ	चूड़ी	ਚੂੜੀ
चंगा	ਚੰਗਾ	चूरन	ਚੂਰਨ
चंगेर	ਚੰਗੇਰ	चूसना	ਚੂਪਣਾ
चट	ਚੱਟ	चूहड़ा	ਚੂਹੜਾ
चकमक	ਚਕਮਕ	चूहा	ਚੂਹਾ
चक्कर	ਚੱਕਰ	चेला	ਚੇਲਾ
चक्की	ਚੱਕੀ	चोटी	ਚੋਟਹੀ
चढ़ाई	ਚੜ੍ਹਾਈ	चोर	ਚੋਰ
चढ़ावा	ਚੜ੍ਹਾਵਾ	चोरी	ਚੋਰੀ
चतुर	ਚਤੁਰ	चोला	ਚੋਲਾ
चतुराई	ਚਤੁਰਾਈ	चौकड़ी	ਚੌਕੜੀ
चप्पा	ਚੱਪਾ	चौकन्ना	ਚੌਕੰਨਾ
चप्पू	ਚੱਪੂ	चौका	ਚੌਕਾ
चमड़ा	ਚੱਮੜਾ	चौकी	ਚੌਕੀ
चमार	ਚਮਿਆਰ	चौगुना	ਚੌਗਣਾ, ਚਹੁਰਾ

चमच	ਚਮਚ	चौड़ा	ਚੌੜਾ
चरखा	ਚਰਖਾ	चौथा	ਚੌਥਾ
चरना	ਚਰਨਾ	छकडा	ਛੱਕੜਾ
चसका	ਚਸਕਾ	छज्जा	ਛੱਜਾ
चाकर	ਚਾਕਰ	छटाक	ਛਟਾਂਕ
चाचा	ਚਾਚਾ	छत	ਛੱਤ
चादर	ਚਾਦਰ	छतरी	ਛੱਤਰੀ
चाबुक	ਚਾਬਕ	छपाई	ਛਪਾਈ
चारा	ਚਾਰਾ	छप्पर	ਛੱਪਰ
चाल	ਚਾਲ	छल	ਛਲ
चासनी	ਚਾਸ਼ਨੀ	छलकना	ਛਲਕਣਾ
चिट्ठी	ਚਿੱਠੀ	छल्ला	ਛੱਲਾ
चिमटा	ਚਿਮਟਾ	छांटना	ਛਾਂਟਣਾ
चीरना	ਚੀਰਨਾ	छाछ	ਛਾਹ
चुगना	ਚੁੱਗਣਾ	छाती	ਛਾਤੀ
चुगली	ਚੁਗਲੀ	छाबड़ा	ਛਾਬੜਾ
चुटकी	ਚੁਟਕੀ	छापना	ਛਾਪਣਾ
चुप	ਚੁੱਪ	छाला	ਛਾਲਾ
छींट	ਛੀਟ	टट्टी	ਟੱਟੀ
छेड़ना	ਛੇੜਨਾ	टलना	ਟਲਣਾ
छैला	ਛੈਲਾ	टहलना	ਟਹਲਣਾ
छोड़ना	ਛੋੜਨਾ	टांका	ਟਾਂਕਾ
जंजाल	ਜੰਜਾਲ	टाट	ਟਾਟ
जंजीर	ਜੰਜੀਰੀ	टालना	ਟਾਲਣਾ
जड़	ਜੜ੍ਹ	टिड्डी	ਟਿੱਡੀ
जनानी	ਜਨਾਨੀ	टीका	ਟੀਕਾ
जपना	ਜਪਣਾ	टोकना	ਟੋਕਣਾ
ज़हर	ਜ਼ਹਿਰ	टोकरा	ਟੋਕਰਾ
जादू	ਜਾਦੂ	टोली	ਟੋਲੀ
जान	ਜਾਨ	ठंडा	ਠੰਡਾ
जानना	ਜਾਣਨਾ	ठग	ਠੱਗ

जाना	ਜਾਣਾ	ठगना	ਠੱਗਣਾ
जामा	ਜਾਮਾ	ठीक	ਠੀਕ
जाल	ਜਾਲ	ठीकरा	ਠੀਕਰਾ
जीभ	ਜੀਭ	ठोकर	ਠੋਕਰ
जुलाब	ਜੁਲਾਬ	डंडा	ਡੰਡਾ
जूड़ा	ਜੂੜਾ	डब्बा	ਡੱਬਾ
जेठ	ਜੇਠ	डर	ਡਰ
जेब	ਜੇਬ	डराकल	ਡਰਾਕਲ
जोगी	ਜੋਗੀ	डाइन	ਡੈਣ
जोड़	ਜੋੜ	डाका	ਡਾਕਾ
जोशांदा	ਜੁਸ਼ਾਂਦਾ	डाकिया	ਡਾਕੀਆ
झज्झर	ਝੱਜਰ	डाकू	ਡਾਕੂ
झमेला	ਝਮੇਲਾ	डार	ਡਾਰ
झाडना	ਝਾੜਨਾ	डिगना	ਡਿਗਣਾ
झाड़ू	ਝਾੜੂ	डुगडुगी	ਡੁਗਡੁਗੀ
झालर	ਝਾਲਰ	डेरा	ਡੇਰਾ
झिझकना	ਝਿਜਕਣਾ	डोर	ਡੋਰ
झूठ	ਝੂਠ	डोरा	ਡੋਰਾ
झोला	ਝੋਲਾ	डोरी	ਡੋਰੀ
टंटा	ਟੰਟਾ	डोल	ਡੋਲ
टकसाल	ਟਕਸਾਲ	ढंढोरा	ਢੰਢੋਰਾ
ढलाई	ਢਲਾਈ	तीर	ਤੀਰ
ढाई	ਢਾਈ	तूत	ਤੂਤ
ढाल	ਢਾਲ	तैरना	ਤੈਰਨਾ
ढलवां	ਢਾਲਵਾਂ	तोड़ना	ਤੋੜਨਾ
ढीठ	ਢੀਠ	तोतला	ਤੋਤਲਾ
ढूंढना	ਢੂੰਡਣਾ	तोता	ਤੋਤਾ
ढेर	ਢੇਰ	तोल	ਤੋਲ
ढोना	ਢੋਣਾ	तौलिया	ਤੌਲੀਆ
तंगी	ਤੰਗੀ	थकना	ਥੱਕਣਾ
तम्बू	ਤੰਬੂ	थाप	ਥਾਪ

तम्बूरा	ਤੰਬੂਰਾ	थाल	ਥਾਲ
तकना	ਤੱਕਣਾ	थैला	ਥੈਲਾ
तकलीफ़	ਤਕਲੀਫ਼	थोड़ा	ਥੋੜਾ
तखती	ਤਖ਼ਤੀ	दंगा	ਦੰਗਾ
तजना	ਤਜਣਾ	दंड	ਦੰਡ
तड़का	ਤੜਕਾ	दग़ा	ਦਗ਼ਾ
तप	ਤਪ	दाबना	ਦੱਬਨਾ
तबेला	ਤਬੇਲਾ	दबाना	ਦਬਾਣਾ
तमाशा	ਤਮਾਸ਼ਾ	दम	ਦਮ
तरस	ਤਰਸ	दमड़ी	ਦਮੜੀ
तलवार	ਤਲਵਾਰ	दरवाज़ा	ਦਰਵਾਜ਼ਾ
तलाशी	ਤਲਾਸ਼ੀ	दरी	ਦਰੀ
तसवीर	ਤਸਵੀਰ	दरज़ी	ਦਰਜ਼ੀ
ताई	ਤਾਈ	दलाली	ਦਲਾਲੀ
ताकत	ਤਾਕਤ	दवाई	ਦਵਾਈ
ताज़ा	ਤਾਜ਼ਾ	दवात	ਦਵਾਤ
तान	ਤਾਨ	दस	ਦਸ
ताया	ਤਾਇਆ	दसवां	ਦਸਵਾਂ
तार	ਤਾਰ	दाई	ਦਾਈ
तारा	ਤਾਰਾ	दाढ़	ਦਾਹੜੀ
तालू	ਤਾਲੂ	दादा	ਦਾਦਾ
तिल	ਤਿਲ	दादी	ਦਾਦੀ
दान	ਦਾਨ	धमक	ਧਮਕ
दाना	ਦਾਣਾ	धाक	ਧਾਕ
दानी	ਦਾਨੀ	धागा	ਧਾਗਾ
दाल	ਦਾਲ	धान	ਧਾਨ
दावा	ਦਾਵਾ	धार	ਧਾਰ
दिन	ਦਿਨ	धावा	ਧਾਵਾ
दिमाग़	ਦਿਮਾਗ਼	धुंधला	ਧੁੰਦਲਾ
दिल	ਦਿਲ	धुन	ਧੁਨ
दिलासा	ਦਿਲਾਸਾ	धोखा	ਧੋਖਾ

दिवाला	ਦਿਵਾਲਾ	धोती	ਧੋਤੀ
दीया	ਦੀਵਾ	धोबी	ਧੋਬੀ
दुकान	ਦੁਕਾਨ	धौंस	ਧੌਂਸ
दुगना	ਦੋਗੁਣਾ/ਦੂਣਾ	नंगा	ਨੰਗਾ
दुतही	ਦੁਤਹੀ	नकद	ਨਕਦ
दुलत्ती	ਦੁਲੱਤੀ	नखरा	ਨਖ਼ਰਾ
दुशाला	ਦੁਸ਼ਾਲਾ	नट	ਨਟ
दुहाई	ਦੁਹਾਈ	नथना	ਨਥਣਾ
दूसरा	ਦੂਸਰਾ	निबेड़ना	ਨਿਬੇੜਨਾ
दूर	ਦੂਰ	नमूना	ਨਮੂਨਾ
देना	ਦੇਣਾ	नरम	ਨਰਮ
देर	ਦੇਰ	नल	ਨਲ
देवर	ਦੇਉਰ	नशीला	ਨਸ਼ੀਲਾ
देश	ਦੇਸ਼	नस	ਨਸ
दो	ਦੋ	नसीब	ਨਸੀਬ
दोगला	ਦੋਗਲਾ	नहर	ਨਹਰ
दोहरा	ਦੂਹਰਾ	नाई	ਨਾਈ
दौड़	ਦੌੜ	नाच	ਨਾਚ
दौड़ना	ਦੌੜਨਾ	नाड़ी	ਨਾੜੀ
दौलत	ਦੌਲਤ	नाता	ਨਾਤਾ
धंधा	ਧੰਧਾ	नाना	ਨਾਨਾ
धक्का	ਧੱਕਾ	नाली	ਨਾਲੀ
धज्जी	ਧੱਜੀ	निंबू	ਨਿੰਬੂ
धड़क	ਧੱੜਕ	निकम्मा	ਨਿਕੰਮਾ
धप्पा	ਧੱਪਾ	निखट्टू	ਨਿਖੱਟੂ
निचोड़ना	ਨਿਚੋੜਨਾ	पहरा	ਪਹਰਾ
निभाना	ਨਿਭਾਣਾ	पहला	ਪਹਲਾ
नियम	ਨਿਯਮ	पहाड़	ਪਹਾੜ
निरा	ਨਿਰਾ	पान	ਪਾਨ
निशान	ਨਿਸ਼ਾਨ	पालक	ਪਾਲਕ
नींद	ਨੀਂਦ	पालकी	ਪਾਲਕੀ

नील	ਨੀਲ	पाला	ਪਾਲਾ
नीलाम	ਨੀਲਾਮ	पावा	ਪਾਵਾ
नेक	ਨੇਕ	पिंजरा	ਪਿੰਜਰਾ
नेड़े	ਨੇੜੇ	पिंडा	ਪਿੰਡਾ
नैन	ਨੈਨ	पिछला	ਪਿਛਲਾ
नोक	ਨੋਕ	पीपा	ਪੀਪਾ
नौकर	ਨੌਕਰ	पीला	ਪੀਲਾ
पंगत	ਪੰਗਤ	पुरजा	ਪੁਰਜਾ
पंच	ਪੰਚ	पूजना	ਪੂਜਣਾ
पंजा	ਪੰਜਾ	पूरब	ਪੂਰਬ
पंथ	ਪੰਥ	पूरा	ਪੂਰਾ
पकड़ना	ਪਕੜਨਾ	पेटी	ਪੇਟੀ
पकौड़ा	ਪਕੌੜਾ	पेटू	ਪੇਟੂ
पक्का	ਪੱਕਾ	पेशा	ਪੇਸ਼ਾ
पगड़ी	ਪੱਗੜੀ	पैदल	ਪੈਦਲ
पटका	ਪਟਕਾ	पैर	ਪੈਰ
पट्टी	ਪੱਟੀ	पैसा	ਪੈਸਾ
पडताल	ਪੜਤਾਲ	पोथी	ਪੋਥੀ
पढ़ना	ਪੜ੍ਹਨਾ	प्यार	ਪਿਆਰ
पतंग	ਪਤੰਗ	प्रसाद	ਪ੍ਰਸ਼ਾਦ/ਪਰਸਾਦ
पतला	ਪਤਲਾ	फक्कड़	ਫੱਕੜ
पता	ਪਤਾ	फिटकारना	ਫਿਟਕਾਰਨਾ
पत्ती	ਪੱਤੀ	फतह	ਫਤਿਹ
परदा	ਪਰਦਾ	फुहारा	ਫੁਹਾਰਾ
परनाला	ਪਰਨਾਲਾ	फांसी	ਫਾਂਸੀ
परसों	ਪਰਸੋਂ	फाटक	ਫਾਟਕ
परे	ਪਰ੍ਹੇ	फाड़ना	ਫਾੜਨਾ
पसीना	ਪਸੀਨਾ	फिर	ਫਿਰ
फिरना	ਫਿਰਨਾ	बरफी	ਬਰਫੀ
फुरती	ਫੁਰਤੀ	बल	ਬਲ
फुटा	ਫੁਟਾ	बला	ਬਲਾ

फेर ਫੇਰ
फेरना ਫੇਰਨਾ
फोड़ा ਫੋੜਾ
बंजर ਬੰਜਰ
बंद ਬੰਦ
बंदर ਬੰਦਰ
बंदा ਬੰਦਾ
बंदूक ਬੰਦੂਕ
बकरा ਬਕਰਾ
बगल ਬਗਲ
बगला ਬਗਲਾ
बग़ीचा ਬਗੀਚਾ
बचना ਬੱਚਣਾ
बजरी ਬਜਰੀ
बजाज ਬਜਾਜ
बलटोही ਵਲਟੋਹੀ
बड़बोला ਬੜਬੋਲਾ
बत्ती ਬੱਤੀ
बदनामी ਬਦਨਾਮੀ
बदमाशी ਬਦਮਾਸ਼ੀ
बदला ਬਦਲਾ
बदली ਬਦਲੀ
बदी ਬਦੀ
बधाई ਵਧਾਈ
बभूत ਬਭੂਤ
बरकत ਬਰਕਤ
वर्षा ਬਰਖਾ
बरछा ਬਰਛਾ
बरसात ਬਰਸਾਤ
बरसाती ਬਰਸਾਤੀ
बराबर ਬਰਾਬਰ
बसता ਬਸਤਾ
बाज़ी ਬਾਜ਼ੀ
बापू ਬਾਪੂ
बाबत ਬਾਬਤ
बाबा ਬਾਬਾ
बाबल ਬਾਬਲ
बारूद ਬਾਰੂਦ
बालटी ਬਾਲਟੀ
बाहर ਬਾਹਰ
बिचारा ਬਿਚਾਰਾ
बिच्छू ਬਿੱਛੂ
बिजली ਬਿਜਲੀ
बिल्ली ਬਿੱਲੀ
बीज ਬੀਜ
बोरी ਬੋਰੀ
बोलना ਬੋਲਣਾ
बोली ਬੋਲੀ
भंड ਭੰਡ
भंडार ਭੰਡਾਰ
भट्ठा ਭੱਠਾ
भट्ठी ਭੱਠੀ
भड़भूंजा ਭੜਭੂੰਜਾ
भतीजा ਭਤੀਜਾ
भद्दा ਭੱਦਾ
भिनक ਭਿਣਕ
भरमार ਭਰਮਾਰ
भरोसा ਭਰੋਸਾ
भसम ਭਸਮ
भाड़ा ਭਾੜਾ
भाप ਭਾਫ
भार ਭਾਰ

भिड़ना	ਭਿੜਨਾ	मुरदा	ਮੁਰਦਾ
भीड़	ਭੀੜ	मूंग	ਮੂੰਗ
भूलावा	ਭੁਲਾਵਾ	मूरत	ਮੂਰਤ
भूखा	ਭੁਖਾ	मूली	ਮੂਲੀ
भेड़	ਭੇੜ	मेख	ਮੇਖ
भेली	ਭੇਲੀ	मेटना	ਮੇਟਨਾ
भैंस	ਭੈਂਸ	मेला	ਮੇਲਾ
भोग	ਭੋਗ	मैदान	ਮੈਦਾਨ
भोला	ਭੋਲਾ	मैला	ਮੈਲਾ
मंडी	ਮੰਡੀ	मोची	ਮੋਚੀ
मक्की	ਮੱਕਈ	मोटा	ਮੋਟਾ
मकड़ी	ਮਕੜੀ	मोड़	ਮੋੜ
मकौड़ा	ਮਕੌੜਾ	मोती	ਮੋਤੀ
मक्खन	ਮੱਖਣ	मोम	ਮੋਮ
मक्खी	ਮੱਖੀ	मोर	ਮੋਰ
मरजी	ਮਰਜ਼ੀ	मौजी	ਮੌਜੀ
मच्छर	ਮੱਛਰ	मौत	ਮੌਤ
मजदूर	ਮਜ਼ਦੂਰ	मौसम	ਮੌਸਮ
मतलब	ਮਤਲਬ	यकीन	ਯਕੀਨ
मदारी	ਮਦਾਰੀ	यतीम	ਯਤੀਮ
मन	ਮਣ	यमदूत	ਯਮਦੂਤ
मनका	ਮਣਕਾ	याद	ਯਾਦ
मलना	ਮੱਲਣਾ	रंग	ਰੰਗ
मलाई	ਮਲਾਈ	रंगाई	ਰੰਗਾਈ
महीन	ਮਹੀਨ	रंदना	ਰੰਦਣਾ
मासी	ਮਾਸੀ	रंदा	ਰੰਦਾ
मिट्टी	ਮਿੱਟੀ	रई	ਰਈ
मिठास	ਮਿਠਾਸ	रकम	ਰਕਮ
मुंडासा	ਮੁੰਡਾਸਾ	रखवाला	ਰਖਵਾਲਾ
मुक्का	ਮੁੱਕਾ	रग	ਰਗ
मुट्ठी	ਮੁੱਠੀ	रगड़	ਰਗੜ

मुड़ना	ਮੁੜਨਾ	रगड़ना	ਰਗੜਨਾ
मुनारा	ਮੁਨਾਰਾ	रद्दी	ਰੱਦੀ
मुरब्बा	ਮੁਰੱਬਾ	रफ़ू	ਰਫ਼ੂ
रबाब	ਰਬਾਬ	लेखा	ਲੇਖਾ
रसोई	ਰਸੋਈ	लेना	ਲੈਣਾ
रस्सा	ਰੱਸਾ	लोभी	ਲੋਭੀ
राज	ਰਾਜ	लोहा	ਲੋਹਾ
राजा	ਰਾਜਾ	वरदी	ਵਰਦੀ
रात	ਰਾਤ	वसीला	ਵਸੀਲਾ
रानी	ਰਾਣੀ	वारदात	ਵਾਰਦਾਤ
राह	ਰਾਹ	वारना	ਵਾਰਨਾ
रीत	ਰੀਤ	वैद	ਵੈਦ
रीस	ਰੀਸ	बैरी	ਵੈਰੀ
रेत	ਰੇਤ	शक	ਸ਼ੱਕ
रेशमी	ਰੇਸ਼ਮੀ	शक्कर	ਸ਼ੱਕਰ
रोटी	ਰੋਟੀ	शरबत	ਸ਼ਰਬਤ
रोड़ा	ਰੋੜਾ	शरम	ਸ਼ਰਮ
रौनक	ਰੌਣਕ	शरमीला	ਸ਼ਰਮੀਲਾ
लंगड़ा	ਲੰਗੜਾ	शरीक	ਸ਼ਰੀਕ
लंगर	ਲੰਗਰ	शरत	ਸ਼ਰਤ
लंघना	ਲੰਘਣਾ	शादी	ਸ਼ਾਦੀ
लकड़ी	ਲਕੜੀ	शाम	ਸ਼ਾਮ
लकीर	ਲਕੀਰ	शामत	ਸ਼ਾਮਤ
लगाम	ਲਗਾਮ	शिकार	ਸ਼ਿਕਾਰ
लड़ना	ਲੜਨਾ	शीशा	ਸ਼ੀਸ਼ਾ
लड़ाई	ਲੜਾਈ	शीशी	ਸ਼ੀਸ਼ੀ
लस्सी	ਲੱਸੀ	शेर	ਸ਼ੇਰ
लहू	ਲਹੂ	शेरनी	ਸ਼ੇਰਨੀ
लागत	ਲਾਗਤ	शैतान	ਸ਼ੈਤਾਨ
लाभ	ਲਾਭ	संगी	ਸੰਗੀ
लालच	ਲਾਲਚ	संतरा	ਸੰਤਰਾ

लिखना ਲਿਖਣਾ
लीक ਲੀਕ
लुच्चा ਲੁੱਚਾ
लुटेरा ਲੁਟੇਰਾ
लेंहड़ी ਲੇੜ੍ਹੀ
लेई ਲੇਵੀ
सदा ਸਦਾ
सदी ਸਦੀ
सफ़र ਸਫ਼ਰ
सफ़ाई ਸਫ਼ਾਈ
सबूत ਸਬੂਤ
समझना ਸਮਝਨਾ
समुन्दर ਸਮੁੰਦਰ
समेत ਸਮੇਤ
सराप ਸਰਾਪ
सराफ़ ਸਰਾਫ਼
सलाह ਸਲਾਹ
सवेरा ਸਵੇਰਾ
सांझ ਸੰਝ
साई ਸਾਂਈ
साग ਸਾਗ
साधु ਸਾਧੂ
सारंगी ਸਾਰੰਗੀ
सारा ਸਾਰਾ
सालन ਸਾਲਣ
सहूकार ਸ਼ਹੂਕਾਰ
सिक्का ਸਿੱਕਾ
सितार ਸਿਤਾਰ
सिपाही ਸਿਪਾਹੀ
सिर ਸਿਰ
सिरका ਸਿਰਕਾ

संदूक ਸੰਦੂਕ
सच ਸੱਚ
सजना ਸਜਣਾ
सजनी ਸਜਣੀ
सज़ा ਸਜ਼ਾ
सड़क ਸੜਕ
सूद ਸੂਦ
सूली ਸੂਲੀ
सेब ਸੇਬ
सेर ਸੇਰ
सेवा ਸੇਵਾ
सैंकड़ा ਸੈਂਕੜਾ
सोग ਸੋਗ
सोचना ਸੋਚਣਾ
सोना ਸੋਨਾ
सौना ਸੌਣਾ
सौ ਸੌ
हक ਹਕ
हकीम ਹਕੀਮ
हक्का—बक्का ਹੱਕਾ ਬੱਕਾ
हजामत ਹਜਾਮਤ
हटना ਹਟਣਾ
हट्टी ਹੱਟੀ
हथियार ਹਥਿਆਰ
हरा ਹਰਾ
हल ਹਲ
हलवाई ਹਲਵਾਈ
हवाले ਹਾਵਲੇ
हवेली ਹਵੇਲੀ
हांडी ਹਾਂਡੀ
हाथी ਹਾਥੀ

सिरा	ਸਿਰਾ
सीटी	ਸੀਟੀ
सीधा	ਸਿੱਧਾ
सुई	ਸੂਈ
सुख	ਸੁਖ
सुर	ਸੁਰ
सुरखी	ਸੁਰਖੀ
सुस्त	ਸੁਸਤ
हार	ਹਾਰ
हिम्मत	ਹਿੰਮਤ
हिरन	ਹਿਰਨ
हिस्सा	ਹਿੱਸਾ
हीरा	ਹੀਰਾ
हेराफेरी	ਹੇਰਾਫੇਰੀ
होश	ਹੋਸ਼
हौसला	ਹੌਸਲਾ

(ख) पंजाबी में प्रचलित अंग्रेजी शब्द

agent	ਏਜੰਟ
almirah	ਅਲਮਾਰੀ
appeal	ਅਪੀਲ
arrowroot	ਅਰਾਰੂਟ
ball	ਬਾਲ
band	ਬੈਂਡ
bank	ਬੈਂਕ
bench	ਬੈਂਚ
bicycle	ਬਾਈਸਿਕਲ
bill	ਬਿਲ
biscuit	ਬਿਸਕੁਟ
blade	ਬਲੇਡ
blood pressure	ਬਲਡ ਪ੍ਰੈਸ਼ਰ
boot	ਬੂਟ
box	ਬਕਸ
bundle	ਬੰਡਲ
bus	ਬਸ
button	ਬਟਣ
cake	ਕੇਕ
camera	ਕੈਮਰਾ
certificate	ਸਰਟੀਫ਼ੀਕੇਟ
cuff	ਕਫ਼
cup	ਕਪ
dam	ਡੈਮ
decree	ਡਿਗਰੀ
degree	ਡਿਗਰੀ
deputy	ਡਿਪਟੀ
design	ਡਿਜ਼ਾਈਨ/ਡਿਜ਼ੈਨ
director	ਡਾਇਰੈਕਟਰ
doctor	ਡਾਕਟਰ
dolly	ਡਾਲੀ
drawing	ਡ੍ਰਾਇੰਗ, ਡ੍ਰੈਂਗ
driver	ਡਰਾਈਵਰ, ਡ੍ਰੈਵਰ
duty	ਡੀਉਟੀ
engine	ਇੰਜਨ
engineer	ਇੰਜਨੀਅਰ
fail	ਫੇਲ
fees	ਫੀਸ
football	ਫੁਟਬਾਲ
form	ਫ਼ਾਰਮ
gass	ਗੈਸ
gate	ਗੇਟ

chemise	ਸ਼ਮੀਜ਼
cheque	ਚੈਕ
chimney	ਚਿਮਨੀ
clerk	ਕਲਰਕ
clip	ਕਲਿਪ
coat	ਕੋਟ
collar	ਕਾਲਰ
college	ਕਾਲਜ
committee	ਕਮੇਟੀ
compounder	ਕੰਪੋਡਰ
cricket	ਕਿਰਕਟ
jail	ਜੇਲ
jersy	ਜਰਸੀ
judge	ਜੱਜ
leader	ਲੀਡਰ
library	ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀ
list	ਲਿਸਟ
lorry	ਲਾਰੀ
machine	ਮਸ਼ੀਨ
magistrate	ਮਜਿਸਟ੍ਰੇਟ
major	ਮੇਜਰ
manager	ਮੁਨੇਜਰ
master	ਮਾਸਟਰ
match	ਮੈਚ
money order	ਮਨੀ-ਆਰਡਰ
motor car	ਮੋਟਰ-ਕਾਰ
motor cycle	ਮੋਟਰ ਸਾਇਕਲ
municipality	ਮਿਉਨਿਸਿਪੈਲਟੀ
necklace	ਨੈਕਲਸ
note	ਨੋਟ
notice	ਨੋਟਿਸ
governor	ਗਵਰਨਰ
headmaster	ਹੈਡਮਾਸਟਰ
high court	ਹਾਈ ਕੋਰਟ
hockey	ਹਾਕੀ
horn	ਹਾਰਨ
hospital	ਹਸਪਤਾਲ
hostel	ਹੋਸਟਲ
hotel	ਹੋਟਲ
ice cream	ਆਈਸ ਕਰੀਮ
inspector	ਇੰਸਪੈਕਟਰ
interview	ਇੰਟਰਵੀਊ
photo	ਫੋਟੋ
pin	ਪਿਨ
plate	ਪਲੇਟ
platform	ਪਲੇਟਫਾਰਮ
police	ਪੁਲਸ
polish	ਪਾਲਿਸ਼
post-card	ਪੋਸਟ-ਕਾਰਡ
president	ਪ੍ਰੈਜ਼ੀਡੈਂਟ
principal	ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ
project	ਪ੍ਰੋਜੈਕਟ
professor	ਪ੍ਰੋਫ਼ੈਸਰ
pump	ਪੰਪ
pus	ਪਸ
radio	ਰੇਡੀਓ
rail	ਰੇਲ
ration	ਰਾਸ਼ਨ
record	ਰਿਕਾਰਡ
referee	ਰੈਫ੍ਰੀ
register	ਰਜਿਸਟਰ
registrar	ਰਜਿਸਟਰਾਰ

nurse	ਨਰਸ	rest house	ਰੈਸਟ ਹਾਊਸ
officer	ਅਫ਼ਸਰ	rifle	ਰਾਇਫ਼ਲ
over-coat	ਓਵਰ-ਕੋਟ	salad	ਸਲਾਦ
pantaloon	ਪਤਲੂਣ	school	ਸਕੂਲ
parade	ਪਰੇਡ	science	ਸਾਇੰਸ
parcel	ਪਾਰਸਲ	seat	ਸੀਟ
pass	ਪਾਸ	school	ਸਕੂਲ
passport	ਪਾਸਪੋਰਟ	service	ਸਰਵਿਸ
pastery	ਪੇਸਟ੍ਰੀ	signal	ਸਿਗਨਲ
pen	ਪੈਨ	slate	ਸਲੇਟ
pencil	ਪਿਨਸਲ	soda	ਸੋਡਾ
petrol	ਪਟ੍ਰੋਲ	spring	ਸਪ੍ਰਿੰਗ
petticoat	ਪੇਟੀਕੋਟ	stage	ਸਟੇਜ
station	ਸਟੇਸ਼ਨ	town-hall	ਟਾਊਨ-ਹਾਲ
store	ਸਟੋਰ	tray	ਟ੍ਰੇ
suit	ਸੂਟ	truck	ਟ੍ਰਕ
summons	ਸਮਨ	trunk	ਟ੍ਰੰਕ
sweater	ਸ੍ਵੈਟਰ	tubewell	ਟੂਬਵੈਲ (ਬਾਂਬੀ)
tax	ਟੈਕਸ	type	ਟਾਈਪ
tea party	ਟੀ ਪਾਰਟੀ	tyre	ਟਾਇਰ
telephone	ਟੈਲੀਫ਼ੋਨ	vote	ਵੋਟ
theatre	ਥੇਟਰ	warrant	ਵਰੰਟ
thermometer	ਥਰਮਾਮੀਟਰ	workshop	ਵਰਕਸ਼ਾਪ
ticket	ਟਿਕਟ	university	ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ
tie	ਟਾਈ	volley ball	ਵਾਲੀਬਾਲ
tincture (iodine)	ਟਿੰਚਰ		

ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਪੰਜਾਬੀ ਰੂਪ ਵਧੇਰੇ ਧਿਆਨ-ਯੋਗ ਹਨ

ਅਰਦਲੀ	orderly	ਪਿਨਸ਼ਨ	pension
ਇਸਟਾਮ	stamp	ਬਟਣ	button
ਕਪਤਾਨ	ceptain	ਬੰਬ	bomb

ਕਾਰਤੂਸ	cartridge	ਬਾਈਸਿਕਲ	bicycle
ਕੁਨੈਨ	quinine	ਬਿਲਟੀ	bill for loading
ਗਾਡਰ	girder	ਬੁਰਸ਼	brush
ਗਾਰਦ	guard	ਮਰੀਕਨ	American
ਜਰਨੈਲ	genreral	ਮੇਮ	madam
ਟਿਚਨ	attention	ਰੰਗਰੂਟ	recruit
ਡਿਗਰੀ	decree	ਰਪਟ	report
ਡੀਪ	depot	ਲਾਟ	lord
ਦੁਮਾਰਚਾ	demarage	ਲਾਮ	alarm

(ग) पंजाबी की विशेष शब्दावली

ਉਸਾਰੂ	विकासशील	ਅਕਣਾ	ऊबना
ਉਹ	वह	ਅਕੜੇਵਾਂ	अकड़
ਉਕਣਾ	चूकना	ਅਕਾਉਣਾ	उबाना, तंग करना
ਉਕਰਨਾ	कुरेद कर लिखना	ਅੱਖਰ	अक्षर
ਉਗਾਲੀ	जुगाली	ਅਖੀਰਲਾ	अंतिम
ਉਘੜਨਾ	निखरना	ਅਖੋੜ	अखरोट
ਉੱਘਾ	प्रसिद्ध	ਅੱਗਾ	आगा
ਉੱਚਾ	उच्चा, ऊंचा	ਅਗਲੇਰਾ	अधिकतर
ਉਂਜ	वैसे	ਅੱਗ	आग
ਉਛਾੜ	ग़िलाफ	ਅਗੇਤਰਾ	पेशगी
ਉਡਣਾ	उड़ना	ਅਚਿਨਚੇਤ	अचानक
ਉਡੀਕਣਾ	प्रतीक्षा करना	ਅਛੋਪਲਾ	ऊपरी, सरसरी
ਉਠਾਲਣਾ	उठाना	ਅੱਜ	आज
ਉਤੇ	ऊपर	ਅਜੇਹਾ	ऐसा
ਉੱਥੇ	वहां	ਅਜੋਕਾ	आजका
ਉਧਾਲਣਾ	अपहरण करना	ਅੱਠਾ	आठा
ਉਨ੍ਹਾਂ	उन्हों ने	ਅਡਰਾ	विलग
ਉਪਰਾਲਾ	उपाय	ਅੱਡੀ	एड़ी
ਉਵੇਂ	उसी तरह	ਅਣਖ	मान, गैरत
ਉਰੇ	उरे, यहां	ਅਣਜਾਣ	अनजान

ਉਰਲਾ	उरेका, यहां का
ਉਲਟਾਉਣਾ	उलटाना
ਉਲ੍ਹਾਮਾ	उपालम्भ
ਊਠ	ऊंट
ਊਤ	बेवकूफ
ਓਦਰਨਾ	उदास होना
ਓਦੋਂ	तब
ਓਵੇਂ	उस तरह, वैसे
ਓੜਕ	अंत में
ਅਸ਼ਕੇ	शाबाश
ਅਸਾਡਾ	हमारा
ਅਸੀਂ	हम
ਅਬਾਦ	आबाद
ਅਮ੍ਹਾਤੜ	हम जैसे
ਅਰਕ	कोहनी
ਅਰਦਾਸ	प्रार्थना
ਅਲੂਣਾ	अलवण, बेनमक
ਅਵੱਲਾ	कुढब
ਆਉਣਾ	आना
ਆਹੋ	जी हां
ਆਕੜਨਾ	अकड़ना
ਆਖਣਾ	कहना
ਆਂਡਾ	अंडा
ਆਂਦਰਾਂ	अंतड़ियां
ਆਪੇ	अपने आप
ਆਪੋ ਆਪਣਾ	अपना अपना
ਆਫਰਨਾ	अफार होना, मदमस्त होना
ਆਲਾ ਦੁਆਲਾ	परिबेश, वातावरण
ਆਲ੍ਹਣਾ	घोंसला
ਆੜੀ	मित्र
ਐਂਠਨਾ	एंठना

ਅਣਮੁੱਲਾ	अनमोल
ਅਤੇ	अतः और
ਅਤਿ	अत्थत अत्याचार
ਅਥਰੂ	अश्रु
ਅਧਖੜ	अधेड़ अवस्था
ਅਧ-ਪਚਧ	लग भग आधा
ਅਧਮੋਇਆ	अधमरा
ਅਧੋਅੱਧ	आधा आधा
ਅਨਿਆਂ	अन्याय
ਅਨ੍ਹੇਰਾ	अंधेरा
ਅਪੜਨਾ	पहुंचना
ਅਬੜਵਾਹਾ	कच्ची नींद में
ਅੰਬੜੀ	माता
ਇਉ	इस प्रकार
ਇਸਤ੍ਰੀ	स्त्री, औरत
ਇਸਨਾਨ	स्नान
ਇਹ	यह
ਇਕ ਅੱਧ	एक आध
ਇਕਸਾਰ	बराबर, समतल
ਇਕੱਠ	एकत्रता, भीड़
ਇਕੱਲਾ	इकेला
ਇਚਰਾਂ	अभी
ਇਜੱੜ	रेवड़
ਇੱਟ	ईंट
ਇੱਡਾ	इतना
ਇੱਥੇ	यहां
ਇੱਦਾਂ	इस प्रकार
ਇਨ੍ਹਾਂ	इन्होंने
ਇੱਲ	चील
ਇਵੇਂ	योंही
ਈਨ	हठ

ਐਤਕਾਂ	अबकी	ਈਰਖਾ	ईर्ष्या
ਐਤਵਾਰ	इतवार	ਏਕਾ	एकता
ਐਪਰ	किन्तु	ਏਡਾ	इतना
ਐਵੇਂ	योंही, मुफ़त्	ਏਥੇ	यहां
ਐਰਾ	नींव	ਇੰਜ	यों, इस प्रकार
ਔਕੜ	अड़चन	ਇੰਨ ਬਿੰਨ	हू बहू
ਔਖ	कठिनाई	ਇੰਨਾ	इतना
ਔਘੜ	विकट समय	ਸਈ	सखी
ਔਤਰਾ	अपुत्र	ਸਸ	सास
ਔੜ ਪੋੜ	अनावृष्टि	ਸਹੁਰੀ	सुसरी
ਅੰਗਲੀ-ਸੰਗਲੀ	साथ साथ	ਸਕਣਾ	सकना
ਅੰਗਿਆਰ	चिंगारी	ਸੱਕਾ	सगा
ਅੰਜ	अंग	ਸਕੱਤਰ	Secretary
ਅੰਨ	अन्न	ਸਗਵਾਂ	समरूप
ਅੰਨ੍ਹਾ	अन्धा	ਸਗੋਂ	बल्कि
ਸਚੋ ਸਚ	सच सच	ਸਿਓਂਕ	दीमक
ਸਜਰਾ	ताज़ा, टटका	ਸਿੱਖਣਾ	सीखना
ਸੱਜਾ	दायां, सीधा	ਸਿਖਾਉਣਾ	सिखाना
ਸੱਟ	चोट	ਸਿੰਗ	सिंग
ਸੱਠ	साठ	ਸਿਜਣਾ	भीगना
ਸਣੇ	समेत	ਸਿੰਜਣਾ	सींचना
ਸੱਤ	सात	ਸਿਰਨਾਵਾਂ	सिरनामा
ਸਦਾਉਣਾ	बुलवाना	ਸੁਆਦ	स्वाद
ਸਦੀ	शदी	ਸੁਆਮੀ	स्वामी
ਸੱਪ	साँप	ਸੁਆਰਨਾ	संवारना
ਸਭ	सब	ਸੁਕਣਾ	सूखना
ਸਮਝਾਉਣਾ	समझाना	ਸੁਖਾਲਾ	सरल
ਸਮੀਖਿਆ	समीक्षा	ਸੁਝਣਾ	सूझना
ਸਰਘੀ	प्रभात	ਸੁੰਘਣਾ	सूंघता
ਸ਼ਰਮਾਉਣਾ	शर्माना	ਸੁਚੱਮ	शौच, पवित्रता
ਸਰਾਂ	सराय	ਸੁਟਣਾ	फेंकना

ਸਰਾਪ	शाप	ਸੁੱਤਾ	सोया
ਸਰ੍ਹੋਂ	सरसों	ਸੁਦਾਈ	सौदाई
ਸਲ੍ਹਣਾ	बेंधना	ਸੁਨੇਹਾ	संदेसा
ਸਲ੍ਹਾਬਾ	नमी	ਸੁਲਫ਼ਈ	सुलफ़सी
ਸਵਖਤੇ	समय पर	ਸੂਣਾ	प्रसूत होना
ਸਵੇਲੇ	सवेरे	ਸ਼ੈਦ	शायद
ਸਾਉਣ	सावन	ਸੋਚਣਾ	सोचना
ਸਾਹ	सांस	ਸੋਟਾ	सौटा
ਸਾਕ	संबधा	ਸ਼ੌਂਹ	सौगन्ध
ਸਾਨ੍ਹ	सांड	ਸੋਖਾ	सुखद
ਸਾਂਭਣਾਂ	संभालना	ਸੌਣਾ	साना, निद्रा
ਸਾਵਾ	हरा	ਸੋੜ	तंगी
ਸਾਵੀਂ	बराबर	ਸੰਗਲ	सगल
ਸਾੜਨਾ	जलाना	ਸੰਗਣਾ	हिचकिचाना
ਸਿਆਣਪ	समझदारी	ਸੰਘ	गला
ਸਿਆਣਾ	सयाना	ਸੰਘਣਾ	सघन
ਸ਼ਿਆਪਾ	मातम	ਸੰਝ	सांझ
ਸੰਢਾ	भैंसा	ਕਢਣਾ	निकालना
ਸੰਤੋਖ	सन्तोष	ਕਣਕ	कनक
ਸੰਨ੍ਹ	सेंध	ਕਤੂਰਾ	पिल्ला
ਹੱਛਾ	अच्छा, स्वच्छ	ਕਦੇ	कभी
ਹੱਥ	हाथ	ਕਦੀ	कभी
ਹਵਾੜ	भाफ	ਕਦੋਂ	कब
ਹੜ੍ਹ	बाढ़	ਕਮਲਾ	पागल
ਹਾਸਾ	हंसी	ਕਮਾਉਣਾ	कमाना
ਹਾਕ	हांक	ਕਰੜਾ	कड़ा
ਹਿੱਕ	छाती	ਕਰੰਡੀ	करनी
ਹੀਂਗਣਾ	हींगना	ਕੱਲਾ	इकेला
ਹੁਸੜਨਾ	उदास होना	ਕਲਾਵਾਂ	भुज–भर
ਹੁਣ	अब	ਕੜਛਾ	कलछा
ਹੁਣੇ	अभी	ਕੜਾਹ	हलवा

ਹੇਕ	टेर	ਕਾਂ	कव्वा
ਹੇਠਾਂ	नीचे	ਕਾਕਾ	बच्चा, नन्हा
ਹੋਂਦ	अस्तित्व	ਕਾਕੀ	बच्ची, नन्ही
ਹੋਰ	और	ਕਾਜ	कार्य, विवाह
ਹੰਗੂਰਾ	हुंकार	ਕਾਣਾ	काना
ਹੰਝੂ	अश्रु	ਕਾਨੀ	लेखनी, तीर
ਹੰਭਲਾ	हल्ला	ਕਾਲਖ	कालिख
ਕਹਾਉਣਾ	कहलाना	ਕਿਉਂਜੋ	क्योंकि
ਕਹਾਣੀ	कहानी	ਕਿਹੜਾ	कौनसा
ਕੱਖ	कख, तिनका	ਕਿਹਾ	कैसा
ਕੱਚ	कंच	ਕਿਸੇ	किसी
ਕੱਛ	काँख	ਕਿੱਡਾ	कितना
ਕੱਛਾ	कछनी	ਕਿਤੇ	कहीं
ਕਛੂ	कछुआ	ਕਿੱਥੇ	कहां
ਕੱਜਣਾ	ढांपना	ਕਿਦਾਂ	कैसे
ਕਟਣਾ	काटना	ਕਿੰਨਾਂ	कितना
ਕੱਠਾ	इकटठा	ਕਿਰਿਆਨਾ	किराना
ਕਿਵੇਂ	कैसे	ਕੰਧ	दीवार
ਕੀ	क्या	ਕੰਨ	कान
ਕੀਕੂੰ	क्योंकर	ਕੰਬਣਾ	काँपना
ਕੀਤਾ	किया	ਕੰਮ	काम
ਕੁੱਕੜ	मुर्गा	ਖਰਚਾ	चालाक
ਕੁੱਛੜ	गोद	ਖਟਿਆਈ	खटाई
ਕੁਝ	कुछ	ਖਤ੍ਰੀ	क्षत्रिय
ਕੁੱਬਾ	कुबड़ा	ਖਰਬੂਜਾ	खरबूजा
ਕੁੱਤੀ	कुतिया	ਖਾਣਾ	खाना
ਕੁਟਣਾ	कूटना, तोड़ना	ਖਾਰਾ	खारी
ਕੁਵੇਲਾ	असमय	ਖੁੱਡ	बिल
ਕੁੜੀ	लड़की	ਖਿਆਲ	ख्याल
ਕੁੜਮਾਈ	सगाई	ਖਿਡੌਣਾ	खिलौना
ਕੂਕਣਾ	चीखना	ਖੁਲ੍ਹਣਾ	खुलना

ਕੂਲਾ	कोमल	ਖੇਡ	खेल
ਕੇਓੜਾ	क्योड़ा	ਖ਼ੈਰ	मिक्षा, सुख शान्ति
ਕੇਹਾ	कैसा	ਖੈਹੜਾ	पीछा
ਕੇਡਾ	कितना	ਖੋਤਾ	गदहा
ਕੈਹਾਂ	कांसी	ਖੋਪਾ	खोपा
ਕੋਝਾ	कुरूप	ਖੋਭਾ	दलदल
ਕੋਠਾ	कमरा	ਖੋਰ	वैर
ਕੋਰੜਾ	कोड़ा	ਖੋਲਾ	खंडर
ਕੋਲ	पास	ਖੋਲ੍ਹਣਾ	खोलना
ਕੋਲਾ	कोयला	ਖੰਡ	खांड
ਕੌਣ	कौन	ਖੰਡਾ	तलवार
ਕੌੜਾ	कड़वा	ਖੰਭ	पंख
ਕੰਗਾਲ	निर्धन	ਗਹਣਾ	गहना
ਕੰਘਾ	कंघी	ਗੱਜਣਾ	गजना
ਕੰਜਰੀ	कंचनी	ਗੱਡਾ	छकड़ा, बहली
ਕੰਡਾ	कांटा	ਗਡਵਾ	गड़वा
ਕੰਢਾ	किनरा	ਗਭਰੂ	युवक
ਗਰਬ	गर्व	ਘੁਟ	घूंट
ਗੱਲ	बात	ਘੁੰਡ	घूंघट
ਗਲ੍ਹ	गाल	ਘੋਲ	कुश्ती
ਗਵਾਂਢ	पड़ोस	ਘੰਡੀ	गला
ਗਾਂ	गाए	ਚੱਟਣਾ	चाटना
ਗਾਲੜ	गिलहरी	ਚੱਟੀ	दड
ਗਾਉਣਾ	गाना	ਚਜ	जांच
ਗਾਲ੍ਹ	गाली	ਚਲਾਉਣਾ	चलाना
ਗਿੱਚੀ	गर्दन	ਚਲਾਕ	चालाक
ਗਿੜਣਾ	हिलमिल जाना	ਚੱਵ੍ਹੀ	चौबीस
ਗਿੱਟਾ	टखना	ਚਾਉਲ	चावल
ਗਿੱਦੜ	गीदड़	ਚਾਨਣ	चाँदनी, प्रकाश
ਗਿੱਧਾ	एक प्रकार का नाच	ਚਿੱਕੜ	कीचड़
ਗੁਆਚਣਾ	गुम होना	ਚਿੱਬ	गढ़ा

ਗੁੱਝਾ	गुप्त	ਚਿਰ	देर
ਗੁਟ	गट्टा	ਚਿੜੀ	चिड़िया
ਗੁੱਡਾ	पतंग	ਚੀਕਣਾ	चीखना, चिल्लाना
ਗੁੱਤ	बेनी	ਚੁੱਕਣਾ	उठांन
ਗੇੜ	फेरा	ਚੁੰਜ	चोंच
ਗੋਹਿਆ	गोबर	ਚੁੰਨੀ	चूनरी
ਗੋਰਾ	फिरंगी	ਚੁਫੇਰ	चारों ओर
ਗੋਕਾ	गाए का	ਚੁੱਭੀ	गोता
ਗੋਗੜ	पेट	ਚੁੱਲੀ	कुल्ला
ਗੋਡਾ	घुटने	ਚੂਣੇ	काकपक्ष केश
ਗੰਢ	गांठ	ਚੂੰਢੀ	चुटकी
ਗੰਢੜੀ	गठड़ी	ਚੂੰਡਾ	लिट
ਘੱਟਾ	धूल	ਚੂਪਣਾ	चूसना
ਘਣਾ	घना	ਚੇਤਰੇ ਰਖਣਾ	याद रखना
ਘਾਹ	घास	ਚੋਰ	चंवर
ਘਾਣੀ	घानी	ਚੋਲ	चावल
ਘਿਓ	घी	ਚੰਗਾ	ठीक
ਚੰਦਰਾ	बुरा, नटखट	ਜਿਉਂ	ज्यों
ਚੰਬੜਨਾ	चिमटना	ਜਿਹੜਾ	जो
ਛਕਣਾ	सेवन करना	ਜਿਚਿਰ	जितनी देर तक
ਛੱਜ	छाज	ਜਿਥੇ	जहां
ਛਟ	बोरी	ਜਿੰਨਾ	जितना
ਛਡਣਾ	छोड़ना	ਜਿਮੀਦਾਰ	जमींदार
ਛਣਕਲਾ	झुंझना	ਜੀਉਣਾ	जीना
ਛੰਨਾ	कटोरा	ਜੀ ਆਇਆਂ ਨੂੰ	स्वागतम्
ਛਮਕ	छड़ी	ਜੇ	यदि
ਛਾਹ	छाछ	ਜਿਹੜਾ	जो
ਛਾਹ ਵੇਲਾ	सवेरा	ਜੋਖਣਾ	तोलना
ਛਾਂ	छांह, छाया	ਜੋਗ	योग्य
ਛਾਣਨੀ	छलनी	ਜੋੜਾ	पौशाक
ਛਾਬਾ	टोकरा	ਜੌਂ	जौं

ਛਾਲ	छलांग	ਜੰਘ	जांघ
ਛਿੱਕ	छींक	ਜੰਞ	बारात
ਛਿੱਕਾ	छींका	ਜੰਮਣਾ	जन्मना
ਛਿਟ	छींटा	ਝੱਖੜ	आंधी
ਛਿੱਤਰ	जूते	ਝੱਗ	झाग
ਛਿੱਲੜ	छिलका	ਝਗਾ	कुर्ता
ਛੇਕ	छेद	ਝਟ	झट–पट
ਛੇਤੀ	जल्दी	ਝਟਕਾ	झटका (कृपाण के
ਛੋਹ	छवि		एक ही वार में पशु
ਛੋਲੇ	चने		को मार डालना)
ਜੱਟ	जाट	ਝੱਲਾ	पागल
ਜਣਾ	जना	ਝੋਲਾ	झोली; थैला
ਜੱਤ	जटा	ਝਾਟਾ	लिट
ਜਦੋਂ	जब	ਝਿਉਰ	झींवर
ਜੱਫੀ	कलावा (भुजभर भेंटना)	ਝੀਤ	दराड़
ਜਾਣੂ	वाकिफ, ज्ञाता	ਝੁਕਾਉਣਾ	झुकाना
ਜਾਪਣਾ	प्रतीत होना	ਝੁੱਗੀ	झोंपड़ी
ਝੁੱਟੀ	झपट्टा	ਠਾਣਾ	थाना, स्थान
ਝੁੱਲ	कम्बल	ਠੀਕਰ	ठीकरी
ਝੂਟਾ	हिलोर	ਠੁਕ ਬੰਨ੍ਹਣਾ	धाक जमाना
ਝੇੜਾ	झगड़ा	ਠੁੱਡਾ	ठोकर
ਝੋਟਾ	भैंसा	ਠੂੰਗਾ	ठींगा
ਝੋਨਾ	धान	ਠੋਡੀ	ठोडी
ਝੋਰਾ	ग्लानि	ਡਕਣਾ	रोकना
ਝੰਗੀ	घना जंगल	ਡੰਗਰ	ढोर पशु
ਟੱਕ	काट	ਡੰਡ	शोर
ਟਡਣਾ	पसारना	ਡੱਡੂ	मेंढक
ਟੱਪਣਾ	उछलना	ਡਾਂਗ	लाठी
ਟੱਲੀ	घंटी	ਡਿਗਣਾ	गिरना
ਟਾਹਣੀ	शाखा	ਡੀਕ ਲਾਉਣਾ	एक सांस में पी जाना
ਟਾਹਲੀ	शीशम	ਡੂੰਘਾ	गहरा

ਟਾਂਡਾ	डंठल	ਡੇਢ	डयोढ़ा
ਟਿਕਾਣਾ	ठिकाना	ਡੋਲਾ	मटका, डोला
ਟਿਚਕਰ	व्यंग	ਡੋਂਡੀ	डुंडिया
ਟਿੰਡ	लोटा, सिर	ਡੰਗ	जून, डंक
ਟਿੱਲ	कठोर प्रयत्न	ਡੰਗ ਮਾਰਨਾ	डंक मारना, डसना
ਟੀਰਾ	टेर	ਢਹਣਾ	गिरना
ਟੁਕ	टुकड़ा, रोटी	ਢਕਣਾ	ढांकना
ਟੁੱਬੀ	डुबकी	ਢੱਗਾ	बैल
ਟੁੰਬਣਾ	कुरेदना, गुदगुदाना	ਢੱਟਾ	सांड बैल
ਟੁਰਨਾ	रवाना होना	ਢਾਹਣਾ	गिराना
ਟੂਣਾ	टोना	ਢਾਹਣੀ	मंडली
ਟੰਬ	गहना	ਢਾਬਾ	होटल
ਟੈਰ	टट्टू (स्त्री)	ਢਿੱਡ	पेट
ਟੋਆ	गढ़ा	ਢਿੱਲਾ	ढीला
ਟੋਭਾ	गढ़ा	ਢੀਮ	ढेला
ਟੋਲਣਾ	ढूंढना	ਤਕਣਾ	ताकना
ਠਲ੍ਹਣਾ	थामना	ਤਕੜਾ	तगड़ा, स्वस्थ
ਤਕੜੀ	तकड़ी	ਥਾਂ	स्थान
ਤੱਤਾ	गर्म	ਥਿੜਕਣਾ	थूकना
ਤਦ	तब	ਥਿੰਧਾ	चिकना
ਤਰਨਾ	तैरना	ਥੁੱਕ	थूक
ਤਰਲਾ	मिन्नत	ਥੇਹੀ	खण्डहर
ਤਲਾਅ	तालाब	ਦਹੀਂ	दही
ਤਲੀ	हथेली	ਦਸਣਾ	बताना
ਤਾਂ	तब	ਦਬਣਾ	दाबना
ਤਾਂਘ	उत्सुकता	ਦਲਿੱਦਰ	दरिद्र, दरिद्रता
ਤਿਆਰ	तैयार	ਦੜ ਵਟਣਾ	चुप साधना
ਤਿਹ	प्यास, तृष्णा	ਦਾਜ	दहेज
ਤਿਕਾਲਾਂ	त्रिकाल संध्या	ਦਾਤ	देन
ਤਿੰਨ	तीन	ਦਿਹਾੜਾ	दिवस, दिन
ਤਿਹਰਾ	तीन गुना	ਦਿਰਾਣੀ	देवरानी

ਤੀਕਰ	तक	ਦੀਵਾ	दिया, दीपक
ਤੀਣਾ	तीन गुना	ਦੁਆਲੇ	चारों ओर
ਤੀਲਾ	तिनका	ਦੁੱਧ	दूध
ਤੀਵੀਂ	त्रिया, स्त्री	ਦੂਣਾ	दुगना
ਤੁਪਕਾ	बूंद	ਦੇਣਾ	देना
ਤੂੜੀ	भूसा	ਦੰਦ	दांत
ਤੇ	अतः, और	ਧਾਣੀਂ	धान
ਤ੍ਰੇਹ	प्यास	ਧਾੜ	हमला, आक्रमण
ਤੇੜ	कटि पर बांधा कपडा	ਧਾੜਵੀ	लुटेरा
ਤੋਪਾ	बखिया	ਧਿੰਗਾਣੇ	बलात्
ਤੋੜੀ	अंत तक	ਧਿਰ	पक्ष
ਤੋਂ	से	ਧੁਖਣਾ	सुलगना
ਤੋਖਲਾ	धोखा	ਧੁਵਾਈ	धुलाई
ਤੰਦ	तांत	ਧੁੱਪ	धूप
ਤ੍ਰਿੰਞਣ	स्त्रियों की सभा	ਧੁੰਨੀ	नाभि, तुण्डी
ਥਕੇਵਾਂ	थकावट	ਧੂੰ	धुआं
ਥਲੇ	नीचे	ਧੌਣ	गर्दन, गला
ਨਹੁੰ	नख	ਪਟ	जंघा
ਨੱਕ	नाक	ਪੱਠਾ	हरा चारा
ਨਚਣਾ	नाचना	ਪਤ	इज़्ज़त
ਨਠਣਾ	दौड़ना	ਪਤੀਜਣਾ	विश्वास करना
ਨਨਾਣ	ननद	ਪਰਸ਼ਾਦ	प्रसाद
ਨਰੇਲ	नारियल	ਪਰਚਾਉਣਾ	मातमपुरसी करना
ਨਵਾਂ	नवीन	ਪਰਲੋ	प्रलय
ਨਾਸ	नथना	ਪਰਾਹੁਣਾ	अतिथि, मेहमान
ਨਾੜ	रग	ਪਾਉਣਾ	डालना, पावना
ਨਾੜਾ	अज़ारबन्द	ਪਾਸਕੂ	पासंग
ਨਾਨਕੇ	नन्हाल	ਪਿਓ	पिता
ਨਿਆਣਾ	अज्ञान, अबोध	ਪਿੰਡ	गांव
ਨਿਓਣਾ	नमन	ਪਿੰਡਾ	शरीर
ਨਿਸਤਾਰਾ	उबार	ਪਿੰਨਾ	गोला

ਨਿੱਕਾ	छोटा
ਨਿਖਟੂ	निकम्मा
ਨਿਘਾ	उष्ण
ਨਿੱਛ	छींक
ਨਿਬੜਨਾ	सुलझना
ਨੀਂਹ	नींव
ਨੀਂਗਰ	युवक
ਨੀਵਾਂ	नम्न
ਨੁਕਰ	नुकड़
ਨੂੰਹ	बहू
ਨੇੜੇ	नज़दीक, निकट
ਨ੍ਹਾਉਣਾ	नहाना
ਪੱਖਾ	पंखा
ਪੱਗ	पाग
ਪਛਣਾ	छेदना
ਪਜ	ओट, मिस, बहाना
ਪਜਾਮਾ	पायजामा
ਫਿਟਿਆ	अकड़ा हुआ
ਫੂਕ	फूंक
ਫੁੱਫੜ	फूफा
ਫੂਹੜੀ	चटाई
ਫੋਗ	कचरा
ਫੰਗ	पंख
ਫੰਡ	पिटाई
ਬਖਸ਼ਣਾ	प्रदान करना
ਬੱਦਲ	बादल
ਬਥੇਰਾ	बहुतेरा
ਬਨੇਰਾ	मुंडेर
ਬਲਦ	बैल
ਬਾਹਲਾ	बहुत
ਬਾਂਦਰ	बंदर

ਪਿਸ਼ਾਬ	पेशाब, मूत्र
ਪੁਟਣਾ	उखेड़ना
ਪੁਠਾ	उलटा
ਪੁੜੀ	पुड़िया
ਪੂੰਗਰ	पोच
ਪੂੰਝਣਾ	पोंछना
ਪਿਛਾ	पीछा
ਪੇਕੇ	मायके
ਪੋਚਣਾ	पोतना
ਪੋਲਾ	जूता
ਪੰਧ	पथ
ਫੱਕਾ	मुट्ठी भर
ਫੱਟ	धाव
ਫੜਨਾ	पकड़ना
ਫਾਹੀ	फांसी
ਫਿਸਣਾ	दब कर फटना कुचला जाना
ਭਰਜਾਈ	भोजाई
ਭਰਵੱਟੇ	भवें
ਭਰਾ	भ्राता, भाई
ਭਲਕੇ	सवेरे
ਭਾਂਡਾ	बर्तन
ਭਾਣਾ	इच्छां
ਭਾਨ	रेज़गारी
ਭਾਂਬੜ	अग्नि
ਭਾਵੇਂ	चाहे
ਭਿਉਣਾ	भिगोना
ਭਿਖਮੰਗਾ	भिखारी
ਭਿਟਿਆ	भ्रष्ट
ਭੀੜਾ	तंग
ਭੁੱਖ	भूख

ਬਾਰੀ	खिड़की	ਭੂਆ	बुआ
ਬਾਲਣ	ईंधन	ਭੂੰਡ	भिड़
ਬਾਲਣਾ	जलाना	ਭੇਡ	भेड़
ਬਿਹਾ	बासी	ਭੈਣ	बहन
ਬਿਮਾਰ	बीमार	ਭੈੜਾ	बुरा
ਬੀਜਣਾ	बोना, बीज डालना	ਭ੍ਰਿਸ਼ਟ	भ्रष्ट
ਬੁਕੱਲ	पल्ला	ਭੰਨਣਾ	तोड़ना फोड़ना
ਬੁਝਣਾ	बूझना	ਮਸਿਆ	अमावस्या
ਬੁਲ੍ਹ	होंठ	ਮਹਿੰ	भैंस, महिषी
ਬੁਰਕੀ	ग्रास	ਮਗਰ	पीछे
ਬੂਹਾ	दरवाजा	ਮਝ	भैंस
ਬੂਥਾ	मुंह, थुथनी	ਮੱਥਾ	माथा
ਬੋਝਾ	बोझा, जेब	ਮਾਸ	माँस
ਬੋਲਾ	बहरा	ਮਾਂਹ	माश
ਭਜਣਾ	भागना	ਮਾਝਾ	भैंसका
ਭਣਵਈਆ	बहनोई	ਮਾਖਿਉਂ	शहद, मक्षिका
ਭਣੇਵੀਂ	भाजी	ਮਾੜਾ	बुरा
ਮਿੱਝ	मज्जा, मग़ज़	ਲੂਣ	नमक
ਮੀਟਣਾ	मूंदना	ਲੋਕ	लोग
ਮਿੱਠਾ	मीठा	ਵਸੋਂ	बसती, आबादी
ਮੁਕਣਾ	समाप्त होना	ਵਣ	बहाव
ਮੁੱਛ	मूंछ	ਵਹੁਟੀ	बहू, बधूटी
ਮੁਟਿਆਰ	युवती	ਵਖਰ	कुनबा, राशि
ਮੁੰਡਾ	लड़का	ਵਖਰਾ	अलग
ਮੇਤਰਨਾ	नापना	ਵਗ	वर्ग, रेवड़
ਮੋਕਲਾ	खुला	ਵੱਟ	बत्ती
ਮੰਜੀ	चारपाई	ਵਟਣਾ	बदलना
ਮੰਡਾ	चपाती	ਵਟਾਂਦਰਾ	अदल बदल
ਮੰਦਾ	बुरा	ਵਢਣਾ	वध करना
ਰੱਬ	ईश्वर	ਵਢੀ	रिश्वत
ਰੁੱਖ	वृक्ष	ਵਧਣਾ	बढ़ना

ਰੂੰ	रुई	ਵਧੇਰੇ	अधिकतर
ਰਿੰਨ੍ਹਣਾ	रांधना	ਵਰ੍ਹਨਾ	वरसना
ਰਿੜਕਣਾ	मथना	ਵਰ੍ਹਾ	वर्ष
ਰੋਕ	नकद	ਵਲਛਲ	छल कपट
ਰੌਲਾ	शोर	ਵਲ੍ਹੇਟਣਾ	लपेटना
ਰੰਬਾ	खुर्पा	ਵੜਨਾ	दाखिल होना
ਲਹਣਾ	उतरना	ਵਾ	हवा, वायु
ਲਹੁਕਾ	हलका	ਵਾਹੀ	हल चलाना
ਲਹੰਦਾ	पच्छिम	ਵਾਧੂ	फ़ालतू
ਲੱਕ	कटि, कमर	ਵਿਹਲਾ	निठल्ला
ਲਾਉਣਾ	लगाना	ਵਿਹਾਰ	व्यवहार
ਲਾਹਾ	लाभ	ਵਿਚ	में, बीच में
ਲਾਂਭੇ	परे, दूर	ਵਿਚਕਾਰ	बीच में
ਲਾੜਾ	दुल्हा	ਵਿਨ੍ਹਣਾ	बेधना
ਲਮਕਣਾ	लटकना	ਵੀਣੀ	कलाई
ਲਿਬੜਨਾ	लतपत होना	ਵਝ	बांस
ਲੀਰ	चीथड़ा	ਵੰਡਣਾ	बांटना
ਲੀੜਾ	कपड़ा	ਵੰਨ	रंग

परिशिष्ट

सहायक सामग्री

ਸਹਾਇਕ ਪੁਸਤਕਾਂ

1. *ਉਰਦੂ-ਪੰਜਾਬੀ ਕੋਸ਼* : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪਟਿਆਲਾ।
2. *ਅਦਬੀ ਅਫ਼ਸਾਨੇ (ਫ਼ਾਰਸੀ ਅਖਰਾਂ ਵਿਚ)* : ਜੋਸ਼ੁਆ ਫ਼ਜ਼ਲ ਦੀਨ, ਲਾਹੌਰ ਬੁਕ ਸ਼ਾਪ, ਲੁਧਿਆਣਾ।
3. *ਸਾਹਿਤ ਭੂਸ਼ਨ* : ਗੁਰਬਚਨ ਸਿੰਘ ਤਾਲਿਬ (ਸੰਪਾਦਕ), ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ।
4. *ਸਾਂਝਾ ਜੀਵਨ* : ਐਸ. ਐਸ. ਅਮੋਲ।
5. *ਸਾਡਾ ਰਹਿਣ ਸਹਿਣ* : ਐਸ. ਐਸ. ਅਮੋਲ।
6. *ਸਾਵੇ ਪੱਤਰ (ਕਵਿਤਾ)* : ਪ੍ਰੋ. ਮੋਹਨ ਸਿੰਘ, ਹਿੰਦ ਪਬਲਿਸ਼ਰਜ਼, ਜਲੰਧਰ।
7. *ਸੋਭਾ ਪ੍ਰਕਾਸ (ਪੰਜਾਬੀ ਅਖਾਣ ਤੇ ਮੁਹਾਵਰੇ)* : ਪ੍ਰੋ. ਸਾਹਿਬ ਸਿੰਘ।
8. *ਹੀਰ ਵਾਰਿਸ* : ਡਾ. ਜੀਤ ਸਿੰਘ ਸੀਤਲ (ਸੰਪਾਦਕ), ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ।
9. *ਕਿੰਗ ਮਿਰਜ਼ਾਂ ਤੇ ਸਪੇਰਾ* : ਸੁਰਜੀਤ ਸਿੰਘ ਸੇਠੀ, ਜੀਵਨ ਸਾਹਿਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਜਲੰਧਰ।
10. *ਘੋੜਾ ਬਾਦਸ਼ਾਹ (ਨਾਵਲ)* : ਦੇਵਿੰਦਰ ਸਤਿਆਰਥੀ, ਨਵਯੁਗ ਪ੍ਰੈਸ, ਚਾਂਦਨੀ ਚੌਕ, ਦਿੱਲੀ।
11. *ਚਾਹੋ ਸੋ ਪਾਓ* : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪਟਿਆਲਾ।
12. *ਚਾਨਣ ਦੇ ਬੀਜ (ਕਾਣੀਆਂ)* : ਨਵਤੇਜ ਸਿੰਘ, ਪ੍ਰੀਤ ਨਗਰ (ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ)
13. *ਚੋਣਵੀਂ ਪੰਜਾਬੀ ਕਵਿਤਾ* : ਅਮ੍ਰਿਤਾ ਪ੍ਰੀਤਮ, ਸਾਹਿਤ ਅਕਾਦਮੀ।
14. *ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀ ਰਾਸ (ਲੇਖ)* : ਗੁਰਬਖਸ਼ ਸਿੰਘ, ਪ੍ਰੀਤ ਲੜੀ, ਪ੍ਰੀਤਨਗਰ।
15. *ਜ਼ੀਰੋ (ਲੇਖ)* : ਧਿਆਨ ਸਿੰਘ।
16. *ਤਿਲ ਫੁੱਲ* : ਕਨਹੈਯਾ ਲਾਲ ਕਪੂਰ, ਹਿੰਦ ਪਬਲਿਸ਼ਰਜ਼, ਜਲੰਧਰ।
17. *ਨਵੀਆਂ ਸੋਚਾਂ (ਲੇਖ)* : ਪ੍ਰੋ. ਤੇਜਾ ਸਿੰਘ, ਲਾਹੌਰ ਬੁਕ ਸ਼ਾਪ, ਲੁਧਿਆਣਾ।
18. *ਪੰਜਾਬ ਮੇਂ ਉਰਦੂ* : ਪ੍ਰੋ. ਹਾਫਿਜ਼ ਮਹਮੂਦ ਸ਼ੀਰਾਨੀ, ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪਟਿਆਲਾ।
19. *ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਲੋਕ-ਗੀਤ* : ਰੰਧਾਵਾ, ਸਤਿਆਰਥੀ, ਨਵਯੁਗ ਪ੍ਰੈਸ, ਦਿੱਲੀ।
20. *ਪੰਜਾਬੀ-ਹਿੰਦੀ ਸ਼ਬਦ ਕੋਸ਼* : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪਟਿਆਲਾ।
21. *ਪੰਜਾਬੀ ਸ਼ਬਦ ਜੋੜ-ਕੋਸ਼* : ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ।
22. *ਪੰਜਾਬੀ ਸ਼ਬਦ-ਭੰਡਾਰ* : ਬਿਸ਼ਨ ਦਾਸ ਪੁਰੀ।
23. *ਪੰਜਾਬੀ ਮੁਹਾਵਰਾ ਕੋਸ਼* : ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ।
24. *ਪੰਜਾਬੀ ਕਿਵੇਂ ਲਿਖੀਏ* : ਪ੍ਰੋ. ਤੇਜਾ ਸਿੰਘ, ਹਿੰਦ ਪਬਲਿਸ਼ਰਜ਼, ਜਲੰਧਰ।
25. *ਪੰਜਾਬੀ ਕੋਸ਼* : ਜਿਲਦ 1, 2, 3, 4 ਮਹਿਕਮਾ ਪੰਜਾਬੀ, ਪਟਿਆਲਾ।

26. *ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਵਿਆਕਰਣ* : ਦੁਨੀ ਚੰਦ, ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ।
27. *ਪੰਜਾਬੀ ਸਵੈ-ਸਿਖਿਅਕ* : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ ਪੰਜਾਬ, ਪਟਿਆਲਾ।
28. *ਪੰਜਾਬੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਲਿਖਾਈ (ਉਰਦੂ ਰਾਹੀਂ)* : ਡਾ. ਸੀਤਾਰਾਮ ਬਾਹਰੀ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ।
29. *ਪੰਜਾਬੀ ਪਰਿਆਈ ਤੇ ਵਿਪਰਿਆਇ ਕੋਸ਼* : ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ।
30. *ਪੰਜਾਬੀ ਪਾਰਿਭਾਸ਼ਿਕ ਸ਼ਬਦ-ਸੰਗ੍ਰਹ* : ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ।
31. *ਪੰਜਾਬੀ ਬਾਤਚੀਤ* : ਸਰਧਾ ਰਾਮ ਫਿਲੌਰੀ, ਏ. ਪੀ. ਮਿਸ਼ਨ, ਲੁਧਿਆਣਾ।
32. *ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ* : ਦੁਨੀ ਚੰਦ, ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਪਬਲੀਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ।
33. *ਪੰਜਾਬੀ (ਭਾਰਤ ਭਾਰਤੀ, ਹਿੰਦ ਰਾਹੀਂ)* : ਰਾਸ਼ਟ੍ਰ ਭਾਸ਼ਾ ਪਚਾਰ, ਸਮਿਤੀ, ਵਰਧਾ।
34. *ਪੰਜਾਬੀ ਲੋਕ-ਕਹਾਣੀਆਂ* : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ।
35. *ਪੰਜਾਬੀ ਵੀਰ ਪਰੰਪਰਾ* : ਡਾ. ਫੌਜਾ ਸਿੰਘ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ।
36. *ਪਰਮ ਮਨੁੱਖ* : ਗੁਰਬਖ਼ਸ਼ ਸਿੰਘ, ਪ੍ਰੀਤ ਨਗਰ (ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ)।
37. *ਪਿੰਡ ਦੇ ਵੈਰੀ* : ਜੋਸ਼ੁਆ ਫ਼ਜ਼ਲਦੀਨ, ਲਾਹੌਰ ਬੁਕ ਸ਼ਾਪ, ਲੁਧਿਆਣਾ।
38. *ਬੇਸਿਕ ਪੰਜਾਬੀ* : ਐਸ. ਐਸ ਅਮੋਲ, ਧਨਪਤ ਰਾਏ ਐਂਡ ਸਨਜ਼, ਜਲੰਧਰ।
39. *ਬਾਲਮੀਕੀ ਰਮਾਇਨ* : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪਟਿਆਲਾ।
40. *ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਕਿਰਸਾਣੀ ਜੀਵਨ* : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪਟਿਆਲਾ।
41. *ਮਹਾਂ ਭਾਰਤ* : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪਟਿਆਲਾ।
42. *ਮਹਿਕ ਦੀ ਮੌਤ (ਕਹਾਣੀਆਂ)* : ਅਜੀਤ ਕੌਰ, ਨਵਯੁਗ ਪ੍ਰੈਸ, ਦਿੱਲੀ।
43. *ਮੜ੍ਹੀ ਦਾ ਦੀਵਾ (ਨਾਵਲ)* : ਗੁਰਦਿਆਲ ਸਿੰਘ, ਨਵਯੁਗ ਪ੍ਰੈਸ, ਦਿੱਲੀ।
44. *ਮੇਰਾ ਪਿੰਡ (ਲੋਕ-ਜੀਵਨ)* : ਗਿਆਨੀ ਗੁਰਦਿਤ ਸਿੰਘ, ਸਾਹਿਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ।
45. *ਮੇਰਾ ਵਲੈਤੀ ਸਫ਼ਰਨਾਮਾ* : ਕਮਲਾ ਅਕਾਲੀ, ਲਾਹੌਰ ਬੁਕ ਸ਼ਾਪ, ਲੁਧਿਆਣਾ।
46. *ਰਾਮ ਕਥਾ* : ਬ੍ਰਿਜ ਲਾਲ ਸ਼ਾਸਤ੍ਰੀ, ਨਵਯੁਗ ਪ੍ਰੈਸ, ਦਿੱਲੀ।
47. *ਯਸੂ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ (ਫ਼ਾਰਸੀ ਅਖਰਾਂ ਵਿਚ)* : ਜਸ਼ੁਆ ਫ਼ਜ਼ਲਦੀਨ, ਖਰੜ।
48. *ਰਾਜ-ਪ੍ਰਬੰਧਕ, ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ* : ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ।
49. *ਲੋਕ ਆਖਦੇ ਹਨ* : ਵਣਜਾਰਾ ਬੇਦੀ, ਪੰਜਾਬ ਸਾਹਿਤ ਅਕਾਡਮੀ, ਲੁਧਿਆਣਾ।
50. *ਵਿਸ਼ਵ ਦੀ ਨੁਹਾਰ* : ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ।

ਪੰਜਾਬੀ ਪਤ੍ਰਿਕਾਵਾਂ

(ਕ) ਰੋਜਾਨਾ

1. ਅਕਾਲੀ ਪਤ੍ਰਕਾ, ਜਲੰਧਰ।
2. ਅਜੀਤ, ਜਲੰਧਰ।
3. ਕੌਮੀ ਦਰਦ, ਜਲੰਧਰ।
4. ਦੇਸ਼ ਦਰਪਣ, ਕਲਕੱਤਾ।
5. ਨਵਾਂ ਜ਼ਮਾਨਾ, ਜਲੰਧਰ।
6. ਨਵੀ ਪ੍ਰਭਾਤ, ਕਲਕੱਤਾ।
7. ਰਣਜੀਤ, ਪਟਿਆਲਾ।

ਪੰਜਾਬੀ ਫਿਲਮਾਂ

1. ਇਹ ਧਰਤੀ ਪੰਜਾਬ ਦੀ।
2. ਸੱਪਣੀ।
3. ਸੱਸੀ ਪੁੰਨੂੰ।
4. ਸ਼ੌਕਣ ਮੇਲੇ ਦੀ।
5. ਹੀਰ ਸਿਆਲ।
6. ਹੀਰ ਰਾਂਝਾ
7. ਖੇਡਣ ਦੇ ਦਿਨ ਚਾਰ।

(ਖ) ਹਫਤਾਵਾਰ

1. ਅਮ੍ਰਿਤ ਪਤ੍ਰਿਕਾ, ਦਿੱਲੀ।
2. ਇੰਤਕਾਮ, ਪਟਿਆਲਾ।
3. ਸੰਘਰਸ਼, ਅਮ੍ਰਿਤਸਰ।
4. ਸਮੇਂ ਦੀ ਵੰਗਾਰ, ਪਟਿਆਲਾ।
5. ਸਾਂਝੀ ਦੁਨੀਆਂ, ਜਲੰਧਰ
6. ਪੋਹ ਫੱਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ।
7. ਫਤਿਹ, ਦਿੱਲੀ।
8. ਫ਼ੌਜੀ ਅਖ਼ਬਾਰ, ਦਿੱਲੀ।
9. ਮੇਲ ਮਿਲਾਪ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ।
10. ਲੋਕ ਰੰਗ, ਦਿੱਲੀ।

(ਗ) ਮਾਹਵਾਰ

1. ਆਰਸੀ, ਦਿੱਲੀ।
2. ਕਵਿਤਾ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।
3. ਕੰਵਲ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।
4. ਜਨ ਸਾਹਿਤ, ਪਟਿਆਲਾ।
5. ਜਾਗ੍ਰਤੀ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ।
6. ਨਾਗਮਣੀ, ਨਵੀਂ ਦਿੱਲੀ।
7. ਨਾਰੀ ਸੰਸਾਰ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।
8. ਪੰਜ ਦਰਿਆ, ਲੁਧਿਆਣਾ।
9. ਪ੍ਰੀਤਮ, ਦਿੱਲੀ।
10. ਪ੍ਰੀਤਲੜੀ, ਪ੍ਰੀਤਨਗਰ, (ਪੰਜਾਬ)
11. ਫਿਲਮੀ ਸੰਸਾਰ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।
12. ਬਾਲ ਜਗਤ, ਲੁਧਿਆਣਾ।
13. ਬੀਬਾ ਰਾਣਾ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ।

8. ਗੁੱਡੀ।
9. ਚੌਧਰੀ ਕਰਨੈਲ ਸਿੰਘ।
10. ਜੱਗਾ ਡਾਕੂ।
11. ਜੀਜਾ ਜੀ।
12. ਯੱਕੇ ਵਾਲੀ
13. ਦੁੱਲਾ ਭੱਟੀ।
14. ਦੋ ਲੱਛੀਆਂ।
15. ਧਰਤੀ ਵੀਰਾਂ ਦੀ।
16. ਪਿੰਡ ਦੀ ਕੁੜੀ।
17. ਫਰ।
18. ਬੰਜਾਰਾ।
19. ਭੰਗੜਾ।
20. ਮਦਾਰੀ।
21. ਮਾਈ ਮੁੰਡਾ।
22. ਮਾਮਾ ਜੀ।
23. ਮਿਰਜ਼ਾ ਸਾਹਿਬ।
24. ਮੈਂ ਜੱਟੀ ਪੰਜਾਬ ਦੀ।
25. ਮੰਗਤੀ।
26. ਯਮਲਾ ਜੱਟ।
27. ਲਾਜੋ।

ਪੰਜਾਬੀ ਗ੍ਰਾਮੋਫ਼ੋਨ ਰਿਕਾਰਡਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

ਕ੍ਰਮ	ਵਿਸ਼ੇ	ਗ੍ਰਾਮੋਫ਼ੋਨ ਕੰਪਨੀ	ਨੰਬਰ
1.	ਇੰਜਨ ਚੂਹਾ, 1, 2	ਹਿਜ ਮਾਸਟਰ ਵਾਇਸ	N. 13605
2.	(i) ਖਚਰਾ ਨੌਕਰ	”	N. 94123
	(ii) ਝੂਠਾ ਰਮਲੀ	”	”
3.	(i) ਪਖੰਡੀ ਸੰਤ	”	N. 94129
	(ii) ਫੌਜੀ ਦੀ ਫੜ	”	”
4.	(i) ਸ਼ੁਕੀਨ ਹਾਫਿਜ਼	”	N. 94140
	(ii) ਪੋਸਤੀ ਦਾ ਸੁਫਨਾ	”	”

5.	(i) ਜਜਮਾਨ ਜ਼ੀ	"	N. 13609
	(ii) ਮੇਲੇ ਦਾ ਹਾਲ	"	"
6.	(i) ਹੁਣ ਆਇਆ ਜ਼ਮਾਨਾ ਪੈਸੇ ਦਾ	"	N. 94014
	(ii) ਬੁਢੇ ਦਾ ਵਿਆਹ	"	"
7.	(i) ਠੰਡੀਆਂ ਮਿਠਾਈਆਂ	"	N. 4821
	(ii) ਪਟਿਆਲੇ ਦੀਆਂ ਬਾਤਾਂ	"	"
8.	ਲੰਦਨ ਦੀ ਸੈਰ ਭਾਗ 1, 2 :	ਕੋਲੰਬੀਆ	G. E. 26492
	ਹਜਾਰਾ ਸਿੰਘ ਰਮਤਾ	"	"
9.	ਲੁਧਿਆਣੇ ਦੀ ਸੈਰ 1, 2 :	"	G.E. 39510
	ਹਜਾਰਾ ਸਿੰਘ ਰਮਤਾ	"	"
10.	(i) ਰਮਤੇ ਦੀ ਟਬਰ-ਦਾਰੀ 1, 2	"	G.E. 26519
	(ii) ਰਮਤੇ ਦੀ ਟਬਰ-ਦਾਰੀ 1, 2	"	"
11.	(i) ਰਮਤੇ ਦਾ ਪੁੱਤਰ	"	G.E. 26830
	(ii) ਰਮਤੇ ਦਾ ਪੁੱਤਰ	"	"
12.	(i) ਰਮਤੇ ਦਾ ਵਿਆਹ	"	G.E. 26505
	(i) ਰਮਤੇ ਦਾ ਵਿਆਹ	"	"
13.	(i) ਰਮਤਾ ਟੇਸ਼ਨ ਤੇ	"	G.E. 26538
	(ii) ਰਮਤਾ ਸ਼ਹਿਰ ਵਿਚ	"	"
14.	(i) ਅਜਕਲ ਦੇ ਰਾਂਝੇ	"	G.E. 26538
	(ii) ਅਜਕਲ ਦੀਆਂ ਹੀਰਾਂ	"	"
15.	(i) ਰਮਤੇ ਦਾ ਦੂਸਰਾ ਵਿਆਹ	"	G.E. 39506
	(ii) ਰਮਤੇ ਦਾ ਦੂਸਰਾ ਵਿਆਹ	"	"
16.	(i) ਗੁਲਾਬ ਤੇ ਕਪਾਹ ਦਾ ਫੁਲ	ਰੀਗਲ	R. 280
	(ii) ਗੁਲਾਬ ਤੇ ਕਪਾਹ ਦਾ ਫੁਲ	"	"
17.	(i) ਜਾਟ ਸਿਪਾਹੀ	"	R. 11
	(ii) ਮਿਰਾਸੀ ਸਿਪਾਹੀ	"	"
18.	(i) ਖੜਾਵਾ	ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ	H. 25002
	(ii) ਸਿਰਫ ਚਾਹ	"	"

AIDS TO THE STUDY OF PUNJABI LANGUAGE

(a) 1. *Anglo-Pubjabi Dictionary* : Principal Teja Singh, Lahore Book Shop, Ludhiana.

2. *Comparative Phonolog of Hindi and Panjabi* : Dr. V B Arun Punjabi Sahitya Akadmi, Ludhiana.

3. *Lahndi Phonotics* : Dr. Hardev Bhari; Allahabad.

4. Punjabi Manual and Grammars :

(i) *Punjabi Grammar* : E.P. Newton.

(ii) *Punjabi Manual and Grammar*; T.F. Cummings and T. Grahme Bailey; Language Deptt., Patiala.

5. *Punjabi Phonetic Reader* : T.G. Bailey; Calcutta.
6. *Punjabi Phonology and Ludhiana Reader* : Dr. Benarsi Das Jain.
7. *Punjabi Proverbs and Idiomatic Phrases* : W.P. Hoirs.
8. *Punjabi-English Dictionary* : Maya Singh, Languages Department Punjab, Patiala.
9. *Punjabi-English Dictionary* : Prof. Gurcharan Singh and Prof. Saran Singh, Amritsar.
10. *Punjabi-English Dictionary;* (A.P. Mission, Ludhiana) Language Department, Patiala.
11. *Reference Grammar of Punjabi* : H.S. Gill.

(b) Punjabi programmes are generally broadcast in the evenings from the following Radio Stations :

Lahore, Rawalpindi	(Pakistan)
Jullundur, Delhi	(India)
Moscow	(USSR)
Voice of America	(Washington)
B.B.C.	(London)

(c) 1. Documentary and feature films in Punjabi on social, cultural and other topics are available with the Films Division, Ministry of Information and Broadcasting, New Delhi.

2. Public Relations and Tourism Department, Punjab, Secretariat, Chandigarh can be helpful for the institutions which need such films in Punjabi.

3. Gramophone Records of skits, plays and talks in Panjabi are available with Gramophone dealers.